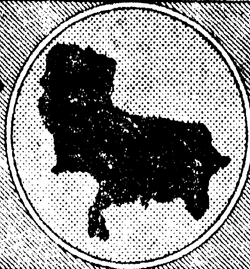
संयुक्त  प्रान्त

अङ्क

'भूगोल'

वर्ष—२०

प्रथम खण्ड

संख्या १-३

द्वितीय खण्ड

संख्या ४-५

वार्षिक मूल्य ३)

एक प्रति का ।-)

इस विशेषाङ्क का मूल्य २)

प्रथम खण्ड १)

द्वितीय खण्ड १)

सम्पादकः—रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

'भूगोल'-कार्यालय

इलाहाबाद

भूगोल के बीसवें वर्ष का विशेषांक

(संयुक्तप्रान्तांक) अपूर्ण रूप से पाठकों की सेवा में भेजा जा रहा है। हमें अत्यन्त खेद है कि कागज समय पर और पर्याप्त मात्रा में न मिलने के कारण यह विशेषांक जुलाई के अंत तक पूरा न हो सका। अगस्त के अन्त तक भी इसे पूरा करने की आशा न रही। अतः यह अधूरा ही पाठकों की सेवा में भेजा जा रहा है। आशा है इसका शेष भाग अक्तूबर के प्रथम सप्ताह तक पूरा हो जायगा। तभी वह ग्राहकों के पास भेजा जा सकेगा। तभी इसके शेष चित्र और नकशे भी जा सकेंगे। सम्पूर्ण विशेषांक का मूल्य २) है। पूरा खंड प्रकाशित होने से प्रत्येक भाग का मूल्य अलग अलग १) रखना पड़ा। आशा है पाठक हमारी कठिनाइयों को ध्यान में रख कर देरी के लिये क्षमा करेंगे।

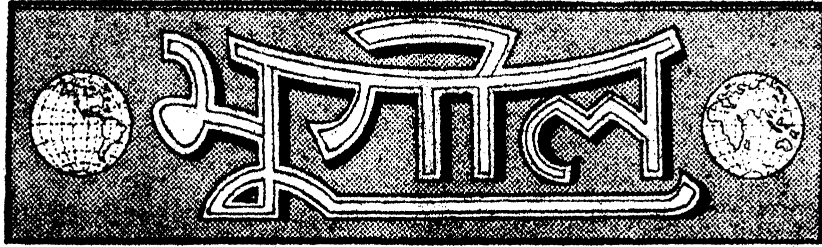
भवदीय कृपाकांक्षी
रामनारायण मिश्र
"भूगोल"-सम्पादक

विषय-सूची (प्रथम भाग)

प्रथम खण्ड

द्वितीय खण्ड

संयुक्तप्रांत के ज़िलों का संक्षिप्त परिचय



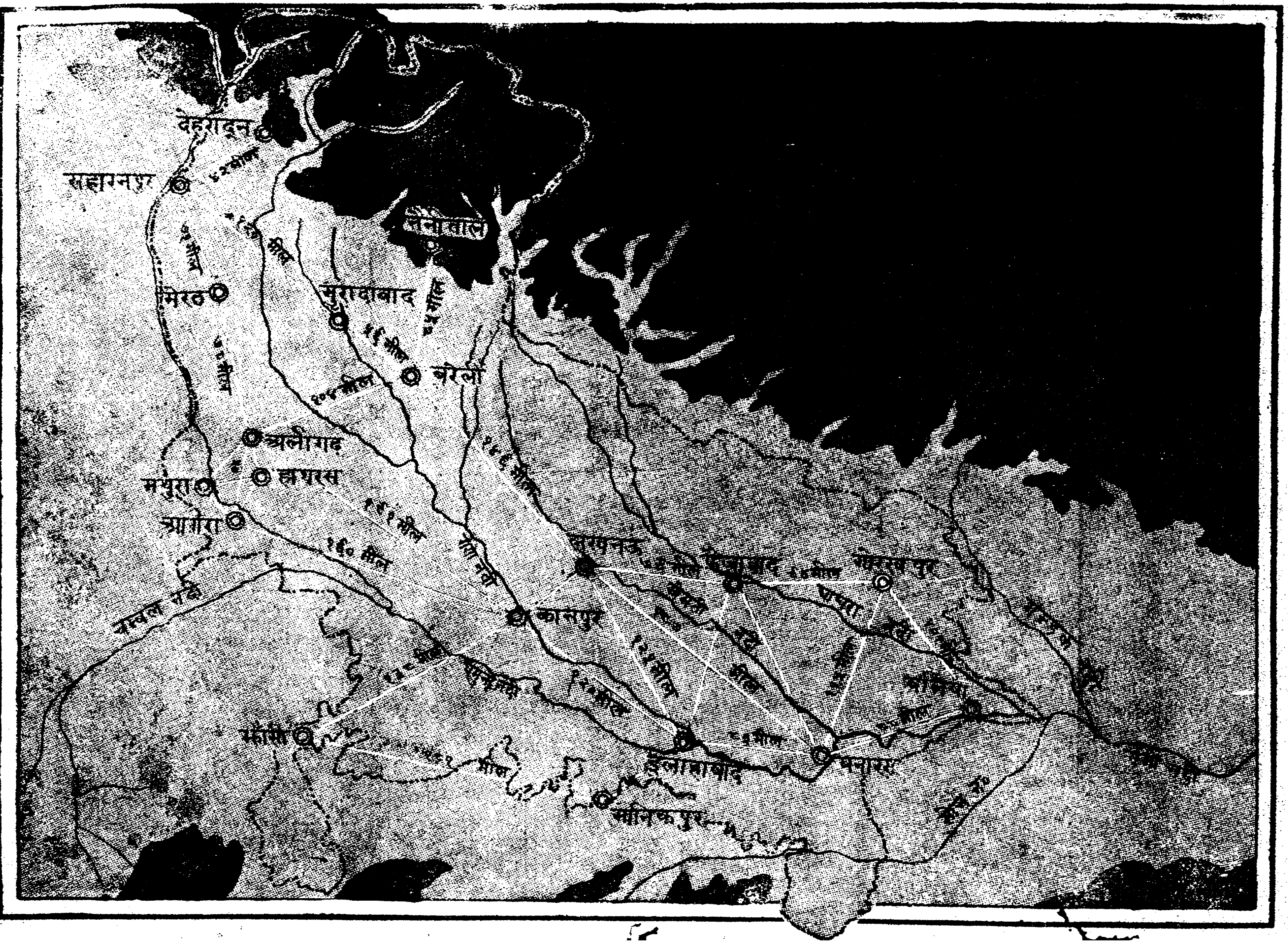
वर्ष २०] आषाढ़ सं० २०००, जुलाई १९४३ [सं० १-२

स्थिति, सीमा और विस्तार

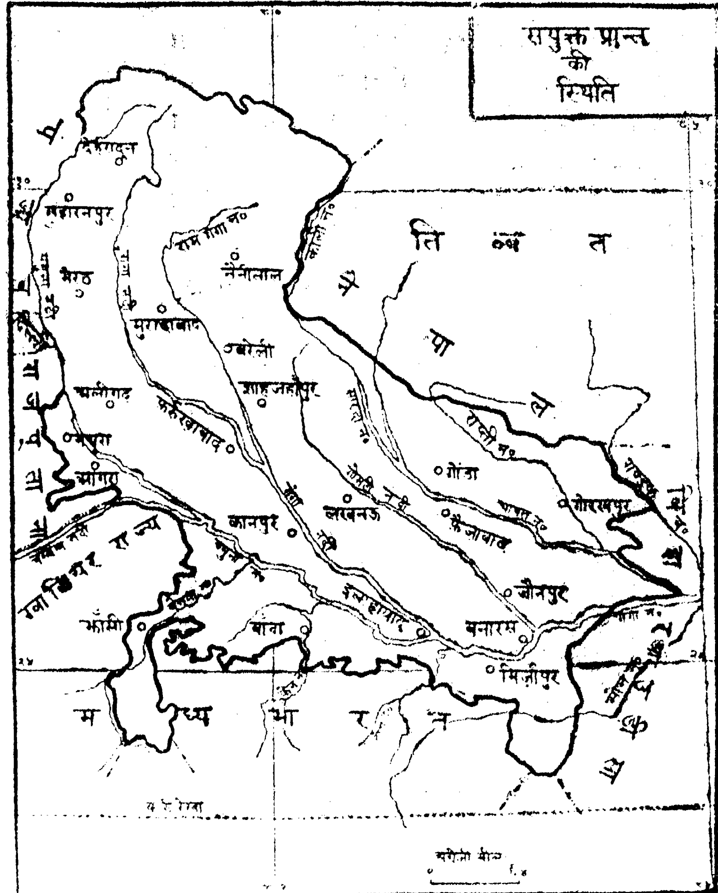
संयुक्तप्रान्त नाम नया है। लेकिन इसका इतिहास बड़ा पुराना है। इसकी स्थिति भारतवर्ष में आने जाने के मार्गों की सुविधा की दृष्टि से बड़ी केन्द्रवर्ती है। इसका पूर्वी भाग बंगाल की खाड़ी से प्रायः उतनी ही दूर है जितनी दूर दक्षिणी भाग अरब सागर से है। पश्चिमी सिरे से खैबर दर्रा भी प्रायः इतनी ही दूर रह जाता है। गंगा की उपजाऊ मध्यवर्ती घाटी में स्थित होने से संयुक्त प्रान्त वास्तव में भारत का हृदय है। यह प्रान्त ३१°७ उत्तरी (टेहरी-गढ़वाल) और २३-५२ उत्तरी (मिर्जापुर) अक्षांशों और ७४.५ (मुजफ्फर नगर) और ८४.४० (बलिया) पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित हैं। जो उत्तरी अक्षांश संयुक्तप्रान्त के गढ़वाल और देहरादून जिलों को छूता है। वही अक्षांश उत्तरी अफ्रीका के मरक्को, अलजीरिया, ट्यूनिस, लिबिया और मिश्र के उत्तरी भाग को काटता है। यही अक्षांश आगे चलकर पेलेस्टाइन, इराक, दक्षिणी ईरान और अफगानिस्तान को काटता है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका का दक्षिणी भाग कर्क रेखा से कुछ ही दूर रह जाता है

संयुक्त प्रान्त के उत्तर में तिब्बत और उत्तर पूर्व में नैपाल का स्वाधीन राज्य है। पूर्व और दक्षिण-पूर्व में बिहार के चम्पारन (मोतिहारी) सारन (छपरा) और शाहाबाद (आरा) जिले हैं। दक्षिण में हजारीबाग (छोटानागपुर) रीवा राज्य, बुन्देलखण्ड के पन्ना, ओरछा आदि छोटे छोटे राज्य और मध्य प्रान्त का सागर जिला है।

पश्चिम की ओर ग्वालियर, धौलपुर, भरतपुर के देशी राज्य और गुरगांव, दिल्ली, करनाल और अम्बाला के जिले हैं। इसके आगे पंजाब के सिरमौर जाबाल छोटे पहाड़ी राज्य संयुक्त प्रान्त की पश्चिमी सीमा बनाते हैं। इस प्रकार यदि हम गढ़वाल से अधिक उत्तर की ओर हिमालय को पार करें तो तिब्बत के ऊंचे पहाड़ी देश में पहुँच जायंगे। अल्मोड़ा और नैनीताल के पहाड़ी भाग नैपाल राज्य के पहाड़ी भागों को छूते हैं। पीलीभीत, शाहजहांपुर, लखीमपुर, (खीरी) बहरायच, गोंडा, बस्ती और गोरखपुर की तराई नैपाल की तराई से मिली हुई है। पूर्व की ओर गोरखपुर और बलिया का मैदानी भाग चम्पारन और सारन के मैदानी भाग को छूते हैं। दक्षिण की ओर मिर्जापुर जिले का पठारी भाग एक ओर हजारी बाग (छोटा नागपुर) से और दूसरी ओर रीवा राज्य के पठारी प्रदेश से मिले हैं। इलाहाबाद जिले के दक्षिणी पठारी भाग से चलकर हम रीवा और पन्ना राज्य के पठारी प्रदेश में पहुँच सकते हैं। बांदा जिला पन्ना और छतरपुर को, हमीरपुर का जिला चरखारी को छूता है। झांसी जिला ओरछा, दतिया और ग्वालियर के देशी राज्यों और मध्य प्रान्त के सागर जिले को छूता है। पश्चिम की ओर इटावा जिला ग्वालियर राज्य से आगरा धौलपुर से और मथुरा का जिला भरतपुर राज्य से मिला हुआ है। बुलन्द शहर पंजाब के गुरगांव जिले को मेरठ, दिल्ली और रोहतक को, मुजफ्फर नगर


देहरादून
सहारनपुर
नैनीताल
मेरठ
मुरादाबाद
बरेली
अलीगढ़
मथुरा
हाथरस
आगरा
लखनऊ
फ़ैज़ाबाद
गोरखपुर
कानपुर
झाँसी
इलाहाबाद
बनारस
मानिकपुर
गंगा नदी
चम्बल नदी
१६० मील

कर्नाल को और सहारनपुर अम्बाला जिले को छूते हैं। देहरादून का जिला पश्चिम की ओर शिमला के छोटे पहाड़ी राज्यों से घिरा हुआ है।



हिमालय के बर्फीले ढाल उत्तर की ओर काली नदी कुछ दूर पूर्व की ओर और यमुना नदी काफी दूर तक पश्चिम की ओर प्राकृतिक सीमा बनाती है। दक्षिण-पूर्व की ओर बहुत थोड़ी दूर तक घाघरा और गंगा भी प्राकृतिक नदियां बनाती हैं। शेष बड़े भागों की सीमा प्राकृतिक नहीं है। इस सीमा के भीतर संयुक्त प्रान्त की अधिक से अधिक लम्बाई ५०० मील और चौड़ाई लगभग ३०० मील है। इसका क्षेत्रफल १,१२,१९१ वर्ग मील है। इसमें टेहरी, रामपुर और बनारस (काशी) के देशी राज्यों का क्षेत्रफल ५९४३ वर्ग मील है। शेष (१०६,२४८ व० मी०) क्षेत्रफल सीधे ब्रिटिश शासन वाले ४८ जिलों का है। समस्त प्रान्त की जनसंख्या प्रायः पांच करोड़ है।

अगर हम संयुक्त प्रान्त की तुलना संसार के कुछ दूसरे देशों से करें तो इस प्रान्त का महत्व एकदम स्पष्ट हो जाता है। संयुक्त प्रान्त क्षेत्रफल में बेल्जियम से दस गुना, स्विजरलैंड से ८ गुना डेन्मार्क से ७ गुना, आयरलैंड से ४ गुना, आस्ट्रिया, पुर्तगाल, हंगरी, बल्गेरिया में से प्रत्येक से प्रायः तिगुना, चेकोस्लोवेकिया से ढाई गुना और ग्रेट ब्रिटेन (जिसमें इंगलैंड वेल्स, स्काटलैंड और उत्तरी आयरलैंड शामिल हैं) से सवाया है। संयुक्त प्रान्त का क्षेत्रफल इटली के प्रायः बराबर, जर्मनी का दो तिहाई और जापान तथा फ्रांस का प्रायः आधा है।

संयुक्त प्रान्त की जनसंख्या समस्त आस्ट्रेलिया से ८ गुनी, आस्ट्रिया से ९ गुनी, यूनान से १० गुनी, डेन्मार्क से पन्द्रहगुनी, टर्की से चौगुनी, नार्वे से १९ गुनी ईरान से पँचगुनी, बेल्जियम से ७ गुनी, पुर्तगाल से ८ गुनी, बल्गेरिया से नौगुनी मेक्सिको से तिगुनी दक्षिण अफ्रीका से ६ गुनी रूमानिया से ढाई गुनी, अरब से बारह गुनी स्विजरलैंड से बारहगुनी, अफगानिस्तान से पँच गुनी, स्पेन से दुगुनी, ब्रिटेन से प्रायः सवाई फ्रांस से सवाई इटली से सवाई, कनाडा से पँचगुनी, जर्मनी की ४/५ जापान की ४/५ रूस की १/३ और संयुक्तराष्ट्र अमरीका की २/५ है।

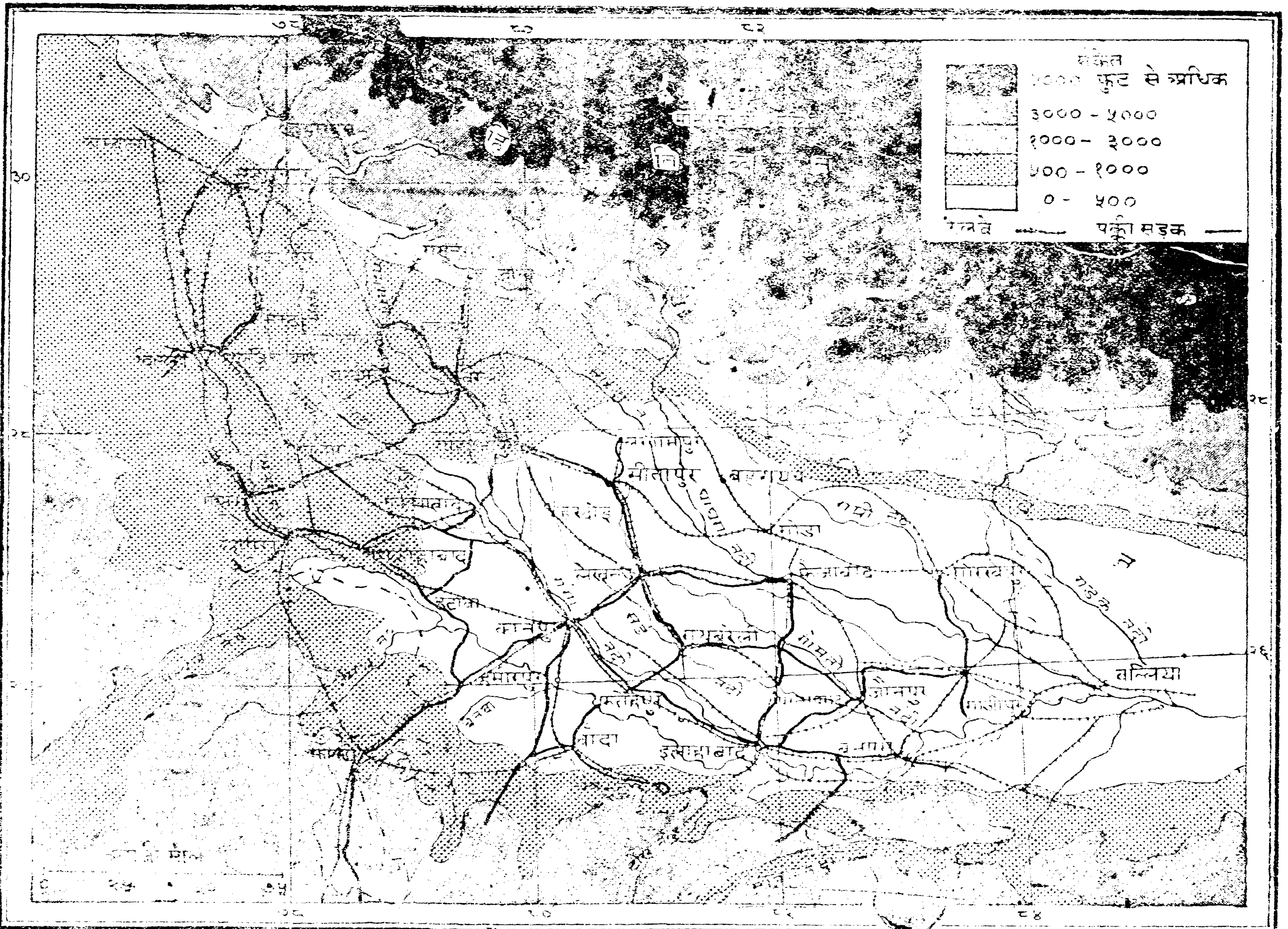
संयुक्त प्रान्त का क्षेत्रफल आसाम से प्रायः दुगुना, उत्तरी पश्चिमी सीमाप्रान्त से तिगुना, बंगाल से डेढ़गुना और मध्य प्रान्त से कुछ छोटा और बिहार के बराबर है। पंजाब, मद्रास, बम्बई प्रान्त और बरमा से क्षेत्रफल में संयुक्त प्रान्त बहुत छोटा है। लेकिन संयुक्त प्रान्त की जनसंख्या बंगाल को छोड़ कर शेष प्रान्तों में हर प्रान्त से अधिक है।

भूरचना

संयुक्त प्रान्त चार प्रधान प्राकृतिक भागों में बँटा हुआ है। (१) हिमालय का ऊँचा पहाड़ी भाग धुर उत्तर में स्थित है और प्रान्त के प्रायः ½ भाग को घेरे हुये है। संयुक्तप्रान्त में हिमालय पर्वत सिवालिक की वनाच्छादित पहाड़ियों के आगे तेजी के साथ ऊंचे उठकर ८००० फुट ऊंचे हो गये हैं। हिमालय की यह बाहरी श्रेणी बन से ढकी है। इसी में मंसूरी,



चकराता, लैन्स डाउन, रानीखेत और नैनीताल के पहाड़ी स्थान बसे हैं जहां धनी लोग गरमियों में सैर करने के लिये जाते हैं। इसके आगे वाली हिमालय की भीतरी श्रेणी है जो बाहरी श्रेणी की समानान्तर है। भीतरी श्रेणी अधिक ऊँची है। यह प्रायः सब कहीं बरफ से ढकी है। केवल नुकीली चोटियों पर बरफ ठहरने नहीं पाती है। इस लिये वे नंगी दिखाई देती हैं। साधारण चोटियां २०,००० फुट ऊँची हैं। त्रिसूल (२३३८२ फुट) नन्दा कोट (२२५३८ फुट) और नन्दादेवी (२५६४५ फुट) अधिक ऊंची चोटियां हैं। यह चोटियां हिमालय की प्रधान श्रेणी के दक्षिण में स्थित हैं। प्रधान श्रेणी की औसत ऊंचाई २०,००० फुट है। ऊंचे भाग सदा गरमियों में भी बरफ से ढके रहते हैं। सरदी की ऋतु में ऊँचे नीचे सभी भाग बरफ से ढक जाते हैं। इसी से सरदी की ऋतु में इधर की यात्रा एकदम बन्द हो जाती है। इसी से बद्रीनाथ और केदारनाथ के पुजारी और पंडे सरदी की ऋतु में नीचे उतर आते हैं। सरदी की ऋतु में वहां कोई जीवधारी नहीं रहता है। गरमी की ऋतु में बरफ के पिघलने पर पुजारी, पंडे, यात्री और व्यापारी फिर वहां पहुँचते हैं। मैदान की अपेक्षा पहाड़ पर ऊंचाई के कारण प्रायः सब कहीं अधिक वर्षा होती है। अधिक ऊंचे भाग अधिक ठंडे हैं। यहाँ सरदी सह लेने वाले देवदारु, बांझ आदि के पेड़ हैं। निचले ढालों पर साल, तून, कत्था आदि के पेड़ हैं। अच्छी और समतल भूमि न होने से खेती बहुत कम होती है। खेत पहाड़ी ढालों पर जीनेदार होते हैं। इधर के लोगों का प्रधान पेशा लकड़ी काटना और पशु पालना है। इन पेशों में अधिक घनी आबादी का निर्वाह नहीं हो सकता। आने जाने के मार्ग भी अत्यन्त दुर्गम हैं। अच्छी सड़कें बाहरी ढालों पर ही समाप्त हो जाती हैं। भीतरी श्रेणी के लिये पहाड़ी पगडंडियां हैं जिनमें केवल पैदल यात्री, बोझा ढोने वाली बकरियां और टट्टुओं की गुजर हो सकती है। इसी से संयुक्त प्रान्त के पहाड़ी भाग में अधिक लोग नहीं बसे हैं। अधिक ऊंचे भागों में हवा इतनी पतली है कि वहां मनुष्य भली प्रकार सांस नहीं ले सकता। निचले


संकेत
फुट से अधिक
3000 - 5000
1000 - 3000
500 - 1000
0 - 500
रेलवे
पक्की सड़क
सीतापुर
बलिया
जौनपुर
इलाहाबाद
बांदा
गोरखपुर
फैजाबाद
रायबरेली
गोंडा
कानपुर
हरदोई
इटावा

भाग की जलवायु बड़ी स्वास्थ्यकर है। इसी से यहां रहने वाले छोटे क़द के होने पर भी बड़े हट्टे कट्टे और बलवान होते हैं। हिमालय में बद्रीनाथ केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री आदि तीर्थ होने के कारण यहां प्रति वर्ष हज़ारों यात्री दर्शन करने के लिये आते हैं। जलवायु इतना स्वास्थ्यवर्द्धक और दृश्य इतना मनोहर है कि इधर तीर्थों की स्थापना करने वालों ने बड़ी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है। यदि इधर तीर्थ न भी होते तो भी इस ओर के दृश्य और जलवायु से लाभ उठाने के लिये सैकड़ों यात्री आया करते। प्रान्त के इस भाग में जड़ी, बूटी, धातु, लकड़ी, ऊन के अतिरिक्त अपार जलशक्ति भरी पड़ी है।

(२) हिमालय का भावर और तराई प्रदेश। हिमालय की तलहटी में भावर प्रदेश है। इसकी चौड़ाई कुछ ही मील है। कंकड़ पत्थरों से ढके हुये भावर प्रदेश में ऊपर आने वाली छोटी धारायें धरातल पर नहीं बह पातीं। इनका जल कंकड़-पत्थरों की तह के नीचे बैठ जाता है। केवल वर्षा ऋतु में ऊपर बहता है।

बहुत बड़ी नदियों का पानी सदा ऊपर बहने पाता है। पानी इतनी अधिक गहराई पर है कि सिंचाई के लिये कुछ भी नहीं खोदा जा सकता। इसी से गहरी जड़ों वाले पेड़ ही यहाँ मिलते हैं। खेती में सिंचाई पहाड़ी नालियों से होती है। भावर के आगे तराई की गीली और दलदली भूमि है। यहां नदियों का जल फिर ऊपर प्रगट होकर धरातल पर बहता है। तराई, जंगल अधिकतर ऊंची घास से ढका है। तराई का प्रदेश भी अधिक चौड़ा नहीं है। तराई और भावर दोनों ही प्रदेश बड़े अस्वास्थ्यकर हैं। तराई का प्रदेश न केवल प्रान्त के पहाड़ी भाग के दक्षिण में है वरन पूर्व की ओर नैपाल के दक्षिण में भी तराई की भूमि कई जिलों में चली गई है। जिन किसानों को मैदान में खेत न मिल सका उन्होंने बीमारी की परवाह न करके तराई की भूमि में खेती आरम्भ कर ली। इसी लिये इधर जनसंख्या बढ़ गई है। घाघरा नदी ने तराई प्रदेश को दो भागों में बांट दिया है। घाघरा के पश्चिम में सहारनपुर, बिजनौर, बरेली, पीलीभीत और खीरी (लखीमपुर) की तराई है। इस पश्चिमी तराई का क्षेत्रफल ९८२२ वर्ग मील है। पूर्वी भाग में गोंडा बहराइच, बस्ती और गोरखपुर की तराई है। इस पूर्वी तराई का क्षेत्रफल १२८२४ वर्ग मील है। इन सब जिलों के केवल उत्तरी भाग में तराई है। दक्षिणी भाग में मैदानी भूमि है। तराई की औसत चौड़ाई १० मील है। इसका ढाल प्रति वर्ग मील में केवल तीन चार इंच है। तराई प्रदेश को पहाड़ से अलग करने वाला भावर प्रदेश है। भावर की चौड़ाई भी दस ग्यारह मील है। लेकिन यह अधिक ऊंचा है। इसका उतार एक वर्ग मील में १७ से लेकर ५० फुट तक है। भावर में अच्छी मिट्टी का प्राय: अभाव है। इस लिये घर घास फूस और लकड़ी के बने हैं। पहाड़ी भाग में तराई के दक्षिण में सिवालिक की पर्वत श्रेणी है। सिवालिक पर्वत दो तीन हजार फुट ऊंचा है। मैदान की ओर यह एकदम ढालू हो गया है। वास्तव में यह मैदान और पहाड़ को जोड़ने वाली एक कड़ी है। इसके ऊंचे भाग मैदान के समान प्राय: मिट्टी और कंकड़ के बने हैं। ११ मील चौड़ी और ४५ मील लम्बी दून की घाटी सिवालिक को हिमालय से अलग करती है।

सिवालिक श्रेणी यमुना की नद-कन्दरा से लेकर, दक्षिण पूर्व में गंगा तट के हरद्वार नगर तक फैली हुई है। इसकी लम्बाई यहां प्राय: ४३ मील है। यह श्रेणी ६ मील से लेकर १० मील तक चौड़ी है। इसकी कई चोटियां समुद्र तल से ३००० फुट ऊँची हैं। इस श्रेणी के तिमली दर्रे में होकर सहारनपुर से चकराता को सड़क गई है। मोहन्द दर्रे में होकर सहारनपुर से देहरादून को सड़क गई है। दूसरे दर्रे तो बहुत हैं पर वे अत्यन्त तंग हैं। यह सब का सब प्रदेश बन से ढका है। सिवालिक के बाहरी भाग में चिकना मिट्टी, बालू और मटियार है, बीच के भाग में बालू की चट्टानें हैं। निचले भाग में बलुआ पत्थर है। इस भाग में बहुत से स्तनधारी पुराने जानवरों की हड्डियां मिलती हैं। सिवालिक का ढाल मैदान की ओर एकदम सपाट है पर हिमालय की ओर यह ढाल क्रमश: है।

(३) गंगा का मैदान—प्रान्त का दो तिहाई भाग गङ्गा के मैदान से बना है। इस मैदान को गङ्गा और उसकी सहायक नदियों ने बाढ़ के साथ

बारीक और उपजाऊ मिट्टी लाकर बनाया है। यह मैदान उत्तर में हिमालय पश्चिम में राजपूताना के उच्च प्रदेश से घिरा है। यहीं अर्वली पर्वत की अन्तिम घिसी हुई पहाड़ियां हैं और सतपुड़ा की पहाड़ियों से दक्षिण में विन्ध्या का पठार घिरा है। पूर्व की ओर यह मैदान बंगाल और बिहार के मैदान का अंग है।

यह मैदान प्रायः समतल सा मालूम होता है। केवल नदियों की धारा के पास कुछ नीची भूमि है। अत्यन्त उपजाऊ होने से यह मैदान बहुत घना बसा है। यहीं प्राचीन ऐतिहासिक और नवीन कारबारी नगर हैं। आने जाने की सब कहीं सुविधा है। यह कछारी मैदान प्रान्त के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैला हुआ है। इसकी लम्बाई ५०० मील औसत चौड़ाई १०० मील है। इस मैदान का जो भाग गङ्गा और यमुना के बीच में स्थित है वह द्वाबा कहलाता है यह द्वाबा बड़ा उपजाऊ है। द्वाबा का ऊपरी भाग (जिसमें सहारनपुर, मुजफ्फर नगर, मेरठ, बुलंदशहर मथुरा जिले का कुछ भाग और अलीगढ़ के जिले शामिल हैं) और भी अधिक उपजाऊ है। इसमें नहरों का जाल सा बिछा हुआ है। गन्ना गेहूँ और कपास यहां की प्रधान फसलें हैं। मध्य द्वाबा कुछ कम ऊपजाऊ है। पर फसलें यहां भी अच्छी होती हैं। मध्य द्वाबा अलीगढ़ से कानपुर तक फैला हुआ है। इसमें आगरा, एटा, मैनपुरी, इटावा और फरुखाबाद के जिले शामिल हैं। और निचला द्वाबा कानपुर से इलाहाबाद तक फैला हुआ है। इसमें कानपुर, फतेहपुर और अधिकांश इलाहाबाद के जिले शामिल हैं। इस भाग की जमीन इतनी अच्छी नहीं है। कहीं कहीं बलुई मिट्टी मिलती है। गङ्गा के उत्तर में कमायूं की पहाड़ी कमिश्नरी और अवध के बीच में रुहेलखण्ड का त्रिभुजाकार मैदान स्थित है। यह भाग द्वाबा से कुछ ही कम उपजाऊ है। नदियों के ऊंचे किनारों के बीच में प्रायः बलुई मिट्टी मिलती है। ऊंचे किनारों के आगे जमीन अच्छी है। केवल कहीं कहीं भूड़ हैं। यहां अधिकतर सिंचाई कुओं से होती है कुछ भाग नहर (सारदा) से सींचे जाते हैं।

गंगा के उत्तर में नैपाल की सीमा तक मैदान का मध्यवर्ती भाग अवध के नाम से प्रसिद्ध है। अवध के उत्तरी सिरे पर तराई मलेरिया ग्रस्त प्रदेश है। शेष भाग में उपजाऊ मैदान है। गोमती, घाघरा, और राप्ती प्रदेश की प्रधान नदियां हैं। यह प्रदेश बड़ा उपजाऊ है। केवल नदियों के मार्ग में कहीं कहीं बालू मिलती है। यहां कुओं और झीलों से सिंचाई होती है। कुछ भाग में नहर से भूमि सींची जाती है।

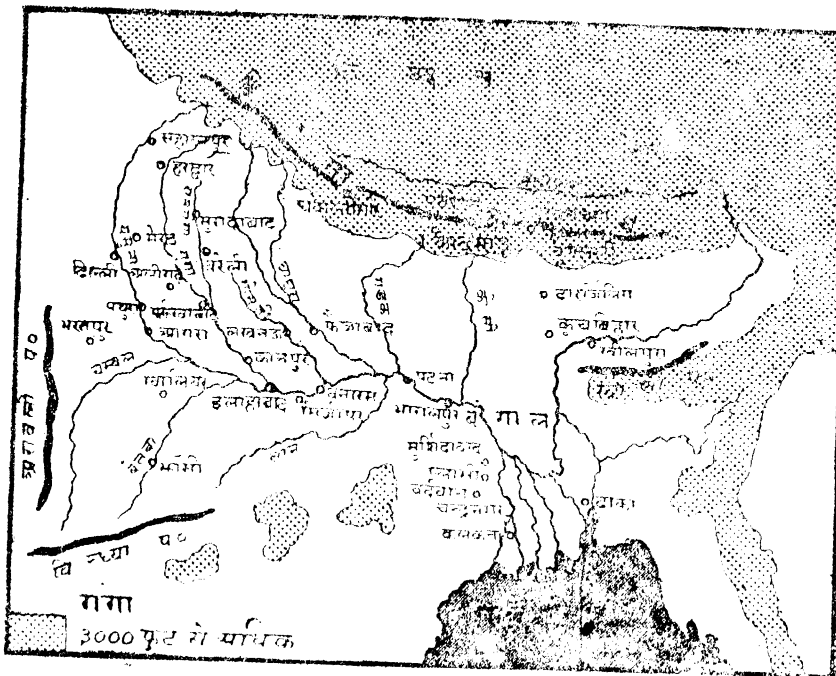
घाघरा पार वाला मैदान का पूर्वी प्रदेश बड़ा उपजाऊ है। यह प्रदेश गङ्गा के उत्तर में घिरा हुआ एक त्रिभुज सा बनाता है। इसकी भूमि बड़ी उपजाऊ है। यहां प्रबल वर्षा होती है। धान यहां की प्रधान फसल है। जितनी घनी जनसंख्या मैदान के इस पूर्वी भाग में बसी हुई है उतनी घनी जनसंख्या और कहीं नहीं मिलती है। कहीं कहीं इस भाग में एक वर्ग मील में ७०० मनुष्य रहते हैं।

(४) विंध्याचल का पठार यमुना नदी के पश्चिम में मथुरा, आगरा और इटावा जिलों में द्वाबा के समान उपजाऊ भूमि है। लेकिन अधिक दक्षिण की ओर यमुना के पश्चिम में विन्ध्याचल की पठारी भूमि है। इसी में झांसी कमिश्नरी है जिसमें झांसी जालौन बांदा और हमीरपुर के जिले शामिल हैं। यह प्रदेश गङ्गा के मैदान की अपेक्षा सब कहीं अधिक ऊंचा है। लेकिन हिमालय के पर्वतीय प्रदेश के सामने इसकी ऊँचाई कुछ भी नहीं है। इसमें जगह जगह पर विन्ध्याचल की घिसी हुई चट्टानें और पहाड़ियां मिलती हैं। इधर की भूमि उपजाऊ नहीं है। इसमें मोटे कण रहते हैं। कहीं कहीं काली मिट्टी मिलती है जो अधिक उपजाऊ है। पहाड़ी भागों में छोटे कद वाले पेड़ों के जंगल हैं।

अधिक पूर्व में यमुना के दक्षिण में इलाहाबाद और गङ्गा के दक्षिण में मिर्जापुर जिले का अधिकांश भाग पठारी है। यहां बिन्ध्या और पूर्वी सतपुड़ा की पहाड़ियां हैं। इस ओर की मिट्टी भी उपजाऊ नहीं है। अधिकतर प्रदेश में जंगल है। मिर्जापुर से अधिक आगे (गाजीपुर जिले में, गङ्गा के दक्षिण में उप कछारी भूमि है जो मैदान का ही अंग है।

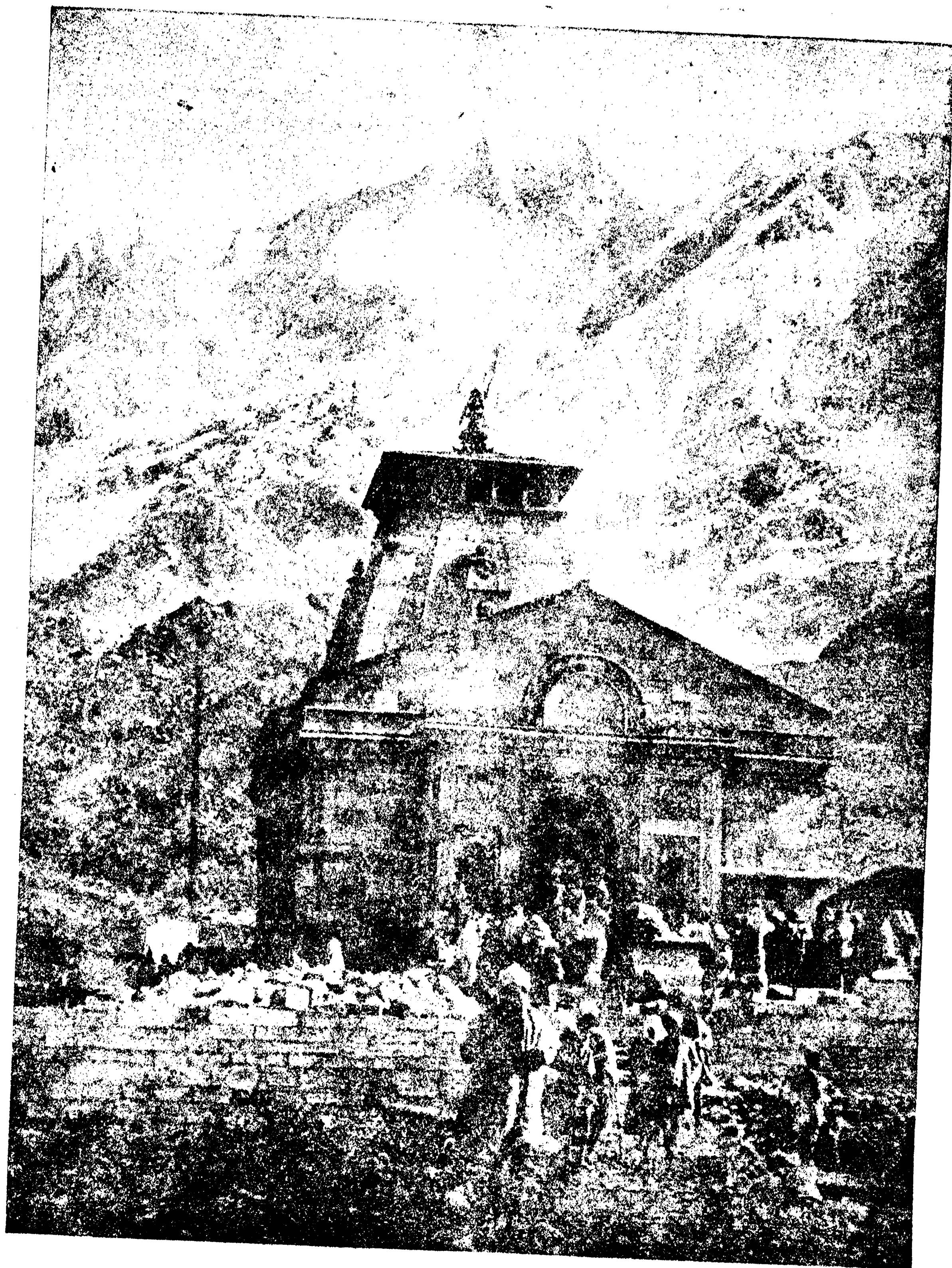
नदियां

संयुक्त प्रान्त की ढाल क्रमशः दक्षिण पूर्व की ओर है। इसी से इस प्रान्त की प्रायः सभी नदियां उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हैं। इस प्रान्त की प्रधान नदी गङ्गा है। प्रान्त की दूसरी नदियां सीधे अथवा और नदियों से मिलकर अपना पानी गङ्गा में गिराती हैं। इनमें कुछ नदियां इस प्रान्त में गङ्गा से मिलती हैं कुछ आगे चलकर बिहार में गङ्गा से मिलती हैं। संयुक्त प्रान्त की प्रधान नदियां गंगा, यमुना, घाघरा, गोमती और राम गंगा हैं।



गढ़वाल जिले में जो वर्षा होती है अथवा हिम पिघलती है उसका सब पानी गङ्गा और गङ्गा की सहायक नदियों में बहकर आता है। गङ्गा नदी वास्तव में भागीरथी और अलकनन्दा के मिलने से बनती है। ये दोनों देवप्रयाग के पास मिलती हैं। भागीरथी गंगोत्री (टेहरी राज्य में) से निकलती है और अधिक पवित्र मानी जाती है। अलकनन्दा विष्णु प्रयाग के पास विष्णु गङ्गा और धौली गङ्गा के मिलने से बनती है। विष्णु गङ्गा बद्रीनाथ में विष्णु जी के मन्दिर के पास से निकलती है। इसी से इसका नाम विष्णु गङ्गा पड़ा। धौली गङ्गा नीति दर्रे (घाट) के पास से निकलती है। अलकनन्दा दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती है। नन्द प्रयाग के पास नन्दाकिनी इसमें मिलती है। नन्दाकिनी त्रिशूल के पश्चिमी ढाल के हिमागारों से निकलती है। अलकनन्दा की दूसरी बड़ी सहायक नदी पिंडर है। पिंडर नदी पिंडरी ग्लेशियर (हिमागार) से निकलती है जो अलमोड़ा जिले में नन्दा कोट के पश्चिमी ढालों पर स्थित है। हर्मल के पास पिंडर नदी गढ़वाल जिले में प्रवेश करती है और कर्णप्रयाग में अलकनन्दा में मिल जाती है। कर्ण प्रयाग से रुद्र-प्रयाग तक अलकनन्दा पश्चिम की ओर मुड़ती है। रुद्र प्रयाग में ही केदारनाथ से आनेवाली मन्दाकिनी नदी अलकनन्दा में मिलती है। रुद्र प्रयाग से अलकनन्दा दक्षिण की ओर मुड़ती है। टेहरी राज्य का श्रीनगर इसी के किनारे बसा है। देव प्रयाग के पास अलकनन्दा और भागीरथी का संगम है। व्यासघाट के पास नायर नदी मिलती है। नायर नदी गढ़वाल के मध्यवर्ती भाग का पानी बहा लाती है। आरम्भ में पश्चिमी और पूर्वी दो नायर नदियां हैं। दोनों दूदा टोली पर्वत से निकलती हैं और भाटकोली के पास दोनों मिल जाती हैं। व्यासघाट से लक्ष्मण झूला तक गङ्गानदी पश्चिम की ओर बहती है। फुलारी के पास हुइंल नदी मिलती है। लक्ष्मणझूला से प्रायः हरिद्वार के पास तक गङ्गा देहरादून और गढ़वाल के बीच में सीमा बनाती है।

अलकनन्दा नाम कुबेरों की अलका पुरी से सम्बन्ध रखता है। कहा जाता है कि यह नदी आरम्भ में अलका पुरी से ही आई थी। अलकनन्दा बद्रीनाथ के उत्तर में निकलती है। माना गाँव के नीचे इसमें सरस्वती नदी मिलती है। विष्णु प्रयाग के पास नदी



गंगा के निवास के पास केदारनाथ का मन्दिर

में एक पवित्र (विष्णु) कुंड होने से इसके कुछ मार्ग को विष्णु गङ्गा कहते हैं। संगम के पास धौली की चौड़ाई ३० या ३५ गज़ है। अलकनन्दा की चौड़ाई २५ या तीस गज़ है। लेकिन दोनों नदियां बड़ी वेगवती हैं। संगम समुद्रतल से ४७४३ फुट ऊँचा है संगम का दृश्य बड़ा मनोहर है। संयुक्तधारा दक्षिण-पश्चिम की ओर चमोली को बहती है। मार्ग में रुद्र गंगा, गरूण गङ्गा, बाताल गंगा और बिरेही गंगा मिलती हैं। चमेली से अलकनन्दा दक्षिण की ओर मुड़ती है। नन्द प्रयाग में समुद्र-तल से २८०४ फुट की ऊंचाई पर नन्दाकिनी गंगा मिलती है। कर्ण प्रयाग (२, ३०० फुट) में पिंडर नदी अलकनन्दा से मिलती है। यह स्थान विष्णु प्रयाग से ४१ मील दूर है। कर्ण प्रयाग से १९ मील की दूरी पर रूद्र प्रयाग (१९१२ फुट) में मन्दागिनी का संगम है। यहां से आगे यह दक्षिण पश्चिम की ओर श्रीनगर होती हुई देव प्रयाग (१४८३ फुट) को जाती है। यहीं भागीरथी का संगम है। पुनार चट्टी से ४ मील की दूरी पर अलकनन्दा ३०० फुट ऊंची सपाट पहाड़ियों से इस प्रकार घिर जाती है कि यहाँ पर इसकी चौड़ाई केवल २५ फुट रह जाती है। संगम के पास संयुक्त-धारा की चौड़ाई २४० फुट हो जाती है। हिम के पिघलने पर इसमें धारा की चौड़ाई ४० फुट बढ़ आती है। रुद्र प्रयाग से पीपल कोठी तक इसके उत्तरी किनारे पर बांझ के वृक्ष हैं। इसके नीचे नन्द प्रयाग तक देवदारू के वृक्ष मिलते हैं। अलकनन्दा में मछलियां बहुत हैं। मछलियां प्रायः डेढ़ दो गज लम्बी रहती हैं। कोई कोई महसीर मछली १ मन भारी होती है। अलकनन्दा की बालू को धोकर लोग सोने के कण निकालते हैं।

सुन्दर स्वच्छ घाटों और हरे भरे मनोहर पर्वतों से घिरी हुई गंगा का दृश्य हरिद्वार में बड़ा सुन्दर है। हरि की पैढ़ी पर सर्वोत्तम दृश्य है। कुछ ही दूर दक्षिण मायापुर से गंगा नहर निकलती है। मायापुर से १ मील दक्षिण की ओर कनखल से ४ मील नीचे गंगा से बान गंगा नाम की उपशाखा निकलती है। सम्भव है पहले यहीं होकर गंगा बहती रही हो। बिजनौर जिले में गढ़वाल से निकल कर आने वाली पैली गाब और फिर रावलो के पास मालिन नदी गंगा में मिलती है। कहा जाता है कि मालिन नदी के किनारे ही कण्व ऋषि का आश्रम है जहां शकुन्तला और दुष्यन्त की भेंट हुई थी। इसी पर कालिदास ने जगत्प्रसिद्ध शकुन्तला नाटक लिखा है।

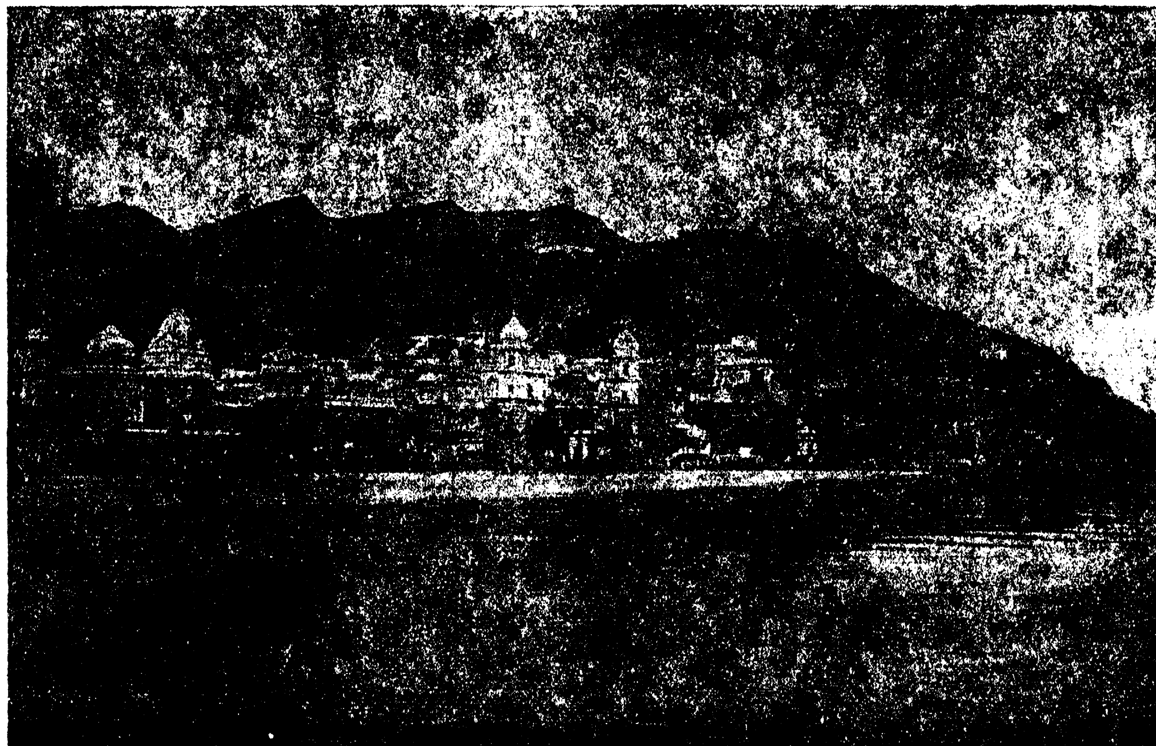
मुजफ्फर नगर जिले में गंगा के किनारे शुक्रताले एक अति प्राचीन और सुन्दर स्थान है। कहते हैं यहीं शुकदेव जी ने राजा परीक्षित को कथा सुनाई थी। शुक देव जी की पादुकाओं का मन्दिर ऊंचे टीले पर बना है मेरठ जिले में गंगा के किनारे पर गढ़ मुक्तेश्वर प्रसिद्ध स्थान है। कहते हैं गढ़मुक्तेश्वर पुराने समय में हस्तिनापुर का एक मुहल्ला था। इस समय हस्तिनापुर मुक्त गंगा से बहुत दूर पड़ गया है। बूढ़ गंगा कुछ झीलों की सहायता से हस्तिनापुर के पास एक द्वीप सी बनाती है। महाभारत के समय में हस्तिनापुर भारतवर्ष का एक अति प्रसिद्ध नगर था।

बुलन्द शहर जिले में गंगा के ऊँचे और कड़े किनारे पर अहार, अनूप शहर, राजघाट और राम घाट बसे हैं। कहा जाता है कि महाराज जन्मेजय ने नागयज्ञ अहार में ही किया था। राज घाट से तीन-चार मील दक्षिण की ओर नारोरा ग्राम है। यहीं से निचली गंगा-नहर निकलती है। राम घाट सुप्रसिद्ध तीर्थ है।

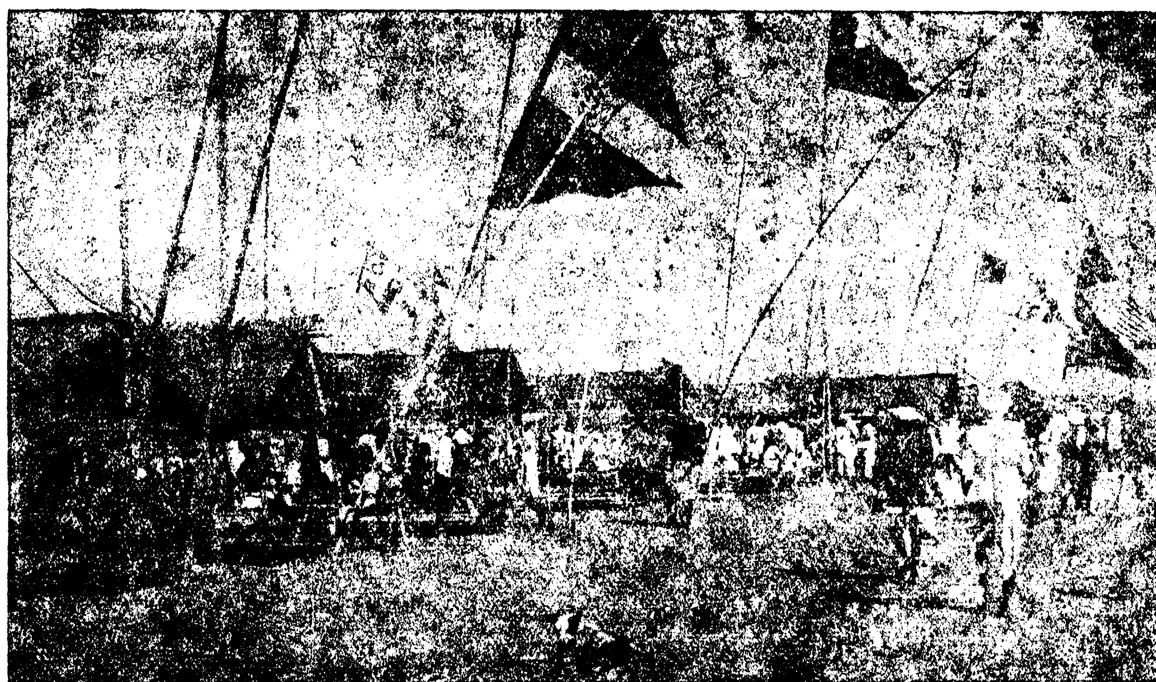
बदायूं जिले में कछला नामक स्थान पर गंगा स्नान का बड़ा मेला लगता है। यहां से २ मील दूर ककोरा में भी मेला लगता है। एटा जिले में गंगा से ३ मील दूर बूढ़ गंगा के किनारे सोरों एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। कहते हैं कि विष्णु जी ने बाराह अवतार लेकर यहीं हिरण्यकश्यप का वध किया था। तभी से इसका नाम शूकर क्षेत्र हुआ। इसी से बिगड़ कर सोरों नाम पड़ गया।

शाहजहांपुर जिले में भरतपुर गांव के पास कार्तिकी पूर्णिमा को ढाई घाट का मेला लगता है।

फर्रुखाबाद जिले में बूढ़ गंगा के किनारे पहला स्थान कम्पिल पड़ता है। यहां राजा द्रुपद की कन्या द्रौपदी का स्वयम्बर हुआ था। गंगा के किनारे फर्रुखाबाद की विश्रान्ते (विसरांते) बड़ी सुन्दर है। तीन मील की दूरी पर गंगा के ठीक किनारे फतेहगढ़ का किला है। फतेहगढ़ से ११ मील की दूरी पर सिंगीरामपुर



हरद्वार का एक दृश्य



प्रयाग के कुम्भ मेला का एक दृश्य

है। कन्नौज के पास ही गंगा और रामगंगा का संगम है। यहीं राजा जयचन्द के किले के खंडहर हैं। गजनी के समय में कन्नौज भारत का एक प्रतिभाशाली नगर था। यहां हजारों संगमरमर के मन्दिर और महल थे।

कानपुर जिले में अलीगढ़ जिले से निकलने वाली ईसन नदी एटा, मैनपुरी, फर्रुखाबाद होकर बिल्हौर (मढ़ गांव) के पास गंगा में मिल जाती है।

गंगा के किनारे बिठूर एक प्रसिद्ध तीर्थ है। कानपुर का कारबारी शहर भी गंगा के किनारे बसा है। किनारे पर कई घाट बने हैं। यहीं गंगा के ऊपर लखनऊ को जानेवाली लाइन का पुल बना है। उन्नाव जिले में डौंडिया खेरा और बकसर दो बड़े गांव गंगा के किनारे हैं। कहा जाता है कि श्रीकृष्ण जी ने कंस नामक राक्षस का बध यहीं किया था। छोब और लोनी दो छोटी सहायक नदियां इस जिले में गंगा में मिलती हैं। फतेहपुर जिले में गंगातट पर शिवराजपुर एक अच्छा स्थान है।

इलाहाबाद जिले में गंगा के किनारे सिंगरौर (शृंगवेरपुर) एक पुराना स्थान है। पास ही एक पुराना खम्भा है जिसके ऊपर से शायद पुराने समय में नगाड़े और झंडी द्वारा इलाहाबाद को सन्देश भेजे जाते थे। यहां के मरघट घाट में मगर बहुत हैं। लेकिन वे घाट पर स्नान करने वालों को नहीं छेड़ते हैं। फाफामऊ के पास गंगा के ऊपर रेल और सड़क का पुल है। इसके आगे दारागंज में छोटी लाइन का पुल है। यहां से थोड़ी दूर पर किला के सामने गंगा और यमुना का संगम है। गंगा का सफेद मटीला और यमुना का नीला जल अलग स्पष्ट दिखाई देता है। संगम प्रायः प्रतिवर्ष किले से कुछ दूर हटता जा रहा है। दूसरे ऊँचे किनारे पर इलाहाबाद से भी अधिक पुराना झूंसी (प्रतिष्ठानपुर) स्थान है। प्रति १२ वर्ष के बाद होनेवाला प्रयाग का कुम्भ और ६ वर्ष के बाद अर्द्ध कुम्भ मेला भारतवर्ष भर में प्रसिद्ध है। यात्री दूर दूर से आते हैं। संक्रान्ति के स्नान करने वालों की संख्या ५ लाख से ऊपर हो जाती है। टोंस के संगम के पास सिरसा नगर बसा है। दूसरी ओर लच्छागिरि का पुराना स्थान है। मिर्जापुर जिले में गंगा नदी कौंदिया गांव के पास चक्कर खाकर एक प्रायः द्वीप सा बनाती है। फिर यह विन्ध्याचल होती हुई मिर्जापुर को घूम जाती है। यहां ऊंचे किनारे पर बसे हुये मिर्जापुर शहर का दृश्य बड़ा सुन्दर है। घाटों से किनारे की सुन्दरता और भी अधिक बढ़ गई है। चुनार के पास विन्ध्याचल पहाड़ी का सिरा गंगा को प्रायः छूता है। इसी से इसका नाम चरणाद्रि या चुनार पड़ा। इसी सिरे पर गंगा तट पर भर्तृहरि के समय का पुराना किला बना है जो पहले बंगाल से आनेवाले मार्ग की रखवाली करता था। इस समय बालक कैदियों के सुधारने के लिये यहां जेल है। पठार की ओर से आकर गंगा में मिलने वाले नालों में जिरगो सर्व प्रसिद्ध है।

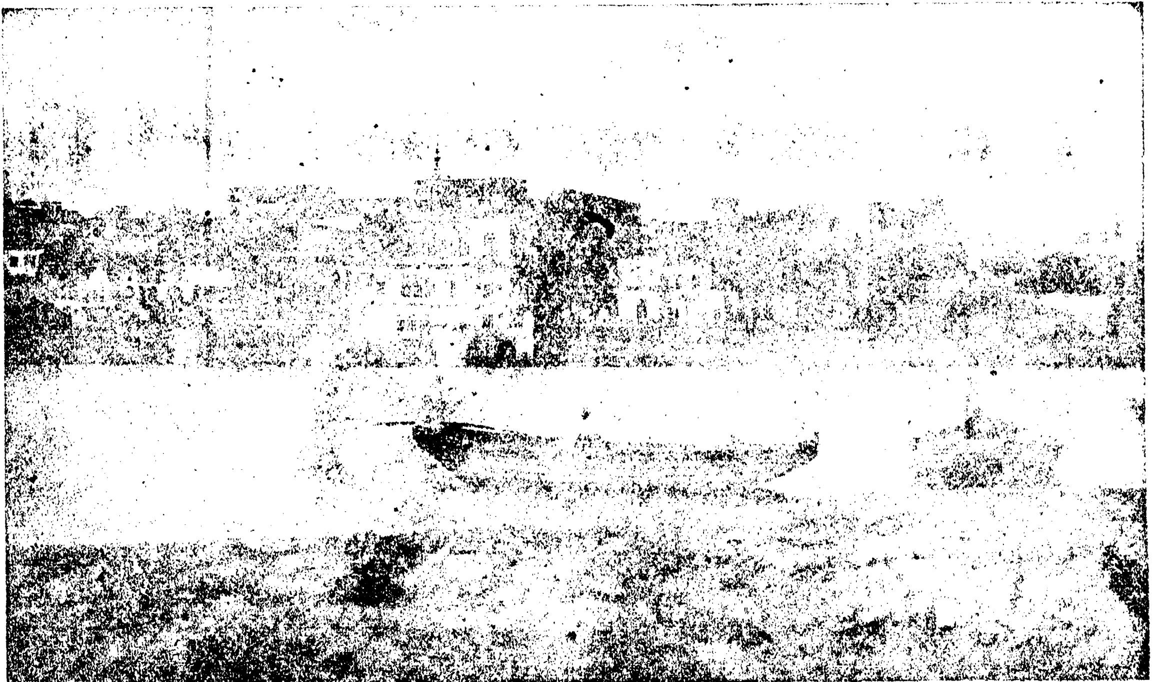
मिर्जापुर जिले और इससे आगे गंगा बहुत से मोड़ बनाकर बहती है एक सिरे से दूसरे सिरे तक मिर्जापुर जिले में गंगा के प्रवाह-मार्ग की लम्बाई सीधी रेखा में ५६ मील है। लेकिन मोड़ों के कारण इसकी लम्बाई ८४ मील हो जाती है।

बनारस जिले में इन्हीं मोड़ों की अधिकता से गंगा का कभी बांया और कभी दाहिना किनारा ऊँचा हो जाता है। बनारस या काशी शहर इसी ऊँचे बायें अर्द्ध चन्द्राकार किनारे पर बसा है। बनारस के घाट अत्यन्त सुन्दर हैं। यहां स्नान करने के लिये दूर दूर से यात्री आते हैं। दूसरी ओर गंगा तट पर काशी नरेश का महल और किला बना है। बनारस से लगभग चार मील की दूरी पर गंगा तट पर विशाल हिन्दू विश्वविध्यालय बना है। बनारस जिले में गोमती असी और बरना नदियां गंगा में मिलती हैं। बरना और असी का संगम होने के कारण ही काशी का दूसरा नाम वाराणसी या बनारस पड़ा।

गाजीपुर जिले में गंगा अधिक चौड़ी और गहरी हो जाती है। एक दो स्थानों पर धारा के बीच में टापू बन गये हैं। गाजीपुर शहर गंगा के कुछ ऊँचे किनारे पर बसा है। मिर्जापुर के सामने इसकी ऊँचाई बहुत कम है। गाजीपुर घाट में गंगा के एक किनारे से दूसरे किनारे के लिये स्टीमर चला करते हैं।

बलिया जले में गंगा के किनारे बहुत कम ऊंचे रह गये हैं। बाढ़ के दिनों में किनारे के गांव अक्सर

मथुरा का विश्राम घाट



मथुरा में जमुना का एक दृश्य

कट जाते हैं। बलिया शहर गंगा के किनारे बसा है। बाढ़ के दिनों में इसे भी डर रहता है। बलिया जिले को छोड़ कर गंगा शाहाबाद या आरा जिले में प्रवेश करती है जो विहार प्रान्त में स्थित है।

यमुना—यमुना नदी गढ़वाल में समुद्र तल से १०८४९ फुट की ऊंचाई पर यमुनोत्री हिमागार से (प्रायः ५ मील उत्तर) निकलती है। बन्दर पांच पर्वत (जो २०,७३१ फुट ऊंचा है) से यमुना का उद्गम ८ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। उद्गम से ७ मील दक्षिण की ओर बहने के बाद यमुना २२ मील तक उत्तर-पश्चिम की ओर (कोटनूर तक) बड़े वेग से बहती है। केवल १६ मील बहने पर ही यह ५००० फुट से अधिक नीचे उतर आती है। इसी बीच में बदियार और कमलाद दो छोटी पहाड़ी नदियां यमुना के दाहिने किनारे पर आ मिलती हैं। इसके आगे यमुना फिर २६ मील तक ठीक दक्षिण की ओर बहती है। इस मार्ग में बदरी और अस्लौर सहायक नदियां यमुना में आ मिलती हैं। अस्लौर के संगम के आगे यमुना अचानक पश्चिम की ओर मुड़ती है। १४ मील संगम तक इसी दिशा में बहती है। यहीं टौंस नदी यमुना में मिलती है। टौंस अधिक बड़ी नदी है। इस संगम के आगे यमुना हिमालय को पीछे छोड़कर दून-घाटी में प्रवेश करती है। यहां यमुना का बहाव दक्षिण-पश्चिम की ओर हो जाता है। इस ओर गिरि और सरमौर नदियां पश्चिम की ओर से और आसनदी पूर्व की ओर से यमुना में मिलती है।

अपने मार्ग के ९५वें मील पर यमुना शिवालिक को पीछे छोड़कर सहारनपुर जिले में फैजाबाद गांव के पास मैदान में प्रवेश करती है। यहां समुद्र तल से यमुना की उंचाई १२७६ फुट है। मैदान में ६५ मील तक यमुना दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती है और पंजाब के अम्बाला और कर्नाल जिलों को संयुक्त प्रान्त के सहारनपुर और मुजफ्फर नगर जिलों से अलग करती है। मैदान में पहुँचते पहुँचते यमुना एक बड़ी नदी बन जाती है। यहीं फैजाबाद गांव के पास यमुना नदी से पूर्वी यमुना और पश्चिमी यमुना नहरें निकलती हैं। राजघाट के पास पूर्व की ओर से आकर मस्करा नदी यमुना में मिलती है। बिधौली (मुजफ्फर नगर जिले में) यमुना के पास ठीक दक्षिण की ओर मुड़ती है और ८० मील (दिल्ली के पास) तक इसी दिशा में बहती है। दिल्ली से दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़कर (२७ मील) दनकौर के आगे यमुना फिर दक्षिण की ओर बहने लगती है। इसी मार्ग में कठ नदी और हिंडन पूर्व की ओर से सबी नदी पश्चिम की ओर से यमुना में आ मिलती हैं। दनकौर से मथुरा के पास महावन (१०० मील) तक यमुना में कोई सहायक नदी नहीं मिलती है। यमुना नदी बुलन्द शहर और अलीगढ़ जिलों को तो पंजाब के गुरूगांव जिले से अलग करती है। लेकिन इसके आगे होदा के पास से यह संयुक्त प्रान्त के भीतर होकर बहती है। पहले यह मथुरा जिले के बीच में बहती है। महावन के पास यह आगरा जिले में प्रवेश करती है। महावन के पास से यमुना पूर्व की ओर मुड़ती है और २०० मील तक दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। इस मार्ग में आगरा और इटावा के कटे फटे ऊंचे किनारों के पड़ोस में यमुना विलक्षण मोड़ बनाती है। यमुना के जितने ऊँचे किनारे आगरा और इटावा जिलों में हैं उतने ऊंचे किनारे मैदान के ऊपरी भागों में भी नहीं हैं। आगरे के पास करवा नदी यमुना में बाईं ओर से आकर मिलती है। दक्षिण की ओर दाहिने किनारे पर उतांगन नदी यमुना में मिलती है। आगरा, फीरोजाबाद, बटेश्वर और इटावा यमुना के ऊंचे किनारे पर बसे हैं। बटेश्वर के पास यमुना मुड़कर एक प्रायः द्वीप सा बनाती है। यहीं कार्तिक के महीने में भारी मेला लगता है। इटावा के आगे यमुना १४० मील (हमीरपुर) अधिक दक्षिण की ओर मुड़ती है।

इटावा के दक्षिणी प्रदेश को पार करके यमुना इटावा और कानपुर जिलों को जालौन और हमीरपुर जिलों से अलग करती है। काल्पी के नीचे यमुना के उत्तर किनारे पर सेंगर नदी मिलती है। इटावा शहर से ४० मील नीचे की ओर विशाल चम्बल नदी मध्यभारत का पानी यमुना में उंडेल देती है। इटावा और जालौन की सीमा पर यमुना में दक्षिण की छोटी सिन्ध नदी मिलती है। हमीरपुर के पास यमुना और बेतवा का संगम है। हमीरपुर से इलाहाबाद (गंगा के संगम) तक यमुना ठीक पूर्व की ओर बहती है। इस मार्ग में

यह फतेहपुर जिले को बांदा से अलग करती है। कुछ दूर तक यह अलाहाबाद और बांदा के बीच में सीमा बनाती है। इसी मार्ग में केन नदी यमुना में मिलती है। अन्त में यह इलाहाबाद शहर से प्रायः तीन मील नीचे किले के पूर्व में गंगा से मिल जाती है। किले से एक मील पश्चिम की ओर यमुना के ऊपर प्रान्त भर में सब से अधिक मजबूत और विशाल पुल बना है। पुल के ऊपरी भाग में ईस्ट-इंडियन रेलवे की दुहरी लाइन है। बांई ओर वाली (पूर्वी) लाइन से गाड़ियां कलकत्ते की ओर जाती हैं। दाहिनी (पश्चिमी) ओर भी लाइन पर कलकत्ते से इलाहाबाद के लिये रेलगाड़ियां आया करती हैं। निचले खंड में दुहरी पक्की सड़कें हैं। एक से मोटर चलते हैं। दूसरी बैल गाड़ियों और पैदल जाने वालों के लिये है। पुल से २ मील पश्चिम की ओर सी ड्रोम है जहां पानी में उतरने वाले हवाई जहाज यमुना में उतरा करते हैं। नहरों के निकलने से आगरे के पास तक यमुना में बहुत कम पानी रहता है। लेकिन चम्बल आदि दक्षिण मध्य भारत की नदियों का पानी घट जाने से इलाहाबाद में यमुना बड़ी शानदार और गम्भीर होती है। पुल के ऊपर से यमुना का दृश्य सूर्योदय और सूर्यास्त के समय बड़ा मनोहर लगता है। जहां तक गहरा जल है वहां तक यमुना में छोटी बड़ी नावें बराबर चला करती हैं। उद्गम से गंगा संगम (इलाहाबाद) तक यमुना की समस्त लम्बाई ८६० मील है। इस मार्ग में इटावा तक यमुना गंगा के समानान्तर बहती है इसके आगे यमुना और गंगा के बीच का अन्तर कम होता जाता है अन्त में इलाहाबाद में वह गंगा से मिल जाती है। संगम के पास यमुना का हरा नीला जल एकदम स्पष्ट दिखलाई देता है कालिदास और तुलसीदास ने संगम का बड़ा रोचक वर्णन किया है।

उद्गम से ४० मील की दूरी पर चम्बल नाक स्टेशन के पास बम्बई बड़ौदा सेण्ट्रल इंडिया रेलवे का पुल चम्बल के ऊपर बना है।

चम्बल—(प्राचीन चर्मणावती) यमुना की एक प्रधान सहायक नदी है। यह इन्दौर राज्य में महो छावनी से ९ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर जनपाओ पहाड़ी से २०१९ फुट की उंचाई से निकलती है। विन्ध्याचल के उत्तरी ढालों से उतर कर उत्तर की ओर यह ग्वालियर, इन्दौर और सीतामऊ राज्यों में बहती है। झालावार राज्य को छूती हुई चम्बल नदी अपने उद्गम से १९५ मील की दूरी पर चौरासी गढ़ गांव के पास राजपूताना में प्रवेश करती है। मध्य भारत की सहायक नदियों में चँवला और सिप्रा (क्षिप्रा) प्रधान हैं। राजपूताना में पठार के कड़े किनारे को काटने में चम्बल का मार्ग बड़ा संकुचित और मोड़दार हो जाता है। यहीं भैंसरोगढ़ के पास भाभनी नदी चम्बल में मिलती है। इससे तीन मील ऊपर चम्बल में सुन्दर चूर्ली या प्रपात हैं। एक प्रपात की उंचाई ६० फुट है। यहां चम्बल में गुफाओं के भीतर तीस चालीस फुट गहरे भंवर बन गये हैं। आगे उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ कर चम्बल नदी बूंदी और कोटा के बीच में सीमा बनाती है। कोटा शहर के पास चम्बल एक चौड़ी और मन्दवाहिनी नदी बन गई है। पानी के ऊपर वृक्षों और लताओं के ऊपर एकदम ऊंचे उठे हुये किनारे बड़े सुन्दर मालूम होते हैं। कोटा से आगे चम्बल में मेज और काली सिन्ध नदियां आ मिलती हैं। जैपुर, कोटा और ग्वालियर की सीमा के पास इसमें पार्वती नदी मिलती है। इसके आगे चम्बल जैपुर, करौली और धौलपुर राज्यों के बीच में सीमा बनाती है। जैपुर राज्य की बानास नदी चम्बल में मिलती है। धौलपुर नगर के पास पहुँच कर चम्बल नदी ३०० गज चौड़ी हो जाती है। इसका पानी ऊंचे किनारों से १०० फुट नीचे बहता है। वर्षा ऋतु में इसमें ५० फुट और कभी कभी १०० फुट ऊंची बाढ़ आती है। उस समय इसकी चौड़ाई १ मील हो जाती है। इसके किनारे भूल-भुलैयों की तरह गहरे (९० फुट, और चक्करदार नालों से कटे हैं। धौलपुर से ३ मील दक्षिण की ओर चम्बल के ऊपर जी० आई० पी० रेलवे का बड़ा और सुन्दर पुल बना है। पास ही राजघाट में पीपों का (पाटून पुल है। आगरे से बम्बई को सड़क इसी पुल से जाती है। वर्षाऋतु में पुल टूट जाता है। ग्वालियर राज्य और झांसी-इटावा के बीच में सीमा बनाने के बाद चम्बल नदी इटावा जिले में प्रवेश करती है और इटावा शहर से २५ मील दक्षिण-पूर्व की ओर यमुना में मिल जाती है। संगम के पास

चम्बल का शुद्ध नीला जल कुछ दूर तक स्पष्ट दिखाई देता है। वर्षाऋतु में यमुना की अपेक्षा चम्बल नदी कहीं अधिक जल अपने साथ लाती है। चम्बल के समस्त मार्ग की लम्बाई ६५० मील है। लेकिन सीधी रेखा में इसका उद्गम इसके मुहाने (संगम) से केवल ३३० मील दूर है। पठारी प्रदेश में चक्कर काटने से चम्बल का मार्ग इतना अधिक लम्बा होगया है।

बेतवा—(प्राचीन वेत्रावती) भोपाल राज्य के कुमारी गांव के पास निकलती है। भोपाल राज्य में ५० मील बहने के बाद यह भिलसा के पास ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। ललितपुर (झांसी) परगने में यह संयुक्त प्रान्त में पहुँचती है। उत्तर और उत्तर-पूर्व की ओर बह कर यह ग्वालियर राज्य की सीमा बनाती है। इसके बाद झांसी जिले को काटकर ओरछा राज्य में पहुँचती है। कुछ दूर तक यह उत्तर में जालौन और दक्षिण में झांसी तथा हमीरपुर जिलों के बीच में सीमा बनाती है। १९० मील संयुक्तप्रान्त में बहने के बाद हमीरपुर के पास बेतवा नदी यमुना में मिल जाती है। बेतवा नदी का प्रायः समस्त मार्ग पहाड़ी है और नावों के चलने योग्य नहीं है। देवगढ़ के पास यह एक विचित्र मोड़ बनाती है। यहीं एक जर्जर किला है। झांसी के आगे १६ मील तक पथरीली नली में बहने के बाद बेतवा कछारी (कांप की बनी हुई) घाटी में पहुँचती है। झांसी से १५ मील की दूरी पर परीछा गांव के पास बेतवा में एक बांध बनाया गया है। बेतवा नहर यहीं से निकलती है और झांसी, जालौन और हमीरपुर जिलों में सिंचाई के काम आती है। बेस, जमनी, धसान और पावन बेतवा की सहायक नदियां हैं। धसान नदी भोपालराज्य में विन्ध्याचल पहाड़ियों के बीच में निकलती है। ६० मील तक मध्यप्रान्त के सागर जिले में बहकर झांसी जिले की ललितपुर तहसील को छूती है। ३८ मील तक यह झांसी और सागर के बीच में सीमा बनाती है। इसके बाद बुन्देलखंड के कई छोटे छोटे राज्यों को पार करके अपने अन्तिम मार्ग में ५० मील तक झांसी और हमीरपुर के बीच में सीमा बनाती है। जालौन जिले के सीमा के पास चंदवारी गांव में यह बेतवा में मिल जाती है। इसका अधिकतर मार्ग पथरीला है। कहीं कहीं रेतीला है और खड्डों और नालों से कटा फटा है। वर्षाऋतु में यह भयानक हो जाती है और ऋतुओं में इसमें बहुत पानी रहता है।

केन (प्राचीन कर्णावती) नदी विन्ध्याचल के उत्तरी पश्चिमी ढालों से भोपालराज्य में निकलती है। इसका उद्गम समुद्र-तल से १७०० फुट ऊंची है। ३५ मील उत्तर की ओर बहने के बाद बन्देर श्रेणी पार करते समय पिपरिया घाट में यह एक छोटा प्रपात बनाती है। इसके आगे यह पश्चिम की ओर मुड़ती है और पहाड़ को रगड़ती तलहटी को छूती हुई बहती है। पटना और सुनार नदियां इसके बायें किनारे पर आ मिलती हैं। पन्ना राज्य को पार करके यह बांदा जिले में प्रवेश करती है। यहां इसमें कोइल, बवन्दन और चन्द्रावल नदियां मिलती हैं। बांदा शहर इसी के किनारे पर बसा है। पास ही इस पर रेल का पुल है। [illegible] मील बहने के बाद केन नदी चिल्ला घाट के पास यमुना में गिर जाती है। केन नदी की तली काफी गहरी और स्थिर हो गई है। लेकिन इसमें स्थान स्थान पर पत्थर और चट्टानें भरी पड़ी हैं। इसलिये इसमें नावें नहीं चल सकती हैं। केवल वर्षाऋतु में हलका बोझ लेकर छोटी छोटी नावें चिल्लाघाट से बांदा ([illegible] मील) तक जाती हैं।

सिन्धनदी [illegible]७८० फट की उंचाई पर टोंक राज्य के नैनवास गांव के एक ताल से निकलती है। पहले २० मील में यह टोंक राज्य में बहती है। इसके बाद यह ग्वालियर राज्य में पहुँचती है। कुछ दूर तक यह ग्वालियर और दतिया राज्य के बीच में सीमा बनाती है। १३० मील तक यह एक साधारण नदी मालूम पड़ती है। नरवर के पास इसकी चौड़ाई और इसकी तेजी एक बड़ी नदी की तरह हो जाती है। पार्वती, महुअार, नून आदि छोटी छोटी पहाड़ी नदियां इसमें गिरकर इसका जल बढ़ाती रहती हैं। इसके किनारे बहुत ऊंचे और पथरीले हैं। इसलिये यह सिंचाई के लिये अनुकूल नहीं है। लेकिन पेड़ों से ढकी हुई पहाड़ियों के बीच में इसका दृश्य बड़ा मनोहर है। सिन्ध नदी २५० मील लम्बी है। इसका अन्तिम मार्ग संयुक्तप्रान्त में है। यहीं यह यमुना में गिर जाती है।

टोंस (तमसा) नदी मैहर राज्य में कैमूर पर्वत श्रेणी से २००० फुट की ऊंचाई से निकलती है। १२० मील मैहर राज्य के विषम पहाड़ी प्रदेश को पार करने के बाद टोंस नदी रीवा राज्य के उपजाऊ प्रदेश में पहुँचती है। यहाँ इसमें सतना नदी मिलती है। चालीस मील और नीचे पठार के सिरे पर चुरवा के पास बिहार और चचैया सहायक नदियाँ मिलती हैं। यहीं यह सुन्दर चचाई-प्रपात बनाती है। बिहार नदी ६०० फुट चौड़ा और ३७० फुट ऊंची है। टोंस प्रपात २०० फुट ऊंचा है। इसके बाद टोंस नदी चौड़ी होकर समतल भूमि के ऊपर बहती है। देउरा गांव के पास यह इलाहाबाद जिले में प्रवेश करती है। ४४ मील उत्तर पूर्व की ओर बहने के बाद टोंस नदी सरसा के पास (गङ्गा-यमुना के संगम से १६ मील नीचे) गङ्गा में मिल जाती है। टोंस नदी १६५ मील लम्बी है। इसका दृश्य बड़ा मनोहर है। बेलन नदी टोंस की प्रधान सहायक नदी है। बेलन मिर्जापुर जिले के पठार से निकलती है और उस ओर भी बहुत सा जल बहा लाती है। ९५ मील सुन्दर प्रदेश में बहने और १०० फुट ऊंचा प्रपात बनाने के बाद बेलन नदी इलाहाबाद जिले को पार करके ४० मील तक रीवां राज्य में बहती है। रीवा राज्य और इलाहाबाद जिले की सीमा के पास यह टोंस में मिल जाती है। जहां टोंस नदी गङ्गा से मिलती है उसके पास ही इस पर ईस्ट इण्डियन रेलवे का पुल बना है। टोंस में अचानक भयानक बाढ़ आ जाती है। २५ फुट की बाढ़ साधारण है। एक वर्ष इसमें ६५ फुट ऊँची बाढ़ आ गई।

कर्मनासा नदी कैमूर पहाड़ी के पूर्वी सिरे से निकलती है और उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। दरधार के पास यह शाहाबाद (आरा) और मिर्जापुर जिले के बीच में सीमा बनाती है। इसके आगे १५ मील तक यह मिर्जापुर जिले के भीतर बहती है। उत्तर-पूर्व की ओर मुड़कर फिर यह कुछ दूर तक संयुक्त प्रान्त और शाहाबाद के बीच में सीमा बनाती है। चौसा के पास यह गंगा में मिल जाती है। कर्मनासा १४६ मील लम्बी है। दुर्गावती और धर्मावती इसकी दो सहायक नदियाँ हैं। पहाड़ी भागों में इसकी तली पथरीली और किनारे सपाट हैं। यहाँ इसका दृश्य बड़ा सुन्दर है। इसकी धारा तेज है। जगह जगह पर तलो में गड्ढे हैं। लेकिन पानी निर्मल है। इसमें मछलियाँ बहुत पाई जाती हैं। मैदान में प्रवेश करने पर यह १५० गज चौड़ी हो जाती है। चिकनी मिट्टी में इसकी तली गहरी धँस जाती है। गर्मी की ऋतु में इसमें बहुत कम पानी रह जाता है। वर्षा ऋतु में यह पचास साठ मन बोझा ढोने वाली नावों के चलने योग्य गहरी हो जाती है। मिर्जापुर जिले में छनपठार के पास यह १०० फुट ऊँचा प्रपात बनाती है। चौसा के पास इसके ऊपर ईस्ट इण्डियन रेलवे का पुल बना है। कर्मनासा के तट पर रहने वाले हिन्दू इसके जल में स्नान नहीं करते हैं। कहते हैं कि राजा त्रिशंकु ने ब्रह्म हत्या की थी। इस पाप से छुड़ाने के लिए एक ऋषि ने एक कुंड में सब तीर्थों का जल एकत्रित किया। इसी में उसने राजा त्रिशंकु को स्नान करा के उसे पाप से मुक्त किया। इसी अपवित्र जल से भरे हुये कुंड से निकलने के कारण हिन्दू लोग इससे बचते हैं। लेकिन तट पर बसे हुये लोग कर्मनासा का जल सभी कामों में लाते हैं। अति प्राचीन समय में कर्मनासा आर्य उपनिवेशों की सीमा बनाती थी। इसके दूसरे किनारे पर अनार्य लोग बसे थे।

रामगंगा गढ़वाल में हिमालय की बाहरी श्रेणी से निकलती है। इसके निकास के पास विशाल बन है। मेजचौरी तक रामगंगा दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। मेजचौरी से अल्मोड़ा की सीमा तक यह ठीक पूर्व की ओर बहती है। यहाँ यह गिवार की उपजाऊ घाटी को सींचती है। मार्चूला के पास रामगंगा फिर गढ़वाल जिले में प्रवेश करती है। इस भाग में रामगंगा की प्रधान सहायक नदी मंडल है जो लैन्स डाउन के दक्षिण और पूर्व की पट्टियों का पानी बहा लाती है।

१०० मील तक गढ़वाल और कमायूं के पर्वतीय प्रदेश में प्रबल वेग से बहने के पश्चात् रामगङ्गा बिजनौर जिले के कालिया गढ़ के पास मैदान में प्रवेश करती है। १५ मील मैदान में बहने के बाद इसमें कोह नदी मिलती है। इसके आगे यह मुरादाबाद जिले में पहुँचती है और दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। मुरादाबाद शहर इसके ऊँचे दाहिने किनारे पर बसा

है। इसके आगे टेढ़ मार्ग से बह कर यह रामपुर रियासत में पहुँचती है। बरेली जिले में पहुँच कर यह वर्षा ऋतु में देशी नावों के चलने योग्य हो जाती है। इसके ऊपर यह बांस और लकड़ी के बेड़े बहाने के काम आती है। गरमी की ऋतु में इसमें पांज हो जाती है। बरेली शहर इसके किनारे के पास ही बसा है। बरेली छोड़कर यह बदायूं जिले में पहुँचती है। शाहजहांपुर जिले में जलालाबाद में पड़ोस में यह इतनी गहरी हो जाती है कि इसमें बड़ी नावें चल सकती हैं, यहां से यह हरदोई जिले में पहुँचती है और ३७३ मील बहने के बाद कन्नौज के सामने यह गंगा में मिल जाती है। कुसी, संका, बहगुल और गर्रा (दखेहर) इसकी सहायक नदियां हैं। रामगंगा अक्सर अपना मार्ग बदलती रहती है। बाढ़ के दिनों में यह बड़ी भयानक हो जाती है। पड़ोस के कुछ गांवों को यह काट कर बहा देती है। कुछ को डुबा देती है। इसी से बड़े गांव नदी तट से दूर बसे हैं। छोटे गांव झाऊ और फूस के बने हैं। बाढ़ के घटने पर कहीं यह उपजाऊ मिट्टी और कहीं यह बालू की तह बिछा देती है।

गोमती नदी पीलीभीत शहर से २० मील पूर्व की ओर निकलती है। उद्गम के पास १२ मील तक यह एक नाले के समान छोटी है और यहां पर यह गरमी की ऋतु में सूख जाती है। गठई नाम की छोटी धारा के मिलने से गोमती की तल बन जाती है। उद्गम से ३५ मील की दूरी पर जोकनई नामक नदी के मिलने से गोमती की धारा में सदा पानी बहता रहता है। कुछ मील आगे शाहजहांपुर जिले की पुवायां तहसील में इस पर २५० फुट लम्बा पुल बना है। इसके आगे घास और पौधों से भरी हुई गोमती नदी बड़ी धीमी चाल से टेढ़ा मार्ग बना कर बहती है। मुहम्मदी के नीचे इसकी धारा चौड़ी (१०० फुट से २०० फुट तक) होने लगती है। इसके किनारे भी ऊँचे हो जाते हैं। उद्गम से १८० मील दूर लखनऊ शहर के पास कहीं कहीं इसके किनारे पानी के ऊपर ६० फुट ऊँचे हैं। सीतापुर जिले में कथना या सरायान नदियां गोमती में मिलती हैं। लखनऊ शहर में गोमती के ऊपर दो लोहे के रेलवे पुल और एक सड़क का (पत्थर का) पुल बना है। लखनऊ के आगे गोमती फिर टेढ़ी चाल से बाराबंकी। सुल्तानपुर और जौनपुर में बहती है। सीधे मार्ग की अपेक्षा नदी का मार्ग लखनऊ से जौनपुर तक दुगुना बड़ा है। आगे बढ़ने पर नदी की चौड़ाई ६०० फुट है। इसके ऊपर सुन्दर ६५४ फुट लम्बा पुराना मजबूत पुल बना है। जौनपुर के नीचे इसमें सई नदी मिलती है। इसके आगे गोमती बनारस जिले में पहुँचती है और ५०० मील बहने के बाद सैदपुर के पास गाज़ीपुर जिले में गंगा में मिल जाती है। (शेष वर्णन पीलीभीत जिले के के साथ दिया गया है)।

सारदा नदी १००० फुट की ऊँचाई पर हिमालय की उस हिमाच्छादित उच्च श्रेणी से निकलती है। जो कमायूं को तिब्बत से अलग करती है। पर्वतीय प्रदेश में १४८ मील बहने के बाद सारदा नदी बरमदेऊ (ब्रह्मदेव) के पास प्रबल वेग से मैदान में प्रवेश करती है। इस स्थान की ऊँचाई समुद्र तल से ८४७ फुट है। यहां पर नदी ४५० फुट चौड़ी है। सारदा नहर यहीं से निकलती है। बरमदेउ के पास सारदा नदी कई धाराओं में बट जाती है। ५ मील नीचे बनबसा के पास फिर यह एक दूसरे से मिल जाती हैं। कुछ आगे धारायें फिर पृथक हो जाती हैं। उद्गम से १६८ मील की दूरी पर यह धारायें मुन्डिया घाट के पास फिर एक दूसरे से मिल जाती हैं। यहीं सारदा का अन्तिम प्रबल प्रपात है। इसके आगे सारदा मैदान की एक साधारण नदी के समान बन जाती है। उद्गम से १९० मील की दूरी पर मोथिया घाट के पास यह चौका नदी से मिल जाती है। आगे बहने पर संयुक्त धारायें अन्त में घाघरा में गिर जाती हैं।

घाघरा नदी ३०-४० उत्तरी अक्षांश और ८०.४८ पूर्वी देशान्तर में तिब्बत से निकल कर नैपाल में कर्नालीया कौरियाली नाम से बहती है। शीशा पानी के पास यह हिमालय को पार करती है। यहीं से पूर्व की ओर यह गिना नाम की एक शाखा नदी फेंक देती है। कौरियाली खीरी और बहरायच जिलों के बीच में सीमा बनाती है। कुछ मील आगे इसमें मिल जाती है। फिर सुहेली नदी आकर मिलती है। सुहेली सारदा की तीन शाखाओं में से एक है। सारदा की प्रधान शाखा दहावर मल्लानपुर के पास मिलती है। पास ही सरयू का संगम है। पहले

सरयू गोंडा जिले में मिलती थी। बहराम घाट के पास सारदा की तीसरी शाखा चौका मिलती है। यहां से संयुक्त धारा को घाघरा या सरयू नाम से पुकारते हैं। इसके आगे घाघरा पूर्व की ओर मुड़ कर गोंडा जिले को बाराबंकी और फैजाबाद से अलग करती है। आजमगढ़ में इससे छोटा सरयू नाम की शाखा फूट निकलती है। यह शाखा आजमगढ़, गाजीपुर बलिया में बहने के बाद गंगा में मिल जाती है।

घाघरा और उसकी सहायक नदियों में नाव चलती हैं। नैपाल से बहुत सा चावल लकड़ी आदि माल इसी के मार्ग से आता है। टांडा (फैजाबाद) और बरहज (गोरखपुर) घाघरा तट के प्रधान व्यापारिक केन्द्र हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से सर्व प्रधान अयोध्या है।

इसे सब कहीं से घाघरा के नाम से पुकारते हैं। बहराम घाट के आगे यह बाराबंकी और फैजाबाद जिले को गोंडा और बस्ती से अलग करती है। अयोध्या के पास इसे कुछ दूर गोरखपुर की सीमा (बेलघाट) तक सरजू कहते हैं। वर्षा ऋतु में इसमें बहुत सा पानी रहता है और उस समय यह गंगा से अधिक बड़ी मालूम पड़ती है। बाढ़ के बाद इसमें रेतीले टीले या मंझा निकल आते हैं। किनारे के जिलों की सीमा प्रधान गहरी धारा से निश्चित होती है। धारा के इधर उधर से जाने से इसके समीपवर्ती जिलों का क्षेत्रफल भी कुछ घटता बढ़ता रहता है।

राप्ती नदी नैपाल में हिमालय की बाहरी श्रेणी से निकलती है। पहले ४० मील तक पर्वतीय प्रदेश में यह दक्षिण की ओर बहती है। फिर ४५ मील तक उत्तरी पश्चिमी दिशा में बहने के बाद बहराइच और गोंडा जिले में ९० मील बहने के बाद यह बस्ती जिले में पहुँचती है यहां कांप की बलुई और चिकनी मिट्टी में इसका मार्ग बहुत टेढ़ा हो जाता है। इस ओर इसकी दो धारायें हो जाती हैं। उत्तरी धारा अधिक पुरानी है। इसमें वर्षा ऋतु में पानी रहता है और ऋतुओं में यह प्रायः सूखी पड़ी रहती है। यह अपना मार्ग अक्सर बदलती रहती है। बस्ती जिले में असंख्य झीलों (तालों) का पानी इसमें पहुँचता है। बस्ती जिले के बाद यह गोरखपुर जिले में पहुँचती है। यहीं बूढ़ी राप्ती नदी नावों के चलने योग्य हो जाती है। गोरखपुर शहर इसी के किनारे पर बसा है। ४०० मील बहने के बाद यह घाघरा नदी में मिल जाती है।

बड़ी गंडक को नारायणी या सालग्रामी भी कहते हैं। यह नैपाल में हिमालय की पर्वत श्रेणी से निकलती है। दक्षिण-पश्चिम की दिशा में बहने के बाद यह गोरखपुर जिले में प्रवेश करती है। २० मील तक गोरखपुर जिले के बीच में सीमा बनाने के बाद यह बिहार प्रान्त में प्रवेश करती है। छोटी गंडक भी नैपाल में हिमालय से निकलती है और ८ मील पश्चिम की ओर बड़ी गंडक की समानान्तर बहने के बाद सारन जिले में घाघरा से मिल जाती है।

संयुक्त प्रान्त की जल-शक्ति

संयुक्त प्रान्त के पर्वतीय और पठारी भाग में बिजली तयार करने की अपार जल-शक्ति भरी पड़ी है। संसार के बहुत कम देशों में समतल मैदान के पड़ोस में इतने प्रपात मिलेंगे। इनके प्राकृतिक सौन्दर्य से आनन्द उठाने के अतिरिक्त इनसे उत्पन्न की गई बिजली प्रान्त के कला कौशल और आने जाने के साधनों में क्रान्ति पैदा कर सकती है। कुछ प्रपातों का परिचय यहाँ दिया जाता है।

यमुना की सहायक बाघें या बाघो नदी में कानपुर से ११५ मील और पन्ना से २१ मील की दूरी पर दो प्रपात हैं। यह नदी अप्रैल मास में सूख जाती है। अतः प्रपात के ऊपर ३ मील लम्बा ६० फुट ऊंचा बांध बना कर जलाशय तयार किया जा सकता है। इससे आध मील लम्बी पाइप लाइन से पानी नीचे छोड़ा जा सकता है। पावर हाउस ऊपरी (४८० फुट) प्रपात के पास बन सकता है। छोड़ा हुआ जल सिंचाई के काम आ सकता है। मिर्जापुर जिले में बखेर नदी, बेलन (गंगा की सहा-

यक) मखा गांव के पास (राबट्र्स गंज) बांध बनाने के लिये अनुकूल हैं। नदी में मार्च अप्रेल में कम पानी रहता है। मई में बिल्कुल सूख जाती है। लेकिन प्रपात से १ फर्लांग ऊपर १ मील लम्बा और १०१ फुट ऊंचा कच्चा बांध बनाकर जल रोका जा सकता है। पहला नाला (बाघें की सहायक) में पन्ना के पास १९० फुट ऊँचा है। यहाँ १३ मील लम्बा और ८० फुट ऊँचा कच्चा बांध बनाकर जलाशय तयार किया जा सकता है। कर्मनासा की सहायक चन्द्रप्रभा नदी में बनारस से ३६ मील की दूरी पर २३८ फुट ऊँचे दो प्राकृतिक प्रपात हैं। यहाँ ५००० फुट लम्बा ८० फुट ऊँचा कच्चा बांध बनाकर जलाशय तयार किया जा सकता है।

चप्रेर नाला केन की सहायक नदी है। पन्ना शहर से १६ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर इसमें २१६ फुट ऊँचा प्रपात है। यहाँ १ मील लम्बा और ५० फुट ऊँचा प्रपात तयार किया जा सकता है।

कर्मनासा में दो प्रपात हैं। ऊपरी देवदारी प्रपात १७६ फुट ऊँचा है। यहां कच्चा बांध १५६०० फुट लम्बा और ६५ फुट ऊँचा होगा। निचला प्रपात १४३ फुट ऊंचा है।

कर्णावती नदी अफला (गंगा) की सहायक है। इसमें १३३ फुट ऊँचा प्रपात है। इसके ऊपर ४२ फुट ऊँचा और ८४९० फुट लम्बा बांध बनाना पड़ेगा। यह टांडा प्रपात मिर्जापुर शहर से केवल १० मील दूर है। कमासिन नाला केन नदी की सहायक है। यह पन्ना राज्य में है। इसका प्रपात २४० फुट ऊँचा है। इसका बांध १ मील लम्बा और ४० फुट ऊँचा होगा।

केन नदी का प्रपात ५५ फुट ऊँचा है। यह १५० फुट ऊँचा किया जा सकता है। इसका बांध ६ मील लम्बा और १५० फुट ऊँचा बनाना पड़ेगा। इससे इसके पड़ोस में अच्छी भूमि है। इसलिये इसके जल से सिंचाई भी हो सकेगी।

कोरई प्रपात केन नहर के बांध (बरियर पुरगांव) से ३ मील नीचे की ओर है। यह १२५ फुट ऊँचा है।

कुरिंया (किलकिया) नाला केन नदी का सहायक है। इसका प्रपात ३१० फुट ऊँचा है। इसका बांध १३ मील लम्बा और १०० फुट ऊँचा होगा। टोंस की एक सहायक नदी महा है। महा का क्योंटी प्रपात २७५ फुट ऊँचा है। और ३५० फुट ऊँचा किया जा सकता है। नदी एक गहरे कैनियन (आखात) में होकर बहती है। इस पर साठ-सत्तर फुट ऊँचा बांध बनाना पड़ेगा।

ओड नदी बेलन की सहायक है। इसका बहुटी प्रपात ४१५ फुट ऊँचा है और ६०५ फुट ऊँचा किया जा सकता है। इस योजना में कंजस नदी के प्रपात से भी सहायता ली जा सकती है। संयुक्त योजना से ६००० किलोवैट बिजली तयार हो सकती है। इसकी स्थिति इलाहाबाद से ५० मील कानपुर से १५० मील और रीवा से ४० मील है। इसलिये यह बड़े काम की होगी।

पयस्वनी (पैसुनी) नदी यमुना में गिरती है। पयस्वनी का प्रपात १३९ फुट ऊँचा है और १८० फुट ऊँचा किया जा सकता है। इसकी सहायक सरभगा नदी में संगम के पास जलागार बनाया जा सकता है। इसमें १ मील लम्बा और ३० फुट ऊँचा कच्चा बांध बनाना पड़ेगा।

पठार या समुआ नाला केन नदी में गिरता है। बरौर के पास इसका प्रपात २१० फुट ऊँचा है। इसके पास १ मील लम्बा और ४० फुट ऊँचा बांध बनाना पड़ेगा।

रंज नदी बाघें की सहायक है इसमें २४४ फुट ऊँचा प्रपात है। प्रपात से १ फर्लांग ऊपर २ मील लम्बा और ७० फुट ऊँचा बांध बनाना पड़ेगा। एक मील की ओर इसकी एक सहायक नदी में २५० फुट ऊँचा प्रपात है।

बेलन की सहायक गूर्मा नदी में ४०२ फुट ऊँचा प्रपात है। यह ६५० फुट ऊँचा किया जा सकता है। इसके पास २ मील लम्बा और ६३ फुट ऊँचा प्रपात बनाना पड़ेगा। इससे ३५०० किलोवैट बिजली लगातार मिल सकेगी। यह स्थान कानपुर से १६० मील दूर है।

हिमालय प्रदेश में गंगा और उसकी सहायक भागीरथी, अलक नन्दा विष्णु गङ्गा और धौली गंगा में अपार जलशक्ति है। लेकिन इस समय इसके विकास में कई कठिनाइयां हैं। बहुत सा प्रदेश दुर्गम है। जलागार बनाने के लिये समतल और

टिकाऊ भूमि का अभाव है। जलागार बनने से अकाल पीड़ित गढ़वाल जिले की खेती के योग्य काफी जमीन जलमग्न हो जायगी। फिर भी कुछ स्थानों में सुविधा पूर्वक बिजली तयार की जा सकती है।

देव प्रयाग में अलकनन्दा और भागीरथी का संगम है। अलक नन्दा का मार्ग जोशीमठ के पास विष्णु गंगा और धौली गंगा का संगम है जिनके मिलने से अलक नन्दा बनती है। विष्णु गंगा बद्रीनाथ से और धौली गंगा नीति दर्रे से आती है। कर्ण प्रयाग तक गंगा का उतार प्रतिमील में १० फुट से २० फुट तक है बद्रीनाथ के पास एक मील में गंगा का उतार ३०० फुट हो जाता है नदी की तली में जल सदा खलबली मचाता रहता है। तली काफी बड़ी चट्टान की बनी है। देव प्रयाग के पास वर्तमान धारा से ४० फुट की ऊँचाई पर पुरानी धारा की तली है। दोनों के बीच में ८० फुट ऊँची भूमि है। बांध संगम से काफी दूर ऊपर की ओर बन सकता है।

हरिद्वार से ऊपर कोटलीमेल में भी गंगा के पास बिजली तयार करने के लिये कड़ी भूमि में जलागार बन सकता है। इससे १,६०,००० हार्स पावर की बिजली तयार हो सकती है। यह स्थान रुद्र प्रयाग से ३ मील ऊपर है। कांटेश्वर के पास नदी संकुलित होकर एक नद कन्दरा बना लेती है। बड़े चूने के पत्थर की पहाड़ियां एकदम पानी के ऊपर खड़ी हैं। यहीं नदी अचानक मोड़ खाती है। सरदी की ऋतु में जब उद्गम के पास बरफ जम जाती है, और इस ओर कम पानी रह जाता है तभी पहाड़ को काटकर सुरंग के दीर्घ मार्ग से पानी बहाया जा सकता है और ऊपर २०० फुट ऊंचा बांध बन सकता है। इससे ४५००० हार्स पावर की बिजली तयार हो सकती है।

यमुना नदी से बिजली तयार करने का अधिकार कुछ समय के लिये एक यूनाइटेड प्राविंसेज पावर एशासियेशन कम्पनी को दे दिया गया। इस कम्पनी ने कुछ नहीं किया। अतः सरकार ने स्वतन्त्र सर्वे कराया। जालन्ता में यमुना का दुहरा मोड़ है। यहाँ एक छोटा सुरंग काटा जा सकता है। बिनाहार में इकहरा मोड़ है। यहाँ दो मील लम्बा सुरंग बनाना पड़ेगा। इस योजना की कुछ भूमि टेहरी राज्य में है। इनके अतिरिक्त और भी कुछ स्थानों से बिजली तयार की जा सकती है

सिंचाई की नहरों के मार्ग में बने हुए झाल बिजली तयार करने के लिये अधिक उपयोगी सिद्ध हुये हैं। झोला झाल मेरठ शहर, गाजियाबाद और हापड़ को बिजली मिलती है। मेरा झाल अलीगढ़ के पास काली नदी का जल गंगा में डालने के लिये बड़ा उपयोगी है। शक्ति पलरा झाल से मिलेगी। बहादुराबाद झाल बिजनौर मुरादाबाद शहरों और कई गांवों को बिजली मिलती है।

पूर्वी यमुना नहर के धुआ और सरकारी झीलों से सुखम को बिजली मिलेगी।

गंगा की सहायक रामगंगा शाश्वत हिमागार से नहीं निकलती है। इसलिये इसमें हिमालय की दूसरी बड़ी नदियों की अपेक्षा कम जल रहता है। इसके मार्ग में कुछ स्थानों से ही बिजली तयार हो सकती है। माचूला के पास रामगङ्गा का पानी पनिया सोत के मार्ग से कोसी नदी की घाटी में गिराया जा सकता है। यह स्थान रामनगर स्टेशन से १४ मील दूर है। पानी बहाने का काम पहाड़ में सुरंग काटने से हो सकता है।

रामगंगा की सहायक कोसी नदी में सोमेश्वर के पास बांध बनाया जा सकता है। रानी खेत की सड़क के पास कोसी १० मील का तेज मोड़ बनाती है। यहां सुरंग बनाने से और भी अधिक बिजली तयार हो सकती है।

सारदा—घाघरा की सहायक सारदा नदी तिब्बत से निकलती है और नैपाल राज्य और भारतवर्ष के बीच में कुछ दूर तक सीमा बनाती है। यह लोधिया और काली नदियों के मिलने से बनती है। संगम से ऊपर इसका प्रदेश दुर्गम है। काली नदी हिमागार का पिघला हुआ पानी लाती है। संगम के पास इसका दुहरा मोड़ है। यहाँ बिजली तयार करने के लिये इसके मार्ग में सुरंग और बांध बन सकते हैं। इसके नैपाल सरकार की अनुमति आवश्यक है। ऊपर कोटि के पास (टनकपुर स्टेशन से ११ मील की दूरी पर) यह एक प्रपात बनाती है। यहाँ भी बिजली तयार की जा सकती है।

सारदा की सहायक सरजू नदी में बागेश्वर के पास एक अच्छा आबशार है। वहीं लाहोर नदी आती है यहाँ एक साधारण बांध बन सकता है।

जलवायु

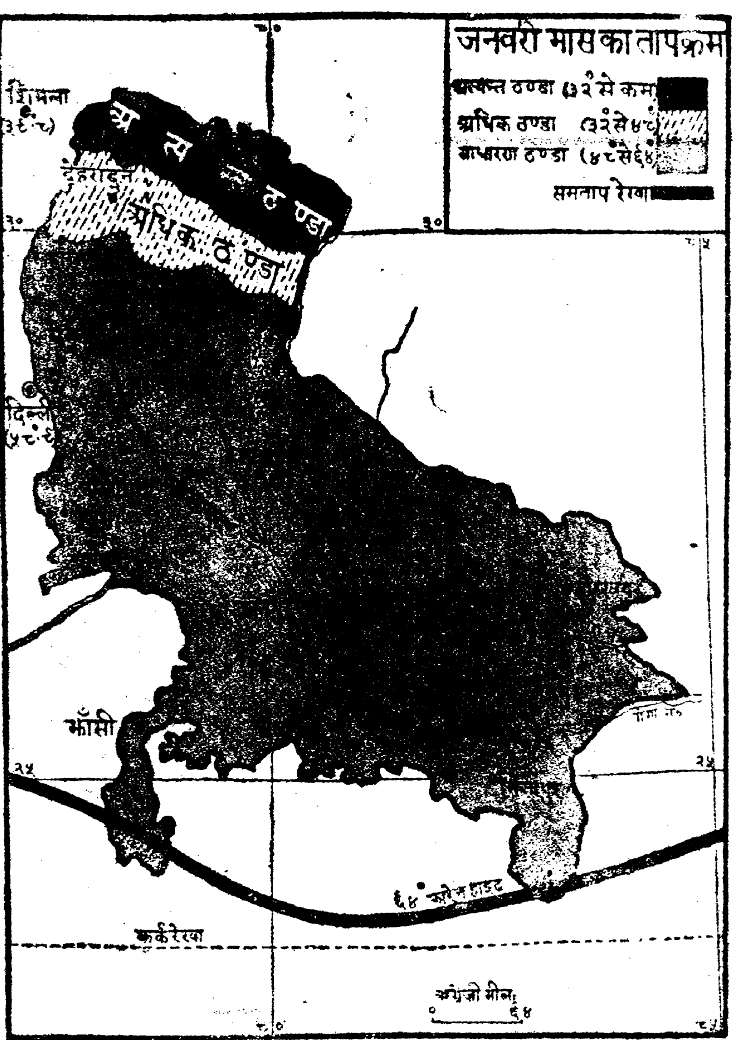
संयुक्त प्रान्त में तीन प्रधान ऋतु होती हैं। शीतकाल कार्तिक (अक्तूबर) से आरम्भ होता है। फालगुन (मार्च) में दिन कुछ गरम होने लगते हैं। जून (ज्येष्ट) में सब से अधिक गरम पड़ती है। इसके बाद जुलाई (आषाढ़) में वर्षा आरम्भ हो जाती है और वर्षा ऋतु कुआर या आश्विन (सितम्बर) के अन्त तक रहती है।

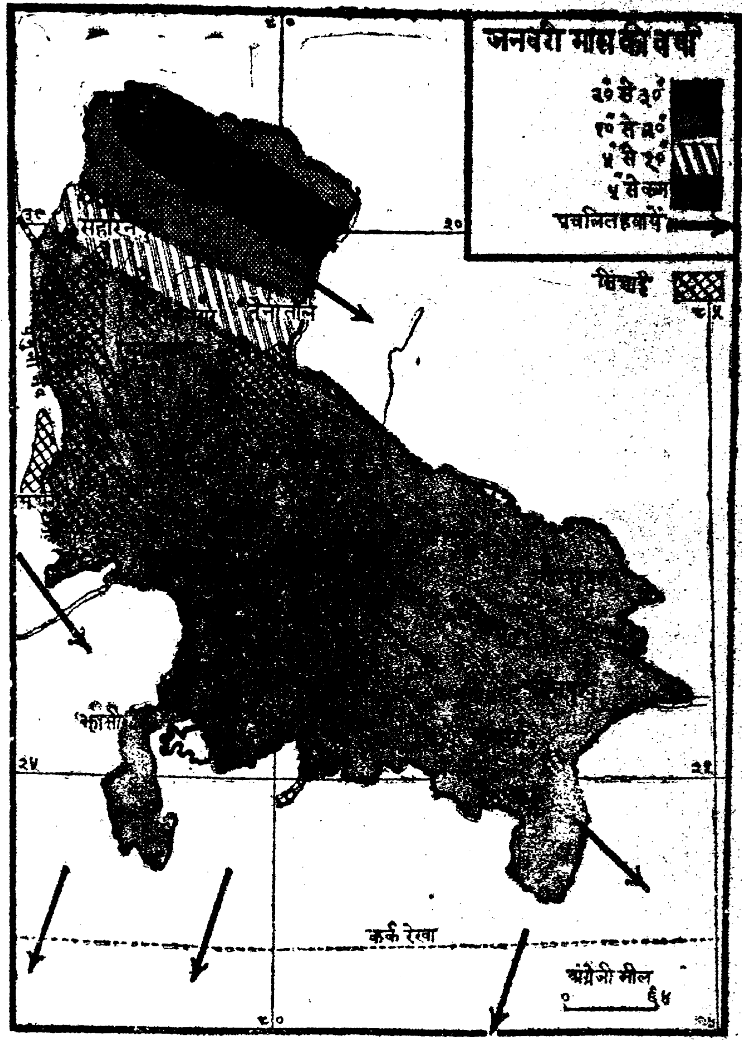
संयुक्त प्रान्त के भिन्न भिन्न प्राकृतिक विभागों में ऊंचाई अक्षांश और समुद्र की दूरी का अन्तर होने से जलवायु में भी अन्तर पड़ता है। संयुक्त प्रान्त के मैदान में सरदी की ऋतु पंजाब की अपेक्षा कम ठंडी बंगाल की अपेक्षा अधिक ठंडी रहती है। गंगा का मैदान संयुक्त प्रान्त में प्राय: ५०० मील लम्बा है। इस मैदान के पूर्वी भाग की जलवायु शीतकाल में इतनी विकराल नहीं होती जितनी पश्चिमी भाग में होती है। समुद्र की समीपता और हवा की नमी के कारण पूर्वी भाग का शीतकाल अधिक मृदुल रहता है। अधिक पश्चिम की ओर बढ़ने से सरदी अधिक बढ़ जाती है। लेकिन वर्षा की मात्रा ५ इंच से अधिक नहीं होती है।

ग्रीष्म काल में मैदान का पश्चिमी भाग पूर्वी भाग की अपेक्षा अधिक गरम रहता है। मार्च के अन्त से ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ में दिन गरम और रातें ठंडी होती हैं। आगे चल कर दिन और रात दोनों ही गरम और खुश्क हवा दोपहर होने से एक दो घंटे पहले ही चलती है और सूर्यास्त तक चलती रहती है। कभी कभी यह गरम लू में बदल जाती है। इसके लगने से पेड़ मुलस जाते हैं और मनुष्य बीमार पड़ जाते हैं। इन दिनों संयुक्त प्रान्त के आगरा आदि कुछ स्थानों का तापक्रम पंजाब और सिन्ध से टक्कर लेने लगता है। छाया का तापक्रम ८६ अंश फारेन हाइट से ११५ अंश तक रहता है। कभी कभी इससे भी अधिक हो जाता है। ग्रीष्म के अन्त में धूल भरी आंधियां आती हैं। इनसे कुछ देर के लिये ठंडक हो जाती है। कभी कभी वर्षा हो जाने के पहिले एक दो दिन बादल मंडराते हैं। वर्षा आरम्भ हो जाने पर तापक्रम घट जाता है। औसत तापक्रम ८६ अंश फारेन हाइट रहता है। पर बदली की गरमी हवा के न चलने पर असह्य हो जाती है। वर्षा लगातार नहीं होती है। कभी प्रबल वर्षा होती है। कभी हलकी वर्षा होती है। कभी केवल बादल घिरे रहते हैं। कभी आकाश एक दम निर्मल रहता है। मैदान में वर्षा की मात्रा सब कहीं बराबर नहीं है। पूर्व की ओर ४ इंच वर्षा होती है। पश्चिम की ओर घटते घटते पचीस या तीस इंच रह जाती है।

वर्षा ऋतु में हवा बड़ी नम रहती है। सितम्बर मास में पानी का बरसना बन्द हो जाता है। जब पश्चिमी भाग में वर्षा समाप्त हो जाती है। उसके एक सप्ताह के पश्चात पूर्वी भाग में वर्षा समाप्त होती है। पूर्वी भाग में प्राय: एक सप्ताह पहले ही आरम्भ होती है। अधिकतर वर्षा बंगाल की खाड़ी की ओर से आने वाली मानसूनी हवाओं द्वारा होती है। यह हवायें प्रान्त के पूर्वी भाग में पहले पहुँचती हैं और पीछे लौटती हैं। कुछ वर्षा अरब सागर की ओर से आने वाली हवाओं से भी होती है। इनके मार्ग में उत्तरी भागों की अपेक्षा मैदान के दक्षिणी भाग में कुछ अधिक वर्षा होती है। हिमालय के पड़ोस वाले स्थानों का उल्टा हाल है। वहां उत्तरी भाग में दक्षिणी भाग की अपेक्षा अधिक वर्षा होती है वर्षा के समाप्त होने पर पश्चिम की ओर से मन्द और ठंडी हवा चलने लगती है। कुछ समय में यह अधिक वेगवती हो जाती है।

यमुना और गंगा के दक्षिण में संयुक्त प्रान्त का पठार-प्रदेश स्थित है। इसमें झांसी, जालौन और हमीरपुर के जिले, इलाहाबाद और मिर्जापुर के दक्षिणी भाग शामिल हैं। इसमें पथरीली और कड़ी चट्टानें हैं। यह भाग मैदान से सब कहीं ऊंचा है और दक्षिण से उत्तर की ओर ढालू है। मैदान की अपेक्षा यह अधिक खुश्क रहता है। इसके ऊँचे भाग मैदान से कुछ अधिक शीतल रहते हैं। अप्रैल से जून


जनवरी मास का तापक्रम
अधिक ठण्डा
साधारण ठण्डा
समताप रेखा
देहरादून
अधिक ठण्डा
झाँसी
कर्क रेखा
अंग्रेजी मील


जनवरी मास की वर्षा
सिंचाई
कर्क रेखा
अंग्रेजी मील


जून मास का तापक्रम
अत्यन्त ठण्डा (४८° से कम)
ठण्डा (४८° से ६४°)
साधारण गरम (६४° से ८०°)
अत्यन्त गरम (८०° से ९६°)
समताप रेखा
शिमला
झाँसी
कर्क रेखा
अंग्रेजी मील
०
६४


जून मास की वर्षा
६०" से ८०"
४०" से ६०"
३०" से ४०"
२०" से ३०"
सिंचाई
प्रचलित हवायें
झाँसी
कर्क रेखा
अंग्रेजी मील
०
६४

तक गरम और खुश्क हवायें चलती हैं। वर्षा ऋतु में वहाँ का तापक्रम गिर जाता है। मैदान की अपेक्षा हवा अधिक खुश्क रहती है इसलिये यह अधिक असह्य नहीं होती है। वर्षा प्रायः ३० इंच से ५० इंच तक होती है। झांसी की उंचाई अधिक नहीं (८५० फुट) है। यह पहाड़ी चट्टानों से घिरा है वे धूप में एक दम गरम हो जाती हैं। फिर भी गरमी में इसकी अल्पतापक्रम १ अंश और परमतापक्रम १०७ अंश रहता है।

संयुक्त प्रान्त में भावर प्रदेश ५ मील से २० मील तक चौड़ा है। यह खुश्क रहता है। पानी कंकड़ पत्थर के नीचे भिद जाता है। इसके नीचे तराई की तंग पेटी है। बड़ी दलदली है। यहां की जलवायु शीतकाल के दो तीन महीनों को छोड़ कर सदा उष्णार्द्र रहती है। मलेरिया बहुत फैलता है। तापक्रम बहुत अधिक नहीं होता है। लेकिन नमी के कारण यह गरमी असह्य हो जाती है। दलदली भूमि और नमी के कारण यहां मलेरिया ज्वर बहुत फैलता है।

हिमालय प्रदेश में उंचाई के अनुसार भिन्न भिन्न भागों की वर्षा और तापक्रम में बड़ा अन्तर है। साधारणतया मैदान की अपेक्षा यहां का तापक्रम बहुत कम और वर्षा बहुत अधिक होती है। ग्रीष्म ऋतु में यहां के बाहरी भागों का तापक्रम बहुत कम और वर्षा बहुत अधिक होती है। ग्रीष्म ऋतु में यहां के बाहरी भागों का तापक्रम बड़ा मनोहर होता है। यहीं मंसूरी नैनीताल अल्मोड़ा, रानी खेत आदि पहाड़ी स्थानों पर धनी लोग और बड़े बड़े सरकारी अफसर गरमियों में सैर करने के लिये जाते हैं यहां का औसत तापक्रम ६० अंश रहता है। शीतकाल में यहां का तापक्रम २६ अंश हो जाता है और बरफ गिरता है। गरमी में यहां का तापक्रम ६० अंश से ८० अंश तक रहता है। शीतकाल में ५००० फुट की उंचाई तक बरफ गिरती है। कभी कभी २५० फुट की उंचाई तक शीत काल में बरफ गिर जाती है। हिमालय के कुछ भाग इनसे अधिक ऊंचे हैं। यहां ध्रुव प्रदेश की तरह गरमी में भी बहुत कम तापक्रम रहता है कुछ भागों में सदा बरफ रहती है। सरदी की वर्षा आरम्भ होने पर हिमालय के इन बाहरी दक्षिणी ढालों पर मैदान की अपेक्षा कहीं अधिक वर्षा होती है। हिमालय के जो भाग वर्षा लाने वाली हवाओं के मार्ग से दूसरी ओर आड़ में पड़ जाते हैं वे प्रायः खुश्क रहते हैं। अधिक ऊंचे भागों में पानी बरसने के बदले बरफ गिरती है। कुछ भाग सदा बरफ से ढके रहते हैं। गरमी में बरफ पिघल जाती है और मुलायम घास उग आती है।

हिमालय के दक्षिण में शिवालिक की जलवायु समशीतोष्ण रहती है। समुद्रतल से २००० फुट की उंचाई पर देहरादून का तापक्रम ७१ अंश रहता है। गरमी में यहां का तापक्रम ८४ अंश और सरदी में दिसम्बर से फरवरी तक दिन का तापक्रम ५५ या ५६ अंश फारेन हाइट रहता है। प्रान्त के कुछ स्थानों का तापक्रम और वर्षाचक्र अलग दिया गया है। इनकी तुलना करने पर प्रान्त की जलवायु अधिक स्पष्ट हो जायगी।

★ ★ ★

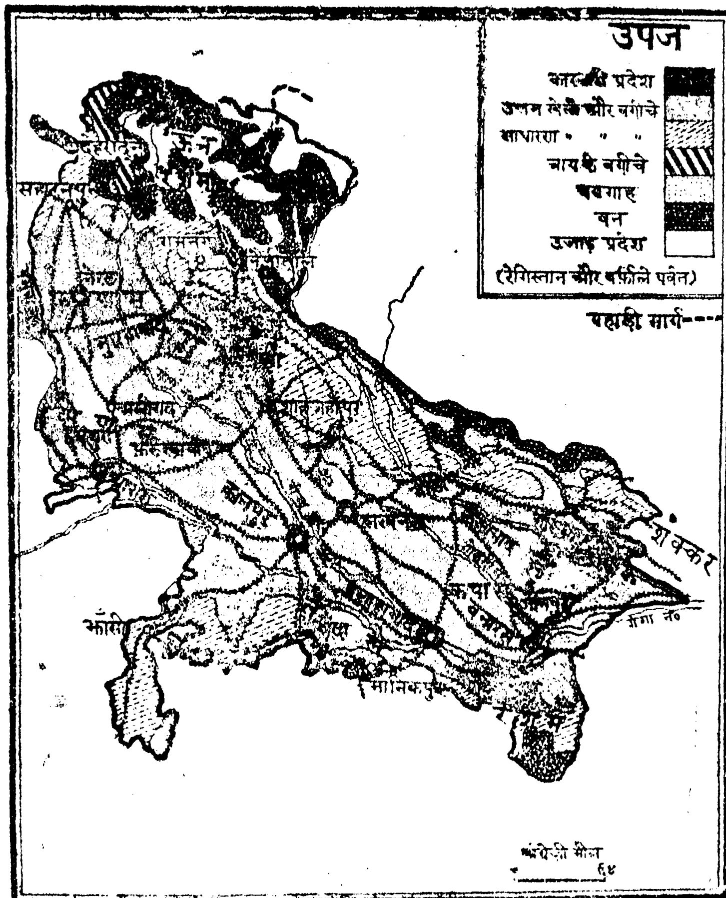
बन

संयुक्त प्रान्त में बन प्रदेश (मैदान में) कुछ ही सौ फुट की ऊँचाई से लेकर (हिमालय में) वृक्ष सीमा १३००० फुट की ऊँचाई तक बन पाया जाता है। १३००० फुट के आगे अधिक ऊँचाई पर इतनी बरफ गिरती है और ऐसा जाड़ा पड़ता है कि वहां पेड़ नहीं उग सकते। भिन्न उंचाई पर पेड़ों के उगने से कहीं बन समतल भूमि पर स्थित हैं। कहीं वह विषम और सपाट पर्वतीय ढालों पर पाया जाता है। तराई और मैदान का बन समतल भूमि पर स्थित है। गंगा और यमुना के निकास के निकट का बन बहुत ही ऊंचे और सपाट ढालों पर स्थित है। पूर्वी सर्किल का सब का सब बन नैपाल के दक्षिण में तराई और मैदान में फैला हुआ है। पश्चिमी सर्किल का बन कुछ शिवालिक की पहाड़ियों

और कुछ मैदान और तराई में स्थित है। यह काली नदी से यमुना तक फैला हुआ है। कमायूँ सर्किल का वन नैनीताल, अल्मोड़ा और गढ़वाल के पहाड़ी भागों में पाया जाता है। बुन्देलखण्ड सर्किल का वन कहीं समतल और कहीं विषम भूमि में है।

३०१ वर्ग मील, देहरादून में २७९ वर्ग मील और चकराता में १४१ वर्ग मील वन है।

कमायूं सर्किल के नैनीताल जिले में २०९ वर्ग मील, गढ़वाल में ४४२ पश्चिमी अल्मोड़ा में २५० और पूर्वी अल्मोड़ा में ५१२ वर्ग मील वन है। इस प्रकार प्रान्त में ५२५३ वर्ग मील (रिज़र्व्ड) ५२६ वर्ग मील प्रोटेक्टेड (संरक्षित) और ४८१ वर्ग मील अवर्गीकृत वन है। १ वर्ग मील पट्टे पर दिया गया है। कुछ वन नहरों के किनारे किनारे लगा है। इसका प्रबन्ध नहर-विभाग के हाथ में है। वन से इमारती लकड़ी, ईंधन, बांस, घास, टर्मेंटाइन आदि कई प्रकार से आमदनी होती है। आमदनी से खर्च घटाने पर वन से सरकार को ६० लाख रुपये से अधिक वार्षिक लाभ होता है।



लड़ाई के कारण लकड़ी का दाम महंगा हो गया है। लेकिन सेना को नियत मूल्य पर लकड़ी मिलती है। अल्मोड़ा डिवीजन के चीड़ के वन से टर्पेंटाइन निकालने के लिये तीन वर्ष का ठेका दिया गया है। प्लाइवुड प्राडक्ट्स कम्पनी, सीतापुर की सुविधा के लिये सेमल और कंजू के पेड़ काटे गये। सेमल का पेड़ पत्ती झाड़ता है। जनवरी से मार्च तक इसमें लाल या नारंगी रंग के फूल आते हैं। अप्रैल से मई तक इसमें फल आते हैं। ४००० फुट की ऊँचाई तक यह सब यहीं होता है। तराई के साल के पेड़ रेलवे स्लीपर तयार करने के लिये काटे गये।

वन विभाग के अधीन संयुक्त प्रान्त में ६२०१ वर्ग मील वन है। इसमें पूर्वी सर्किल के पीलीभीत जिले में २०९ वर्ग मील, उत्तरी खीरी में २९४ वर्ग मील दक्षिणी खीरी में १६४ वर्ग मील, बहरायच में २७६ वर्ग मील, गोंडा में २१२ वर्ग मील, गोरखपुर में १७५ वर्ग मील, वन है। बुन्देलखंड में २७५ वर्ग मील वन है। पश्चिमी सर्किल के अन्तर्गत हलद्वानी में ३९७ वर्ग मील, रामनगर में ३४५ वर्ग मील, कालागढ़ में ३८५ लैन्सडाऊन ३१४ सहारनपुर में

गोंडा, बहरायच, दक्षिणी खीरी और पीलीभीत के वन से घास काटने का ठेका १८०००) रु० वार्षिक पर तीन वर्ष के लिये अपर इण्डिया कूपर पेपर मिल्स (लखनऊ) को दिया गया। कत्था बनाने के लिये भी ठीका दिया गया वन का प्रधान पेड़ साल है।

यह ४०० फुट की उंचाई तक उगता है। अधिक उंचाई पर ठंड के कारण यह नहीं होता है। पहाड़ी भागों का साल अधिक अच्छा नहीं होता है और प्राय: घर बनाने के काम आता है। हल्दू, धौरी, तून, सई और खटिक के पेड़ भी इसी उंचाई पर होते हैं। भिंडल का पेड़ घाटी में होता है। इसकी पत्तियां गाय बैल को खिलाई जाती हैं। नये तिल्लों के रेशों से रस्सी बनाई जाती हैं। इसके फल सफेद या हरे होते हैं। अप्रैल से जून तक फूल आते हैं। अक्तूबर से दिसम्बर तक फल आते हैं। ४००० फुट की उँचाई तक उगता है। प्राय: खेतों की मेड़ों पर लगाया जाता है। ३००० फुट की उंचाई तक आम, पीपल, बरगद, शीशम के पेड़ बहुत मिलते हैं।

चीड़ का पेड़ कुछ अधिक ऊँचाई पर होता है और ६००० फुट की ऊँचाई तक पाया जाता है। यह १६०० फुट स कम और ७२०० फुट से अधिक उंचाई पर नहीं होता है। इससे रेलवे स्लीपट बनते हैं। इसकी पत्तियां सदा हरी भरी रहती हैं। जहाँ यह होता है वहाँ प्राय: दूसरे पेड़ नहीं हो पाते हैं। वांज का पेड़ ४००० फुट से ८००० फुट की उंचाई तक होता है। यह अधिक ऊंचा नहीं होता है लेकिन इसकी लकड़ी अधिक मजबूत और गठी हुई होता है। पहाड़ी डंडे प्राय: वांज के होते हैं। ८००० फुट के आगे १०००० फुट तक वांज के स्थान पर कारशू और तिलोंज के पेड़ होते हैं। इनकी लकड़ी भी मजबूत होती है। ७५०० फुट से ११००० फुट तक देवदारू का शानदार ऊंचा पेड़ होता है। इसकी टहनियां छोटी और घनी होती हैं। यह १५० फुट ऊँचा और १२ फुट मोटा होता है।

तून का पेड़ पत्ती गिराने वाला होता है। इसकी पत्ती १ फुट से २ फुट तक लम्बी होती है। फूल सफेद होते हैं और मार्च अप्रैल में आते हैं। फल मई से जुलाई तक आते हैं।

खैर का पेड़ पत्ती झाड़ने वाला होता है। इसमें कुछ पीले और सफेद फूल मई से जुलाई तक आते हैं। फल जनवरी से मार्च तक आते हैं।

हल्दू का पेड़ मध्य अल्मोड़ा और नैनीताल को छोड़कर १००० से ३००० फुट की उंचाई तक दक्षिणी गढ़वाल और भावर में प्राय: सब कहीं होता है। जून जुलाई में पीले फूल आते हैं।

कंजा का पेड़ गढ़वाल में १५०० से १२,००० फुट की उंचाई तक होता है। अगस्त से अक्तूबर तक इसमें पीले फूल आते हैं।

ढाक, टेसू या पलास में जनवरी से अप्रैल तक नारंगी रंग के फूल आते हैं। इसकी पत्तियां पत्तल, दोना और छाया करने के काम आती हैं। फूलों से रंग बनता है। यह समस्त मैदान और तराई में होता है। अप्रैल से जून तक बीज लगता है। इसका कद नाटा होता है।

झाऊ समस्त कछार और तराई में होती हैं। यह जलाने, टोकरी बनाने और देहाती घर छाने के काम आती है। यह सदा हरी भरी रहती है।

साखू का पेड़ झांसी को छोड़ कर और सब कहीं होता है। इसकी लकड़ी बड़ी मजबूत होती है।

अमलतास का पेड़ साधारण ऊंचा होता है। इसमें फल फूल अप्रैल से अगस्त तक आते हैं। फल जनवरी फर्वरी में आते हैं। लम्बी फली लटकी रहती हैं।

इमली का पेड़ बहुत बड़ा होता है। इसकी पत्तियां बहुत छोटी और फूल लाल धारी लिये हुये हलके पीले होते हैं। फल खटमिट्ठे होते हैं। पेड़ मैदान में प्राय: सब कहीं होता है।

सिरसा, बेर, बबूर, नीम, पीपल, कैथा, बरगद, पाकर, बेल, जामुन, महुआ, आंवला, आम भी मैदान में सब कहीं होते हैं।



आने जाने के साधन

भारतवर्ष में रेलवे लाइनें आरम्भ में परीक्षार्थ खुलीं। ५२०,००,००० पौंड की लागत से ५००० मील रेलवे लाइन खोलने के लिये ८ कम्पनियों (१—ईस्ट इंडियन २—ग्रेटइंडियन पेनिसुला रेलवे ३—मद्रास रेलवे ४ बाम्बे, बड़ौदा और सेण्ट्रल इंडिया रेलवे, ५—ईस्टर्न बंगाल, ६—अवध रुहेल खंड रेलवे, ७—सिन्ध, पंजाब और दिल्ली रेलवे और ८—साउथ इंडिया रेलवे) का श्रीगणेश इँगलैंड में हुआ। ईस्ट-इंडिया कम्पनी की ओर से इन्हें भरोसा दिया गया कि कम्पिनी को घाटे की दशा में सरकार की ओर से क्षति पूर्ति की जायगी और प्रचलित सूद ४½ से ५ फीसदी सूद मिलता रहेगा। इसके अतिरिक्त लाइन खेलने के लिये मुफ्त जमीन दी गई। ९९ वर्ष के बाद लाइन को पूरे दाम में मोल लेने का अधिकार सरकार ने अपने हाथ में रक्खा। अकाल में सहायता और व्यापार के लिये तो रेलवे उपयोगी थी ही गदर की गड़बड़ी में सैनिक कार्य के लिये रेलवे सबसे अधिक उपयोगी सिद्ध हुई। अतः रेलवे लाइनों का जाल सारे भारतवर्ष में तेजी के साथ फैल गया। कई और नई कम्पनियां बनीं।

इस समय संयुक्त प्रान्त में ४९५२ मील रेलवे लाइन है। ३१९२ मील बड़ा लाइन १७८८ मील मीटरगेज लाइन और ९२ मील बहुत छोटी लाइन है। इस प्रान्त में ईस्ट इंडियन रेलवे सर्व प्रधान है। इसकी दो बड़ी बड़ी लाइनें हैं। एक लाइन मुगल सराय से सहारनपुर को जाती है। पहले यह अवध रुहेल खंड कहलाती थी। यह बनारस, प्रतापगढ़, जौनपुर, बाराबंकी फैजाबाद, लखनऊ, हरदोई, शाहजहांपुर, बरेली, मुरादाबाद और सहारनपुर जिलों में चलती है। इसकी कई शाखायें हैं। जो इलाहाबाद से फैजाबाद इलाहाबाद से जौनपुर, इलाहाबाद से लखनऊ, इलाहाबाद से ऊँचाहार होकर रायबरेली, ऊँचाहार से उन्नाव और कानपुर, कानपुर से लखनऊ, रायबरेली से सुल्तानपुर, राय बरेली से कानपुर, उन्नाव और माधोगंज होकर बालामऊ को, बालामऊ से ओहादपुर बालामऊ से नीमसार होकर सीतापुर को, सीतापुर से शाहजहांपुर को, बरेली से चन्दौसी और अलीगढ़ को, चन्दौसी से मुरादाबाद, मुरादाबाद से सम्भल, मुरादाबाद से हापुड़ और गाजियाबाद को, हापुड़ से मेरठ, मुरादाबाद से चांदपुर, बिजनौर से नजीबाबाद नजीबाबाद से कोट द्वारा और लक्सर से हरद्वार और देहरादून को शाखा लाइनें गई हैं। हरद्वार से एक शाखा ऋषि केश को गई है।

ईस्ट इंडियन रेलवे की प्रधान लाइन संयुक्त प्रान्त में मुगल सराय से गाजिया बाद, दिल्ली को जाती है। बनारस, मिर्जापुर, इलाहाबाद, फतेहपुर, कानपुर, इटावा, अलीगढ़ और खुर्जा होकर जाती है। शिकोहाबाद से फर्रुखाबाद, टूंडला से आगरा, हाथरस जंकशन से हाथरस शहर, और अलीगढ़ से बरेली को इसकी शाखा लाइनें गई हैं।

ग्रेट इण्डियन पेनिन्सुला रेलवे संयुक्त प्रान्त से मथुरा, आगरा, कानपुर इलाहाबाद, बांदा, हमीरपुर, जालोन, और झांसी शहरों में आती हैं।

बम्बई-बड़ोदा और सेण्ट्रल इण्डिया की बड़ी लाइन संयुक्त प्रान्त के दक्षिणी-पश्चिमी भाग को छूती है और मथुरा आगरा शहरों में पहुँचती है। इसकी मीटरगेज शाखा आगरे से कासगंज होकर कानपुर को जाती है।

नार्थवेस्टर्न रेलवे प्रान्त के उत्तरी भाग में दिल्ली से सहारनपुर को जाती है। इसी के समानान्तर एक छोटी लाइन शाहदरा से सहारनपुर को जाती है।

रुहेलखंड कमायूँ रेलवे की प्रधान शाखा लखनऊ से बरेली होती हुई कासगंज को जाती है। यहां यह बाम्बे-बड़ौदा और सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे से मिल जाती है। लखनऊ के आगे यह सीतापुर, लखीमपुर, खीरी, शाहजहांपुर, पीलीभीत, बरेली और बदायूँ जिलों को पार करती है। बरेली से एक शाखा काठगोदाम को जाती है जो नैनीताल और अलमोड़ा पहुँचने के लिये बड़े काम की है।

बंगालनार्थ वेस्टर्न रेलवे कानपुर, उन्नाव, लखनऊ, बारा बंकी, गोंडा, बस्ती और गोरखपुर जिलों को पार करती है। एक शाखा इलाहाबाद से बनारस होती हुई गाजीपुर और बलिया को चली गई है।

इन बड़ी बड़ी रेलवे लाइनों के अतिरिक्त छोटी छोटी लाइनें बननसा से सारदा नहर के निकास और जगबूरा तक गई हैं। हल्द्वानी के बनैले भाग और गोरखपुर कमिश्नरी में भी छोटी ट्राम्वे लाइने हैं।

सड़कें

भारतवर्ष में सड़कों की लम्बाई ३ लाख मील है। इनमें ७०००० मील पक्की सड़कें हैं। इन पर एक करोड़ बैलगाड़ियां धीमी चाल से और २ लाख मोटर गाड़ियां तेज चाल से चला करती हैं। दूसरे प्रान्तों की अपेक्षा संयुक्त प्रान्त में सड़कें अधिक हैं। इनमें १०,००० मील पक्की और २५,००० मील कच्ची सड़कें हैं। इन सड़कों को बनाने और अच्छी दशा में रखने के लिये केन्द्रीय, प्रान्तीय अथवा स्थानीय सरकार से धन मिलता है। सड़कों पर प्रायः २० लाख रुपया खर्च होता है। कुछ सड़कें बड़ी अच्छी दशा में हैं। इन पर अस्फाल्ट (धूने) की दरेसी है। कुछ सीमेन्ट और कंकरीट की बनी हैं। बहुतों पर कंकड़ बिछा है। कच्ची सड़कें वर्षा ऋतु में प्रायः बिगड़ जाती हैं। वर्षा के बाद उनका ढाल ठीक कर दिया जाता है। गड्ढे भर दिये जाते हैं और उनमें नालियां बना दी जाती हैं।

भारतवर्ष की सर्व प्रसिद्ध ग्रांडट्रंक रोड संयुक्त प्रान्त के बनारस, इलाहाबाद, फतेहपुर, कानपुर, फरुखाबाद, मैनपुरी, एटा, अलीगढ़, बुलन्दशहर और मेरठ (गाजियाबाद) में होकर जाती है। संयुक्तप्रान्त में इसकी लम्बाई लगभग ५०० मील है। कलकत्ते से ४१८ वें मील पर यह सड़क राज घाट (काशी) में गंगा को पांटून (नावों के) पुल से पार करती है। इलाहाबाद में कलकत्ते से ५९५ वें मील पर फिर यह गंगा को पांटून पुल से पार करती है। लखनऊ से बनारस सड़क १९६ मील लम्बी है। राय बरेली और जौनपुर शहर इस सड़क पर पड़ते हैं। प्रतापगढ़ इससे ६ मील दूर छूट जाता है।

लखनऊ बरेली सड़क १५१ मील लम्बी है। यह सड़क सीधे हरदोई न जाकर कुछ चक्करदार मार्ग से सीतापुर और शाहजहांपुर होकर जाती है।

लखनऊ से झांसी का जाने वाली सड़क १८८ मील लम्बी है। यह उन्नाव, कानपुर और उरई होकर जाती है। कालपी में यमुना के पार करने के लिये पांटून पुल बना है।

मेरठ-बरेली सड़क १२८ मील लम्बी है। यह मुरादाबाद और रामपुर होकर जाती है। गढ़मुक्तेश्वर में गंगा को पार करने के लिये नावों का पुल बना है। वर्षा ऋतु में पुल टूट जाता है और नाव द्वारा गंगा को पार करना पड़ता है। मेरठ से ११३ वें मील पर बक्रा नदी को बक्रा घाट पर नावों के पुल से पार करना पड़ता है। ११५ वें मील पर १०० फुट लम्बे पांटून-पुल से बहगुल (बैगुल) नदी पार की जाती है।

सहारनपुर-देहरादून सड़क ४२ मील लम्बी है। १५ वें मील पर यह दिल्ली राजपुर सड़क से मिल जाती है। २७ वें और ३६ वें मील के बीच में यह पहाड़ी सड़क बन जाती है। सहारनपुर चकराता सड़क ७८ मील लम्बी है। यह केवल १५ मील संयुक्त प्रान्त में चलती है। इसके आगे यह पंजाब प्रान्त में प्रवेश करती है।

आगरा-दिल्ली सड़क १२७ मील लम्बी है। वास्तव में यह दिल्ली-बम्बई सड़क का अंग है। ३६ वें मील पर यह मथुरा में पहुँचती है। ३८ वें मील पर यह चम्बल नदी को पार करती है।

मथुरा-डीग सड़क २२ मील लम्बी है। १३ वें मील पर यह भरतपुर राज्य की सीमा बनाती है।

कानपुर-हमीरपुर-सागर सड़क २२५ मील लम्बी हैं। हमीरपुर में यमुना और बेतवा नदियों के ऊपर पांटून पुल बन जाता है। हमीरपुर और महोबा नगर मार्ग में पड़ते हैं। फतेहगढ़-कानपुर सड़क ८४ मील लम्बी है। बीसवें मील पर गुरसहाय गंज के पास यह ग्रांड ट्रंक रोड से मिल कर उसी का अंग बन जाती है।

फतेहपुर-महोबा-सड़क ७९ मील लम्बी है। कबरई (७० वें मील) से आगे यह कानपुर से सागर को जाने वाली सड़क से मिल कर एक हो जाती है। बाँदा शहर इसी सड़क पर पड़ता है। बांदा से २५ वें मील पर चिल्ला घाट में यह यमुना को और २ मील की दूरी पर भूडागढ़ में केन नदी को पार करती है।

झांसी—आगरा सड़क १२९ मील लम्बी है।

यह दिल्ली-बम्बई सड़क का अंग है। दतिया और ग्वालियर इसके मार्ग में पड़ते हैं।

झांसी—सागर सड़क १२८ मील लम्बी है। ललितपुर इसी सड़क पर पड़ता है। झांसी-शिवपुर सड़क ६२ मील लम्बी है।

देहरादून—चकराता सड़क ५९ मील लम्बी है। फतेहपुर के पास वह सहारनपुर-चकराता सड़क में मिल जाती है।

दिल्ली-राजपुर सड़क १५४ मील लम्बी है। गाजियाबाद, मेरठ, मुजफ्फर नगर, रुड़की, देहरादून इस सड़क के प्रधान नगर हैं। १५४ वें मील पर मोहन्द दर्रे के पास यह एक सुरंग द्वारा शिवालिक पर्वत को पार करती है। सड़क की चौड़ाई सब कहीं १२ फुट है।

फैजाबाद—बहराइच सड़क ७४ मील लम्बी है। नवाबगंज, गोंडा इसी सड़क पर पड़ते हैं।

गोरखपुर—गाजीपुर सड़क ८५ मील लम्बी है। गोरखपुर से दोहरी घाट (३७ मील) तक इस सड़क और गोरखपुर इलाहाबाद सड़क का मार्ग एक है। बढ़ालगंज, दोहर, बेत और मऊ नगर इस सड़क पर पड़ते हैं।

मिर्जापुर—जौनपुर सड़क ५४ मील लम्बी है। मिर्जापुर-रीवा सड़क १०४ मील लम्बी है और ग्रेट डेकन सड़क का अंग है।

आगरा—अलीगढ़ सड़क ५१ मील लम्बी है। हाथरस बीच में पड़ता है।

आगरा इटावा औरय्या सड़क १५५ मील लम्बी है। इटावा इस सड़क पर पड़ता है।

इलाहाबाद—फैजाबाद सड़क ९९ मील लम्बी है। परतापगढ़ और सुलतानपुर नगर मार्ग में पड़ते हैं।

इलाहाबाद-गोरखपुर सड़क १६६ मील लम्बी है। बादशाहपुर, जौनपुर, आजमगढ़ और दोहरी घाट इस सड़क पर पड़ते हैं। इलाहाबाद से १२५ वें मील पर दोहरी घाट में घाघरा नदी को पार कराने के लिये स्टीमर चला करते हैं। बरेली इटावा सड़क १३६ मील लम्बी है। फर्रुखाबाद बीच में पड़ता है। यह फतेह गढ़ से ११ मील की दूरी पर बिचपुरी घाट में रामगङ्गा को और ४ मील की दूरी पर गङ्गा को पार करती है।

बरेली-मथुरा सड़क १२० मील लम्बी है। बदायूँ, उझानी, सोरों, कासगंज, सिकन्दराराव और हाथरस इस सड़क के प्रधान नगर हैं।

बरेली से ४९ वें मील पर कछला घाट में यह नावों के पुल से गंगा को पार करती है। बरेली-रानी-खेत सड़क ११२ मील लम्बी है। हलद्वानी, काठ-गोदाम, भवाली और खैराना इस सड़क पर पड़ने वाले नगर हैं। इटावा-ग्वालियर सड़क ६७ मील लम्बी है।

पहाड़ी सड़कें

काठगोदाम—नैनीताल सड़क ३२ मील लम्बी है। इसकी चौड़ाई १२ फुट है। काठगोदाम से सड़क लगातार ऊँचाई पर चढ़ती जाती है। कई जगह भयानक मोड़ है। मार्ग में पानी बराबर मिलता रहता है। वर्षा काल में चट्टानों के फिसल आने से इस सड़क के बन्द हो जाने का डर रहता है।

अल्मोड़ा—रानीखेत सड़क ३५ मील लम्बी है। अल्मोड़ा से कोसी नदी के पक्के पुल (७ मील दूर) तक लगातार उतार है। पानी पहले दूसरे, छठे आठवें नवें, चौदहवें, उन्नीसवें, इक्कीसवें उन्तीसवें और इक्तीसवें मील पर पानी मिलता है। वर्षा ऋतु में चट्टानों के फिसलने से सड़क के बन्द हो जाने का डर रहता है।

काठगोदाम—रानीखेत सड़क ४९ मील लम्बी है। सड़क की चौड़ाई सब कहीं १२ फुट से कुछ अधिक ही है। सैनी ? तक पानी बहुत है। वर्षा काल में चट्टानों के खिसक आने से सड़क के बन्द हो जाने का डर रहता है।

रानीखेत—लैन्सडाउन की सड़क ३५ मील लम्बी है यह ईस्ट इण्डियन की कोट द्वारा स्टेशन को भीतरी भागों से जोड़ती है। इसमें पानी प्रायः सब कहीं मिलता है।

राजपुर—मसूरी सड़क १४½ मील लम्बी है। इसमें पानी की बड़ी कमी है।

जलमार्ग

संयुक्त प्रान्त की पुरानी चार नहरें ऊपरी गंगा नहर, निचली गंगा नहर, पूर्वी यमुना-नहर और आगरा नहर प्रधान रूप से सिंचाई के लिये बनाई गई थी। इनके कुछ भागों में नाव चलाने या लकड़ी

के बेड़े ढोने की भी सुविधा न थी। लेकिन उनमें सदा और सब भागों में नाव चलाने की सुविधा न न थी। उनमें ऊँचे झाल और प्रपात थे। जिससे नाव चलाने के लिये पड़ोस में अलग धारा निकालनी पड़ी। जहां नहरों के ऊपर ऊँचे पुल बनाने पड़े। यदि पुल अधिक ऊँचे न किये जाते तो उनके नीचे से बड़ी नावें नहीं निकल सकती थीं। लेकिन पुलों को अधिक ऊँचा करने में सड़क पर चलने वाली गाड़ियों को असुविधा होती थी। नहरों में केवल उन्हीं दिनों में अधिक पानी रहता है जब खेतों के सींचने की आवश्यकता पड़ती है। शेष दिनों में उनमें इतना कम पानी रहता है कि उनमें नावें नहीं चल सकतीं। नाव चलने योग्य व्यापारिक नहरें बड़े बड़े शहरों में होकर बहती हैं। संयुक्त प्रान्त की बड़ी बड़ी नहरें प्रायः शहर से कुछ दूरी पर बहती हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि जिन खेतों को सींचने के लिये पानी की आवश्यकता पड़ती है वे प्रायः शहर के बाहर स्थित होते हैं। रेलों के खुलने से पूर्व संयुक्त प्रान्त की नहरों में कई सौ नावें चला करती थीं। रेलों के खुल जाने पर नावें प्रतिस्पर्धा में न टिक सकीं। उन्हें लगातार घाटा होने लगा। इधर नहर विभाग ने नावों का महसूल भी बढ़ा दिया। इस समय नहरों के बहुत कम भागों में नावें चला करती हैं। वन विभाग की लकड़ी के बेड़े और लट्ठे बह कर नीचे आ लगते हैं। गंगा नहर में सिरे से लेकर ८७ मील तक नावें चल सकती हैं। निचली गंगा नहर में ३४ मील तक और कानपुर शाखा में ७० मील तक नावें चल सकती हैं।

सारदा नहर—एक दम सिंचाई की नहर है। इस पर नावों के चलाने का प्रबन्ध नहीं है।

संयुक्त प्रान्त की नाव चलने योग्य ४ बड़ी बड़ी नदियां गङ्गा, यमुना, गोमती और घाघरा हैं। सारदा घाघरा की ही सहायक है। अक्तूबर से अप्रैल तक गंगा और यमुना का अधिकांश जल सिंचाई की नहरों में चला जाता है। इसलिये इनमें नावों के चलने के लिये इन महीनों में बहुत कम पानी रहता है। गोमती नदी पीलीभीत जिले से निकलती है। इसमें साधारणतया अधिक जल नहीं रहता है। घाघरा में जल की कमी नहीं है। लेकिन यह गंगा और यमुना के समान कारबारी और सघन आबादी के प्रदेश में होकर नहीं बहती है। घाघरा नदी अधिकतर तराई के जंगली भाग में होकर बहती है जहां कारबार की कमी है। इसके अतिरिक्त बड़ी बड़ी नदियों का खादिर (कछार) अधिक चौड़ा है। इसके बीच में इनकी धारा बदलती रहती है। अगर इनके ऊँचे किनारे पर सामान उतारने के लिये घाट बनाये जांय तो भी कुछ ही महीनों के बाद इनके पास सूखी भूमि निकल आवे।

प्रान्त की छोटी नदियों में रामगंगा कुछ बड़ी है। इसमें भी शीतकाल और ग्रीष्म काल में कम पानी रहता है। वर्षा ऋतु में प्रायः बाढ़ आती है। बुन्देलखंड की कुछ नदियां शीत काल में सूख जाती हैं। कुछ नदियों का पानी सिंचाई में खर्च हो जाता है। धसान पहाड़ी, लचूरी का बहुत सा पानी सिंचाई में खर्च हो जाता है। बेतवा नदी में परीचा और दुखवन में और केन नदी में गंगाऊ और बेयापुर के पास सिंचाई के बांध हैं।

निम्न जिलों में नावों के चलने की कथा बड़ी मनोरंजक है।

आगरा जिले में पुराने समय में अधिकतर व्यापार यमुना द्वारा होता था। पत्थर, कपास, घी और दूसरा सामान नावों पर लद कर नीचे की ओर जाता था। इस समय भी वर्षा ऋतु में नावें बहुत सा सामान लाद कर आगरे और मथुरा के बीच में ले जाती हैं। अलीगढ़ जिले में गंगा और यमुना नदियां नाव चलने योग्य हैं। लेकिन व्यापार बहुत कम होता है। कुछ छोटी नावें गंगा-नहर के मार्ग से कानपुर से हरिद्वार को ले जाती हैं। इस समय कुछ शक्कर, कपास, लकड़ी और बांस कानपुर को पहुँचता है। बरोथा (हरदुआगञ्ज के पास) सिकन्दराराव और कुछ दूसरे घाटों से कानपुर को माल जाता है। सिकन्दराराव से गोपालपुर को गेहूँ जाता है और वहां से गेहूँ पिस कर आता है। बुलन्दशहर जिले में यमुना के इस किनारे से कुछ सामान पंजाब को जाता है। गंगा के इस पार से उस पार को भी सामान जाता है। अहार फरीदा, बसी, करनबास, नारोरा, बहारिया, डिबकर प्रधान घाट हैं मेरठ जिले में गंगा और यमुना नहरों की सुविधा है।

३०० मन बोझा लादकर नावें हरद्वार से रुड़की होती हुई कानपुर तक जा सकती हैं। मेरठ जिले में सरधना, सलावा, नरौना, जारी, निवारी, और भोला स्थानों पर घाट बने हैं। मकान बनाने का सामान, शक्कर और गेहूँ यहां से बाहर को जाता है। ईंधन, लकड़ी, घास, गेहूँ और दूसरे अन्न यहां आते हैं।

मुजफ्फर नगर के समस्त जिले में गंगा-नहर में नावें चल सकती हैं। हरद्वार और मेरठ के बीच में अनाज और दूसरा सामान यहां होकर जाता है। खतौनी नगर नहर के व्यापार का प्रधान केन्द्र हैं। पूर्वी यमुना नहर में लकड़ी बहने के अतिरिक्त कुछ छोटी नावें भी कहीं कहीं चलती हैं। पर अधिक व्यापार नहीं होता है।

सहारनपुर जिले में गंगा नदी नावों के चलने योग्य नहीं हैं। केवल जंगलों की कुछ लकड़ी का बेड़ा बहकर आता है। यही हाल यमुना का है। पुराने समय में यमुना में इस ओर से लकड़ी, भांग और चूना नीचे की ओर जाता था। आगरे से पत्थर, लोहा और दवाइयां इधर आती थीं।

देहरादून जिले में जलमार्गों का अभाव है। गंगा को पार करने के लिये गोहरी घाट से नावें गढ़वाल के लिये छूटा करती हैं। रामपुर मंडी में यमुना को पार करने के लिये नावें चला करती हैं। बड़ी नदियों पर पुल बने हैं। छोटी नदियां यात्री के लिये विशेष बाधा नहीं डालती हैं।

बिजनौर जिले में इस समय गंगा और रामगंगा लट्ठों के ढोने के काम आती हैं। पहले यहां से नावों अधिक सामान आता था। नारोरा में तिचली गंगा-नहर का बांध बन जाने से नहर द्वारा भी निचले मार्ग से इस ओर ऊपर सामान का आना रुक गया।

बरेली जिले में पहले बहगुल नदी में छोटी छोटी नावें बहुत चला करती थीं। सिंचाई में अधिक पानी खर्च हो जाने से नावों का चलना प्रायः बन्द होगया है। रामगङ्गा नावों के चलने योग्य है। लेकिन इसमें आजकल केवल बांस केवड़ा बहाकर नीचे की ओर पहुँचाये जाते हैं।

मथुरा जिले में यमुना के इस पार से उस पार जाने के लिये १४ घाट बने हैं। वृन्दाबन का घाट अधिक प्रसिद्ध है। मथुरा शहर में यमुना के ऊपर पुल बना है। इटावा जिले में पहले नावें बहुत चलती थीं। नावें २५ गज लम्बी और ६ गज चौड़ी होती थीं। नाव एक बार में ४०० मन से १००० मन तक बोझा ढोती थीं। नावें इटावा से मिर्जापुर और पटना तक जाती थीं। इलाहाबाद में यमुना को छोड़ कर गंगा के मार्ग अनुसरण करती थीं। रेलों की प्रतिस्पर्धा और नहरों के खुल जाने से यह व्यापार प्रायः बन्द सा हो गया है। आजकल कुछ नावें घर बनाने का पत्थर और बांस ढोया करती हैं।

बाराबंकी में रेलों के खुल जाने पर भी जल-व्यापार बहुत होता है। घाघरा नदी में खीरी और बहराइच के बनों के लट्ठे बहा कर लाये जाते हैं एक बेड़े में पचीस-तीस लट्ठे रहते हैं। इनके दोनों सिरों पर नावें बँधी रहती हैं। मार्ग में ७ या ८ दिन लगते हैं। पानी में डूबे रहने से लकड़ी अधिक अच्छी हो जाती है। लट्ठे बहराम घाट में उतारे जाते हैं। गोमती नदी में नावें लखनऊ के लिये मूंज और ईंधन ढोया करती हैं।

हवाई मार्ग

१९११ ईस्वी में जब प्रयाग में संयुक्त प्रान्त की प्रदर्शिनी हुई तब प्रथम बार हवाई जहाज प्रयाग से उड़ कर नैनी को गया। इस पर ढाई तीन मन चिट्ठियां लदी थीं। अप्रैल १९२९ में इम्पीरियल एअरवेज ने इंगलैंड से भारतवर्ष को हवाई जहाजों का उड़ाना आरम्भ किया। १९३० में डच हवाई जहाज इंगलैंड से बटेविया को और फ्रांसीसी हवाई जहाज फ्रांस से सैगोन (इण्डोचीन) को भारत होकर चलने लगे। १९३२ में टाटासन्स लिमिटेड कम्पनी कराची से मद्रास को सरकारी डाक लेजाने लगी। १९३३ में हवाई जहाज कराची से कलकत्ते को जाने लगे। १९३७ में बम्बई से दिल्ली को सप्ताह में दो बार हवाई जहाज आने जाने लगे। सप्ताह में एक बार हवाई जहाज इलाहाबाद और कानपुर होकर दिल्ली और कलकत्ते को आने जाने लगे। गत १५ वर्षों में हवाई जहाजों की भूमि सुधारने में लगभग तीन करोड़ रुपया खर्च किया।

संयुक्तप्रान्त की खनिजें

प्रो० निरंजनलाल शर्मा एम० एस-सी० (बनारस और लिवर पूल)

कृषि-सम्पत्ति में संयुक्त प्रान्त जितना धनवान है खनिज सम्पत्ति में वह उतना ही निर्धन है। उपयोगी खनिजें इस प्रान्त के उत्तरीय तथा दक्षिणीय चट्टानी भागों में ही प्रायः मिलती हैं। अधिक खनिजें उत्तर के पर्वतीय भाग में ही पाई जाती हैं परन्तु इस भाग में आयात के आधुनिक साधनों—रेल तथा सड़कों इत्यादि—का नितान्त अभाव है जिसके कारण कई खनिजें जो वहां मिली भी हैं उनको निकालने के प्रयत्न बहुत कम हुए हैं। इस प्रान्त में अब तक निम्नलिखित खनिजों के मिलने का पता चला है :—

(१) धातुओं की खनिज—सोना, सीसा-चांदी, तांबा, लोहा, मैंगनीज़, जस्ता, टाइटेनियम, संखिया।

(२) इमारत के उपयुक्त पत्थर—बालू तथा चूना के पत्थर, स्लेट, कंकड़, ग्रेनाइट इत्यादि।

(३) उपयोगी बालू तथा मिट्टियां
(४) कोयला तथा ग्रेफाइट
(५) शोरा, नमक, रेह
(६) रंग कारक गेरु
(७) हरसोठ या गोदन्ती
(८) संग रेशा
(९) डोलोमाइट
(१०) सेल खरी
(११) गंधक
(१२) फिटकिरी

---

(१) सोना—अलमोड़ा और गढ़वाल में निम्नलिखित नदियों के बालू में सोने के कण मिलते हैं :—

अलक नन्दा नदी में चितवा पीपल (३०° १६': ७९°१४') नामक गांव के पास।

गंगा नदी में लक्ष्मण झूला के पास।

गोमती नदी में ग्वाल द्रम (३०°०' : ७९°३८') से नीचे।

पिंडार नदी में कर्ण प्रयाग से ऊपर।

राम गंगा की सोना तथा कोह नामक शाखाओं में और पूर्व की बहुत सी शाखाओं में।

पानर नदी में देवी धूरा (२९°२५' : ७९°५५' '३०") के पास।

सीसा-चांदी—अलमोड़ा और गढ़वाल जिलों में सीसा का खनिज गैलेना (galena)—सीसा और गंधक का योग। अथवा उसकी पुरानी खानें अनेक स्थानों पर पाई जाती हैं। कुछ स्थानों की गैलेना में चांदी का भी कुछ अंश मिला है। स्थानों के कुछ नाम ये हैं :—

राई (२९°४३' : ८०°५'), चंदक, पाटल, धनपुर (३०°१३' :७९°१०'), झाक (३०°९'३०" : ७९°२६' ३०") गृथी नदी की घाटी (३०°४०' : ८०°७'), रालम (३०°१८'३०" : ८०°२०'३०"), बेंस्कल। (२९° ५५'३०" : ८०°१३') इत्यादि।

देहरादून जिले में टोंस नदी की घाटी में कल्सी (३०°३२' : ७७°५४') से लगभग २५ मील की दूरी पर, तथा बुरेला (३०°४४' : ७७°५१'), मयूर, कूमा (३०°४१'३०" : ७८°६'), कोनेन (३०°४७'३०" : ७७°५७'), गढ़ौल (३०°५६' : ७७°५१'३०") इत्यादि स्थानों पर सीसा की पुरानी खदानें मिलती हैं। लहैटा (३०°३५' : ७७°४८') के पास की पहाड़ी के पास के नाले में सीसा की खनिज के पत्थर कुछ वर्ष पहले मिले थे।

तांबा—अलमोड़ा और गढ़वाल जिलों में गोरखा राज्य तक पर्याप्त परिमाण में तांबा निकाला जाता था। तांबे की खानों के विषय में निम्निलिखित स्थानों का नाम मिलता है:—

धनपुर (३०°१३':७९°१०'), नागपुर (३०° १९':७९°१६'), गंगोली (२९°३९'३०":८०°६'), सीरा (२९°४८°:८०°:८०°१८'), राई (२९°४३': ८०°५'), पोकरी (३०°२१':७९°१५'३०"), पीठा-गोरा (२९°३५':८०°१६'), अलअगर (३०°०': ७९ २०') तथा अलकनन्दा नदी की घाटी में पिपुली

प्रंगला पानी और मबूगेटी नामक स्थान। धनपुर की खनिज में ३० से ५० प्रतिशत अंश तांबे का बताया गया है और इस स्थान की खान से लगभग २३ टन खनिज प्रति वर्ष निकाली जाती थी।

लोहा—लोहे की खनिज-लालगेरु (Dematite) कुछ चुम्बक खनिज (Magnetite) के साथ अथवा कुछ भूरे गेरु (Limonite) के साथ—संयुक्त प्रान्त के हिमालीय भाग में कई स्थानों में मिलता हैं और १८वीं तथा १९वीं शताब्दी में पहाड़ी लोग उन खनिजों में पर्याप्त लोहा निकालते भी थे। उन स्थानों में से निम्न लिखित स्थान उल्लेखनीय हैं:—

अलमोड़ा में द्वारकानाथ-सीमल खेत (२९°४७': ७९°२९') क्षेत्र तथा पोनार घाटी (२९°३१': ७९°५७')

गढ़वाल में नागपुर परगना (३०°३०': ७९°१५'

नैनीताल जिले में धनियाकोट (२९°३०': ७९°३१'), रामगढ़ (२९°२६': ७९°३७'), हलद्वानी (२९°१३': ७९°३५') के पास बीजापुर तथा झाम, देचौरी (२९°२२'३०": ७९°२२'३०") और कालाढूंगी (२९°१७': ७९°२४'३०") के पास लोहा भावर नामक स्थान। रामगढ़ की खनिज में क़रीब ४३ से ६१ प्रतिशत लोहे का अंश मिला था और कालढूंगी और देचौरी की खनिजों में क्रम से ३९ और ५५ प्रतिशत। सन् १८५७ ई० में देचौरी और खुर्पाताल (२९°२२': ७९°२८') में दो लोहे के कारखाने स्थापित हुए जिनकी १८६२ में एक ही कम्पनी मालिक हो गई परन्तु बाद को यह कारखाने कई कारणों से असफल हो गये।

मिर्जापुर जिले में कोरची (२४°५': ८३°२०') नामक स्थान के उत्तर में लोहे की चुम्बक खनिज (Magnetite) मिलती है।

मैङ्गनीज़—मिर्जापुर के दक्षिणीय भाग में मैङ्गनीज की खनिज रोडोनाइट (Rhodenite) मैङ्गनीज के सिलीकेट का नमूना मिला हैं।

जस्ता—देहरादून जिले में टोंस नदी की घाटी में कलसी (३०°३२': ७७°५४') नामक स्थान से २५ मील की दूरी पर स्थित सीसे की पुरानी खान में सीसे की खनिज के साथ जस्ता की खनिज (जस्ता-गंधक कोपो Zincbeende) भी मिलती है।

टाइटेनियम—मिर्जापुर जिले के दक्षिणीय भाग की कुछ नदियों के बालू में टाइटेनियम की खनिज (Ilmenite—लोहे व टाइटेनियम औक्सीजन का योग) के कण मिलते हैं।

संखिया—संखिया की खनिज पीलीहरताल (Orpiment—संखिया और गंधक का योग) अलमोड़ा जिले में धर्मा और जुवार या नीती नामक पहाड़ी घाटों में और मनस्यारी (३०°६': ८०°१९') नामक स्थान में मिलती है। शंकल्प हिम-नदी से लाये हुये पत्थरों में पीली हरताल व लाल हरताल (Realgar) के पत्थर मिले हैं परन्तु इन टुकड़ों का मूल-स्थान का पता अभी नहीं चला।

बालू के पत्थर—इमारत के लिये बालू का पत्थर (Sand stone) आगरा, इलाहाबाद, बांदा व मिर्जापुर जिलों में बहुत पुराने समय से निकाला जा रहा है। यह पत्थर विन्ध्याचल कालीन शिलाओं में एक मुख्य शिला है और उत्तरी भारत की अनेक ऐतिहासिक इमारतें इसी पत्थर की बनी हैं। इलाहाबाद जिले में प्रतापपुर (२५°१७': ८१°३७') और शिवराजपुर (२५°१२': ८१°४०') नामक स्थानों की तथा मिर्जापुर जिले में चुनार और मिर्जापुर की बालू के पत्थर की खानें बहुत समय से प्रसिद्ध हैं।

बालू की परिवर्तित शिलाएं—Quartzites अलमोड़ा के पास मिलती हैं और उनका इमारतों के बनाने में प्रयोग किया जाता है

चूने के पत्थर अलमोड़ा, गढ़वाल तथा प्रान्त के शेष उत्तरीय भाग में और दक्षिण में सोन नदी की घाटी में अनेक स्थानों पर मिलते हैं। कंकड़ की चौड़ी चौड़ी पट्टियां (२ से ४ फीट तक लम्बी और १ से २ फीट तक चौड़ी) जालौन में भदौरा (२६°२३'३०": ७९°३५') के पास करीम खां नामक गांव में जमुना नदी के किनारे आध मील तक मिलती हैं

कंकड़ के जमाव संयुक्त प्रान्त के गङ्गा यमुना नदी के मैदान के अनेक जिलों में बालू मिट्टी में सतह से कुछ नीचे मिलते हैं। इन बालुओं और मिट्टियों में जो चूना का अंश था वह कालान्तर में जल द्वारा घुल कर इन स्थानों पर पिण्डाकार रूप में जमा हो गया है।

स्लेट—अल्मोड़ा में चितैली (२९°४९': ७९°-२८'३०") और लोहुघाट (२९°२४' : ८०°९') नामक स्थानों पर बहुत निकली जाती हैं। मंसूरी के उत्तर में आगलर नदी (३०°३०' : ७८°६') की घाटी में भी बढ़िया स्लेट मिलती है।

ग्रेनाइट—मिर्जापुर के दक्षिणीय भाग की ग्रेनानाइट नामक आग्नेय शिला भी कभी कभी मकान बनाने के काम में आती है।

संगमरमर—मिर्जापुर जिले में रेर नदी की शाखा, घिची नदी (२४°८' : ८३°०') के मुहाने पर हरे रंग का संगमरमर मिलता है।

(३) कांच के लिये बालू का पत्थर—इलाहाबाद जिले में लोघरा (२५°१८' : ८१°४०'३०") नामक स्थान का तथा बांदा जिले में बोरगढ (२५°९' : ८१°२१') नामक स्थान का सफेद रंग के बालू का परवर्तित पत्थर (Quartzite) पीसकर कांच बनाने के काम में आता है। संयुक्त प्रान्त के प्रायः सब कांच के कारखानों में इस बालू का प्रयोग होता है। देहरादून के पास लछमन सीड़ो (३०°१५' : ७८°५') नामक स्थान में भी सफेद बालू का पत्थर मिला है।

उपयोगी मिट्टी—मिर्जापुर जिले के दक्षिणीय भाग में कोयले के साथ, तथा चुनार में, बांदा जिले में लखनपुर इत्यादि दो एक स्थानों पर, हमीरपुर जिले में और इलाहाबाद जिले के दक्षिणीय भाग में मिलती है। चुनार में मिट्टी की सुन्दर वस्तुएं बनाई जाती है वे बहुत प्रसिद्ध हैं और दूर दूर बिकने के लिये भेजी जाती हैं।

(४) कोयला—रीवां राज के सिंगरौली नामक क्षेत्र का कुछ भाग मिर्जापुर जिले के दक्षिणी भाग में सम्मलित है जिसको "कोटा क्षेत्र भी कहते हैं। इस क्षेत्र में कोटा (२४°६' : ८२°२५'), उज्जेनी (२४°१०' : ८२°२५', बांदा (२४°५' : ८२°२५'), मन्हारी (२४°१०' : ८२°२९'), नौनगर (२४°७' : ८२°३९'), सोहिरा (२५°२' : ८२°२८') और आमलिया (२४°२' : ८२°२८') इत्यादि स्थानों पर कोयले की तहें मिलती हैं। इनमें नौनगर का कोयला और स्थानों के कोयले से अच्छा है यद्यपि वह भी दूसरी या तीसरी श्रेणी का है।

लिगनाइट—(भूरा कोयला) की पतली तहें भीमताल से नीचे बलिया नदी में तथा देहरादून को जाने वाले तीमली (३०°२१' : ७७°४६') और कलावाला (३०°१६'२०" : ७७°५२') नामक पहाड़ी घाटों में पाई गई हैं। मुरादाबाद के उत्तरीय भाग से निकलने वाली ढेला (२९°२५' : ७९°४') और अन्य नदियों में भी लिगनाइट मिला है। कोट द्वारा (२९°४५' : ७८°३६' तथा राजपुर (३०°२४' : ७८°५') के पास भी लिगनाइट की पतली पतली तहें मिली हैं।

ग्रेफाइट—खनिज अल्मोड़ा में कालीमाटी, बाल्ट (२९°३८' : ७९°४५') के पास गारगोली तथा पुलसीमी (२९°३५'३०"७९°४५') नामक स्थानों में पाई जाती है। डोल (२९°२९'३०" : ७९°४९'३०") नामक स्थान के पास तथा लाधर नदी (२९°५३' : ७९°५०') जहां कपकोट—बागेसर सड़क को पार करती है, उस स्थान पर भी ग्रेफाइट मिलता है।

(५) शोरा—संयुक्त प्रान्त के कानपुर, इलाहाबाद, बनारस ग़ाजीपुर इत्यादि जिलों की मिट्टी में से निकाला जाता है। संयुक्तप्रान्त व विहार में मिट्टी में शोरा बनने का कारण इन प्रान्तों में मवेशियों की बहुतायत जिनके गोबर से शोरा बनाने के लिये उपयुक्त नाइट्रोजन प्राप्त होता है और लकड़ी के ईंधन का प्रयोग जिसकी राख से शोरा बनाने के लिये उपयुक्त पोटाश का अंश प्राप्त होता है तथा इन प्रान्तों को उपयुक्त आबहवा है। शोरा का धन्धा इन प्रान्तों में अनेक शताब्दियों से होता आया है।

नमक—कुछ वर्षों पहले नमक गाजीपुर जिले में कई स्थानों की मिट्टी से निकाला जाता था। यमुना नदी के गीले बालू में से जालोन में मदापुर (२६°२४' ७९°३३') नामक स्थान पर भी नमक निकाला जाता था।

रेह—गंगा यमुना नदियों के मैदान में अलीगढ़ इत्यादि जिलों की मिट्टी के ऊपर नमक की सफेद पतली तह जम जाती है जिसमें प्रायः नमक के अतिरिक्त सोडा व सोडा का सल्फेट भी होता है। ये नमक उस स्थान की भूमि को ऊसर बना देते हैं।

यह रेह घटिया कांच के बनाने में बहुत समय से प्रयोग में आता रहा है। सज्जी मिट्टी भी रेह से ही बनाई जाती है। कपड़ा धोने के काम भी यह रेल लिया जाता है।

(६) गेरु—संयुक्त प्रान्त के उत्तरीय पर्वतीय भाग में बहुत सी रंगीन मिट्टियां मिलती हैं तथा पर्वतीय भाग में प्राचीन शिलाओं में रंगकारक लाल व पीला गेरु मिलता है।

हरसोठ या गोदन्ती (Gyfcem)—देहरादून के उत्तर की पहाड़ियों में हरसोठ चूने या मिट्टी के पत्थरों के साथ मिलती है। सहस्त्र धारा (३०°२२': ७८°१०'३०") और जेरी पानी (३०°०५'३०": ७८°८'३०") नामक स्थानों पर हरसोठ के बड़े जमाव हैं। गढ़वाल में लक्ष्मण भूला (३०°७' : ७८°२०') के पास कई हरसोठ के जमाव हैं जिनमें से कई हज़ार टन खनिज सरलता से निकाली जा सकती है। टेहरी—गढ़वाल रियासत में सीरा (३०°१८' : (३०°१८' : ७८°१४') के पास सोंग नदी के उत्तरीय किनारे पर भी हरसोठ मिली है।

नैनीताल और कालाढूंगी के बीच में निहाल नदी के किनारे हरसोठ के बड़े जमाव मिलते हैं। सन के मुख्य जमाव धापिला (२९°१९' : ७९°२८') नामक स्थान के उत्तर में है।

हमीरपुर जिले में पुरानी (२५°४५' : ७९°५०') स्थान पर और झांसी जिले में गोन्टी (२५°४७' : ७९°१३') व गोखल(२५°४६' : ७९°२०'३०") नामक स्थानों पर पुराने बालू व मिट्टी में हरसोठ के क्रिस्टल मिलते हैं।

संगरेशा (Asbestes)—गढ़वाल जिले में परकंडी (३०२९' : ७९°६') के पास तथा ऊखीमठ (३०°३१'३०"), : ७९°६') के उत्तर की पहाड़ियों में संगरेशा मिलता है। यह खनिज पिथोरागढ़ (२९°३५' : ८०°१२'३०"), जोशीमठ (३०°३३' : ७९°३८') तथा बधानगढ़ पहाड़ (३०°१' : ७९°३५') पर भी मिलती है।

(९) **डोलोमाइट** Dolomite—संयुक्त प्रान्त की उत्तरीय पर्वतीय भाग की शिलाओं में चूने के पत्थर के साथ डोलोमाइट भी कहीं कहीं मिलता है। मिर्ज़ापुर के विची नदी का संगमरमर भी डोलोमाइट-दार है। डोलोमाइट का प्रयोग अग्नि प्रतिरोधक ईंटें (भट्टी के लिये) बनाने में अधिक होता है।

(१०) **सेलखरी** (Steatite)—अलमोड़ा जिले में बागेसर (२९°५०'३०" : ७९°५०') के दक्षिण में सेलखरी की पुरानी खान है। ठाकिल पहाड़ी (२९°५०'३०" : ७९°५०') दक्षिण में सेलखरी की पुरानी खान है। ठाकिल पहाड़ी (२९°३०'३०" : ८०°१६') पर भी सेलखरी मिलती है। गढ़वाल, हमीरपुर व झांसी जिलों में भी सेलखरी कई स्थानों पर मिलती है।

(११) **गंधक**—देहरादून में टोंसनदी पर म्यावर नामक स्थान की सीसे की पुरानी खान में गंधक पाया गया है। कुमाऊं के जिले में अनेक स्थानों पर गरम सोतों के जलद्वारा गंधक जमा हो गया है जिनमें निम्नलिखित स्थान उल्लेखनीय हैं:—

राम गंगा और गरजिया नदी के किनारे, जवार या नीती पहाड़ी घाटी में, नंद प्रयाग (३०°२०' : ७९°२३'), मनस्यारी (३०°६' : ८०°१९'), मुल्ला दसौली तथा मुल्ला नागपुर।

(१२) **फिटकिरी**—अलमोड़ा के पास ही कौशिल नदी (२९°३३' : ७९°४०') में तथा नैनीताल-खेरना की सड़क पर जाख (२९°२६' : ७९°३१') नामक गांव के पास फिटकिरी रुपामाखी (Pyrite) दार मिट्टी के पत्थर के ऊपर जमी हुई पाई जाती हैं।

नोट—इस लेख में संयुक्त प्रान्त की खनिजों के मिलने के स्थानों के केवल नाम दिये गये हैं और अधिक विवरण नहीं दिया गया। इस लेख को लिखने में लेखक को ज्यालोजीकल सर्वे की पुस्तक Latonche—Bibliogrophy of Indian Geology Pt-I B सेबहुत सहायता मिली है।

संयुक्त प्रान्त की भौगर्भिक रचना और शिलाएँ

ले०—निरंजन लाल शर्मा एम० एस-सी० (बनारस और लिवरपूल)

भूगोलिक और भौगर्भिक दोनों दृष्टियों से संयुक्त प्रान्त को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है :—(१) *उत्तरीय चट्टानी भाग* (२) *बीच का मैदान* तथा (३) *दक्षिणीय चट्टानी भाग*। उपरोक्त तीनों भागों की भौगर्भिक रचना भिन्न भिन्न तथा इनका भौगर्भिक इतिहास भी एक दूसरे से भिन्न रहा है। तीसरा भाग सब से पुराना है और बीच का सब से नया।

संयुक्त प्रान्त का दक्षिणीय चट्टानी भाग त्रिभुजाकार, अति प्राचीन और अचल भारत का एक अंश है और वह विन्ध्याचल पर्वतीय तथा और पुरानी शिलाओं से बना है। जब पृथ्वी पर जीवन का नितान्त अभाव था उसी समय से आज तक यह भाग समुद्रतल से ऊपर भूमि रहा है। इस प्रान्त का उत्तरीय चट्टानी भाग, भौगर्भिक दृष्टि से नये हिमालय पर्वत समूह का एक अंश है। पृथ्वी पर जीवों की उत्पत्ति के आरम्भ काल से मनुष्य के पृथ्वी पर आने के समय से कुछ समय पहले तक इस विशाल हिमालय पर्वत के स्थान पर एक लम्बा समुद्र हिलोरें मारता था जिसका नाम भूगर्भ वेत्ताओं ने आज "टेथिस सागर" रखा है। इस सारे दीर्घ काल में शेष भारत की दक्षिणीय भूमि (जिसकी सतह आज से कहीं अधिक ऊँची होगी टेथिस सागर के दक्षिणीय तट पर पर्वतीय विन्डाकार खड़ी थी। दक्षिण की इस ऊँची भूमि से तथा तिब्बत की ओर की उत्तरीय ऊँची भूमि से नदियाँ पत्थर के टुकड़े, बालू और मिट्टी लाकर इस सागर में डालने लगीं और धीरे धीरे वह सागर इन तलछटों से तथा स्वयं जल के भीतर बने चूने के पत्थर से भरा जाने लगा। परन्तु साथ साथ उस समुद्र का तल भी नीचे धंसता रहा जिसके कारण उस (अधिकतः उथले) समुद्रों में हजारों फीट मोटी तहदार शिलाओं के बनाने की सामग्री एकत्रित हो सकी। धीरे धीरे उस समुद्र का तट पृथ्वी को आन्तरिक हलचलों के कारण ऊपर चढने लगा और तीन भिन्न कालों में उस समुद्र के स्थान पर उसमें एकत्रित पदार्थों से बना हुआ विशाल हिमालय पर्वत खड़ा हो गया। इस प्रकार हिमालय पर्वत में अनेक भौगर्भिक कालों की समुद्रीय शिलायें मिलती हैं।

हिमालय और आल्प्स जैसे पर्वतों के अध्ययन से पता चलता है कि जिस समय समुद्र में एकत्रित शिलाएँ ऊपर उठती हैं उस समय उनको ऊपर उठाने वाली आन्तरिक शक्ति के अतिरिक्त एक और अन्तरिक शक्ति कार्य करती है जो उन शिलाओं को समुद्र की ओर से उसके किनारों की ओर ढकेलती है। समुद्र के किनारे की ठोस चट्टानी भूमि इन शिलाओं को आगे बढ़ने से रोकती है और जिस प्रकार एक मोटे काग़ज़ या कपड़े के एक सिरे को एक हाथ से दबाने पर और दूसरी ओर से उसे दूसरे हाथ से पहले हाथ की ओर ढकेलने से उस काग़ज़ या कपड़े में सिकुड़न पड़ जायेंगी और वह ऊपर उठ जायेगा और पहले हाथ के ऊपर चढ़ जायेगा तथा वहाँ उस हाथ के पास एक गड्ढा भी पड़ जायेगा यही दशा टेथिस सागर में बनी शिलाओं की हुई है। हिमालय पर्वत की नई शिलाएं भारत के ठोस भाग की प्राचीन शिलाओं के पिंड के उत्तरीय किनारे से टकराकर आगे दक्षिण की ओर बढ़ने से रोक दी गई थीं और यही कारण है कि हिमालय के दक्षिणीय किनारे किनारे एक बड़े स्तर-भ्रंश की रेखा रेखा (fault line) है जिसके पास की भूमि अभी तक अस्थिर है और वह अनेक भारतीय भूकम्पों की उत्पत्ति स्थान है। भारत के ठोस भाग की शिलाओं और हिमालय की शिलाओं के एक दूसरे से मिलने के सब स्थान सिन्धु तथा गङ्गा यमुना की घाटियों के तलछटों से ढक गया।

संयुक्त प्रान्त के बीच के मैदान के क्षेत्र का इतिहास बड़े महत्व का है परन्तु भारत के भौगर्भिक इतिहास में इस क्षेत्र ने बहुत कम भाग लिया है। इस क्षेत्र की शिलाएँ भारत की सब शिलाओं से नई हैं। इतने पिछले भौगर्भिक कालों में इसका क्या इतिहास रहा इसका पता चलाना कठिन है कारण कि इस स्थान पर गंगा-यमुना इत्यादि

संयुक्त प्रान्त की भौगर्भिक शिलाओं की सूची

कल्प	काल	शिला-समूह और-श्रेणियां	मुख्य शिलाएँ	उपयोगी खनिज या शिलाएँ
चतुर्थ	आधुनिक	नये तलछट	गंगा यमुना के 'खादर' और 'भूड़' तथा हिमालय पर्वत की नदियों के पत्थर और बालू के नये जमाव ऊसर का रेह।	नदी के पत्थरों की बटियां और बालू रेह।
	प्लेस्टोसीन	पुराने तलछट	'भंगर' और गंगा यमुना इत्यादि नदियों के किनारे से दूर के बालू और मिट्टी के जमाव, कंकड	बालू, मिट्टी, कंकड़, हरसोठ।
तृतीय	प्लाओ सीन माओ सीन	{ शिवालिक समूह { दाग शाई-कसौली श्रेणियां	बालू और मिट्टी तथा उनके ठोस पत्थर, बड़े बड़े हाथी गैंडा इत्यादि की फासिल। लाल मिट्टियां, बालू के पत्थर।	बालू और मिट्टी। मिट्टी।
	ईओसीन	सुबाथू श्रेणी	हर सोठदार मिट्टी की शिलाएँ, चूने का पत्थर (न्यूमी लाइट (फासिलदार)	चूने का पत्थर व हरसोठ।
द्वितीय	क्रीटेशस जूरासिक	{ ताल श्रेणी	बालू के पत्थर, काली मिट्टी के पत्थर और चूने का पत्थर।	चूने व बालू के पत्थर।
	ट्रायसिक परमियन	{ क्रोल श्रेणी — बराकर श्रेणी (दक्षिण में)	नीला चूने का पत्थर, क्रोल में, सफेद बालू का पत्थर और कोयला बराकर में।	चूने का पत्थर, बालू का पत्थर और कोयला।
प्रथम	कार्बोनी केरस	{ ब्लेनी श्रेणी — ताल चीर श्रेणी (दक्षिण में)	हिम-नदी द्वारा लाये हुए पत्थरों की शिला की तह, स्लेट व बालू का पत्थर। ब्लेनी में चूने का पत्थर भी।	चूने का पत्थर, स्लेट।
	डेवोनियन साइलूरियन	जान्सर श्रेणी	बालू के पत्थर और मिट्टी के पत्थर।	बालू के पत्थर।
	केम्ब्रयन केम्ब्रयन से पहले	{ शिमला श्रेणी { चैल श्रेणी — विन्ध्या समूह (दक्षिण में); बीजावर श्रेणी (दक्षिण में)	प्रान्त के उत्तरीय भाग में स्लेट और चूने का पत्थर, दक्षिणीय भाग विन्ध्याचल में बालू का पत्थर व चूने का पत्थर। बालू मिट्टी व चूने की परिवर्तित शिलाएँ। बीजावर श्रेणी में लोहेदार शिलाएँ भी मिलती हैं।	स्लेट, चूने का पत्थर, बालू का पत्थर। चूने व बालू के पथ्थर, लोहे का गेरु।
प्राचीन	आर्कियन	— धारवाड़ समूह (दक्षिण में)	ग्रेनाइट नाइस तथा अन्य परिवर्तित शिलाएँ।	रेल सड़क की बजरी के व इमारत के कुछ पत्थर।

आग्नेय शिलाएँ—डोलेराइट-तृतीयकाल, विन्ध्यन काल तथा पुराने समय का।
ग्रेनाइट, अबरकदार-पेग्मेटाइट तथा स्फटिक की धारी का पत्थर-प्राचीनकाल का अथवा तृतीय काल का।

नदियों ने आधुनिक समय में लाये हुये तलछटों—बालू मिट्टी इत्यादि से इस भाग की पुरानी शिलाओं को कई हजार फ़ीट नीचे तक ढक दिया है। यह अनुमान किया जाता है कि हिमालय पर्वत के उठने के समय सिन्धु, पंजाब, संयुक्तप्रान्त, बिहार और बंगाल के मैदान के स्थान पर पर्वत के सामने उतना ही लम्बा और बहुत गहरा (हिमालय पर्वत और अचल भारत भूमि के मिलने के स्थान के पास कई हजार फीट गहरा) गड्ढा बन गया था। इस गड्ढे को शीघ्र ही नदियां नयी बनी हुई पर्वत श्रेणियों से निकल कर और उनको काट काटकर लाये हुये तलछटों—पत्थर के टुकड़े, बालू और मिट्टी—से भरने लगीं। ज्यों ज्यों हिमालय पर्वत ऊपर उठता गया होगा इन नदियों का वेग भी बढ़ता गया होगा और इन तलछटों के जमाव की मात्रा भी बढ़ती गई होगी जिससे हिमालय के किनारे का यह विशाल गड्ढा हिमालय पर्वत के बनने के पश्चात् के और आधुनिक काल से पहले के भौगर्भिक कालों के तलछटों से शीघ्र ही नदियों द्वारा भर दिया गया।

संयुक्त प्रान्त की भौगर्भिक शिलाओं की सूची सामने के पृष्ट पर है। इस सूची में शिला-समूहों की अन्तर्राष्ट्रीय भौगर्भिक आयु (कल्प तथा काल) और उनके भारतीय नाम दिये गये हैं। शिला-समूहों के नाम प्रायः उन स्थानों के नाम पर रखे जाते हैं जहाँ पर वे समूह प्रथमबार मिलते हैं अथवा जहाँ पर उन शिलाओं का जमाव अधिक होता है। उन शिला-समूहों में किस किस प्रकार के पत्थर मिलते हैं अथवा उन समूहों में उपयोगी पत्थर और खनिजें क्या क्या मिलती हैं यह भी इस सूची में बताया गया है।

पूर्वी यमुना नहर

पूर्वी यमुना नहर का आरम्भ शाहजहां के समय में किया गया था। १८२३ ई० में इसकी फिर से खुदाई आरम्भ हुई। १८३० में ४,३७,९६६ रुपया की लागत से नहर खुदकर तयार हो गई। नया शहर के पास एक बांध और पुल बना। बलपुर से आगे नहर ने शामली नाले के मार्ग का अनुसरण किया। नहर का प्रवाह ठीक रखने के लिये रेंगी और कई स्थानों पर नहर में प्रपात (झाल) बना दिये गये। रायपुर के पास बाढ़ का पानी बूढ़ी जमुना में डालने के लिये नहर का किनारा ठीक किया गया। नौगांव और जातों वाला नाला पार कराने के लिये नौगांव बांध बनाया गया। कुछ नीचे की ओर मस्करा बांध बनाया गया।

इसके बाद पड़ोस के गांवों को सींचने के लिये प्रधान नहर से दाईं और बाईं ओर से रजवाहे (अशाखायें) निकाली गई। औरंगाबाद गांव के पास ५६ वें मील पर पूर्वी यमुना नहर मुजफ्फर नगर जिले में प्रवेश करती है शामली और कांधला परगने को सींचती हुई यह मेरठ जिले में पहुँचती है। इस-जिले में नहर को पार करने के लिये कई पुल हैं। प्रवाह ठीक रखने के लिये झाल (प्रपात) बनाये गये हैं। पड़ोस के खेतों को सींचने के लिये दोनों ओर रजवाहे बने हैं।

८३ वें मील पर यमुना नदी मेरठ जिले में प्रवेश करती है और दिल्ली शहर के सामने यमुना नदी में गिर जाती है। पूर्वी यमुना नहर मेरठ जिले में ४६ मील बहती है और छपरौली, बड़ौत बागपत और लोना परगनों को सींचती है। पड़ोस की भूमि को सींचने के लिये इससे बहुत से राजवाहे निकाले गये हैं।

गंगा—नहर जो सफलता यमुना नहर में हुई उससे बड़ा उत्साह बढ़ा। १८३६ में हरिद्वार से ऊपर और नीचे की भूमि की पैमायश की गई। १८३७ के दुर्भिक्ष से यह योजना और दृढ़ बनाई गई। १८४१ में गंगा नहर निकालने के लिये २ लाख रुपया प्रतिवर्ष स्वीकृत कर लिया गया। १८४२ में कनखल और हरिद्वार के बीच में काम आरम्भ हुआ। १८५४ में नहर खुद कर तयार हो गई।

हरद्वार के पास गंगा प्रायः एक मील चौड़ी है। कई द्वीपों ने गंगा को अलग अलग धाराओं में बांट दिया है। इनमें से एक धारा हरद्वार से दो मील ऊपर

से अलग होती है। यह हरद्वार के पास होकर बहती है। इसमें समस्त गंगा का एक तिहाई पानी रहता है। इसी धारा से मायापुर या गणेश घाट में बांध बनाकर गंगा-नहर निकाली गई है। बांध में लोहे के बड़े बड़े फाटक लगे हैं। यहां से गंगा-नहर ज्वालापुर होती हुई पूर्व की ओर बहती है। नहर के मार्ग में कई छोटी छोटी और नाले पड़ते हैं। यह पांचवें मील पर रानीपुर नदी, नवें मील पर पथरी राऊ को पार करती है। किनारों को मजबूत बनाकर ये नाले ऊपर से निकाल दिये गये हैं।

धनौरी के पास बारहवें मील पर राटमऊ राऊ (नाली) प्रायः १ मील चौड़ा है। इसको पार कराने के लिये बायें किनारे पर पक्का बांध और पक्के दरवाजे बनाने पड़े। धनौरी से आगे रुड़की तक नहर दक्षिण-पश्चिम की ओर सीधी रेखा में बहती है। पीरन कलियर के पास रास्ते में कुछ ऊंची जमीन पड़ती है। यहाँ ३१ फुट गहरा काटकर नहर निकाली गई है। अठारहवें मील पर सोलानी नदी पड़ती है। सोलानी को पार करने के लिये ५० फुट लम्बे १५ महराब बने हैं। सोलानी के पानी के ऊपर ये २४ फुट ऊंचे हैं। इन्हीं महरावों के ६३२ फुट लम्बे पुल के ऊपर गंगा-नहर बहती है। समस्त सिरों को मिलाकर समस्त भाग लगभग तीन मील लम्बा है। इस स्थान पर नहर का तल हरिद्वार की अपेक्षा ८० फुट नीचा है। फिर भी नहर का तल ऊंचा रहने से पड़ोस की नीची जमीन को सींचने में सुविधा रहती है। रुड़की से मँगलौपुर तक गंगा-नहर दक्षिण की ओर बहती है। समस्त सहारनपुर जिले में गंगा नहर की लम्बाई ३० मील है। बाइसवें मील पर गंगा-नहर के दाहिने किनारे पर देवबन्द शाखा नहर निकलती है। देवबन्द शाखा दक्षिण-पश्चिम की ओर देवबन्द को जाती है। रास्ते में यह सिला नदी और पश्चिमी काली नदी को पार करती है। सहारनपुर जिले में देवबन्द शाखा-नहर २६ मील लम्बी है। पड़ोस की भूमि सींचने के लिये दोनों किनारों से कई रजबाहे निकाले गये हैं।

गंगा-नहर ३२वें मील पर मुजफ्फरपुर जिले में प्रवेश करके गंगा के ऊंचे किनारे के पास पास दक्षिण की ओर बहती है। इसके पूर्व में लगभग ४ मील की दूरी पर पूर्वी काली नदी बहती है। पश्चिम की ओर थोड़ी थोड़ी दूरी पर रेतीले टीले मिलते हैं। नहर की तली में भी यहां सब कहीं रेत है। यहां नहर का ढाल प्रति मील में डेढ़ फुट है। ४६ वें मील पर भोपा के पास नहर पर पुल बना है। दो मील और आगे जौला में भी पुल और प्रपात है। दो मील और आगे ५० वें मील पर बायें किनारे से गंगा-नहर की अनूप शहर शाखा निकलती है। इसके आगे नहर दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती है। ५४वें मील पर नगला-मुबारक के पास नहर के ऊपर पुल बना है। यहां होकर मुजफ्फरनगर से जानसठ को सड़क जाती है। डेढ़ मील और आगे झाल और प्रपात हैं। ५८ वें मील पर रसूलपुर सराय के पास पुल है। ३ मील और आगे रेल का पुल है। कुछ दूर आगे खतौली का पुल है। यहीं एक कटान से नहर का फालतू पानी पश्चिमी काली नदी में गिरा दिया जाता है। यह कटान ६० फुट चौड़ी है। इसमें छः छः फुट चौड़े १० द्वार हैं। यह स्थान नदी से साढ़े तीन मील दूर है। यहां पर नहर का तल नदी तल से सवाउन्तीस फुट ऊंचा है। मुजफ्फर नगर जिले का अन्तिम पुल सथेरी में है। इस पर होकर खतौली से बुढ़ाना को सड़क जाती है।

अनूप शहर शाखा को पहले फतेहगढ़ शाखा कहते थे। पहले इस नहर को फतेहगढ़ तक ले जाने का विचार था। लेकिन अनूप शहर के आगे इसमें पानी ही नहीं बचता था। इस लिये इसका नाम बदल कर अनूप शहर शाखा रख दिया गया। मुजफ्फरपुर जिले में गंगा-नहर की अनूप शहर शाखा में इतना नीचे पानी रहता है कि यह इस जिले के बहुत कम (केवल दक्षिणी) भाग को सींचती है। निकास से एक मील नीचे खेड़ी फीरोजाबाद में इस पर पुल है। दूसरा पुल दो मील आगे कम्हेरा में है। पांचवें मील पर धांसरी का पुल है। इसके डेढ़ मील आगे सलारपुर का पुल है। दसवें मील पर मुजफ्फरपुर से मीरन पुर जाने वाली सड़कें का पुल है। पुल के पास ही प्रपात है। यहां से दो मील आगे भूमा का पुल है। यही मुजफ्फरपुर जिले में अन्तिम पुल पड़ता है।

अनूप शहर शाखा के अतिरिक्त गंगा नहर के दाहिने किनारे से २१वें मील पर एक शाखा रुड़की

के पास निकलती है। बाये किनारे से एक शाखा २२ वें मील पर निकलती है और गंगा के ऊंचे किनारे के पास पास बहती है और अन्त में अनूप शहर शाखा से मिल जाती है। मुहम्मद पुर के पास उसी नाम की दूसरी शाखा निकलती है और भैसेनी के पास दूसरी प्रधान शाखा से मिल जाती है। इनके अतिरिक्त नहरों से स्थान स्थान पर सींचने के लिये बहुत से रजवाहे निकलते हैं। चितौना और निर्गजनी में आटा पीसने की पनचक्कियाँ हैं जो नहर के पानी के जोर से चलती हैं। सहारनपुर जिले में ६ स्थानों (बेल्का, नगला, रन्दौल, बबैल, घुना और सलेमपुर) पर पन चक्कियाँ चलती हैं।

६६ वें मील पर गंगा-नहर मेरठ जिले में प्रवेश करती है। यहाँ यह हिंडन और काली नदी के बीच वाले प्रदेश को सींचती है। इस प्रदेश के साधना, मेरठ, जलालाबाद और डासना परगनों को सींचने के बाद यह मेरठ जिले को छोड़कर बुलन्दशहर में पहुँचती है। मेरठ जिले में नहर का ढाल प्रति मील पौने दो फुट है। सलावा, भोला और डासना में झाल और प्रपात हैं। इनसे नहर का प्रवाह और कम हो गया है। डास्ना परगने के डेहरा स्थान से गंगा-नहर की माट शाखा निकलती है। मेरठ जिले में गंगा नहर की कई उपशाखायें हैं। दाहिनी ओर प्रधान शाखा, सलावा शाखा, भोलाशाखा, टीकरी शाखा और अनेक उपशाखायें हैं। पुल कई स्थानों (सलावा, अटनो, सरधना, नानुन जटपुरा; पूठ, भोला, जानी, नगला, निवाड़ी सोंधा, अबूपुरा, मुराद नगर, जलालाबाद, (नूरपुर, डास्ना, पीपल खेड़ा, रौली, डेहरा और निधौली) पर पुल हैं। भोला और डास्ना में आटा पीसने की पनचक्कियां हैं। भोला से गंगा-नहर का पानी मेरठ शहर और छावनी में पीने के लिये पहुँचता है। गंगा नहर की प्रधान नहर के किनारे किनारे तार लगा है। भोला से मेरठ को भी तार आता है। स्थान स्थान पर इन्सपेक्शन बंगले बने हैं।

गंगा नहर की—अनूप शहर शाखा मुजफ्फर नगर के जौली स्थान से आरम्भ होकर हस्तिनापुर परगने के मीरपुर गांव के पास चौदहवें मील पर मेरठ जिले में प्रवेश करती है। अनूप शहर नहर मेरठ, बुलन्द शहर और अलीगढ़ जिलों की भूमि सींचने के बाद लोअर गंगा-नहर में मिल जाती है। मेरठ जिले में इस नहर की लम्बाई ३९ मील है। इसकी उपशाखाओं और राजबाहों का यहां जाल बिछा हुआ है। इस नहर पर कई स्थानों में पुल बने हैं।

ऊपरी गंगा नहर ११५ वें मील पर जर्चा गांव के पास मेरठ से बुलन्द शहर जिले में बहने के बाद ११५ मील पर गेसूपुर गांव के पास बुलन्द शहर जिले में आती है। दादरी, सिकन्दराबाद, बरन, खुरजा और पहासू परगनों को सींचने के बाद १५५वें माल पर यह बुलन्द शहर जिले को छोड़ देती है। बुलन्द शहर जिले में इस नहर की लम्बाई ३८ मील है। यहां इस नहर को अनेक उप शाखायें हैं। पुल कई स्थानों पर हैं। सनोटा, वलीपुरा और पलरा में झाल बने हैं। यहीं नहर के पानी के जोर से आटा पीसने की पनचक्कियां चलती हैं।

गंगा नहर को अनूप शहर शाखापूरे अनूप शहर परगने को सींचने के बाद अलीगढ़ जिले में प्रवेश करती है। इस पर कई पुल बने हैं। मखेना के पास इसमें पनचक्की चलती है।

माटशाखा ११०वें मील पर दबरा गांव के पास प्रधान गंगा-नहर से निकलती है। दुर्भिक्ष पीड़ित लोगों को सहायता देने के लिये यह नहर १८६० ई० में खोली गई। ग्यारहवें मील पर ग्रांडट्रंक रोड के कोट गांव के पास यह दो शाखाओं में बंट जाती है। इस पर कई पुल बने हैं।

लोअर गंगा-नहर गंगा के दाहिने किनारे से भरोरा के गांव पास से १८७८ में निकाली गई। यह गंगा के ऊंचे किनारे के पास पास बह कर अलीगढ़ जिले में जाती है। नारोरा और रामघाट के पास इस पर पुल बना है।

सारदानहर सारदा और गंगा के बीच वाले द्वाबा को सींचती है। पीलीभीत से ४२ मील उत्तर-पूर्व की ओर बनबसा के पास सारदा नदी में बांध बनाया गया है। नदी के दाहिने किनारे से नहर निकलती है। ७ मील २ फर्लांग के बाद इस नहर की दो शाखायें हो जाती हैं। एक शाखा सारदा किच्छा फीडर (पोषक) नहर और दूसरी सारदा अवध

नहर कहलाती है। सारदा किच्छर पोषक नहर पश्चिम की ओर जाती है। तराई को पार करके यह नहर अपनी उपशाखाओं के साथ दक्षिण की ओर मुड़ती है और रुहेलखंड में सिंचाई का काम देती है। सारदा अवध नहर दक्षिण की ओर चलती है। २३ मील ६ फर्लांग पर इससे पीलीभीत शाखा निकलती है। २७ मील ५ फर्लांग पर इसमें से हरदोई और खीरी शाखा नहरें निकलती हैं। यह तीनों नहरें पीली भीत शाहजहांपुर, हरदोई, खीरी, सुल्तानपुर लखनऊ, उन्नाव, राय बरेली और बाराबंकी जिलों की भूमि को सींचती है। यह नहर केवल सिंचाई की नहर है। इसमें नाव चलाने की सुविधा नहीं है। इसके बनाने में लगभग १० करोड़ रुपया खर्च हुआ। शाखाओं और उपखाओं को मिलाकर यह भारतवर्ष की सबसे लम्बी नहर है। यह १७,५०,००२ एकड़ भूमि को सींचती है। इससे गन्ना की खेती को बड़ा लाभ हुआ है। नहरों के होते हुये भी संयुक्तप्रान्त के अधिकतर भाग में कुएं अधिक उपयोगी हैं। दक्षिणी भाग में कड़ी चट्टानों के कुएं हैं इनमें प्रायः कम पानी रहता है। पूर्वी भाग, अवध और रुहेलखंड में पानी पास मिल जाता है। कुएं अक्सर कच्चे होते हैं निचले भाग की मिट्टी को रोकने के लिये झाऊ अरहर आदि का घेरा पानी में बना दिया जाता है। बहुत से कुओं में कुछ नहीं रहता है। शहर के पास वाले कुयें पक्के होते हैं। इस भाग के अधिकतर कुओं में ढेंकली से पानी ऊपर खींचा जाता है। पश्चिमी भाग में पानी अधिक गहराई पर मिलता है। कुएं प्रायः पक्के बनाये जाते हैं। बैलों की सहायता से मोट द्वारा पानी खींचा जाता है। कहीं कहीं बिजली की शक्ति से पम्प द्वारा पानी ऊपर निकाला जाता है।

बड़ी बड़ी नदियों का पानी प्रायः इतना नीचा रहता है कि यह एकदम सीधे ऊपर के खेतों को सींचने के काम नहीं आ सकता। छोटी नदियों में बांध बना दिये जाते हैं। शीतकाल भर इनसे सिंचाई होती है। अवध और पूर्वी जिलों में चौड़े उथले ताल बहुत हैं। जब तक इनमें पानी रहता है तब तक इनसे सिंचाई होती है। बुन्देलखंड में तालाबों का पानी रोकने के लिये अक्सर इनके अनुकूल स्थानों पर बांध बना दिये गये हैं।

कृषि

हिमालय प्रदेश में खेती के योग्य भूमि बहुत कम है। खेती कुछ पहाड़ियों की चोटी और ढालों पर होती है। नदियों की घाटियों में भी छोटे छोटे खेत होते हैं। पहाड़ी ढालों के खेत जीनेदार होते हैं और बड़ी मेहनत से तयार किये जाते हैं।

हिमालय की कांप (बारीक मिट्टी) गंगा और उसकी सहायक नदियों द्वारा लाकर मैदान में बिछाई गई है। यह प्रायः यमुना और प्रयाग के संगम के आगे गंगा के उत्तर में मिलती है। अधिक आगे यह गंगा के दक्षिण में भी बिछी हुई है। दक्षिण-पठार की कांप यमुना और गंगा के दक्षिण में है। कहीं कहीं यह उत्तर में भी पहुँच गई है। गंगा की कांप में कहीं बालू कहीं चिकनी मिट्टी और कहीं दोनों का मिश्रण (दुमट) है। मैदान के धुर उत्तर-पूर्व में गोरखपुर के जिले में भाट मिट्टी मिलती है। इस मिट्टी में जल-ग्राही शक्ति, बहुत अधिक होती है। इसमें चूने की मात्रा अधिक होती है।

यमुना के दक्षिण में मैदान की जो मिट्टी है वह मध्य भारत से आई है। इस ओर समतल भूमि की मिट्टी कुछ काली है। जिसे माल कहते हैं। जब यह गीला होती है तब इसे जोतना कठिन है। लेकिन सूखने पर इसके भीतर अधिक समय तक नमी रहती है। नदियों की घाटी के पास वाली भूमि कटी फटी है। इसमें कुछ दूर तक माल से मिलती जुलती काली मिट्टी मिलती है। जिसे कावर कहते हैं। अधिक आगे उजाड़ खण्ड हैं। काली मिट्टी के आगे कुछ लाल (गरुआ) मिट्टी है। इसकी तहें अधिक गहरी नहीं होती हैं। यह बलुआ पत्थर की चट्टानों के घिसने से बनती है। इसके कण मोटे होते हैं। यह अधिक उपजाऊ नहीं होती हैं। जहां सिंचाई

और खाद की सुविधा है वहां फसल उग जाती है। कहीं कहीं कई वर्ष तक यह खाली पड़ी रहती है।

संयुक्त प्रान्त के भिन्न भिन्न भागों में मिट्टी और जलवायु में भेद है। इसी से फसलें भी भिन्न हैं। धान को कड़ी चिकनी मिट्टी और प्रचुर जल की आवश्यकता होती है। इसी से यह उत्तरी पूर्वी भागों में वर्षा ऋतु में उगाया जाता है। दक्षिण-पश्चिम के खुश्क भागों में इसकी खेती बहुत कम होती है। धान के साथ साथ कुछ लोग कोदों, मड़ुआ, सावा और मकई उगाते हैं। कुछ आगे चल कर वर्षा ऋतु में प्रान्त के प्रायः सभी भागों में ज्वार, बाजरा, उर्द, मूंग और मोठ बोते हैं।

इन फसलों के कटने के पहले और शीत काल के आरम्भ होने से पहले रबी की फसल बोई जाती है। इसमें गेहूँ प्रधान है। गेहूँ को उपजाऊ मिट्टी और कुछ खुश्क जलवायु की आवश्यकता होती है। इसी के साथ कम उपजाऊ खेतों में चना, जौ, मटर, सरसों आदि बोते हैं। अरहर खरीफ की फसल के साथ बोई जाती है और रबी के साथ काटी जाती है।

गन्ने की फसल वसन्त ऋतु में होली के बाद बोई जाती है। इसको कटने में प्रायः एक वर्ष लग जाता है। इसके रस से गुड़ और शक्कर बनाते हैं।

कपास की फसल वर्षा के आरम्भ होने पर बोई जाती है और शीतकाल में अक्टूबर और दिसम्बर तक चुनी जाती है। इस कपास का रेशा बहुत छोटा होता है इसी से यह सस्ती बिकती है।

सरकारी आज्ञा से कहीं कहीं पोस्त या अफीम की खेती होती है। यह सब अफीम सरकारी फैक्टरी को नियत मूल्य में बेच दी जाती है।

कला कौशल

गंगा के विशाल उपजाऊ मैदान ने संयुक्त प्रान्त को कृषि प्रधान प्रान्त बना दिया है। फिर भी यह प्राचीन समय से कला-कौशल के लिये विख्यात रहा है। पुराने समय में कलाकौशल को बड़ा प्रोत्साहन मिला। दूर दूर से चतुर कारीगर आकर उनकी राजधानियों में रहने लगे। पुराने राज्यों के नष्ट भ्रष्ट हो जाने पर भी संयुक्त प्रान्त में कई स्थान अपनी पुरानी कारीगरी के लिये विख्यात हैं। फिर भी यह प्रान्त बड़े बड़े कारखानों की संख्या में पिछड़ा हुआ है। नये ढंग के कारखानों का विकास अधिकतर कानपुर में हुआ। कानपुर की स्थिति मैदान के प्रायः मध्य में, कच्चे माल को मँगाने और बने हुये सामान को दूर दूर भेजने के लिये बड़ी अच्छी है। इसी से यह उत्तरी भारत का लंकाशायर बन गया है। समस्त प्रान्त के ½ कारखाने और मिल अकेले कानपुर में हैं। कानपूर में रजिस्टर्ड मिलों और कारखानों की संख्या ९४ है।

संयुक्त प्रान्त में प्रायः ५ लाख एकड़ भूमि कपास उगाने के काम आती है। इसमें औसत से २ लाख टन कपास पैदा होती है। प्रति एकड़ भूमि में जितनी कपास संयुक्त प्रान्त में पैदा होती है उतनी किसी दूसरे प्रान्त में पैदा नहीं होती है। लेकिन प्रान्त में जितनी रुई की खपत है उतनी पैदा नहीं होती है। लगभग १२ करोड़ पौंड सूत कातने और २४ करोड़ गज कपड़ा बुनने में संयुक्तप्रान्त रूई के ४ लाख गट्ठे खर्च करता है। इसमें कुछ रुई यहां पैदा होती है कुछ पंजाब और दूसरे प्रान्तों से आती है। संयुक्त प्रान्त की कपास छोटे रेशे की होती है। इसलिये बड़े रेशे की रुई प्रायः बाहर से ही आती है। कच्चा माल मंगाने की दृष्टि से कानपुर नगर की स्थिति बम्बई और अहमदाबाद से कहीं अधिक बुरी है। कलकत्ते से कुछ अच्छी अवश्य है।

संयुक्त प्रान्त की मिलों में अधिकतर धोती, तम्बू बनाने का कपड़ा, शर्ट, ड्रिल, लंकलाट, जीन, छींट और दूसरे कपड़े बुने जाते हैं।

चीनी का कारबार इस प्रान्त में बहुत पुराने समय से होता आ रहा है। भारतवर्ष में जितनी ईख होती है उसकी ९० फीसदी संयुक्त प्रान्त, बिहार बंगाल और पंजाब में होती है। इनमें संयुक्त प्रान्त प्रथम है। संयुक्त प्रान्त प्रतिवर्ष में प्रायः ३२ लाख टन चीनी पैदा होती है। पंजाब में साढ़े तीन लाख

टन और प्रायः इतनी ही बिहार में पैदा होती है। संयुक्त प्रान्त के एक एकड़ में ४० मन से अधिक चीनी पैदा की जाती है। बिहार और पंजाब में इसकी प्रायः आधी होती है। १९३२ में विदेशी शक्कर के संघर्ष से देशी शक्कर की रक्षा की गई। इससे मिलों की संख्या और शक्कर उपज बहुत बढ़ गई। १९३७ से भारतीय सरकार ने मिल की शक्कर पर चुंगी १।-) से बढ़ाकर २) प्रतिमन और खंडसारी शक्कर पर ।।=) से बढ़ा कर १) रु० मन कर दी। इससे चीनी के कारबार को बड़ा धक्का पहुँचा। इस समय शक्कर पर सरकारी कन्ट्रोल (नियंत्रण) है। और सरकार की ओर से शक्कर का दाम साढ़े छः आना सेर है।

चमड़े के बने हुये जूते जीन आदि सामान के अतिरिक्त कारखानों में भी चमड़े की बनी हुई चीजों का प्रयोग होता है। कानपुर में चमड़े के कई कारखानें हैं। एलान कूपर कम्पिनी में कई प्रकार का चमड़ा तयार किया जाता है। क्रोम चमड़े में विशेष उन्नति हुई है। संयुक्त प्रान्त से ६० लाख वर्ग फुट कमाया हुआ चमड़ा इंगलैंड को जाने लगा है। पहले सबका सब कच्चा चमड़ा जाता था। फौजी सिपाहियों के लिये जूता और दूसरा सामान बनाने के लिये भारतवर्ष में चमड़े का सबसे बड़ा कारखाना कानपुर में स्थित है। चमड़े के सभी प्रकार के कारबार के लिये कानपुर प्रथम है। जूते बनाने का काम आगरा में भी बहुत होता है। औसत से साढ़े तीन लाख जानवरों की खालें प्रतिदिन कमाई जाती हैं। इस कारबार में लगभग ५ हजार मजदूर काम करते हैं। और साल भर में ७५ लाख रुपये का माल तयार किया जाता है। कच्चे चमड़े के लिये कानपुर उत्तरी भारत में सबसे बड़ी मंडी है। यहां से प्रतिवर्ष बड़े जानवरों से ३ लाख मन चमड़ा और बकरी आदि की १ लाख मन खाल बाहर भेजी जाती है। १८,००० टन कमाया हुआ चमड़ा बाहर भेजा जाता है। उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रान्त, कलकत्ता और बिहार से चमड़ा कानपुर को आता है। चमड़ा कमाने के लिये बबूल की छाल और कुछ दूसरी छालों का प्रयोग होता है। हिपो और क्रोमियम आदि रसायनिक पदार्थ विदेशों से आते हैं।

लम्बे बूट, जूते, जीन, सूटकेस आदि कई प्रकार का सामान तयार किया जाता है। यहां का बना हुआ चमड़े का सामान भारतवर्ष के सभी प्रान्तों में जाता है।

शीशा—बालू और सोडा को मिलाकर शीशा बनाने का काम भारतवर्ष में बहुत पुराने समय में होता था। लेकिन बड़े बड़े कारखानों का आरम्भ १९ वीं सदी में आरम्भ हुआ। कुछ बड़े बड़े कारखाने बीसवीं सदी में प्रारम्भ हुये।

रसायिनक पदार्थों के कारखाने, गाज़ियाबाद, आगरे और कानपुर में हैं। गंधक इटली और अमरीका से आती थी। बाकसाइट अलवर और मध्य प्रान्त से आता है। नमक सांभर भील से आता है और शोरा पड़ोस में ही तयार किया जाता है। इन कारखानों में सल्फ्यूरिक एसिड आदि चीजें तयार की जाती हैं।

तेल और साबुन—संयुक्त प्रान्त में २० लाख मन से अधिक तिलहन पैदा होता है। तेल पेरने का काम कई स्थानों में होता है। कानपुर के एक कारखाने में बाइल्ड आयल (तेल) तयार होता है। बेगमाबाद में बिनौले का घी और मेरठ आदि कई स्थानों में साबुन तयार किया जाता है। कन्नौज गाजीपुर और जौनपुर में सुगंधित तेल बनता है।

कागज़—प्राचीन समय में भोजपत्र (वृक्ष की छाल) पर ग्रन्थ लिये जाते थे। कई स्थानों में सन से कागज बनाने का काम आरम्भ हुआ। लखनऊ में अपर इण्डिया कूपर मिल ने १८७९ से बैब घास से कागज बनाना आरम्भ किया। दूसरा बड़ा कारखाना जगाधरी (सहारन पुर) में बना है। १९३८ में सहारनपुर में स्टार पेपर मिल की स्थापना हुई। कच्चा माल पंजाब और नैपाल से आता है। इसमें प्रतिवर्ष लगभग ४००० टन कागज़ तयार होता है। सहारनपुर, में एक मिल धान के प्याल से बाडे नयार करता है। कलटर बकरगंज में बाबिन, बरेली में टर्पेन्टाइन, शिकोहाबाद में बिजली के बल्ब बनाये जाते हैं।

शराब बनाने का काम कानपुर, उन्नाव, लखनऊ, सहारनपुर, फैज़ाबाद और फर्रुखाबाद में होता है। बरेली में एक कारखाना कत्था (खैर) तयार करता है।

शीशे का काम—संयुक्त प्रान्त में लगभग १ करोड़ का शीशे का सामान तयार किया जाता है। एक (बहजोई) कारखाने में शीशे के चपटे टुकड़े, छः कारखानों में बोतलें और ३१ कारखानों में चूड़ियां तयार की जाती हैं। नैनो (इलाहाबाद) माखनपुर, हरगांव सास्नी, हाथरस, बालावाली शीशे के कारखाने के प्रधान केन्द्र हैं चूड़ियों का प्रधान केन्द्र फीरोजाबाद है। बोतल, शीशी, पानी के बर्तन गोले, चिमनी, तश्तरी, लोटा गिलास, बल्ब आदि सामान शीशे के कारखानों में तयार किया जाता है। संयुक्त प्रान्त का बना हुआ शीशे का सामान भारत के दूसरे प्रान्तों में पहुँचता है।

बड़े बड़े कारखानों के अतिरिक्त प्रान्त में कई प्रकार के घरेलू धंधे फैले हुये हैं। मेरठ, बुलन्द शहर मुजफ्फर नगर बिजनौर जिलों में जुलाहे सादा गाढ़ा और खद्दर बुनते हैं। चौतही (बिस्तर पर बिछाने वाला कपड़ा) और खेस देवबन्द (सहारनपुर) सिकन्दराराव (अलीगढ़) अमरोहा (मुरादाबाद) आदि स्थानों में बुना जाता है।

मालिन, जामदानी आदि बढ़िया कपड़ा सिकन्दरा बाद (बुलन्द शहर) और टांडा (फैजाबाद) में बुना जाता है।

लहंगे का कपड़ा मऊऐमा रानीपुर और धामपुर बुना जाता है।

रेशम और साटिन कपड़ा मुबारकपुर और मऊ में बुना जाता है। कामदार रेशमी कपड़ा बनारस में तयार होता है। सादा रेशमी कपड़ा इटावा, शाह जहां पुर और हरदोई में बुना जाता है।

ऊनी कम्बल—मुजफ्फर नगर, मेरठ और नजीबाबाद में बनते हैं।

अलमोड़ा का थल्मास अच्छा होता है दरी आगरा अलीगढ़, बरेली, मेरठ और सीतापुर में सस्ती और अच्छी बनती हैं ऊनी कालीनों के लिये मिर्जापुर, शाहजहांपुर और आगरा प्रसिद्ध है। कपड़े की सुन्दर छपाई के लिये फर्रुखाबाद, लखनऊ, पिलखुवा मेरठ) जहांगीराबाद (बुलन्द शहर) प्रसिद्ध है

चमड़े के घरेलू धन्धे में लगभग सवा लाख मोची लगे हुये हैं। इनमें ७५ हजार चमड़ा कमाते हैं। ५० हजार जूता आदि चमड़े का सामान बनाते हैं। आगरा कानपुर लखनऊ सहारनपुर प्रधान केन्द्र हैं।

धातु के काम में तांबे और पीतल के बर्तन मुख्य हैं। पीतल और तांबे के बर्तन शामली (मुजफ्फरनगर) बड़ौत (मेरठ), मुरादाबाद, फर्रुखाबाद ओयल (खीरी) अल्मोड़ा और हाथरस में बनते हैं। बढ़िया कामदार बर्तन मुरादाबाद और बनारस में बनते हैं। ताले सिटकनी अलीगढ़ में तयार होते हैं। कैंची मेरठ में अच्छी बनती है। चाकू सरौते, हाथरस, शाहजहांपुर और कायमगंज (फर्रुखाबाद) में बनते हैं। लोहे की ढलाई का काम और हल खुरपा आदि आगरा, बरेली, हरदोई और दनकौर (बुलन्दशहर) में होता है। अलीगढ के ताले भारतवर्ष भर में प्रसिद्ध हैं। धातु के कारबार का कच्चा माल लोहा, पीतल और तांबा बाहर से आता है। इस कारीगरी में १५०,००० मनुष्य लगे हैं।

लकड़ी का काम प्रायः प्रत्येक गांव में होता है। लहड़, बैलगाड़ी, चारपाई, हल आदि बनाने का काम बहुत स्थानों में होता है। मेरठ, अमरोहा, पीलीभीत, बरेली, आगरा इसके प्रधान केन्द्र हैं। मेज कुरसी, टांगे बरेली में अच्छे बनते हैं। बढ़िया कारीगरी का काम सहारनपुर में होता है। नगीना में अम्बनूस (काली लकड़ी) का काम बड़ा सुन्दर होता है। लकड़ी के काम में भारत भर में लगभग २५०,००० बढ़ई लगे हुये हैं। बरेली में ८ लाख सहारनपुर में १ लाख और नगीना में तीस हजार रुपये का सामान प्रति वर्ष तयार होता है। मिट्टी के बर्तन बनाने का काम बहुत पुराना है। घड़ा, हांडी आदि मिट्टी के बर्तन प्रायः सभी गांवों में बनते हैं। शहरों के होशियार कुम्हार सुराही, प्याले, खिलौने आदि बहुत सी चीजें बनाते हैं। लखनऊ, चुनार, अमरोहा और खुरजा में मिट्टी के बढ़िया चिकने बर्तन बनते हैं।

रस्सी और बान बटने का काम गांव वाले अधिकतर गांवों में करते हैं। पूर्वी जिलों में मल्लाह लोग बेचने के लिये भी बान बटते हैं। बान सन मूंज और बैब से बनाये जाते हैं। जौनपुर परतापगढ़ सुल्तानपुर, राय बरेली आदि जिलों में टाट पट्टी सब सन से बनाई जाती है। बान बटने में लगभग

४,०९० और टाट पट्टी बनाने में १०,००० मनुष्य लगे हुये हैं।

मोढा और टोकरी बनाने में लगभग ७२,००० मनुष्य लगे हैं। मोढा मरकंडे से और टोकरी अरहर, झाऊ, बांस आदि से बनाई जाती है।

तम्बाकू पीने, खाने और सूंघने की बुरी आदत बहुत से लोगों में है। गांव के लोग हुक्का और चिलम से तम्बाकू पीते हैं शहर के लोग प्रायः सिगरट या बीड़ी पीते हैं। सिगरट बनाने का एक कारखाना सहारनपुर में हैं। बीड़ी इलाहाबाद आदि कई शहरों में बनाई जाती है। खाने वाली तम्बाकू के प्रधान केन्द्र लखनऊ, बनारस और बरेली हैं। सूंघने वाली तम्बाकू (बांस) बनारस में अधिक अच्छी होती है।

इत्र और सुगन्ध के लिये कन्नौज और लखनऊ प्रसिद्ध हैं। जौनपुर में चमेली और बेला का तेल अच्छा होता है। अलीगढ़ और एटा जिलों में बहुत से भागों में सुगन्धित फूल होते हैं। इन्हें कन्नौज और लखनऊ के गन्धी व्यापारी मोल ले आते हैं। संयुक्त प्रान्त में ढाई लाख रुपये का सुगंधित तेल और इत्र तयार होता है।

रुहेलखंड के बहुत से स्थानों में ईख से राब, गुड़ और खंड सारी चीनी बनाते हैं।

प्रतिवर्ष हाथ से प्रायः दो ढाई लाख टन चीनी तयार की जाती है।

सोने चांदी के जेवर बनाने का काम बहुत से नगरों में होता है। सोने चांदी के तार काम के लिये लिये बनारस प्रसिद्ध है।

इंजीनियरिंग, फाउंटेन पेन (कलम) आदि नये ढंग के कारबार अभी बहुत कम स्थानों में होते हैं।

कलाकौशल का उल्लेख प्रत्येक जिले के पार चपके साथ भी किया गया है। इसी से यहां संक्षेप में ही वर्णन किया गया है।

* * *

व्यापार

संयुक्त प्रान्त के समस्त व्यापार के ठीक ठीक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। जिन कारखानों में कच्चा माल आता है उनके अंक उपलब्ध हैं। कारखानों में जो माल तयार होता है उसका पता भी ठीक ठीक चलता है। इनके अतिरिक्त प्रान्त में दूसरे प्रान्तों और बाहर से खाद्य पदार्थ और पक्का माल भी बाहर से आता है। बाहर जाने वाले खाद्य पदार्थों में गेहूँ, गेहूँ का आटा, चना, शक्कर, गुड़, ज्वार, बाजरा, वनस्पति तेल, घी, चाय, चावल, धान, दाल आदि अन्न प्रधान हैं। बाहर से आने वाले खाद्य पदार्थों में धान, चावल, सूखे फल, गेहूँ का आटा और नमक प्रधान है।

चावल अधिकतर बंगाल, बिहार और मध्य प्रान्त से आते हैं। सूखे फल बलोचिस्तान, सीमाप्रान्त और मैसूर राज्य से आते हैं। गेहूँ या गेहूँ का आटा पंजाब से आता है। सांभर नमक राजपूताना से आता है। विदेशी चाय दिल्ली या कलकत्ता के मार्ग से आता है। प्रतिवर्ष प्रायः ५८ लाख मन चावल, ४ लाख मन सूखे फल ९ लाख मन गेहूँ और आटा और ६९ लाख मन नमक संयुक्त प्रान्त में बाहर से आता है।

संयुक्त प्रान्त से गेहूँ और गेहूँ का आटा (२६-लाख मन) बङ्गाल और बिहार को जाता है। बङ्गाल से यह विदेशों को जाता है। ३३ लाख मन चना मद्रास, बम्बई, कलकत्ता और बिहार को जाता है। ४० लाख मन ज्वार बाजरा पंजाब और बम्बई को जाता है। ७० लाख मन दूसरे अन्न और दाल बङ्गाल और बिहार को भेजा जाता है। ७० लाख मन शक्कर ७१ लाख मन गुड़ संयुक्त प्रान्त से पंजाब, राजपूताना, मध्यप्रान्त और बङ्गाल को जाती है। १० लाख मन तेल और २ लाख मन घी प्रायः कलकत्ते को जाता है। २० हजार मन चाय अधिकतर पञ्जाब को जाती है।

कारखानों के काम की कई चीजें बाहर से आती है। इनमें ६८ लाख मन कोयला और कोक बंगाल और बिहार से आता है। ३ लाख मन डोरा बाहर से सवा लाख मन दूसरे प्रान्तों से आता है। ५ लाख मन जूट बंगाल और बिहार से आता है। मध्य

प्रान्त, मध्य भारत और बंगाल से सवा लाख मन जूट बंगाल और बिहार से आता है मध्य प्रान्त, मध्य भारत और बंगाल से सवा लाख मन लाख आती है। ४ लाख मन तम्बाकू बिहार से आती है। १ लाख मन टीक और ५६ हजार मन ऊन कलकत्ते के मार्ग से विदेशों से आता है।

कारखानों के काम का जो कच्चा माल बाहर भेजा जाता है वह इस प्रकार है। ७ लाख मन सन, कलकत्ते को बाहर भेजने के लिये ६ लाख मन हड्डी डेढ़ लाख मन डोरा बिहार को ४ लाख मन खाल और चमड़ा बम्बई, कलकत्ता और मद्रास के मार्ग से बाहर जाता है। ३६ लाख मन लकड़ी पञ्जाब और राजपूताना को जाती है।

बने हुये पक्के माल में ४८ लाख मन सीमेन्ट मध्य प्रान्त (कटनी) और बिहार (डालमिया नगर) से आता है। १३ लाख मन सूती कपड़ा अधिकतर बम्बई से आता है। ५ लाख मन बोरे और २६ लाख मन लोहे और फौलाद का सामान बिहार और बंगाल से आता है। इसमें से कुछ माल पञ्जाब और दूसरे भागों में पहुँचता है। संयुक्त प्रांत का बना हुआ साढ़े तीन लाख मन सीसे का सामान पञ्जाब, दिल्ली दूसरे भागों को जाता है। ५१००० मन लाख कलकत्ते के मार्ग से विदेशों को जाती है। इनके अतिरिक्त जूते, पीतल के बर्तन, लकड़ी की बनी हुई चीजें और सूती कपड़े इस प्रान्त से दूसरे प्रान्तों को जाते हैं।

संयुक्त प्रान्त में प्रति वर्ष लाखों रुपये की मशीनें और मशीनों के अंग (पुरजे) बाहर से आता है।

सीने का डोरा, वाटर प्रूफ (पानी न भिदने वाला कपड़ा) कम्बल, पाइप, तार, टाइप, तार, तार की जाली, कांटेदार तार टाइपराइटर, डुप्लीकेटर, छापने की स्याही सड़क बनाने का सामान, वैज्ञानिक प्रान्त, कागज, कलम और दूसरा बहुत सा सामान बाहर से आता है।

★ ★ ★

शिक्षा

१७९१ ईस्वी में हिन्दू धर्म शास्त्र और हिन्दू सभ्यता का अध्ययन करने के लिये काशी में कालेज खोला गया। इसका प्रधान उद्देश्य यह था कि अंग्रेजी न्यायाधीशों को हिन्दू न्याय के सम्बन्ध में सम्मति देने वाले मिला सकें। १८२२ ईस्वी में पंडित गंगाधर ने एक बड़ा कोष आगरा कालेज चलाने के लिये छोड़ा। १८२३ और १८२७ के बीच में पूर्वीय ज्ञान के प्रचार के लिये ८ स्कूल खोले गये। आगे चल कर लार्ड मेकाले ने पूर्वीय ज्ञान की बड़ी निन्दा की और अंग्रेजी विद्या की बड़ी प्रशंसा की। फल यह हुआ विलियम बेंटिंक के आदेशानुसार १८३६ ईस्वी में संयुक्त प्रान्त में अंग्रेजी विद्या का श्री गणेश हुआ।

१८४८ में प्रान्त की शिक्षा का नियन्त्रण स्थानीय सरकार के हाथ में आ गया। पाठ्य पुस्तकें तयार की गईं। शिक्षा का माध्यम देशी भाषाओं द्वारा आरम्भ हुआ। देशी स्कूलों को सहायता दी गई। १८४९ में एक योजना तयार की गई। इसके अनुसार बरेली, शाहजहांपुर, आगरा, मथुरा, मैनपुरी, अलीगढ़, फर्रुखाबाद और इटावा के आठ जिलों की प्रत्येक तहसील के केन्द्र स्थान में एक आदर्श स्कूल खोलने का निश्चय हुआ। प्रत्येक जिले के लिये एक दर्शक (विजिटर) दो या तीन परगना विजिटर और एक प्रधान विजिटर या विजिटर जनरल नियुक्त किया गया। १८५४ में मथुरा के कलक्टर मिस्टर एलेग्जेंडर ने एक योजना तयार की जिसके अनुसार प्राइमरी स्कूल स्थापित किये गये। इनका खर्च चौधरानी ढंग से जमींदार लोग देते थे। शीघ्र ही दूसरे जिलों ने इस प्रथा का अनुकरण किया और बहुत से जिलों में प्राइमरी स्कूल खुल गये। इसी समय सार्वजनिक शिक्षा विभाग का निर्माण हुआ। इस समय सरकार की ओर से दो कालेज और एक हाई स्कूल था। अंग्रेजी शिक्षा अधिकतर मिशनरियों के हाथ में थी। इनके तीन कालेज और दस स्कूल थे। १८५७ ईस्वी में जिला स्कूल स्थापित किये गये। अवध में प्राइवेट स्कूल आरम्भ किये गये। यह चन्दे से खोले गये थे। लेकिन इनको सरकारी सहायता मिलती थी। तहसीली स्कूल १८६१ से १८६५ के बीच में खोले

गये। १८६४ में अवध का शिक्षा विभाग खुला। १८६० में इस प्रान्त के कालेज कलकत्ता विश्व विद्यालय से सम्बद्ध कर दिये गये। इस प्रकार यहां विश्वविद्यालय की शिक्षा का आरम्भ हुआ।

१८७२ ईस्वी में इलाहाबाद में म्यूर सेण्ट्रल कालेज स्थापित हुआ। यह उन्नत और उच्च शिक्षा का केन्द्र बना। इसी वर्ष अलीगढ़ में एंग्लो मुहम्मडन कालेज स्थापित करने पर विचार किया गया। १८७७ ई० में यह सिद्धान्त मान लिया गया कि स्थानीय स्कूलों पर स्थानीय समितियों या बोर्डों का कुछ नियन्त्रण हो।

१८९२ में कमीशन ने इस बात पर जोर दिया कि प्राइवेट स्कूलों को सहायता दी जावे। डिस्ट्रिक्ट और म्युनिसिपल बोर्डों का प्राइमरी और सेकंडरी स्कूलों पर नियन्त्रण हो गया। स्कूलों का निरीक्षण करने वाले अफसर बहुत वर्षों तक इन बोर्डों के अधीन रहे।

१८८७ ईस्वी में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी स्थापित की गई। प्राइमरी स्कूलों को पैसे की बड़ी कमी थी। इन स्कूलों की संख्या १०,००० से कम थी। इनमें पांच लाख से भी कम विद्यार्थी थे। १९१२ ईस्वी तक केवल १६ लाख रुपये के अन्दर इन पर खर्च होता था। १९०७ ईस्वी में एक कमिटी सेकंडरी (माध्यमिक शिक्षा) पर विचार करने के लिये बुलाई गई। जिला हाई स्कूल इस समय तक डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अधीन थे। इस से प्रबन्ध में बड़ी गड़बड़ी पड़ती थी। एक हाई स्कूल से दूसरे हाई स्कूल को अध्यापकों के बदलने में सब से बड़ी कठिनाई थी। अतः हाई स्कूलों का प्रबन्ध प्रान्तीय विभाग बना दिया गया। अध्यापकों के वेतन में भी कुछ वृद्धि हुई। स्कूलों के साथ होस्टल बना दिये गये और इन्स्पेक्टरों की संख्या बढ़ा दी गई। अन्त में स्कूल लीविंग सर्टीफिकेट परीक्षा आरम्भ कर दी गई। लड़कियों की शिक्षा की ओर भी ध्यान दिया गया। लखनऊ में लड़कियों के लिये नार्मल स्कूल खोला गया। इलाहाबाद में एक चीफ इन्स्पेक्टर आफ गर्ल्स स्कूल्स की नियुक्ति हुई। लड़कियों के लिये कुछ ट्रेनिंग क्लास भी खोले गये। मुसलमानों में शिक्षा फैलाने का विशेष ध्यान दिया गया।

जहां कहीं इनकी संख्या २० तक थी वहां डिस्ट्रिक्टबोर्ड इनके लिये स्कूल खोलने के लिये बाध्य था। मुसलमानी स्कूलों में एक विशेष इन्स्पेक्टर और एक डिप्टी इन्स्पेक्टर नियुक्त किया गया। एक प्रान्तीय मक्तब कमिटी और जिला मक्तब कमेटियां बनीं। मक्तबों के लिये विशेष पाठ्यक्रम बनाया गया।

प्राइमरी और हाई स्कूलों की संख्या भी कुछ बढ़ी। इण्टरमीजियेट क्लास विश्व विद्यालय से अलग कर दिये गये। इनकी और हाई स्कूल की परीक्षा का प्रबन्ध भी नव निर्मित हाई स्कूल और इण्टर मीजियेट बोर्ड को सौंप दिया गया। १९१६ में बनारस में हिन्दू विश्व विद्यालय और १९२० में अलीगढ़ में मुस्लिम यूनीवर्सिटी स्थापित हुई। आगे चलकर आगरा यूनिवर्सिटी और लखनऊ यूनिवर्सिटी प्रथक बनीं। इलाहाबाद यूनिवर्सिटी स्थानीय होस्टलों में रहने वाले विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा देने और उनकी परीक्षा लेने का कार्य करने लगी। बाहरी के डिग्री कालेज इसके क्षेत्र से अलग हो गये। जब कांग्रेस मन्त्रिमंडल बना तब बेसिक (बुनियादी) शिक्षा की ओर विशेष जोर दिया गया। एक बेसिक ट्रेनिंग कालेज प्रयाग में खुला। कई बेसिक ट्रेनिंग केन्द्र अन्य शहरों (लखनऊ और बनारस) में खोले गये। बेसिक स्कूलों की संख्या बढ़ने लगी। पुस्तकालयों और वाचनालयों आदि द्वारा शिक्षा का विशेष प्रसार करने के लिये एक योग्य शिक्षा-प्रसार अफसर नियुक्त किया गया।



इतिहास

संयुक्त प्रान्त का इतिहास वास्तव में भारतवर्ष का इतिहास है। जो ऐतिहासिक घटनायें इस प्रान्त में घटी उनका प्रभाव सारे भारत वर्ष पर पड़ा। मथुरा, बिजनौर, कानपुर और उन्नाव में पाषाण काल के कुछ पत्थर के औज़ार और चित्र मिले हैं। वैदिक काल में अयोध्या कोई साधारण नगर न था। श्री राम चन्द्र जी ने जिस अयोध्या में जन्म लिया था उसका प्रभाव भारत के सुदूर प्रान्तों पर पड़ रहा था। चित्रकूट, प्रयाग आदि रामायण कालीन घटना स्थल अधिकतर इसी प्रान्त में हैं। कौरवों और पांडवों के बीच में महाभारत हुआ उससे सम्बन्ध रखने वाले हस्तिनापुर पांचाल आदि अधिकतर स्थान इसी प्रान्त में हैं।

ईसा से ५७० वर्ष पूर्व महात्मा गौतम बुद्ध के जीवन से इस प्रान्त का लिखित इतिहास आरम्भ होता है। चौथी सदी ईस्वी तक बौद्धमत का जोर रहा आगे चलकर यह प्रान्त चन्द्र गुप्त मौर्य के साम्राज्य में शामिल हो गया। सम्राट अशोक के शिला लेख या स्तम्भ लेख इलाहाबाद, सारनाथ (बनारस के पास) और कलसी (देहरादून) में मिले हैं। पुराणों के अनुसार ईसा से १७८ वर्ष पूर्व मौर्यवंश का अन्त हो गया।

आगे चल कर इस प्रान्त में चार राज्य हो गये। उत्तर-पांचाल (वर्तमान रुहेलखंड) सौर-सेन (मथुरा) कौशल (अयोध्या) और कौशाम्बी या इलाहाबाद का राज्य था। सिक्का से पता चलता है कि मथुरा और अयोध्या में हिन्दू राज्य उत्तर पांचाल था। अयोध्या और कौशाम्बी में बौद्ध राज्य था।

ईसा से १५० वर्ष पूर्व शक लोग भारत वर्ष में मथुरा के पड़ोस तक फैल गये। इन्हें कुशान वंश के लोगों ने भगाया था। कुशान वंश के प्रसिद्ध राजा कनिष्क और हविष्क के सिक्के मथुरा के पास पाये गये हैं।

३०० ईस्वी में मगध में गुप्त वंश का राज्य स्थापित हुआ। समुद्र गुप्त का साम्राज्य सतलज बंगाल और अवध से मध्यभारत तक फैल गया था। संयुक्त प्रान्त इसी साम्राज्य का एक अंग था। गुप्त राज्य १५० वर्ष तक रहा इस बीच में संस्कृत भाषा और हिन्दू संस्कृति की बड़ी उन्नति हुई। चीनी यात्री फाहियान ने मुक्तकंठ से इस राज्य की प्रशंसा की है।

श्वेत हूणों के आक्रमण से गुप्त साम्राज्य छिन्न भिन्न हो गया।

कुछ समय तक गड़बड़ी रही देश छोटे छोटे टुकड़ों में बट गया। अंत में थानेश्वर के राजा हर्ष वर्द्धन ने अपना साम्राज्य शक्तिशाली कर लिया। गंगा और राम गंगा के संगम के पास कन्नौज नगर में उसने राजधानी बनाई। हर्ष वर्द्धन के समय में सब कहीं सुख और शान्ति फैली। वह एक प्रकार का सन्यासी राजा था।

पांच वर्ष में जो कुछ धन इकट्ठा हो जाता था उसे वह प्रयाग जाकर दान पुण्य में बांट देता था। पर हर्षवर्द्धन का साम्राज्य अधिक समय तक न रहा।

नवीं सदी में कन्नौज में रघुवंश राजा और बुन्देलखंड में चौहान और पंजाब में तोमर राजपूत राज्य करते थे। ग्यारहवीं सदी के अन्त में मुसलमानों का आक्रमण आरम्भ हुआ। १०१८ ई० में मुहम्मद ने बुलन्दशहर, मथुरा और कन्नौज को जीत लिया। इसी बीच में दिल्ली के चौहानों का राज्य बुन्देलखंड तक फैल गया। ११९२ में मुहम्मद गोरी ने पृथिवी राज के राज्य को नष्ट कर दिया। अपने गुलाम सेनापति कुतुबुद्दीन की सहायता से गोरी ने दिल्ली, कालिंजर महोबा और कोयल पर अधिकार कर लिया। ११९४ ईस्वी में कन्नौज के राजा जयचन्द के हार जाने से एक बड़े हिन्दू राज्य का अन्त हो गया। दक्षिणी अवध के भर राजा १२४७ ई० में नष्ट कर दिये गये। गुलाम वंश के राजाओं ने मुसलमानी राज्य को कुछ अवश्य बढ़ाया। लेकिन खिलजी वंश के शासन में यह बहुत फैल गया।

अलाउद्दीन ने टैक्स बहुत बढ़ा दिया, इसके बाद तुर्की वंश के तुगलक राजाओं का राज्य हुआ।

१३५१ में जौनपुर के शर्की बादशाहों ने नया राज्य स्थापित किया। १४५० में दिल्ली के अफगान

राजा बहलोल लोदी ने इन पर चढ़ाई की और इन्हें नष्ट कर दिया।

१३९८ में तैमूर ने दिल्ली पर आक्रमण किया। इस आक्रमण का कोई स्थायी फल न हुआ। १५२६ में बाबर ने चढ़ाई की। और पानीपत के मैदान में इब्राहीम लोदी को हराकर मुगल राज्य की नींव डाली उसने पूर्व में अफगानों और फतेहपुर सीकरी के पास राजपूतों को हराया। लेकिन उसका बेटा हुमायूँ अपना राज्य न जमा सका। शेरशाह ने उसे कन्नौज के पास हराया और देश से बाहर भगा दिया। १५-५५ में ईरान से नई सेना लेकर हुमायूं फिर लौटा और उसने दिल्ली और आगरे को फिर से जीत लिया। १५५६ ईस्वी में वह मर गया। मुगल राज्य का जमाने और बढ़ाने का श्रेय उसके बेटे अकबर को है। अकबर ने जज़िया और दूसरे टैक्स हटा दिये। उसने हिन्दुओं से बड़ा अच्छा व्यवहार किया। उसने आगरे और इलाहाबाद में किले बनवाये और फतेहपुर सीकरी में नया शहर बसाया। १६०५ में वह मर गया। उसके बेटे जहांगीर ने १६२७ ईस्वी तक राज्य किया। इसी समय डच और अंग्रेज हिन्दुस्तान में व्यापार करने के लिये आये। १६२७ ईस्वी में शाह जहां गद्दी पर बैठा। उसने आगरे में ताजमहल बनवाया। १६५७ ईस्वी में उसके लड़कों ने विद्रोह मचाया और औरंगजेब ने उसे कैद कर लिया। १६५८ में औरंगजेब बादशाह हुआ। उसने हिन्दुओं को साथ बुरा बर्ताव किया। मथुरा और काशी के पवित्र मन्दिरों को तुड़वाकर उनके स्थान पर उसने मस्जिदें बनवाईं। जजिया टैक्स फिर से लगाया गया। १७०७ में औरंग जेब के मरने पर मुगल राज्य छिन्न भिन्न होने लगा। जाट, सिक्ख और मराठे अपना अपना राज्य स्थापित करने लगे। १७-२९ में मरहठों ने बुन्देल खंड जीत लिया। १७३८ ई में नादिरशाह ने हमला किया और दिल्ली को लूटा इससे मुगलों की शान और भी मिट्टी में मिल गई। मुगलों के पुराने सूबेदार स्वाधीन होकर अलग अलग राज्य बनाने लगे। १७२१ में अवध का राज्य स्वाधीन हो गया। एक बंगश पठान ने फर्रुखाबाद में नवाबी राज्य स्थापित किया। १७४० में रुहेलों ने रुहेलखंड में अपना राज्य बना लिया। १७५७ में आलमगीर द्वितीय नाम मात्र को दिल्ली का बादशाह था। वह अपने वज़ीर के हाथ में कठपुतली के समान था। नजीब खां नामी एक पठान मेरठ और बरेली पर अपना अधिकार जमाये था। द्वाबा के मध्यवर्ती भाग पर फर्रुखाबाद के नवाब का अधिकार था। बुन्देलखंड मरहठों के हाथ में था शेष भाग पर अवध के नवाब का राज्य था। राजपूत और जाट मरहठों से मिल गये थे।

१७६० में अहमदशाह दुर्रानी ने हमला किया। रुहेलों और अवध के नवाब की सहायता से पानी पत के मैदान में १७६१ में उसकी जीत हुई। शाह आलम द्वितीय दिल्ली का दूसरा नाममात्र का सम्राट था। १७६१ में बिहार प्रान्त में वह अंग्रेजों के सम्पर्क में आया। उसने बंगाल की दीवानी एक वार्षिक रकम के बदले में अंग्रेजों को दे दी। इलाहाबाद, फतेहपुर और कानपुर के जिले जो उस समय इलाहाबाद, और कड़ा के नाम से प्रसिद्ध थे। शाह आलम को मिल गये। उसे २६ लाख रुपये की वार्षिक पेन्शन भी दी गई सुजाउद्दौला ने ५० लाख रुपये अंग्रेजों को दिये। यह बक्सर की लड़ाई का परिणाम था। दूसरी लड़ाई जाजमऊ (कानपुर के पास हुई थी। इसमें मरहठों की भी एक फौज शामिल थी।

इसी समय प्रान्त के उत्तरी भाग में सिक्खों के हमले हो रहे थे। जाटों ने आगरे पर अधिकार कर लिया। मरहठे दिल्ली में आ डटे। मरहठे रुहेल खंड पर भी छापा मार रहे थे। शाहआलम ने इलाहाबाद मरहठों के लिये दिया था। इससे नाराज होकर ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने इलाहाबद शाहआलम से छीन कर अवध के नवाब को दे दिया। अवध की उत्तरी सीमा की रक्षा करने के लिये कम्पिनी ने एक फौज वहां भेज दी। फतेहगढ़ छावनी का आरम्भ इसी समय (१७७३) से होता है। १७७५ ईस्वी में बनारस कमिश्नरी का अधिकतर भाग अवध के नवाब आसफउद्दौला से ब्रिटिश कम्पिनी ने ले लिया। इस भाग का शासन बनारस के राजा चेतसिंह के हाथ में था। १७८० ईस्वी म चेतसिंह ने जब हेस्टिंग्स का मनमाना जुर्माना अदा करने से इनकार कर दिया तब चेतसिंह को यहां से भागना पड़ा और ईस्ट

इन्डिया कम्पिनी ने इस समस्त प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया।

मरहठों की शक्ति फिर बढ़ गई थी उन्होंने मथुरा, आगरा, दिल्ली और उत्तरी द्वाबा पर अपना अधिकार कर लिया था। फर्रुखाबाद का नवाब अवध के अधीन था। जब से नवाब ने इलाहाबाद का किला अंग्रेजों को दे दिया और वार्षिक कर देना आरम्भ कर दिया तब से अंग्रेजों का प्रभाव बढ़ गया।

इसके बाद अंग्रेजी राज्य इस प्रान्त में तेजी के साथ बढ़ा। १८०१ ईस्वी में अवध के नवाब ने बाहरी आक्रमण से रक्षा के बदले में ईस्ट इण्डिया कम्पिनी को गोरखपुर, रुहेलखंड की कमिश्नरियां और इलाहाबाद, फतेहपुर कानपुर, इटावा, मैनपुरी, एटा, दक्षिणी मिर्जापुर और नैनीताल की तराई भेंट कर दी। १८०२ में फर्रुखाबाद के नवाब ने कम्पिनी को अधिकार दे दिये। १८०३ में मरहठों के विरुद्ध लार्ड लेक को जो सफलता मिली उसके फलस्वरूप मेरठ और आगरा की कमिश्नरियां, और बांदा, हमीरपुर जिलों के अधिकतर भाग और जालौन जिले का कुछ भाग मिल गया। १८१६ में नैपाल के गोरखों की लड़ाई के बाद ईस्टइण्डिया कम्पिनी को कमायूं और देहरादून के जिले मिल गये। १८१७ में झांसी और अधिकांश जालौन को छोड़ कर प्रायः समस्त बुन्देलखंड पेशवा कम्पिनी को मिल गया। १८३८ में आगरा प्रान्त बंगाल से अलग कर दिया गया। १८१८ में सागर और नर्मदा के जिले भी इसी प्रान्त में मिला दिये गये थे। १८४० और ५३ के बीच में झांसी, हमीरपुर और शेष जालौन भी कम्पिनी ने ले लिया। १८५६ ई० में अवध का राज्य मिला लिया गया गदर के बाद नैपालियों को सहायता के बदले अवध की तराई दे दी गई। रामपुर के नवाब को बरेली और मुरादाबाद के कुछ गांव मिल गये। बुन्देलखंड में पहले झांसी का किला और कुछ गांव सिन्धिया महाराज को दे दिये गये और बदले में झांसी और कुछ गांव कम्पिनी के राज्य में मिल गये। सागर और नर्मदा जिले मध्यप्रान्त में मिल गये। दिल्ली जिला पंजाब में मिला दिया गया १९११ ईस्वी में चकिया और कोंढ के परगने मिर्जापुर जिलों से अलग कर बनारस राज्य में शामिल कर दिये गये। १९१९ में इसी राज्य को रामनगर का किला और कुछ गांव भी दे दिये गये।

१८५७ के विद्रोह ने इस प्रान्त में भीषण रूप धारण कर लिया था। दिल्ली, बांदा, बरेली कानपुर और झांसी इसके प्रधान केन्द्र थे। एक समय आगरा इलाहाबाद के किलों और लखनऊ रेजीडेन्सी को छोड़कर प्रान्त में और कहीं अंग्रेजी राज्य शेष नहीं रह गया था। लेकिन गदर में संगठन का अभाव था कुछ बदमाश स्वार्थ के लिये भी लूट मार मचा रहे थे अराजकता में लोगों को बड़ा कष्ट हो रहा था। इस लिये सिक्खों, गुरखों और राजभक्तों की सहायता से इस प्रान्त में फिर से अंग्रेजी राज्य स्थापित करने में अंग्रेजों को कोई बड़ी कठिनाई न हुई।

गदर के अन्त में ईस्ट इण्डिया कम्पिनी का तो अन्त हो गया। लेकिन अंग्रेजी राज्य ज्यों का त्यों बना रहा।

पहले यह प्रान्त उत्तरी पश्चिमी प्रान्त कहलाता था। १९०२ से यह संयुक्त प्रान्त आगरा और अवध कहलाता है।



बाज़ार और मेले

संयुक्त प्रान्त का अधिकतर व्यापार बाजारों और मेलों द्वारा होता है। मेले बहुत पुराने समय से होते आ रहे हैं। केवल कुछ मेले नये हैं। बाजार कुछ हाल में लगने लगे हैं। प्रान्त में ५ हजार से ऊपर हाट पेंठ और बाजार लगते हैं। बाजार प्रायः दोपहर के बाद २ बजे से ६ बजे शाम तक लगता है। बाजार केन्द्रवर्ती स्थान में लगता है। पेंठ का क्षेत्रफल औसत से १० वर्ग मील और हाट का क्षेत्रफल ५० वर्गमील होता है. हाट में कुछ अधिक दूर के गांववाले अपना सामान बेचने और दूसरा सामान मोल लेने के लिये आते हैं। कुछ लगभग एक तिहाई स्थानों में बाजार सप्ताह में एक बार लगता है। शेष दो तिहाई बाजार सप्ताह में दो बार लगा करते हैं। कुछ बाजार डिस्ट्रिक्टबोर्ड और कुछ बाजार म्यूनिसिपिल बोर्ड की देख भाल में लगते हैं। अधिकतर बाजार जमींदारों के द्वारा लगवाये गये हैं।

देवबन्द, जानसठ (मुजफ्फर नगर) गाजियाबाद अनूप शहर, मुर्सान (अलीगढ़) कोसीकलां (मथुरा) शमशाबाद (आगरा) कासगंज, शिकोहाबाद ललितपुर औरैया, कायमगंज, खागा (फतेहपुर) हँडिया देवरिया, सुल्तानपुर (नैनीताल) बहेरी (बरेली ठाकुरद्वारा (मुरादाबाद) नगीना, गन्नौर (बदायूं) तिलहर, (शाहजहांपुर), पूरनपुर (पीलीभीत), संडीला (हरदोई) बिस्वां (सीतापुर), लखीमपुर खीरी, टांडा (फैजाबाद), तारागंज (गोंडा), नानपारा (बहरायच), नवाबगंज (बाराबंकी) कुन्डा (परतापगढ़) प्रान्त के बड़े बड़े और प्रसिद्ध बाजार हैं।

कुछ बाजार खास खास चीजों के लिये प्रसिद्ध हैं। देहरादून आलू, सहारनपुर अंडा, दूध, कपास, फल, तम्बाकू, मुजफ्फर नगर कपास, पशु, अनाज, मेरठ, तम्बाकू, कपास, अनाज, हापुड़ अनाज गाजियाबाद चमड़ा, पशु, अनाज खुर्जा तम्बाकू, घी, कपास आगरा चमड़ा, जूता, कपास, घी, आटा मथुरा और कोसीकलां पशु और कपास कासगंज, पेल्ट कपास, तम्बाकू, घी अनाज शिकोहाबाद तम्बाकू घी कपास अलीगढ़ घी, पशु कपास, तम्बाकू, दूध हाथरस घी, कपास, कन्नौज तम्बाकू आलू, कपास, छिबरामऊ तम्बाकू, कायमगंज तम्बाकू आलू इटावा तम्बाकू, घी कपास, औरैय्या कपास अनाज, ऊन, घी, कानपुर तम्बाकू, चमड़ा, कपास, मूंगफली फतेहपुर अनाज कपास, इलाहाबाद तम्बाकू, अमरूद, अलसी, चमड़ा, घी, फल नजीबाबाद फल, अंडा नगीना अनाज, धामपुर अनाज कपास, बदायूँ कपास, पिसौली अनाज, तम्बाकू मुरादाबाद तम्बाकू, फल, अंडा, अनाज, घी, चंदौसी कपास, अनाज शाहजहांपुर अनाज, घी, पीलीभीत अनाज तम्बाकू, पूरनपुर अनाज, बनारस अनाज फल, तम्बाकू, मिर्जापुर ऊन, ऊनी कालीन गाजीपुर अलसी, बलिया अलसी, अनाज लखनऊ, मलीहाबाद मोहनलाल गंज, काकोरी फल उन्नाव फल अनाज, तम्बाकू, रायबरेली फल, तम्बाकू, सीतापुर फल अनाज, सिधौली तम्बाकू अनाज, हरदोई अनाज संडीला—अनाज तम्बाखू, खीरी अनाज, भूड़ (खीरी) पशु फैजाबाद अनाज, गोंडा अतरौली, और तुरावगंज (गोंडा) अलसी बहरायच अनाज, अलसी, तम्बाकू कैसरगंज (बहरायच) और नानपाइन (बहरायच) अलसी, तम्बाकू, अनाज, सुल्तानपुर अलसी, तम्बाकू, कुन्डा (परतापगढ़) अनाज, नवाबगंज (बाराबंकी) अनाज, अलसी गोरखपुर पडरौना महराजगंज, दावानगर अलसी अनाज बस्ती अनाज अलसी, बंसी अनाज अलसी, आजमगढ़ अनाज अलसी, ललितपुर (झांसी), कपास घी, अलसी, ऊन काल्पी (जालौन) घी, मूंगफली, ऊन, आलौन अलसी मूंगफली, गाठ, हमीरपुर (अलसी अनाज, महोबा (हमीरपुर अलसी, मऊ (बांदा) अलसी कपास मूंगफली भीमताली (नैनीताल) और नैनीताल फल, रामनगर (नैनीताल फल, मिर्चा हल्दी, हल्द्वानी आलू, फल, ऊन टनकपुर (नैनीताल) फल, घी, आलू मिर्च ऊन की मंडी है। रानीखेत (अल्मोड़ा) हल्दी, फल, लोहाघाट (अल्मोड़ा) फल और दोगड्डा (अलमोड़ा लाल मिर्च) की प्रसिद्ध मंडी है।

संयुक्त प्रान्त के अधिकतर मेलों की उत्पत्ति

धार्मिक कारणों से हुई है। आगे चल कर वहां व्यापार का सामान भी बिकने लगा।

कुछ मेले पशुओं की बिक्री के लिये प्रसिद्ध हैं। समस्त मेलों (जिनमें छोटे मेले भी शामिल हैं) की संख्या ३३३० है।

प्रधान मेले निम्न हैं:—

संयुक्त प्रांत के मेले

अयोध्या—अवध के फैजाबाद जिले में एक बड़ा पुराना शहर है। यह शहर घाघरा नदी के किनारे पर जिसको पहिले सरयू कहते थे बसा है। पुराना शहर नष्ट हो गया है किन्तु खण्डहर है जिससे अब भी वहां की नक्काशी तथा कारीगरी को देख कर चित्त चकित होता है। कहते हैं कि पहिले जमाने में अयोध्या बड़ा भारी शहर था। इसका घेरा १२ योजन यानी ९६ मील था। यहां रामनौमी का मेला हर साल लगता है जिसमें लगभग ५ लाख मनुष्य इकट्ठे होते हैं। इस मेले में हर प्रकार की वस्तुएं तथा पहाड़ी लकड़ियां जो हिमालय के टलहटी से आती हैं पाई जाती है।

अनूप शहर—यह बुलंद शहर में एक कसबा है देहली से ७५ मील और गंगा जी के पश्चिमी किनारे पर बसा है। यात्री गंगा जी स्नान के लिये वहाँ जाते हैं और कार्तिक (नवम्बर-दिसम्बर) के महीने में बहुत दूर दूर से पचास हजार के लगभग गंगा स्नान के लिये जमा हो जाते हैं।

इलाहाबाद या प्रयाग—यह यमुना नदी और गंगा नदी के संगम पर बसा है यह जी० आई० पी० और ई० आई० रेलवे का जंकशन है। संगम के पास किला बना हुआ है। उसके भीतर भी हिन्दुओं की मूर्तियां हैं। यहां बहुत सी वाटिकायें हैं। यहां कुम्भ मेला बड़े जोरों के साथ लगता है। जहां कई लाख लोग इकट्ठे होते हैं। हर साल अमावस्या को तथा स्नान के पर्व में मेला लगता है।

काकोरा—यह बदायूं प्रांत में तथा बदायूं तहसील के निकट है और गंगा जी के किनारे बदायूँ से लगभग १२ मील की दूरी पर बसा है। कार्तिक के महीने में यहां बड़ा भारी मेला होता है। इस मेले में दिल्ली, कानपूर, फर्रुखाबाद और रुहेल खण्ड से वस्तुयें बिकने के लिये तथा लोग गंगा स्नान के लिये आते हैं।

काशीपुर—जिला नैनीताल में एक नगर है यहाँ कुम्भ बारहवें वर्ष, अर्द्ध-कुम्भ हर छठे वर्ष होता है। साधारण कुम्भ मेला प्रति वर्ष लगता है। नैनीताल का सबसे बड़ा मेला मार्च के आखीर में काशीपुर के ३ मील के फासले पर बलसुन्दरी देवी का होता है और १५ दिन तक रहता है यहां सत्तर हजार के लगभग मनुष्य इकट्ठे होते हैं और पशुओं, गाड़ियां, किसानों के औजार तथा और भी अनेक पहाड़ी वस्तुयें बिक्री के लिये आती हैं। काशीपुर में एक किला भी है जिसके चारों ओर तालाब हैं जिनमें सबसे बड़ा तथा दर्शनीय द्रोनासागर है इसे कहते हैं कि पांडवों ने अपने गुरु द्रोणाचार्य के लिये बनाया था।

केदारनाथ—यह प्रसिद्ध तीर्थ स्थान गढ़वाल रियासत में है यह हिमालय पर्वत की एक बर्फ की चोटी के ढाल (पर जो लगभग तेइस हजार फुट उंचाई पर) मन्दिर है। केदारनाथ के पास चार मन्दिर और हैं। जो सब मिल कर पांच केदार कहलाते हैं। इन सब के यात्री दर्शन करते हैं। केदारनाथ मन्दिर में शिव जी की मूर्ति है। यहां धर्मशालायें भी हैं। शीतकाल को छोड़ कर शेष ऋतुओं में यात्री यहां आते हैं। वहां सदैव मेला लगता है।

कर्णवास—यह तीर्थ स्थान प्रस्त बुलंदशहर में अनूप शहर से ८ मील के फासले पर है। यहां एक बड़ा मेला लगता है। जो तीन दिन रहता है। इसमें हजारों आदमी गंगा जी के स्नान करने को आते हैं। हर सोमवार को औरतें मन्दिर में पूजा के लिये आती हैं।

कम्पिल—यह नगर फर्रुखाबाद प्रांत में कायमगंज तहसील में गंगा नदी के किनारे पर बसा हुआ है। यह नगर पाडुवों की धर्म पत्नी द्रोपदी के बाप की राजधानी थी। कहते हैं कि पुराना नगर कम्पिला ऋषि एक बनवासी ने बसाया था। यहां साल में दो मेले लगते हैं। आसपास के व्यापारी आते हैं। यहां जैनी मन्दिर भी हैं। यहां चाकू सरौते, बनते हैं तथा बिकते भी हैं।

कर्णप्रयाग—यह गढ़वाल प्रांत में एक गांव है और पिंडर और अलक नन्दा के संगम पर स्थित है

यहाँ उमा का मन्दिर है। हिमाचल जाने वाले यात्री यहां आते हैं और मन्दिर का दर्शन करते हैं। यहां का दृश्य देखने योग्य है।

गढ़मुक्तेश्वर—यह मुरादाबाद प्रांत में मेरठ से २६ मील पर एक पुराना नगर है। यह गंगा जी के दाहिने किनारे पर स्थित है असल में हस्तिनापुर (जो भगवत पुराण और महाभारत में प्रसिद्ध है) का एक मुहल्ला था। इसका नाम गंगा देवी मुक्तेश्वर महादेव के नाम से बना है। यहां एक मन्दिर है जिसमें महादेव जी की मूर्ति है। पास ही ८० सतीयों की लाठ है कार्तिक में पूर्णिमा को यहां स्नान का मेला होता है। जिसमें दो लाख के लगभग आदमी आते हैं। यहां लकड़ी और बांस का बड़ा व्यापार होता है।

गंगोत्री—गढ़वाल में एक पहाड़ी मन्दिर है जो गंगा नदी के दाहिने तट पर स्थित सागर में गंगा जी का मुख और उसका निकास गंगोत्री में खास कर पवित्र माने जाते हैं यहां भागीरथी की मूर्ति है। यहाँ यात्री जल लेने आते हैं।

चित्रकूट—यह एक बड़ा तीर्थ स्थान है जो बांदा जिले में है। यहां जी० आई० पी० में एक स्टेशन है ३½ मील दूर इसी नाम का पर्वत है। यहां पर यात्री हर महीने आते रहते हैं। श्री रामचन्द्र जी अपने बनवास के दिनों में यहां आये थे। जब से ही यह स्थान पवित्र समझा जाता है यहां रामचन्द्र जी लक्ष्मण जी सीता जी के पदों के चिह्न अब तक हैं। पैसुनी नदी के किनारे, घाटी और मैदान में तेतीस पूजा पाठ के स्थान हैं। यहां कोट तीर्थ, देवांगना, हनुमानधारा, फटकसिला, अनुसुइया, गुप्त गोदावरी और भरतकूप प्रधान हैं। चित्रकूट में मार्च, अप्रैल और अक्टूबर, नवम्बर में रामनौमी और दीपमालिका के बड़े भारी मेले लगते हैं। चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण में भी मेला लगता है।

छीपिया—यह गोंडा प्रान्त में एक प्राचीन नगर है। यहाँ सहजनन्द विष्णुमत के सुधारने वाले का बड़ा सुन्दर मन्दिर है। यहाँ का मन्दिर मिर्जापुर और जयपुरी संगमरमर का बना हुआ है। यहाँ दो बड़े मेले होते हैं जिनमें पहाड़ी वस्तुयें तथा ग्रामों की कारीगरी देखने योग्य है। यहाँ रामनौमी तथा कार्तिक की पूर्णिमा को मेला लगता है। यहाँ हिन्दुस्तान के बड़े दूर दूर से यात्री आते हैं।

देवबन्द—यह जिला सहारनपुर में है। यहाँ एक छोटी सी झील है जिसको देवी कुंड कहते हैं। इसके किनारे पर मन्दिर, घाट और सतियों की छतरियाँ हैं। यहाँ पर बस्ती के बाहर एक विशाल देवी का मन्दिर है। यहाँ साल में एक बार मेला लगता है। यहाँ से अनाज चीनी और तेल बाहर जाता है। यहाँ कपड़ा बहुत बारीक बनता है। विशेष-कर आजकल और अधिक व्यापार में उन्नति हुई है।

देवीपटन—यह गोंडा प्रान्त में एक गाँव है। यहाँ बहुत से मन्दिर हैं और एक बड़ा मेला दस दिन होता है जिसमें एक लाख के लगभग यात्री तथा व्यापारी आते हैं। मेले में पहाड़ी टट्टू, कपड़ा, लकड़ी, चटाई, घी, लोहा, दालचिनी का व्यापार होता है।

परयार—यह उन्नाव प्रान्त में एक नगर है और उन्नाव से १२ मील की दूरी पर पश्चिम की ओर बसा है। यहाँ कार्तिक की पूर्णिमा को एक बड़ा भारी मेला लगता है। जिसमें एक लाख के लगभग आदमी आते हैं।

बक्सर—यह उन्नाव प्रांत में गंगा जी के बाएं किनारे पर एक गांव है। यहां चांडिका देवी का एक बड़ा प्रसिद्ध मन्दिर है। कार्तिक के महीने में यहां का बड़ा मेला होता है यहां एक लाख मनुष्य गंगा स्नान करने आते हैं। यहां संस्कृत पाठशाला भी है।

बागेश्वर—यह कमायूं प्रांत में अलमोड़े से २७ मील पर है। यहां से मध्य एशिया से बड़ा व्यापार होता है। यहां से तिब्बत के साथ भी व्यापार होता है। जनवरी के महीने में एक बड़ा मेला लगता है इन दिनों बड़े पहाड़ों की पैदावार और मैदान की पैदावार का लेन देन होता है।

बटेश्वर—यह आगरे से इटावा जाने वाली पक्की सड़क पर है। यहां एक बड़ा मन्दिर है जो बटेश्वरनाथ के नाम से प्रसिद्ध है। यहां कार्तिक मास में एक बड़ा मेला लगता है। यहां एक लाख आदमी जमुना स्नान के लिये आते हैं। टट्टू, ऊंट, भैंसे, हाथी, पशु और गाड़ियां भी बहुत बिकते हैं। मेला जमुना जी के रेत पर होता है।

बद्रीनाथ—यह गढ़वाल प्रांत में हिमालय पर्वत की चोटी का नाम है यह समुद्र से २३५०० फीट के

लगभग ऊंचा है। इसकी एक चोटी पर विष्णु का एक मन्दिर है। यह बड़ा प्राचीन मन्दिर शंकर स्वामी का बनवाया हुआ है। हिन्दू लोग इसे बड़ा पवित्र मानते हैं। और इसकी गणना बड़े बड़े तीर्थ स्थानों में होती है। यहां यात्री आकर दर्शन किया करते हैं। मन्दिर के नीचे पहाड़ की ओर एक पवित्र कुंड है जिनमें पानी गरम है और एक टोंटी वाले सोते से नालियों के रास्ते से आता है। यहां दूर दूर से यात्री आते हैं।

बनारस या काशी—यह पवित्र तथा तीर्थ स्थान गंगा नदी के उत्तरी किनारे पर बसा हुआ है। यहां असंख्य मन्दिर हैं उनमें से विशेश्वर, भैरवनाथ और दुर्गा के मन्दिर बहुत नामी हैं। अन्नपूर्णा का भी मन्दिर विश्वेश्वर नाथ के मन्दिर के सामने है। और यहां यात्री बहुत आते हैं। दुर्गा का मन्दिर और उनका सुन्दर ताल काशी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। यहां बड़े घाट, ताल, कुएं भी हैं। बड़े घाट पांच हैं असी संगम, दशास्वमेध, मनिकर्णिका, पांच गंगा घाट, वर्नासंगम काशी के पवित्र ताल—मनिकर्णिका, पिशाच मोचन, अगस्त्य का कुण्ड। काशी के कुएं। गपाणकूप, अमृतकुण्ड, नागकुण्ड और यहां छावनी भी रहती है। यहां सदैव बड़ी भीड़ गंगा किनारे रहती है और दूर से यात्री आते रहते हैं।

बहरायच—यह बड़ा शहर है यहां मार्च में एक प्रसिद्ध मेला लगता है। यहां सबसे बढ़कर दर्शनीय मसरूद का मजार है। यहां के मेले में लगभग डेढ़ लाख आदमी इकट्ठे होते हैं। जिनमें हिन्दू और मुसलमान दोनों आते हैं।

मेरठ—यह एक बड़ा शहर है। यहां मार्च के आखीर में एक नौचन्दी मेला लगता है। जहां ५० हजार मनुष्य एकत्रित होते हैं। यहां देखने योग्य स्थान सूरजकुण्ड, बालेश्वरनाथ का मन्दिर है। यहां चने, चीनी, घी का बहुत व्यापार होता है।

मिर्जापुर और विन्ध्याचलः—यहां लाख बनती है। कालीन भी अच्छे तयार होते हैं। मिर्जापुर के पास विन्ध्याचल पहाड़ पर एक देवी हैं जिनके दर्शन के लिये दूर दूर से लोग आते हैं। और कजलियों में मेला भी लगता है।

मथुरा—यह जमुना नदी के दाहिने किनारे पर बहुत प्राचीन और हिन्दुओं का तीर्थ नगर है और खास कर ब्रजमण्डल को जहां कृष्ण जी रहते थे हिन्दू लोग पवित्र मानते हैं और बड़ा आदर करते हैं। मथुरा से ६ मील दक्षिण महावन भी तीर्थ स्थान है जहां कृष्ण जी पले थे। यहां बहुत से मन्दिर हैं। सब से प्रसिद्ध गोविंद देवा, गोपीनाथ, वृंदावन हरिद्वार, पुरी आदि के बराबर तीर्थ स्थान समझा जाता है।

हरिद्वार—यह प्रान्त का अति प्राचीन नगर है जो गंगा नदी के किनारे पर बसा हुआ है। इसके कई नाम हो चुके हैं हरिद्वार या विष्णु का द्वार बहुत पुराना नहीं है। इसका प्राचीन नाम माया पुर है और कहीं कहीं कपिला या गपिला भी कहते हैं। हरिद्वार में अनेक मंदिर हैं और उनमें से विशेष कर चन्दी पहाड़, माया देवी का मंदिर, सरवनाथ का मंदिर, इसके बाहर बुद्ध की मूर्ति है। यहां बारहवें वर्ष कुम्भ का मेला होता है। इसके अतिरिक्त बैशाख में बड़ा मेला लगता है। यहां होली, विजया दशमी तथ कार्तिक के पूनो को भी मेला लगता है।

कनखल—एक गांव वहां से २ मील के लगभग दक्खिन पूर्व की ओर है जहां राजा दक्षपति का मंदिर, सीताकुण्ड, राजा लंधौरा का मंदिर और दक्ष स्थान देखने योग्य हैं। यहां के दर्शन को दूर दूर से यात्री जाया करते हैं।

देवा—बारावंकी जिले में स्थित है। यहां अक्तूबर महीने में उर्स का मेला लगता है और सात दिन तक रहता है। यहां लगभग १५००० पशु बिकने आते हैं।

ददरी—बलिया जिले में स्थित है। यहां कार्तिकी पूर्णिमा को बड़ा मेला लगता है लगभग १५००० पशु बिकने आते हैं।

मकनपुर—कानपुर जिले में बिल्हौर स्टेशन से ७ मील दूर है। यहां होली के अवसर पर १० दिन तक मेला लगता है। लगभग २०,००० पशु बिकने आते हैं।

संयुक्तप्रान्त के ज़िलों का क्षेत्रफल, जनसंख्या, सघनता और वार्षिक वर्षा

नाम	क्षेत्र फल	जनसंख्या	सघनता	वर्षा
आगरा	१८४९	१०,४८,३१६	५६७	२६
अलीगढ़	१९४७	११,७१,७४५	६०२	२६
इलाहाबाद	२८५२	१४ ९१ ९१३	५२४	३८
अल्मोड़ा	५५००	५,८३,९०२	१०२	८०
आज़मगढ़	२१४७	१५,७१,५७७	७१०	४१
बहराइच	२७४०	११, ३६३४८	४३१	४५
बलिया	१२३२	९,१३,०९०	७४२	४२
बांदा	२८००	६,२५,७७१	२१८	४०
बाराबंकी	१७६०	१०,६९,७७९	६०६	४०
बरेली	११६४	१०,७२,३७०	६७९	४४
बस्ती	२७५२	२०.७८,०२४	७३७	४८
बनारस	१००८	१०,१६,९७८	९३०	४०
बिजनौर	१८६७	८,३५,४६९	४६६	४५
बदायूँ	२०१०	१०,१०,१८०	५०३	३६
बुलन्द शहर	१९१४	११,३६,६८५	५९५	२६
कानपुर	२३७०	१२,१२,२५३	५१२	३४
देहरादून	११९३	२,३६,२४७	१०९	९०
एटा	१७८३	८,६० ४७८	५०१	३०
इटावा	१८६१	७,४६,००५	४४२	
फर्रुखाबाद	१७१९	८,७७,३०२	५३४	३४
फतेहपुर	१५८५	६,८८,७८९	४१९	३४
फैज़ाबाद	१६८९	१२,०४,१८९	६९९	४२
गढ़वाल	५२६९	५,३३,८८५	१०८	५०
गाज़ीपुर	१३०२	८,२४,९७१	६३०	४०
गोंडा	२८७५	१५,७६,००८	५५५	४५
गोरखपुर	४५१४	३५,६७,५६१	७८७	४५
हमीरपुर	२४३९	५,०२,६८९	२०६	३६
हरदोई	२३१७	११,२७,६२९	४८५	
जालौन	१४६९	४,२६,०२२	२७५	३२
जौनपुर	१५५४	१२,३६,०७१	७९७	४२
झाँसी	३६००	६,९०,४१३	१९१	३२
खीरी (लखीमपुर)	२९७६	९,४४,४७०	३१८	
लखनऊ	१९६७	७,८७,४७२	८१४	३६
मैनपुरी	१६९७	७,४९,९३३	४४८	
मेरठ	२३७९	१६,०१,९१८	६९९	३०
मिर्ज़ापुर	५२१३	७,८९,४०९	१८०	४२
मुरादाबाद	२२९३	१२,८४,१०८	५६१	४०
मथुरा	१४५३	६.६८,०७४	४६१	२६
मुज़फ्फरनगर	१६६६	८,९४,६६२	५४१	३४
नैनीताल	२६७७	२,७७,२८६	१९४	६५
परतापगढ़	१४५८	९,०६,२९३	६०६	३८
पीलीभीत	१३७८	४ ८४,८३८	३३३	५०
रायबरेली	१७४५	९,७४,१२७	५५७	४०
सहारनपुर	२१३३	१०,४३,९२०	४८९	३८
शाहजहांपुर	१७४४	९,०५,२३१	५१९	३७
सीतापुर	२२५३	११,९७,९३६	५२०	३९
सुल्तानपुर	१७०७	१०,५१,२८४	६१४	४४
उन्नाव			४७९	

द्वितीय खण्ड

संयुक्तप्रान्त के ज़िलों का

संक्षिप्त-परिचय

ब्रिटिश गढ़वाल

ब्रिटिश गढ़वाल का जिला सब का सब हिमालय में स्थित है। यहां हिमालय पर्वत की श्रेणियां उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर चली गई हैं। गढ़वाल जिला कुछ कुछ आयताकार है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई १२१ मील है। औसत चौड़ाई ६० मील है। इसका क्षेत्रफल ५६२९ वर्ग मील और जनसंख्या ५,४०,००० है। उत्तर की ओर हिमालय की हिमाच्छादित श्रेणी इसे तिब्बत से अलग करती है। दक्षिण की ओर पहाड़ की तलहटी के पास वाली सड़क बिजनौर जिले और गढ़वाल के बीच में सीमा बनाती है। उत्तर और उत्तर-पश्चिम की ओर देवप्रयाग तक गंगा, रुद्र प्रयाग तक अलकनन्दा और अगस्त मुनि तक मन्दागिनी गढ़वाल को देहरादून जिले और टेहरी राज्य से अलग करती हैं। अगस्त मुनि के ऊपर कोई प्राकृतिक सीमा नहीं है। पूर्व की ओर अलमोड़ा और गढ़वाल के बीच में भी कोई प्राकृतिक सीमा नहीं है।

गढ़वाल शब्द का अर्थ है गढ़ों या क़िलों का जिला। यहां पहले ५२ किले थे। कुछ लोगों का अनुमान है कि गढ़ों या गड्ढों और खालों की अधिकता होने से यह नाम पड़ा। सचमुच गढ़वाल ज़िला नदियों और नालों से बहुत कट फट गया है।

गढ़वाल में हिमालय की नन्दादेवी और बद्रीनाथ दो मुख्य पर्वत श्रेणियां हैं। ये दोनों बरफ से घिरी हैं। ये दोनों २५ मील तक पूर्व से पश्चिम को चली गई हैं। नन्दादेवी के पार्श्व में नन्दाकोट और त्रिशूल हैं। बद्रीनाथ श्रेणी की प्रधान चोटियां बद्रीनाथ या चौखम्भा और केदारनाथ हैं। हिमाच्छादित त्रिशूल के पीछे नन्दा देवी की अकेली चोटी उठी हुई है। इसका दक्षिणी ढाल इतना सपाट है कि इस पर बरफ नहीं ठहर सकती। पीपल कोटि के पास अलक नन्दा के किनारे दोनों श्रेणियां एक दूसरे के पास आ जाती हैं। पहाड़ियों के सिरे प्रायः एक मील ऊँचे हैं। नदी के किनारों के पास ढाल क्रमशः हो गया है। इसी से पीपल कोटी गढ़वाल का द्वार माना जाता।

एक विशाल पहाड़ी धौली गङ्गा और विष्णु गंगा के बीच में जलविभाजक बनाती है। इसकी प्रधान चोटी कामट है जो २५४४३ फुट ऊँची है। जल विभाजक की औसत ऊंचाई १८००० फुट है। गढ़वाल में हिमालय की विशाल हिमाच्छादित चोटियां नीति और माना दर्रों के दक्षिण में स्थित हैं। दो प्रधान श्रेणियों की कई छोटी छोटी उपश्रेणियां हैं। एक श्रेणी बद्रीनाथ के पश्चिमी पार्श्व से तुंगनाथ होती हुई अलकनन्दा के किनारे रुद्र प्रयाग चली गई है। यही श्रेणी अलकनन्दा को मन्दागिनी से अलग करती है। केदारनाथ से दक्षिण की ओर आने वाली दूसरी उपश्रेणी भागीरथी को अलकनन्दा और मन्दागिनी से अलग करती है। नन्दादेवी की एक श्रेणी पश्चिम की ओर त्रिशूल से अलकनन्दा को गई है और नन्दाकिनी को विरेही से प्रथक करती है। एक दूसरी श्रेणी नन्दाकिनी को कैलगंगा और पिंडर से अलक करती इस श्रेणी की खैमिस्र चोटी १३३५९ फुट ऊंची है। एक श्रेणी पिंडर नदी की कैलगंगा से अलग करती है। लेकिन मध्यवर्ती गढ़वाल की सब से विख्यात वह श्रेणी है जो पिंडर के बायें किनारे पर नन्दा कोट से दूदाटोली श्रेणी तक जाती है। यही श्रेणी हरिद्वार और महादेव के बीच में जल विभाजक बनाती है और राम गंगा को गंगा से प्रथक करती है।

दूदाटोली श्रेणी के ढाल सपाट नहीं हैं। यह सुरमक और बालू की बनी है। इसका रंग कुछ सफेद है। इसके घिसने से हलकी बलुई मिट्टी बनती है। ग्वालडम श्रेणी कड़े काले चूने के पत्थर की बनी है। इसके घिसने से उपजाऊ चिकनी मिट्टी बनती है। लोभा पट्टी में राम गंगा के पूर्व की ओर उत्तम खेती का उपजाऊ प्रदेश है। पश्चिम की ओर मिट्टी बलुई और प्रायः निकम्मी है। दूदा-

टोली चोटी की ऊंचाई १०१८८ फुट है। कमायूँ प्रान्त भर में विख्यात हैं उत्तर-पश्चिम की ओर धनपुर श्रेणी है। पहले यहाँ तांबा निकाला जाता था। बोधन गढ़ी की काली पहाड़ी एकदम सपाट है। अधिक छोटी पहाड़ियां दक्षिण की ओर हैं। इनमें कालोंगढ़ी (लैन्स डाउन) और लंगूर गढ़ी विशेष उल्लेखनीय हैं। गढ़वाल जिले में कई झीलें हैं। पहाड़ियों से घिरे हुये बनीताल, सुरवताल आदि जिन भ्राबालों में केवल वर्षा का पानी आता है वे अधिक विस्तृत झीलें भीतर की ओर है जिनमें हिमागारों की बरफ पिघलने से पर्याप्त पानी भर जाता है। सतोपानी लरेकपाल का कुंड देवताल और दिउरी (उखीमठ के पास) अधिक प्रसिद्ध है। गोहना या दुर्मी झील १८६४ ईस्वी में बनी। यह झील २ मील लम्बी और आध मील चौड़ी है। यह कमायूं प्रान्त में सब से बड़ी है और नैनीताल से तिगुनी बड़ी है।

गढ़वाल में कई गरम सोते हैं। गौरीकुंड केदारनाथ के मार्ग में मन्दाकिनी के दाहिने किनारे पर स्थित है। तप्त-कुण्ड बद्रीनाथ के मन्दिर के पास है। यहां गंगा का पानी इतना ठंडा है कि मई या जून मास में भी बहुत कम यात्री उसमें स्नान करने का साहस करते हैं। इन कुंडों का पानी इतना गरम है कि ठंडा पानी डालने पर स्नान करने योग्य होता है। तपोबन के पास ४ गरम सोते हैं। ये चारों नीति दर्रे के मार्ग में स्थित हैं। भौरी सोता अल-मोड़ा गांव के पास है। इसका पानी कुछ खारा है। इसमें पत्थर छोड़ने से उनका रंग बदल जाता है। लगभग ४००० फुट की उंचाई पर यह सालवन के बीच में स्थित है। कुल-सरी का सोता मामूली गरम है और पिंडरो नदी के बायें किनारे पर स्थित है। दूसरा सोता पलेन नदी के पास है।

वनिजगढ़वाल का जिला प्राचीन समय से खनिज पदार्थों के लिये प्रसिद्ध रहा है। तांबा पोखरी, दोबरी और धनपुर (रानीगढ़) में पाया जाता है। लोहा हाट, जैनाल चोरपग्ना, और मोरन में पाया जाता है। यह लोहा बहुत अच्छा होता है। पहले यह मैदान को भी भेजा जाता था कहा जाता है कि यहीं के लुहारों ने पाण्डवों के अस्त्र शस्त्र बनाये थे। कुछ सीसा भी पाया जाता है। अलकनन्दा की बालू में सोने के कण मिले हैं। गन्धक, ग्रेफायट (पेन्सिल का मसाला) फिटकरी, सिलाजीत आदि कई प्रकार के खनिज यहां साधारण मात्रा में मिलते हैं। घर बनाने का पत्थर प्रायः सब कहीं पाया जाता है। लोहबा में पतली नीली स्लेट मिलती है। पत्थर और लकड़ी की अधिकता होने से गढ़वाल में घर बनाने के लिये ईंटें कहीं नहीं तयार की जाती हैं।

जलवायु

गढ़वाल के कुछ भाग मैदान के समान नीचे हैं। कुछ भाग समुद्र तल से २१००० फुट से भी अधिक ऊंचे हैं। भिन्न भिन्न भागों की ऊंचाई में अन्तर होने से जलवायु भी भिन्न है। कुछ भागों की जलवायु उष्ण कटिबन्ध के समान गरम है। कुछ भाग ध्रुव प्रदेश की भांति ठंडे हैं। भावर प्रदेश की जलवायु तलहटी की तरह गरम है। नदियों की घाटियों की जलवायु कभी अच्छी नहीं रहती है। गरमी की ऋतु में यहाँ का तापक्रम ८० अंश फारेनहाइट से कम नहीं होता है। कहीं कहीं छाया में भी इस ऋतु में तापक्रम १०० अंश फारेनहाइट से अधिक हो जाता है। सरदी की ऋतु में रात्रि और प्रातःकाल में कुहरा छाया रहता है और बहुत जाड़ा पड़ता है। दोपहर के बाद खूब धूप रहती है। इससे अक्सर लोगों को ज्वर आ जाता है। उत्तरी भाग में ४०००० फुट की उंचाई तक बरफ गिर जाती है। दक्षिणी भाग में ५००० फुट से नीचे कभी बरफ नहीं गिरती है। सरदी की ऋतु में ६००० फुट की उंचाई पर लगातार बरफ रहती है। गरमी की ऋतु में हिम रेखा की उंचाई १८००० फुट हो जाती है। दक्षिण में ७००० फुट और उत्तर में ६००० फुट से अधिक ऊंचे भागों में सदा जाड़ा रहता है।

यहां वर्ष में तीन ऋतु माने जाते हैं। आधे अक्तूबर से आधी फर्वरी तक (कार्तिक मार्गशीष, पौष और माघ मास में) शीतकाल होता है। फाल्गुन, चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ महीने (आधी फर्वरी से आधे जून तक) रूखी या ग्रीष्म काल रहता है। शेष चार (आषाढ़, श्रावण, भाद्र और आश्विन) महीनों में चौमासा या वर्षा ऋतु रहती है। गरमी की ऋतु में कभी कभी तेज़ आंधी चलती है और प्रबल वर्षा हो जाती है।

गढ़वाल के भिन्न भिन्न भागों की वर्षा भी भिन्न है। कुछ भागों (जैसे श्रीनगर) में साल भर में ३५ इंच वर्षा होती है। कुछ भागों जैसे कोट द्वारा में ७० इञ्च वर्षा होती है। वर्षा की मात्रा स्थिति के ऊपर निर्भर है। सब से अधिक वर्षा पहाड़ की तलहटी में होती है जहां पहाड़ ऊंचे होने लगते हैं। इसके बाद वर्षा की मात्रा कुछ कम हो

जाती है। लेकिन जहां हिमरेखा आरम्भ होती है वहां भी प्रबल वर्षा होती है। इस प्रकार पहाड़ की तलहटी और हिमरेखा तलहटी की दो पेटियों में सब से अधिक वर्षा होती है। पहाड़ की तलहटी में बसे हुये कोट द्वारा और हिमरेखा के नीचे बसे हुये उखीमठ (दोनों ही स्थानों) में ६० इञ्च से ऊपर वर्षा होती है। उंचाई प्रायः समान होने पर भी जिन स्थानों के पास एकदम पहाड़ियां हैं वहां उन स्थानों से अधिक वर्षा होती है जहां पहाड़ियां कुछ दूर हैं। श्रीनगर के पास पांच छः मील तक पहाड़ियां नहीं हैं। वहां ३८ इञ्च वर्षा होती है। कर्ण प्रयाग की उंचाई भी इतनी ही है। लेकिन यह एक गहरे जोर्ज (नद कन्दरा) की तली में बसा है और सब ओर ऊंची पहाड़ियों से घिरा है। इसलिये यहां ५० इञ्च वर्षा होती है। पावड़ी में भी पहाड़ियों की समीपता होने के कारण ५० इंच वर्षा होती है। हिम रेखा के पड़ोस वाले स्थानों में ग्रीष्म काल में वर्षा कम होती है लेकिन शीत काल की वर्षा अधिक होती है। वर्षा के अतिरिक्त यहां हिम पात भी होता है। जोशीमठ में वर्षा के अतिरिक्त बरफ भी काफी गिरती है। नीति दर्रे में पानी तो केवल ५½ इंच बरसता है लेकिन सरदी में यहां बरफ इतनी गिरती है कि समस्त घाटी बरफ से घिर जाती है। यहां के लोगों का अनुमान है कि ग्रीष्म काल की वर्षा समुद्र की ओर से आती है लेकिन शीतकाल की वर्षा पर्वत को ओर से आती है। शीत काल में जो स्थान ऊंचे पर्वतों की हिम से दूर होते जाते हैं वर्षा भी कम होती जाती है। इस प्रकार शीतकाल में उखीमठ में कर्ण प्रयाग से और कर्ण प्रयाग में श्री नगर से और श्री नगर में कोटद्वारा से अधिक वर्षा होती है। ग्रीष्म काल में उलटा हाल होता है।

नवम्बर यहां का खुश्क महीना है। यहां आध इंच से कम वर्षा होती है। दिसम्बर में औसत से पौन इंच या १ इंच वर्षा होती है। अप्रैल में भी प्रायः १ इंच ही पानी बरसता है। यहां मैदान की अपेक्षा अधिक पहले वर्षा आरम्भ हो जाती है। यहां वर्षा प्रायः उसी समय आरम्भ होती है जब बम्बई में होती है। यह वर्षा स्थानीय होती है और उत्तरी पश्चिम की ओर से आने वाली हवाओं के द्वारा होती है। पहली वर्षा से बहुत मिट्टी कट कर बह आती है। पहाड़ी भाग में पानी शीघ्र बह जाता है। इसलिये एक बार वर्षा होने के बाद बीच में जब वर्षा कुछ समय के लिये रुक जाती है तो अकाल पड़ता है और धूल उड़ने लगती है।

पशु—गढ़वाल के भावर के बन में पहले जङ्गली हाथी बहुत थे। बहुत से हाथी पालने के लिये पकड़ लिये गये। कुछ मार डाले गये। इस समय बहुत कम शेष रह गये हैं। भावर में चीता इस समय भी बहुत है और १०,००० फुट की उंचाई तक पाया जाता है। तेन्दुआ भी सब कहीं है और बहुत हानि पहुँचाता है। हिमालय का काला भालू ऊंचे भागों से लेकर ३००० फुट की उंचाई तक रहता है। सरदी की ऋतु में वह भावर में भी उतर आता है। वह पेड़ों पर चढ़ने में बड़ा कुशल होता है और शहद की मक्खियों के छत्तों को खा जाता है। उसका साधारण भोजन मंडुआ और जङ्गली फल हैं। वह गाय बैल और भेड़ बकरियों पर अक्सर चोट करता है। कभी कभी वह मनुष्यों को भी घायल कर डालता है। गढ़वाल में बन बिलाव बहुत हैं। गीदड़ सब कहीं पाया जाता है। पहाड़ी लोमड़ी के ऊपर मोटा नमदा होता है। लुटरैला (मार्टेन) छोटे जानवरों को खाता है। ओड के चमड़े से भाटिया लोग टोपी बनाते हैं। यहाँ लंगूर और बन्दर भी बहुत हैं। सम्भर भावर और पहाड़ (१०,००० फुट की ऊंचाई) दोनों प्रदेशों में पाया जाता है। पहाड़ी सम्भर बहुत बड़ा होता है। इसके सींग भारी होते हैं। वह घने जङ्गल में रहता इस लिये कम दिखाई देता है। चीतल (चकत्तेदार हिरण) पचास साठ के झुंड में रहता है। वह तलहटी के बन में रहता है और पहाड़ पर नहीं जाता। गोन (दलदल के हिरण) और पार्थ (Parha) नदियों के किनारे पर मिलते हैं। ककर बारह सिंहा के समान होता है। कस्तूरी हिरण ८००० फुट से कम उंचाई पर नहीं मिलता है। इसके बाल बहुत खुरदरे होते हैं और शीघ्र टूट जाते हैं। इसकी पिछली टांगें अगली टांगों से बड़ी होती हैं। कस्तूरी हिरण की नाभि वाली थैली में रहती है। गुरल (Chamois) तीन चार के दल में खुले जङ्गलों में रहते हैं। सराओ गुरल से बड़ा होता है और सपाट पहाड़ियों और घने जङ्गलों में रहता है। थार ७००० और १२००० फुट के बीच वाले सपाट भागों में रहता है। नर थार के प्रायः १ फुट लम्बे सींग होते हैं। बड़ाल नीति दर्रे के पास पाया जाता है। दूसरे भागों में यह १०,००० से १६००० फुट की उंचाई पर रहता है। गढ़वाल में चील्ह, बाज, गिद्ध, खंजन, कोकला, मुर्गा, कबूतर, तीतर आदि कई प्रकार के पक्षी पाये जाते हैं। रेंगने वाले पशुओं में छिपकली और मेंढक बहुत हैं। सांप कम पाये जाते है।

गढ़वाल की नदियों और झीलों में मछलियां बहुत हैं। इन्हें लोग कांटे और जाल से पकड़ते हैं। कुछ तालाबों में ज़हरीला रस डालकर मछलियों को मार डालते हैं। कहीं कहीं रापस (ढङ्ग) से मछलियों को पकड़ते हैं। इस रस्सी में जालदार कांटे लगे रहते हैं। रस्सी पानी में डूबी रहती है। जब मछलियां रस्सी के ऊपर दिखाई देती हैं तब रस्सी को झटक दिया जाता है। इससे बहुत सी मछलियां फंस जाती हैं। कुछ चोट खाकर भाग जाती हैं।

गढ़वाल की गायें बहुत छोटी और दुबली पतली होती हैं। वे बहुतकम (प्रायः १ सेर) दूध देती हैं। लेकिन पहाड़ी ढालों पर चढ़ने में वे बहुत कुशल होती हैं। कभी कभी वे घास चरते चरते ऐसी ऊंचाई पर चढ़ जाती हैं कि देखने वाले दंग रह जाते हैं। दिन के समय में वे चरने के लिये छोड़ दी जाती हैं। रात्रि में पहाड़ी घर के नीचे बने हुये गोठ अथवा अलग बाड़े में बांध ली जाती हैं। इनके बाड़े में सिन्दूर (ओक) की पत्तियां बिछी रहती हैं। इन्हें नमक शायद ही कभी मिलता है। हरी पत्तियों और घास खाने से इनका दूध बहुत पतला रहता है। इसमें बहुत कम मक्खन रहता है। कटे हुये खेतों में भी गायें चरने के लिये छोड़ दी जाती है। उनके लिये कुछ घास स्त्रियां ऊंचे ढालों पर चढ़ कर और काट कर पीठ की झोली में भर लाती हैं।

गायों के चरने के लिये बुग्याल या पयर सर्वोत्तम होते हैं। ये बहुत ऊंचे होते हैं। वहां बन का अन्त हो जाता है। सरदी में इन पर बरफ रहती है। गरमी में यहां घास उग आती आती है। बद्रीनाथ के पास इसी तरह के चरागाह हैं। वर्षा आरम्भ होने पर गाय भैंस ऊपर चरने के लिये हांक दी जाती हैं और गाँव के पास वाली घास सरदी के दिनों के लिये सुरक्षित रख ली जाती है। सरदी की ऋतु में अधिक ऊंचे भागों में बर्फीली आंधियां आती हैं और गायें बाहर चरने के लिये नहीं जा सकतीं।

१०,००० फुट से अधिक ऊँचे भागों में याक या सुरा गाय पाली जाती है। १०,००० फुट से नीचे की गरमी को यह सहन नहीं कर सकती। देशी सांड और सुरा गाय के मेल से गरजो और सुरा सांड और देशी गाय के मेल से जुबू पैदा होता है। ये दोनों कुछ अधिक नीचे आ सकते हैं। सुरा गाय दो तीन मन बोझा ढो सकती है। पहाली ढालों पर चढ़ने में इसका पैर नहीं फिसलता है। इसलिये कुछ लोग सुरा बैल पर सवार हो कर पहाड़ी यात्रा किया करते हैं।

गढ़वाल में भेड़ बकरी भी बहुत पाली जाती हैं। लोग इनका दूध खाते हैं और मांस भी खाते हैं। वे इनकी पीठ पर बोझा भी लादते हैं। एक भेड़ १० सेर और बकरी १२ सेर बोझा ढोती है। बोझा पांचा (थैलों) में भर कर लादा जाता है। यह सुतली से बनाये जाते हैं मज़बूती के लिये इन पर चमड़ा भी लगा लिया जाता है। पश्चिमी हिमालय से आने वाली भोट बकरी के बाल बहुत लम्बे होते हैं। सवारी और बोझा ढोने के लिये टट्टू भी पाले जाते हैं।

वन—रामगंगा से लेकर गंगा तक हिमालय के बाहरी ढालों पर वन की चौड़ी पेटी है। तलहटी में स्थित दून भी सब कहीं पेड़ों से ढके हैं। वनों में साल, तून, जामुन, खैर, धौरा, बांज, करद, तिलांज, सन्दन, शीशम, तेन्दू और चीर के पेड़ों की अधिकता है। निचले भागों में ३,५०० फुट की ऊंचाई तक बांस बहुत हैं। यह स्थानीय लोगों के बड़े काम का है। लेकिन अच्छे मार्गों का प्रायः अभाव होने से गढ़वाल की लकड़ी बहुत कम दूसरे भागों में पहुँचती है। इससे फिर भी सरकार को बड़ी आमदनी होती है। गढ़वाल फलों के लिये भी बहुत प्रसिद्ध है। जामुन ३००० फुट की ऊंचाई तक उगता है। इसके ऊपर जंगली सेव बहुत उगता है। नाशपाती, खुबानी, नारंगी, नींबू, केला, अनार सब कहीं उगता है। अखरोट जंगली भी उगता है और उगाया भी जाता है। पाउडी और दूसरे स्थानों में कुछ अंग्रेज़ी फल भी लगाये गये हैं।

अलमोड़ा के भावर में साल और शीशम के पेड़ प्रधान हैं। खैर के पेड़ पुरानी मिट्टी में होते हैं। पहाड़ी भाग में ३००० फुट की ऊंचाई तक साल के पेड़ मिलते हैं। इनके बीच बीच में सैन, हल्दू और दूसरे पेड़ होते हैं। अधिक ऊंचाई पर चीड़, देवदार और ओक बांज के पेड़ होते हैं। अल्मोड़ा ज़िले में १८६ वर्गमील ज़मीन जङ्गलों से ढकी हुई है। चीड़ का पेड़ १६०० फुट से लेकर ७५०० फुट की ऊंचाई तक होता है। बांज (ओक) का पेड़ ४००० फुट से लेकर ८००० फुट तक होता है। देवदारु ११००० फुट की ऊंचाई तक होता है।

कृषि—गढ़वाल में समतल भूमि का प्रायः अभाव है। पहाड़ों का ढाल भी सपाट है। इस लिये खेतों को तयार

करना पड़ता है। खेत तयार करने के लिये ढाल के निचले भाग में पत्थरों को इकट्ठा करके किसान एक दीवार बनाता है। अक्सर किनारों पर भी पत्थर की दीवार बनाने के बाद वह ऊंची भूमि को खोदता है। अन्त में सब खेत प्रायः बराबर हो जाता है। अधिकतर खेतों में मिट्टी का अभाव होता है अथवा मिट्टी की बहुत ही पतली तह होती है। खेत को एक बार ही अधिक खोदने से मिट्टी की पतली तह पत्थरों के नीचे हो जाती है। इस लिये खेत एक साथ तयार नहीं हो पाता है। पहले वर्ष खेत का कुछ भाग होता है। धीरे धीरे कुछ वर्षों में पूरा खेत तयार हो जाता है। जिस ढाल पर खेती होती है उसके प्रायः बीच में गांव बसाया जाता है। इस तरह कुछ खेत गांव के ऊपर और कुछ खेत गांव के नीचे होते हैं। कहीं कहीं किसान को भाग्य से प्रायः समतल भूमि मिल जाती है। वहां वह जंगली कटीली झाड़ियों को जलाकर साफ़ कर लेता है। इस तरह की खेती लगातार अधिक समय तक नहीं हो सकती। इसमें खाद केवल जली हुई झाड़ियों की राख होती है। वर्षा होने पर यह राख अक्सर बह जाती है। ज़ीनेदार खेतों में सड़ी हुई पत्तियों और गोबर की खाद दी जाती है।

पहाड़ों पर सिंचाई की सुविधा बड़े महत्व की है। सिंचा हुआ निकम्मा खेत भी अच्छे से अच्छे बिना सिंचे हुये खेत से कहीं अधिक मूल्यवान होता है। जो खेत सींचे जा सकते हैं उन्हें तलाउ कहते हैं। जो खेत सींचे नहीं जा सकते उन्हें उपराउँ कहते हैं। सिंचाई पहाड़ी नालियों द्वारा होती है। इनमें बरफ का पिघला हुआ पानी रहता है। यह पानी पहाड़ के अधिक ऊपरी भाग से तेज बहकर आता है। अतः यह अपने साथ मिट्टी के बारीक उपजाऊ कण भी ले आता है। इसी से सिंचे हुये खेत लगातार बढ़िया होते जाते हैं। जो खेत समतल होते हैं, जिनमें कछारी उपजाऊ मिट्टी अधिक होती है और जिनमें सदा सिंचाई हो सकती है उनमें धान उगाया जाता है।

गढ़वाल की पैनों और दूदा मंडी-घाटियों में उत्तम कछारी मिट्टी है। दक्षिण की ओर बलुई मिट्टी है। खेती प्रायः ६५०० फुट की उंचाई तक होती है। कुछ अन्न ८००० फुट तक होते हैं। गेहूँ ६००० फुट की उंचाई तक उगाया जाता है।

पहाड़ का उत्तरी ढाल दक्षिणी ढाल की अपेक्षा कम रूपाट होता है। वहां वर्षा का प्रकोप कम होता है। वहां उपजाऊ मिट्टी की तह अधिक मोटी होती है। इसीलिये पहाड़ों के उत्तरी ढालों पर खेत तयार करना अधिक सुगम है। खरीफ की फसल बोने के लिये खेत एक बार जोते जाते हैं। ककुनी, चीना, झंगोरन, धान खरीफ की प्रधान फसलें हैं। तूर या अरहर पहाड़ के निचले ढाल पर बोई जाती है।

गेहूँ, जौ और सरसों रबी की फसल में बोये जाते हैं। उंचाई के अनुसार इनके पकने में अधिक या कम समय लगता है।

गढ़वाल में भिन्न भिन्न घाटियों की मिट्टी भिन्न है। अलकनन्दा के पहाड़ों में बलुई मिट्टी है। पिंडर, रामगंगा और नन्दाकिनी की घाटी की मिट्टी कुछ कुछ लाल चिकनी मिट्टी है। नायर की घाटी में कंकड़ मिली हुई चिकनी मिट्टी है। छोटी छोटी नदियों से धुल कर आई है।

भावर के ऊपर वाली पहाड़ियों से निकलने वाली नदियां बहुत छोटी हैं। लगभग २८ मील बहने के बाद वे भावर में लुप्त हो जाती हैं। इनमें प्रधान नदी खोह है। जो द्वारी खाल के पास निकलती है। दोगड्डा के पास इसमें लैंस डाउन का नाला मिलता है। दोगड्डा शब्द का अर्थ है दो नदियों का संगम। कोट द्वार के पास यह मैदान में प्रवेश करती है।

अधिक ऊंचे भागों में रबी की फसल जून अथवा जुलाई में तयार होती है। निचले भागों में अप्रैल में ही तयार हो जाती है। रस्सी बनाने के लिये पहाड़ी लोग सन या सनई उगाते हैं। योरुपीय लोगों के प्रयत्न से देहरादून और कमायूं के कई भागों में चाय उगाने को भी सफल प्रयत्न किया गया।

भैरों घाटी का मन्दिर और दर्रा टेहरी राज्य में भागी, रथी और अलकनन्दा के संगम के पास स्थित है। दोनों नदियां गहरी घाटी में होकर बहती हैं। उनके ऊपर दानेदार पत्थरों की सपाट पहाड़ी दीवारें खड़ी हुई हैं। जान्हवी को पार करने के लिये फौलादी रस्सों का झूलने वाला पुल पानी के तल से ३५० फुट की उंचाई पर बना है। भैरों या शिव जी का दर्शन करने के लिये यहां दूर दूर से यात्री आते हैं।

देव प्रयाग टेहरी राज्य का एक प्रसिद्ध नगर है और भागीरथी और अलकनन्दा के संगम पर बसा है। यह स्थान समुद्र-तल से १५५० फुट ऊंचा है। पानी के तल से

१२५० फुट ऊंचा है। पानी के तल से नगर १०० फुट ऊंचे पहाड़ की टीले पर स्थित है। इसके पीछे की ओर पहाड़ी ८०० फुट ऊंची हो गई है। यहीं रघुनाथ जी का मन्दिर विशाल पत्थरों से बना है। मन्दिर के सफेद गुम्बद के ऊपर सुनहला कलश है। यहां के ब्राह्मण इसे १०,००० वर्ष का पुराना बतलाते हैं। १८०३ के भीषण भूचाल से मन्दिर को भारी धक्का पहुँचा। लेकिन सिन्धिया महाराज की उदारता से इसकी मरम्मत हो गई। देव प्रयाग में अधिकतर पंडे रहते हैं, जो यात्रियों को उत्तराखण्ड के तीर्थों का दर्शन कराने के लिये ले जाते हैं। कुछ दुकानें हैं।

गंगोत्री का पहाड़ी मन्दिर भागीरथी के दाहिने किनारे पर १०,३१९ फुट की ऊंचाई पर बना है। यहां से इसका स्रोत जो गोमुख में है ८ मील दूर है। मन्दिर वर्गाकार है और २० फुट ऊंचा है। इसमें गंगा, भागीरथी और दूसरे देवताओं की मूर्तियां बनी हैं। इसको गुरखाओं के प्रधान सेनापति अमरसिंह ठापा ने १९वीं सदी के आरम्भ में बनवाया था। यहां दूर दूर से यात्री आते हैं और गंगोत्री का जल भर ले जाते हैं। यात्रियों के ठहरने के लिये यहां कई धर्मशालायें बनी हैं। शीतकाल में मन्दिर के पट बन्द हो जाते हैं।

यमुनोत्री मन्दिर यमुना के स्रोत (यमुनोत्री हिमागार) से ४ मील नीचे १०,८०० फुट की ऊंचाई पर बना है। मन्दिर छोटा है और लकड़ी का बना है। इसमें यमुना देवी की मूर्ति है। उसके पास ही गरम चश्में हैं जिनका पानी (१४४ अंश फारेनहाइट गरम) प्रायः खौलता रहता है। प्रति वर्ष यहां बहुत से यात्री दर्शन करने आते हैं।

टेहरी नगर १७५० फुट की ऊंचाई पर भागीरथी और भीलांग नदियों के संगम पर बसा है। ग्रीष्म ऋतु में यहां अधिक गरमी पड़ती है। उस समय यहां के महाराज प्रताप नगर को चले जाते हैं जो टेहरी नगर से ९ मील की दूरी पर समुद्र तल से ८००० फुट की ऊंचाई पर बसा है। १८१५ में टेहरी एक छोटा गांव था। पर जब से यह टेहरी राज्य की राजधानी बना तब से यहाँ बड़ी उन्नति हो गई। यह मैदान और पहाड़ की उपज के विनिमय (अदलबदल) के लिये एक प्रधान केन्द्र है। पुराना भाग संगम के पास है। राजमहल सब से ऊंचे भाग में बसा है। यहां बहुत से मन्दिर हैं। यात्रियों के ठहरने के लिये यहां कई धर्मशालायें बनी हैं।

टेहरी राज्य

(गढ़वाल) ३०,३' और ३१,१८' उत्तरी अक्षांशों और ७७,४९' और ७९,२४' पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ४२०० वर्ग मील है। इसके उत्तर में पंजाब के रवाइन और बशहर राज्य तथा तिब्बत है। पूर्व और दक्षिण की ओर ब्रिटिश गढ़वाल का ज़िला है। इसके पश्चिम में देहरादून का ज़िला है। यह पूरा राज्य हिमालय की श्रेणियों और चोटियों के बीच में स्थित है। पर्वत श्रेणियां उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम को गई हैं। तिब्बत की सीमा के पास १०,००० से २३००० फुट ऊंची कई चोटियां हैं। टेहरी राज्य में गंगा और यमुना का स्रोत है। इन्हीं दोनों में राज्य का समस्त वर्षा-जल तथा हिम-जल बह आता है। गंगा नदी २३५७० फुट की उंचाई पर गोमुख हिमागार से निकलती है। और आरम्भ में भागीरथी कहलाती है। भैरों घाटी में जद गंगा या जान्हवी तिब्बत से निकल कर इसमें आ मिलती है। दक्षिण-पश्चिम और फिर दक्षिण-पूर्व की ओर बहने के बाद देव प्रयाग में भागीरथी अलकनन्दा से मिल जाती है। कुछ दूर तक गंगा नदी टेहरी राज्य और ब्रिटिश गढ़वाल के बीच में सीमा बनाती है।

यमुना नदी बन्दर पूछ की ऊंची चोटी के पश्चिम में यमुनोत्री से निकलती है। दक्षिण-पश्चिम की ओर बहने के बाद यमुना नदी टेहरी राज्य की पश्चिमी सीमा बनाती है। इसी पड़ोस में रूपिन और सूपिन दो नदियां निकलती हैं। इन दोनों के मिलने से टोंस नदी बनती है जो यमुना में ही मिल जाती है।

इतिहास

गढ़वाल को प्राचीन समय में केदारखंड नाम से पुकारते थे। केदारखंड का उल्लेख संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में आया है। विष्णुपुराण, महाभारत और बाराह संहिता में कुछ ऐसी जातियों के नाम आते हैं जो भारत की सीमा पर रहती थीं। इनमें शक, नाग, खस, हूण और किरात कमायूँ-हिमालय में रहते थे। किरात प्रायः लुप्त हो गये हैं। कुछ लोगों का अनुमान है कि इस समय के राजी लोग ही प्राचीन समय के किरात थे। ऐसे लोग अस्कोट और

पूर्वी कमायूं में रहते हैं। शक लोग और भी अधिक पुराने हैं। गढ़वाल, डोती और अस्कोट के राजघराने इन्हीं शकों के वंशज हैं। नाग लोग सर्प के पुजारी थे। नाग लोग अलकनन्दा की घाटी में रहते थे। इस समय पांडकेश्वर में शेष नाग, रत गांव में भकेल नाग, तालोर में संगल नाग, मार गांव में बनपुर नाग नीति घाटी में जेलम में लोहपिडया नाग और नागपुर के नाग नाथ में पुष्कर नाग की प्रतिष्ठा होती है। पाउड़ी के पास नाग देव में सर्प की पूजा होती है। वर्तमान उर्गम और नागपुर नाम इसी नाग वंश की स्मृति दिलाते हैं। खसिया या खस . लोग क्षत्रिय हैं। इनकी संख्या इस समय भी पहाड़ियों में अधिक है। कहा जाता है कि कस (खास) से बिगड़ कर कमायूं बना है।

पहले गढ़वाल में बहुत से छोटे छोटे राजा राज्य करते थे। आगे चल कर ५२ राजाओं का संघ बावनी कहलाने लगा। चीनी यात्री ह्वानसांग ने यहां के ब्रह्मपुर राज्य का उल्लेख किया है। सम्भव है यह इस समय के टेहरी राज्य का बरहा हो।

बारहवीं सदी में जागेश्वर और उसके समीपवर्ती भागों पर जैमाल के मल्ल राजाओं का राज्य हो गया। कटचूर लोग भी बहुत दिनों तक राज्य करते रहे। अल्मोड़ा की कच्चूर घाटी उन्हीं का स्मरण दिलाती है। प्रथम राजधानी जोशीमठ में बनी। इसे पहले ज्योतिर्धाम कहते थे।

आगे चलकर यहां पाल राजाओं का राज्य हुआ। अजय पाल (१३५८ से १३७०) ने खसिया राजाओं को अपने राज्य का विस्तार बहुत बढ़ा लिया। उसके पहले यहां के राजा इन्द्रप्रस्थ (वर्तमान दिल्ली) की छत्रछाया में रहते थे। अजय पाल ने अपनी राजधानी चांदपुर से हटाकर देवलगढ़ में बना ली। बलभद्र शाह ने प्रथम बार पाल नाम छोड़ कर अन्त में शाह नाम धारण किया उस समय से गढ़वाल के राजाओं के नाम के अन्त में पाल के स्थान पर शाह प्रचलित हो गया। १५६५ में कमायूं के राजा रुद्रचन्द ने गढ़वाल पर चढ़ाई की। उसका सेनापति कटचूर घाटी के मार्ग से पिंडर की घाटी में पहुँचा। लेकिन ग्वालदम के पास उसकी हार हुई और गढ़वाल बच गया। फिर भी गढ़वाल और कमायूं में वर्षों तक लड़ाई चलती रही। गढ़वाल के राजा महीपति साह ने अपनी राजधानी देवलगढ़ से बदल कर श्रीनगर में करली। मैदान के मुसलमान राजाओं ने पहाड़ पर चढ़ाई करने की कोशिश नहीं की। १६५४-५५ खलीलुल्ला खां देहरादून पर चढ़ाई करने के लिये भेजा गया। कमायूं के राजा ने भी खलीलुल्ला की सहायता की। फिर भी पहाड़ी भाग में मुसलमानी राज्य स्थापित न हो सका। गढ़वाल के राजा पृथिवीसाह ने बड़ी वीरता दिखलाई। पृथिवीसाह के उत्तराधिकारी के समय में फिर कमायूं और गढ़वाल में दो वर्ष तक भीषण लड़ाई चली। कमायूं ने डुंगरी और द्वार पर अधिकार कर लिया। लेकिन फतेहसाह ने एक ओर तिब्बत की ओर अपना राज्य बढ़ा लिया। दूसरी ओर १६६२ में देहरादून से सहारनपुर पर चढ़ाई की। मुगल सेनापति ने बड़ी कठिनाई से गढ़वाली सेनाओं का रोक पाया।

१६६८ में कमायूं के राजा ज्ञानचन्द ने राज सिंहासन पर बैठते ही अपनी पुरानी प्रथा के अनुसार गढ़वाल पर चढ़ाई की। पहले हरी भरी पिंडर घाटी उजाड़ी गई फिर उसने रामगंगा को पार करके सबली, खतली और सैंधर को लूटा। १७०१ में गढ़वालियों ने चौकोट और गिवार को उजाड़ दिया। इसके बाद दोनों राज्यों के बीच में सीमा प्रान्तीय आक्रमण और प्रत्याक्रमण लगातार होते रहे। सीमा के पास खेत बोने वाले किसान को भरोसा नहीं होता था कि वह अपने खेत को काट सकेगा। सीमा के पास वाले परिश्रमी लोगों ने अपने उपजाऊ खेत छोड़ दिये। उनके स्थान में जङ्गल उग आया।

१७०७ में भीषण संग्राम हुआ। कमायूं की सेना ने जूनिया गढ़ ले लिया। पांडवखाल और देवली खाल दर्रों में घुस कर कमायूं के राजा ने लोहबा को लूटा। दूसरे वर्ष लोहबागढ़ी के किले में अपनी सेना भर दी। दूसरे वर्ष बाहन और लोहबा के मार्गों से जो सेनायें भेजी गईं वे विजयी होकर सिमली के पास एक दूसरे से मिल गईं। सिमली के पास ही पिंडर और अलकनन्दा की घाटियां मिलती हैं। यहां से कमायूं की सेनायें अलकनन्दा के बहाव की ओर चलकर श्रीनगर पहुँची और गढ़वाल की राजधानी पर अपना अधिकार कर लिया। गढ़वाली राजा भागकर देहरादून पहुँचा। श्रीनगर एक ब्राह्मण को दे दिया गया। लूट का धन सरदारों और निर्धनों को बांट दिया गया। लेकिन १७१० में गढ़वाल का राजा फिर लौट आया। प्रदीपशाह के समय में कुछ शान्ति रही। इससे गढ़वाल और देहरादून समृद्धिशाली हो गये। इनकी समृद्धि से आकर्षित होकर रूहेला सरदार नजीब खां ने १७५७ ईस्वी में देहरादून पर अपना अधि-

कार कर लिया। १७७० तक वहां उसका अधिकार बना रहा। १७४५ में रूहेला सेनापति हफ़ीज खां ने १०,००० सेना लेकर कमायूं पर चढ़ाई की और अलमोड़ा पर अधिकार कर लिया। इस समय कमायूं के राजा ने गढ़वाल से सहायता मांगी। गढ़वाल ने कुछ संकोच के बाद कमायूं की सहायता के लिये दूनागिर और द्वारा में अपनी सेना दी। यहां गढ़वाल और कमायूं की सेनायें एक दूसरे से मिल गई। लेकिन रूहेलों ने संयुक्त सेनाओं को हटा दिया। पर किसी तरह सन्धि हो गई और रूहेले लोग ३ लाख रुपया लेकर लौट आये।

कुछ वर्ष बाद गढ़वाल और कमायूं में फिर युद्ध छिड़ा। इस पर गढ़वाली राजा की जीत हुई। १७७२ में उसने अपने बेटे प्रधमन को प्रधमन चन्द नाम से कमायूं की गद्दी पर बिठाया। देहरादून में कुछ मुसलमान किसान बस गये। इधर गड़बड़ी फैली और वहां सिक्खों और गूजर लुटेरों का प्रभाव बढ़ने लगा। गढ़वाली राजा इस ओर भली भांति अपनी प्रजा की रक्षा करने में असमर्थ था।

गढ़वाल और कमायूं की गद्दी पर भाई भाई राजा राज्य करते थे। फिर भी दोनों में युद्ध छिड़ गया। इसी गड़बड़ी के समय गुरखाओं ने आक्रमण किया और १७९० में अलमोड़ा पर अधिकार कर लिया। दूसरे गुरखाओं की सेनायें गढ़वाल में लंगूर गढ़ी तक घुस गई लंगूर गढ़ी में १ वर्ष तक गुरखा लोग घेरा डाले रहे। इसी समय समाचार मिला कि चीनी सेनायें नैपाल पर चढ़ाई कर रही हैं। इसलिये गुरखा लोग गढ़वाल छोड़कर नैपाल को लौट गये।

१८०३ ई० में गुरखा लोगों ने पूरी तयारी के साथ गढ़वाल पर चढ़ाई की। गढ़वाली राजा भाग कर देहरादून आया। लन्धौरा के गूजर राजा रामदयाल सिंह ने १२,००० सिपाहियों से उसकी सहायता की। लेकिन गढ़वाली राजा अपने साथियों के साथ मारा गया। उसका बड़ा लड़का सुदर्शन शाह ने भाग कर ब्रिटिश भारत में शरण ली। उसका भाई कांगड़ा भाग गया। १८०४ में कमायूं और गढ़वाल के बड़े प्रदेश को नैपाल के राज्य में मिला लिया गया। गुरखों के सैनिक शासन से गढ़वाल में घोर असन्तोष फैला। मन्दिरों के पास की भूमि भली प्रकार जोती बोई जाती थी। शेष भागों में जन संख्या घट गई। १८१४ ई० में गुरखों और अंग्रेज़ों से मुठभेड़ हो गई। अंग्रेज़ी सेना कई मार्गों से नैपाल पर चढ़ाई करने गई। ३५०० सिपाहियों की एक सेना गढ़वाल और कमायूं से गुरखों को निकालने में लग गई। देहरादून से ३ मील की दूरी पर कालंगा का क़िला घेर लिया गया। गुरखा वीरता से लड़े। लड़ाई में एक अंग्रेज़ सेनापति मारा गया। लेकिन किले में पानी न रहा। जो गुरखा सिपाही पास वाले सोते से पानी लेने गये वे लौटने न पाये। विवश होकर गुरखा सरदार बचे हुये अपने ७० साथियों को लेकर घेरनेवाली अंग्रेज़ी सेना को चीरता हुआ पास की पहाड़ियों में चला गया। मार्ग में उसे कुछ और गुरखा साथी मिल गये। इन्हें लेकर वह जौतगढ़ (क़िले) में चला गया। नाहन जैथक और मलाऊं किलों पर भी चढ़ाई की गई। गोरखपुर और बिहपुर से चढ़ाई करने वाली अंग्रेज़ी सेना को हार खानी पड़ी थी। देहरादून में कोई निर्णय नहीं हो पाया था। लेकिन यहाँ गुरखों के सिपाही बहुत कम रह गये थे। वे पूर्व और पश्चिम के युद्ध क्षेत्रों में भेज दिये गये थे। इससे लाभ उठाने के लिये १८१५ में अंग्रेज़ों ने एक नई फौज कमायूं को भेजी। २७ अप्रैल को इस सेना ने अलमोड़ा ले लिया गुरखों ने कमायूं खाली कर दिया। जब गुरखा सेनापति अमर सिंह के पास २०० से कम सिपाही रह गये तो उसने मलाऊं और जैथक के किले खाली कर दिये। लोहबा का किला गढ़वालियों ने खाली करवा लिया था।

लड़ाई के समाप्त होने पर गुरखालियों की दशा बड़ी सोचनीय हो गई। कुछ वर्ष पहले जो शासक थे। वे अब दाने दाने को तरसने लगे। उनकी सब जायदाद छिन गई। कुछ गुरखाली जंगलों में भाग गये। इस प्रकार इस प्रदेश में गुरखालियों के राज्य का अन्त हो गया। गढ़वाल का बहुत छोटा भाग जो टेहरी के नाम से प्रसिद्ध है गढ़वाल का राजवंशज महाराज सुदर्शन साह को कई शर्तों के साथ सौंपा गया। शेष बड़ा भाग अंग्रेज़ी राज्य में मिला लिया गया। १८३९ में यह गढ़वाल और कमायूं जिलों में बांट लिया गया। गदर के समय में गढ़ के राजा ने अंग्रेज़ों को बड़ी सहायता की। उसके बाद गढ़वाल की दशा ब्रिटिश भारत के और जिलों के समान रही।



अल्मोड़ा

अल्मोड़ा के उत्तर में तिब्बत दक्षिण में नैनीताल, पश्चिम में गढ़वाल और पूर्व में नैपाल राज्य है। टनकपुर भावर को छोड़ कर अल्मोड़ा जिले का शेष भाग हिमालय के पहाड़ी प्रदेश में स्थित है। जिले का एक तिहाई भाग पांचाचूली, नन्दा कोट आदि हिमालय की बर्फीली चोटियों के और आगे उस पार स्थित है। इस ज़िले के हिमागारों बनाच्छादित पर्वतों और नदकन्दराओं का ठीक ठीक क्षेत्रफल निकालना कठिन है। फिर भी इसका क्षेत्रफल ४६ वर्गमील माना गया है। जनसंख्या ५,८८,८०२ है। अल्मोड़ा ज़िले में सब से ऊंची हिमाच्छादित चोटियां तिब्बत के जल विभाजक पर नहीं हैं। यह इस विभाजक के दक्षिण में २७ से लेकर ३० मील की दूरी पर हिमाच्छादित श्रेणी के धुर दक्षिणी सिरे पर स्थित हैं। गहरी नद-कन्दरायें चोटियों को एक दूसरे से अलग करती हैं। सब से ऊंची (२५६-८१ फुट) नन्दादेवी चोटी तो गढ़वाल में स्थित है। पूर्व की ओर इसके पास वाली २४३७१ फुट ऊंची चोटी गढ़वाल और अल्मोड़ा जिले की सीमा पर स्थित है। अधिक पूर्वी २२३६० फुट ऊंची त्रिशूल चोटी भी सीमा पर स्थित है। २१००० फुट ऊंची एक पहाड़ी की पीठ इस नन्दा देवी से जोड़ती है। इस पहाड़ी पीठ से एक सिरा दक्षिण पश्चिम की ओर आता है। यह पिंडरी ग्लेशियर के ऊपर उठा हुआ है और २०७४० फुट ऊंचा है। नन्दाकोट ऊंचाई २२,५-३० फुट है। नन्दादेवी समूह की उत्तर की ओर उन्ताधुरा से जुड़ा हुआ है। इस ओर की चोटियां २२,६४० फुट ऊंची हैं। नन्दादेवी समूह गंगा को काली नदी से अलग करता है। पांचा चूली और दूसरी छोटी चोटियां काली या सहायक नदियों को एक दूसरे से अलग करती है।

तिब्बत की ओर बहने वाले जल को भारत की ओर बहने वाले जल से एक पर्वत श्रेणी अलग करती है। इसकी औसत उंचाई समुद्र तल से १८००० फुट है। साधारण दर्रे १७००० फुट ऊचे हैं। किसी भी स्थान पर बिना १६८०० फुट ऊंचा चढ़े तिब्बत की ओर पहुंचना सम्भव नहीं है। उन्ताधुरा और नीति दर्रों के पास जल विभाजक श्रेणी कुछ टूट गई है। यहीं होकर गिरथी और तपथल नदियां दक्षिण की ओर बहती हैं और मलारी के पास धौली से मिलती हैं। यहां जल विभाजक १७ मील पीछे की ओर हटकर उस श्रेणी के पास हो जाता है जो बल्छा, शलशल, मढ़ी, और तिंग जुंगला दर्रों को नीति दर्रे से जोड़ती है।

तिब्बत के जल विभाजक से दक्षिण की ओर नन्दाकोट पहुँचने वाली श्रेणी दक्षिण पश्चिम की ओर गढ़वाल की सीमा के पास पहुँचती है और काली और गंगा के बीच में जल विभाजक बनाती है। सीमा से कुछ दूर पश्चिम की ओर मुड़कर यह सरजू की सहायक) गोमती के निकास को घेर लेती है। यहां से दक्षिण पूर्व की ओर मुड़कर वह रामगंगा और गोमती (सरजू की सहायक) के बीच में जल विभाजक बनाती है। इसके पूर्व का पानी काली और इसकी सहायक नदियों में पहुँचता है। पश्चिम का पानी पिंडर, पश्चिमी रामगंगा और कासी में पहुँच कर अन्त में गंगा में मिलता है। काली नदी कुठी-यांकती से बनती है। और कालापानी नदी के संगम के बाद यह काली कहलाने लगती है। इसके बाद धौली या धर्मा और गोरी नदियां दक्षिण-पूर्व की ओर बह कर काली में मिलती हैं। अन्त में सरजू नदी बागेश्वर के पास मुड़कर आती है।

काली और कमायूँ पहाड़ियों की तलहटी में समतल भूमि की तङ्ग पेटी टनकपुर भावर के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें केवल दो तीन सदा बहने वाली धारायें हैं। शेष भाग में पानी का नाम नहीं है। इसमें कंकड़ और पत्थर बिछे हुये हैं। छोटी छोटी धाराओं का पानी इनके नीचे बैठ जाता है। इससे यह बहुत खुश्क और उजाड़ मालूम होता है। केवल कहीं कहीं पेड़ हैं।

पहाड़ी प्रदेश में समतल भूमि का प्रायः अभाव है। खेत ज़ीनेदार होते हैं। साधारणतया तलाओं भूमि (जिसकी सिंचाई हो सकती है) उपराओ (खुश्क) भूमि से अधिक मूल्यवान होती है। पहाड़ी भाग में सिंचाई हो जाने से निकम्मी भूमि से भी कुछ न कुछ पैदा हो जाता है, सिंचाई न हो सकने से उत्तम उपजाऊ भूमि में भी कुछ नहीं पैदा होता है। पानी छोटी छोटी नालियों से खेतों में पहुंचाया जाता है। कोई कोई नाली एक मील से अधिक लम्बी होती है। वार्षिक वर्षा ६० इंच होती है। काकुन, मड़वा, उर्द, अरहर, चावल, गेहूँ, जौ अल्मोड़ा ज़िले की प्रधान फसलें हैं। हल्दी, मिर्च, अदरख भी उगाई जाती है। कुछ भागों में सन चाय और महुआ होता है।

अल्मोड़ा में अनाज, नमक, शक्कर, ऊन और कपड़ा बाहर से आता है। ऊन और फल बाहर भेजे जाते हैं। लगभग ३०,००० मन ऊन तिब्बत से आता है, १०,००० मन अल्मोड़ा जिले में होता है। प्रायः सब का सब यह बाहर भेज दिया जाता है।

बांस की टोकरी और कंडी, तांबे और पीतल बनाने का काम कई स्थानों में होता है। तांबा पुराने ढङ्ग से खानों से निकाला जाता है। हाथ से कम्बल और दूसरा ऊनी कपड़ा बुनने का कुछ काम होता है। यहां जलशक्ति अपार है। यदि बिजली तयार की जावे तो सस्ती बिजली से ऊन और दूसरे कारखाने लाभ से चल सकते हैं।

पहले भोटिया लोग ऊन और दूसरा सामान बागेश्वर और थाल तक लाते थे। यहां वे ऊन के बदले में अनाज और दूसरा सामान लेकर लौट जाते थे। इस समय भी इन दो स्थानों में तिब्बत का व्यापार होता है। लेकिन अब भोटिया लोग अधिक दक्षिण में पहुंचने लगे हैं और सीधा लेन देन बनियों से करते हैं।

अल्मोड़ा शहर ज़ीन के समान आकार वाली ५५०० फुट ऊंची पहाड़ी पर बसा है। पूर्व से पश्चिम तक यह पहाड़ी २ मील लम्बी है। पहाड़ी एक ओर ६४१४ फुट ऊंची कीलीमाट और दूसरी ओर ६०६६ फुट ऊंची सिमटोल पहाड़ी से जुड़ी हुई है। हीरा डुंगरो से एक पहाड़ी कोसी नदी की ओर चली गई है। अल्मोड़ा पहाड़ी के दक्षिण और पूर्व में स्वाल (शाल्मली) नदी है पश्चिम की ओर कोसी (कौशिकी) नदी है। दक्षिण की ओर इन दोनों नदियों का संगम है। उत्तर से दक्षिण को जाने वाली एक सड़क अल्मोड़ा पहाड़ी को दो भागों में बांट देती है। एक ओर बाज़ार का पश्चिमी सिरा है। दूसरी ओर परेड है। इसके पश्चिम में छावनी है। यहीं बंगलों में सिविल और फौजी अफसर रहते हैं। फोर्ट मायरा या लाल मंडी सबसे शानदार इमारत है। अल्मोड़ा के घर पत्थर और लकड़ी के बने हैं।

रेमज़े कालेज, अस्पताल, गवर्नमेंट इण्टर कालेज यहां प्रसिद्ध इमारतें हैं।

बागेश्वर सरजू के दोनों किनारों पर बसा है। यहां सरजू पर पुल बना है। इसके नीचे गोमती (गुमती) नदी इसमें मिलती है। प्रधान बाज़ार सरजू के दाहिने किनारे पर स्थित है। जनवरी मास में संक्रान्ति का यहां बड़ा मेला होता है। इस अवसर पर भोटिया लोग यहां मुश्क, सुरागाय (याक) की पूंछ (चंवर) नमदा, ऊन लकड़ी के बर्तन, टट्टू, भेड़ बकरी बेचने के लिये लाते हैं। अल्मोड़ा के व्यापारी सूती कपड़े, लोहे, तांबे और पीतल के बर्तन लाते हैं। पड़ोस के पहाड़ी लोग टोकरी, खाद्य पदार्थ और दूसरा सामान लाते हैं। तिब्बत के कुछ लोग यहां विचित्र सामान लाते हैं।

बागेश्वर का मन्दिर बहुत पुराना है। इसकी नींव और भी अधिक पुरानी है। कुछ लोग इसे व्याघ्रेश्वर नाम से पुकारते हैं। कहा जाता है कि एक ऋषि ने अपने तप के बल से सरजू नदी का बहाव रोक दिया। इससे लोगों को कष्ट होने लगा। शिव जी ने व्याघ्र का और पार्वती जी ने गाय का रूप धारण किया। जब व्याघ्र ने गाय पर आक्रमण किया तो ऋषि ने उसे बचाने के लिये अपना तप भंग कर दिया। और सरजू पूर्ववत बहने लगी। बागेश्वर नगर से दक्षिण में अल्मोड़ा को पश्चिम में सोमेश्वर को उत्तर पश्चिम में बैजनाथ और गढ़वाल को उत्तर में पिंडरी ग्लेशियर, मिलम घाटी (तिब्बत के लिये) और पूर्व में थाल को सड़कें जाती हैं।

बैजनाथ ३५४५ फुट की ऊंचाई पर गोमती के किनारे कट्यूर की उपजाऊ घाटी में बागेश्वर १० मील की दूरी पर बसा है। यहां काली का मन्दिर है। दूसरे भी और कई मन्दिर हैं।

चम्पावत ५५४६ फुट की ऊंचाई पर अल्मोड़ा से ५४ मील दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित है। यहीं काली कमायूं का तहसीलदार एक पुराने किले में रहता है। पहले कमायूं (कूर्मांचल) के राजा यहीं रहते थे। इस समय उनका महल खंडहर हो गया है।

द्वाराहाट का बड़ा और प्रसिद्ध गांव अल्मोड़ा से २६ मील दूर है। यह अल्मोड़ा से पावड़ी (गढ़वाल) जाने वाली सड़क पर पड़ता है। पहले यहां कट्युर राजाओं का निवास स्थान था। पड़ोस के खेतों में प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष हैं। रूहेला ने इधर आक्रमण करके इन्हें नष्ट भ्रष्ट कर दिया था। यहां अस्पताल अंग्रेज़ी मिडिल स्कूल और अमरीकन मिशन का अड्डा है।

गर्ब्यांग गांव १०००० फुट की ऊंचाई पर काली नदी के किनारे बसा है। यहां दोकपा लोग अपने तिब्बत के व्यापार का सामान इकट्ठा करते हैं। वे अपने याक (सुरागाय) और बड़ी भेड़ों को १०,००० फुट से अधिक नीचे नहीं उतारते हैं। वे डरते हैं कि नीचे गरमी में ये कहीं मर

न जावें। पहले यहां डिप्टी कलक्टर रहता था। अब उसका दफ्तर पिथौरागढ़ चला गया है। यहां एक स्कूल है।

कोतलगढ़ (फोर्ट हेस्टिंग्स) लोहा घाट से ४ मील पश्चिम में ६३२७ फुट की उंचाई पर स्थित है। यहां एक पुराना किला बना है। कहते हैं वाणासुर यहीं रहता था।

लिपूलेख दर्रा १६७८० फुट ऊंचा है और अल्मोड़ा के धुर उत्तर-पूर्व में स्थित हैं ऊपरी भाग में बरफ के ऊपर चलना पड़ता है।

लोहाघाट देवदार के वृक्षों के बीच में नैपाल की सीमा से १५ मील और अल्मोड़ा से ४३ मील की दूरी पर ५४१० फुट की उंचाई पर स्थित है। पहले यहां छावनी थी। पर जब नैपाल की सीमा के पास फौज रखने की आवश्यकता न रही तब छावनी तोड़ दी गई। कहते हैं किसी अपराध में एक राजा ने कुछ ब्राह्मणों को हथकड़ी पहना कर यहां रक्खा था लेकिन जब ब्राह्मणों ने पास की धारा में स्नान किया तब उनकी लोहे की बेड़ी छूट गई। इसी से इसका नाम लोहा घाट पड़ गया। मसीगांव रामगंगा के बायें किनारे पर द्वाराहाट से १३ मील दूर है। रामगंगा पर पुल बना है? यह एक स्कूल है मिलम गांव गौरी और गुनका नदियों के संगम पर अल्मोड़ा से उन्ताधुरा होकर तिब्बत को जाने वाले मार्ग पर दर्रे से ११ मील दूर ११,४०० फुट की उंचाई पर बसा है। गांव से नीचे की ओर उपजाऊ कछारी भूमि है। ग्रीष्म में कुछ जई हो जाती है। यहां की जलवायु खुश्क और ठंडी है। यहां अत्यन्त ठंडी हवायें चला करती हैं। पड़ोस में कई प्रपात हैं। दर्रे की ओर चढ़ाई कठिन और सपाट है। विननाथ का मन्दिर और गांव अल्मोड़ा से ३२ मील और द्वाराहाट से ७ मील दूर है। मन्दिर काली नदी की घाटी के ऊपर भटकोट चोटी पर बना है। यहां गुसाईं रहते हैं। पास ही उनके महन्तों की समाधि है। सम्बत १६६१ (१६१२ ईसवी) में कमायूं के राजा उद्योतचन्द ने धातुपत्र पर लिखकर मन्दिर की ज़मीन शिवजी के लिये गुसाइयों को दी थी। विनकेश्वर के अतिरिक्त यहां भैरों आदि के कई मन्दिर हैं।

पिथौरागढ़ समुद्र-तल से ५४६४ फुट की उंचाई पर अल्मोड़ा से ५२ मील दूर है। काली नदी के किनारे बसे हुये झूलाघाट से यह १४ मील दूर है। यहीं पर अल्मोड़ा से आने वाली सड़क नैपाल में प्रवेश करती है। पिथौरागढ़ तिब्बत से मैदान को जाने वाली प्रधान सड़क पर स्थित है। यहां डर्मा भोटिया बहुत सा व्यापार करते हैं। पहले यहां छावनी थी। जहां पहले पुराना किला था वहां इस समय पेशकारी है। छावनी के बंगले अमरीकन मिशन को दे दिये गये। शोरघाटी के पड़ोस में लन्दन कोर्ट और दिल्ली कोर्ट (किला) का दृश्य बड़ा सुन्दर है। पूर्व की ओर दुर्गा श्रेणी ७००० फुट ऊंची है। पिथौरागढ़ में अमरीकन मिशन का स्कूल, अस्पताल और कोढ़ी खाना है। पुनियागिरि सारदा और नैपाल के पड़ोस में ३००० फुट ऊंचा है यहां देवी का मन्दिर है। यह ब्रह्मदेव से अधिक ठंडा है। यहां साल और बांस का बन है। यहां का दृश्य बड़ा सुन्दर है। रानीखेत की छावनी ५६८३ फुट ऊंची है। इसके पास ही चौबटिया छावनी ६७४२ फुट ऊंची है। दोनों ही हरे भरे देवदारु और बांज के पेड़ों से घिरे हैं। पहाड़ी के ऊंचे समतल भागों पर फौजी अफसरों के बंगले बने हैं। बबारकों के नीचे बाज़ार है। पानी पूर्व की ओर १००० फुट नीचे सोतों से आता है। मैला इकट्ठा करके देवदारु की पत्तियों से जला दिया जाता है। रानी खेत मैदान से ४६ मील की दूरी पर नैनीताल-भवाली से आनेवाली सड़क पर स्थित है। काठगोदाम से पगडंडी के मार्ग से भीमताल होकर रानी खेत केवल ४० मील दूर है।

सोमेश्वर ४७५२ फुट की उंचाई पर अल्मोड़ा से १८ मील की दूरी पर स्थित है। यहां एक छोटा बाज़ार लगता है। सोमेश्वर का मंदिर बड़ा प्राचीन है।

टनकपुर-भावर सारदा नदी के किनारे पर बरमदेउ से ४ मील नीचे की ओर स्थित है। १८८० में जब बरमदेउ बाढ़ से नष्ट हो गया तब टनकपुर बसाया गया। टनकपुर का बाज़ार पक्का बना है। भोटिया लोग सुहागा और ऊन लाते हैं। बदले में हल्दी, मिर्च, गुड़ और कपड़ा ले जाते हैं। ऊन कानपुर की लाल इमली का एजेण्ट मोल ले लेता है। सुहागा पीलीभीत के सौदागर मोल ले आते हैं।

थाल गांव सारदा की सहायक पूर्वी रामगंगा के किनारे पर स्थित है। यहां बालेश्वर महादेव का मन्दिर है। यहां अप्रैल के महीने में ८ दिन तक मेला लगता है। यहां भोटिया लोग ऊन और दूसरा सामान बेचते हैं।

उन्ताधुरा दर्रा १७६०० फुट की उंचाई पर मिलम के उत्तर पूर्व में अल्मोड़ा से १२० मील की दूरी पर स्थित है। यहां से तिब्बत का मार्ग जाता है।

नैनीताल

नैनीताल का ज़िला कमायूं का दक्षिणी और दक्षिणी-पूर्वी भाग है। इसके उत्तर में अल्मोड़ा और गढ़वाल का कुछ भाग, पूर्व में नैपाल और अलमोड़ा का कुछ भाग, पश्चिम में गढ़वाल और बिजनौर के ज़िले, दक्षिण में पीली भीत, बरेली, रामपुर रियासत और मुरादाबाद है। कुछ दूर तक उत्तर में कोसी और पूर्व में सारदा नदी प्राकृतिक सीमा बनाती है। क्षेत्रफल २६७७ वर्ग मील है।

नैनीताल का ज़िला चार भागों में बटा हुआ है :—

(१) उत्तर में पहाड़ी प्रदेश है। (२) बीच में भावर है (३) दक्षिण में तराई है। (४) दक्षिणी-पश्चिमी कोने पर मैदान है।

नैनीताल ज़िले के पहाड़ों की साधारण उंचाई ६००० फुट है। अधिक से अधिक उंचाई ८००० फुट है। यहां हिमालय की बाहरी और दक्षिणी श्रेणी है। गगर या गगराचल श्रेणी प्रधान है। यह कोसी नदी के दक्षिण में है। इसकी चौड़ाई आठ-दस मील है। इसकी सौंचलिया चोटी ८५०४ फुट ऊंची है। बधान टोला की ऊंचाई ८६०० फुट है। रामगढ़ के पूर्व में गगर श्रेणी लोहूकोट में मिल जाती है। यहां इसकी ऊंचाई ७५३५ फुट रह जाती है। काठगोदाम के पूर्व में जो पहाड़ियां हैं उनमें सब से ऊंची चोटी देवगुरु है। सात ताल, भीम ताल, नौकुछिया ताल और मालव ताल के पड़ोस की पहाड़ियां बड़ी विषम हैं।

हिमालय की बाहरी श्रेणी के दक्षिण में सिवालिक पहाड़ियों के शेष भाग हैं। कोटा भावर की तलहटी में वे स्पष्ट दिखाई देते हैं। यहां यह छोटी छोटी पहाड़ियां एकदम मैदान के ऊपर कुछ ही सौ फुट उठी हुई हैं। यह अधिकतर बलुआ पत्थर की बनी हैं। इनके उत्तर में कोटादून की उथली घाटी है। इस प्रदेश का अधिकतर भाग बन से ढका है।

(२) भावर—पहाड़ी प्रदेश के ठीक नीचे भावर है। इसमें कहीं कहीं साल का बन है। लेकिन इसमें पानी का अभाव है। केवल बड़ी नदियों में पानी रहता है। यह कंकड़ और पत्थर के टुकड़ों से ढका है। इसी निर्जल प्रदेश को भावर कहते हैं। इसकी चौड़ाई ८ मील से १२ मील तक है।

(३) भावर के दक्षिण में तराई है। यह दक्षिण की ओर रूहेलखंड के कृषि प्रदेश तक फैली हुई है। यह पूर्व में सारदा नदी के किनारे से पश्चिम में काशीपुर तक फैली हुई है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी औसत चौड़ाई केवल ११ मील है। यह देखने में एक निचले मैदान के समान है। यह बन और दलदल का प्रदेश है। इसके बीच बीच में कहीं कहीं खेत हैं। दक्षिण की ओर अधिक बड़े खेत हैं। उत्तर की ओर घास का जंगल है। इस ओर यह प्रदेश चरवाहों के लिये अधिक अनुकूल है। भावर के सिरे पर तराई में पानी के सोते हैं।

(४) मैदान—दक्षिणी पश्चिमी सिरे पर मैदान का एक छोटा भाग है। यहीं काशीपुर की तहसील है। यह रूहेला खंड के मैदान के समान है।

भिन्न भिन्न भागों की जलवायु भिन्न है। नैनीताल का ८५ अंश फारेन हाइट से अधिक तापक्रम कभी नहीं हुआ। न यहां का तापक्रम २५ अंश फारेन हाइट से कम हुआ है। औसत वर्षा ९७ इंच है। एक वर्ष यहां १२४ इंच पानी बरसा। १८८७ में केवल ६७ इंच वर्षा हुई।

पहाड़ी लोग भावर के साधारण खेतों को पहाड़ी भाग के उपजाऊ खेतों से अधिक अच्छा समझते हैं। इसलिये पहाड़ी भाग में साधारण खेत पड़े रह जाते हैं। अक्सर पहाड़ी लोग एक एक साथ ऊंचे और नीचे भागों में खेती करते हैं। भावर के खेत जोतने के लिये शीतकाल में पहाड़ी लोग नीचे उतर आते हैं। जब भावर की फसल कट जाती है तब किसान ऊंचे पहाड़ों पर बने हुये जीनेदार खेतों को काटने के लिये जाते हैं। पहाड़ी खेत स्थायी होते हैं। लेकिन इनमें ठीक ठीक खाद नहीं डाली जाती हैं। न इनकी नराई (निकाई, जंगली पौधों को उखाड़ डालने का काम) होती है। निचले भागों में अप्रैल में फसल काटी जाती है। ऊंचे भागों में मई महीने में फसल कटती है। कंकड़-पत्थरों से भरी हुई भावर की भूमि पर बहुत पतली काया (कल्हारो मिट्टी) की तह मिलती है। यहाँ खेत पास पास एक साथ नहीं हैं। ऊपर ज़मीन में दूर दूर बिखरे हुये मिलते हैं। जहां नहरों द्वारा सिंचाई की सुविधा है वहीं खेती हो सकती है। भावर के खेतों को जंगली जानवरों से बड़ी हानि पहुँचती है। तराई की खेती करने का ढंग बहुत कुछ मैदान की खेती की तरह है। तराई की जमीन बड़ी उपजाऊ है। सिंचाई की सब कहीं सुविधा

है। थोड़े परिश्रम से ही अच्छी फसलें पैदा होती हैं। ज़मीन का लगान भी कम है। इसलिये तराई में खेती दिन प्रति दिन बढ़ रही है। पानी की अधिकता होने से तराई की प्रधान फसल धान है। पहाड़ी भाग में भी धान कई प्रकार का होता है। मडुआ, दाल, मकई, शाक, हल्दी, अदरख और आलू यहां की प्रधान फसलें हैं। भावर में गेहूँ सब कहीं होता है। कुछ भागों में तम्बाकू होती है। तराई में ईख अच्छी होती है। कई भागों में भांग के जंगली पौधे उगते हैं।

नैनीताल का जिला कलाकौशल में पिछड़ा हुआ है। काशीपुर में कुछ गाढ़ा बुना जाता है। जसपुर में फर्रुखाबाद के ढङ्ग पर यह रंगा जाता है। कई रंग इस जिले में हल्दी, कत्था और जंगली फूलों से तयार किये जाते हैं। जेडली कोट (काठगोदाम) से नैनीताल को जाने वाली सड़क पर जौ की शराब बनाई जाती है। बाजपुर गांव घूघा नदी के बायें किनारे पर तराई की सड़क के उत्तर में स्थित है। कुछ दूर पर सड़क पर हर सोमवार को बाजार लगता है। यह काशीपुर से १२ मील और मुरादाबाद से ३२ मील दूर है।

भीमताल इस जिले की सब से बड़ी झीलों में से एक है। यह काठगोदाम और रानीबाग से रामगढ़ और अल्मोड़ा को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। यह मार्ग बरखेरी घाटी में स्थित है। यह छोटी नदी भीमताल का बचा हुआ पानी गोला नदी में पहुंचाती है। भीमताल से एक सड़क भोवाली को जाती है। रामगढ़ की सड़क गागर दर्रे को जाती है। इस दर्रे की चोटी से कमायूं का सर्वोत्तम दृश्य दिखाई देता है। भीमताल समुद्र-तल से ४५०० फुट की उंचाई पर स्थित है। इसकी लम्बाई लगभग १ मील (५५८० फुट) चौड़ाई १४६० फुट है। इसके ऊपरी भाग के आखात को सूर्य ताल कहते हैं। इसके जल का रंग गहरा नीला है। इसमें मछलियां बहुत हैं। इसमें बस्ती का गन्दा पानी नहीं आता है। इसलिये यह पीने के लिये अच्छा है। उत्तर-पूर्व की ओर एक छोटा द्वीप है। पूर्व की ओर ही मन्दिर है। एक ओर ५०० फुट लम्बा ४८ फुट ऊंचा बांध भावर की सिंचाई के लिये बनाया गया था।

बांध के दक्षिण में कमायूं के राजा का बनवाया हुआ १७वीं सदी का पुराना मन्दिर है। यहां धर्मशाला, स्कूल और डाकखाना है।

चोर गलिया गांव में पहले डाकू आकर छिप जाते थे। इसी से इसका यह नाम पड़ा। यह उस दर्रे के पास बसा है जहां नन्धौर नदी पहाड़ों को छोड़कर भावर में गिरती है। यह हल्द्वानी से २२ मील और टनकपुर से २० मील दूर है। यहां स्कूल, डाकखाना पुलिस चौकी और बन-विभाग का बंगला है। यहां सिंचाई की छोटी छोटी नहरों का आरम्भ होता है। उत्तर की ओर मार्ग दुर्गम हैं।

धनपुर की छोटी जागीर पर रामपुर के नवाब का अधिकार है। इसमें धनपुर बिजैपुर का छोटा गांव और साल का बन है। गांव से कुछ दूरी पर नवाब का बँगला है। यह गांव किछा तहसील के गदरपुर परगने में प्रायः मध्य में स्थित है।

ढिकुली गांव कोसी नदी के दाहिने किनारे पर रामनगर से ६ मील और मुरादाबाद से ५० मील दूर स्थित है। यह समुद्र तल से १३८० फुट ऊंचा है और पहाड़ी ढाल पर बसा है। गांव की भूमि कोसी नदी की एक छोटी नहर से सींची जाती है। इसके पड़ोस में एक चौरस पर पुराने खंडहर हैं। पठार पर एक पुराना कुआं है। कहते हैं पुराना वैराट पाटन यहीं था। कुछ लोगों का कहना है कि काशीपुर ही वैराट पाटन रहा होगा।

हल्द्वानी नगर समुद्र तल से १४३४ फुट की ऊंचाई पर बरेली से नैनीताल को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह नैनीताल से १६ मील दूर है। कहते हैं कि समीप में हल्दू वृक्षों की अधिकता होने से इसका नाम हल्द्वानी पड़ा। १८३४ में पहाड़ी लोगों को व्यापारिक सुविधा पहुँचाने के लिये हल्द्वानी नगर बसाया गया। पहले घर घास फूस के बने थे। आगे चल कर पक्के घर बन गये। भावर प्रदेश में हल्द्वानी की स्थिति अत्यन्त केन्द्रवर्ती है। यहां तक रेलवे के खुल जाने से इसका महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। शीतकाल में हल्द्वानी की जलवायु बड़ी स्वास्थ्य-कर रहती है। यहां स्कूल, अस्पताल, तहसील, थाना और डाकखाना है। पड़ोस में देशी शराब बनती है।

जसपुर कस्बा काशीपुर से ८ मील और नैनीताल से ५३ मील दूर है कैलाश पहाड़ी ५८८६ फुट ऊंची है। यह मलकाताल के नीचे स्थित है। यह चोटी नुकीली है। इसी से इसे अक्सर महादेव का लिंग कहते हैं। चोटी पर पुराना मन्दिर है। अक्तूबर के अन्त में यहां मेला लगता है। काला ढुगरी कस्बा पहाड़ की तलहटी में भावर का एक नगर है। यह नैनीताल से १६ मील दूर है। यह

समुद्रतल से १३०० फुट ऊंचा है। पश्चिम की ओर निहाल नदी ने अपनी कांप की मिट्टी बिछा दी है। शेष ओर कंकड़ पत्थर हैं।

काशीपुर ढेलानदी के बायें किनारे पर नैनीताल से ४५ मील दूर है। पूर्व की ओर मुरादाबाद से रामनगर को सड़क जाती है। एक सड़क ठाकुरद्वारा को जाती है। काशीपुर इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यहां तहसील, थाना, अस्पताल और बाज़ार है। एक मील पूर्व की ओर ऊंची भूमि पर राजा का महल भी सुन्दर बना है। इसके पड़ोस में उज्जैन की स्थिति बड़ी पुरानी है। यहां कई प्राचीन हिन्दू और बौद्ध भग्नाविशेष हैं।

काठगोदाम पहाड़ियों की तलहटी में गोला नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यहां होकर बरेली से नैनीताल को सड़क जाती है। यह रूहेलखंड कमायूं रेलवे स्टेशन का अन्तिम स्टेशन है। रेल के आ जाने से यहां का व्यापार बढ़ गया है।

किच्छा इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह बरेली से ३८ मील और हल्द्वानी से २१ मील दूर है। यहां तहसील थाना डाकखाना और अस्पताल है। वैसे यह बहुत छोटा गांव है। कोटा हल्द्वानी तहसील का एक छोटा गांव है। इसके पड़ोस में एक पुराने किले के खंडहर हैं। यह ढुका दर्रे के पास स्थित है। यह रामनगर को जाने वाली सड़क के मार्ग में पड़ता है।

लालकुआ रूहेलखंड और कमायूं रेलवे का एक स्टेशन है। गांव भावर के धुर दक्षिण में तराई के जङ्गल में हल्द्वानी और किच्छा के बीच में बसा है। मलवाताल भीमताल से ६ मील और नैनीताल से २१ मील दूर है। यह समुद्रतल से ३३०० फुट ऊंचा है। भीमताल कुछ दूर उत्तर की ओर पहाड़ी चढ़ाई है। फिर एक दम मलवा ताल के लिये उतार है। मलवाताल ४४८० फुट लम्बा और ८३३ फुट चौड़ा है। इसकी अधिक से अधिक गहराई १२८ फुट है। इसके चारों ओर पानी के तल से सपाट ऊंचे पहाड़ उठे हुये हैं। इसमें उत्तर-पश्चिम की ओर कलसा गाड़ नदी पानी लाती है। इसकी घाटी लम्बी और तंग है। यह अपने साथ कंकड़-पत्थर भी बहुत लाती है। दूसरी ओर से गोला नदी की एक छोटी सहायक निकलती है। वर्षा ऋतु में इसका पानी मटीला हो जाता है। और ऋतुओं में यह गहरा नीला रहता है। इसमें मछलियां बहुत हैं। लेकिन पानी पीने के लिये अच्छा नहीं है। मुक्तेश्वर को स्थानीय लोग मोटेश्वर कहते हैं। यह ७५०० फुट ऊंची एक पहाड़ी की चोटी पर बसा है। यह नैनीताल से २३ मील और अल्मोड़ा से १५ मील दूर है। यहां महादेव का पुराना मन्दिर है। पड़ोस में विचित्र चिन्ह हैं।

पशु चिकित्सा की १८६८ ईस्वी में यहां एक प्रयोग-शाला खोली गई। प्रयोगशाला का क्षेत्रफल ३००० एकड़ है। यहां सुन्दर चीड़ और सिन्दूर (बांज) वृक्ष हैं। यहीं पंजाब, और संयुक्तप्रान्त के पशुओं के डाक्टरों को शिक्षा दी जाती है।

नैनीताल शहर इस जिले का केन्द्र स्थान है। यह गागर श्रेणी की एक घाटी में स्थित है। इसके उत्तर में चीना पहाड़ी की चोटी ८५६८ फुट है। पश्चिम की ओर देउपठा पहाड़ी ७६८७ फुट ऊंची है। दक्षिण में अयपठा पहाड़ी ७४६१ फुट ऊंची है। नैनीताल के पूर्वी मार्ग में नैनीताल या झील है जिससे शहर का यह नाम पड़ा। झील का धरातल समुद्र-तल से ६३५० फुट ऊंचा है। इसकी लम्बाई १५६७ गज़ और चौड़ाई ५०६ गज़ है। इसका घेरा २ मील से ऊपर है। इसकी अधिक से अधिक गहराई ६३ फुट है। एक स्थान पर झील में गंधक का सोता है। एक सोता तल्ली ताल बाज़ार के पास है। उत्तर की ओर झील से सवा मील की दूरी पर चीना पहाड़ी है। दक्षिणी ढाल पर साइप्रस के पेड़ हैं। चोटी पर चूने पत्थर हैं। बीच बीच में चिकनी मिट्टी की कड़ी चट्टाने हैं पूर्व की ओर चीना खाल (दर्रा) है।

नैनीताल काठगोदाम से १६ मील और अल्मोड़ा से ३२ मील दूर है। पहले इसे त्रिऋषि सरोवर या तीन (अत्रि, पुलस्त्य, पुलह) ऋषियों का सरोवर कहते थे। वर्तमान नाम नैनी देवी के मन्दिर के कारण पड़ा है। १८८० में यहां गुरुवार से रविवार तक लगातार वर्षा हुई। एक दिन ३३ इंच पानी बरसा। पहाड़ियों के निचले भाग घुल कर खिसक पड़े। विक्टोरिया होटल और कुछ घर एकदम नष्ट हो गये। तभी यह मन्दिर भी नष्ट हो गया। फिर वहीं दूसरा नया मन्दिर बना है। पहले यहां ऐसा जंगल था कि केवल ढोर चराने वाले आते थे। यहां चीते और दूसरे जंगली जानवर बहुत थे। चलने वाले नियत दिन को एकत्रित हो जाते थे। फिर भी उनके बहुत से पशु नष्ट हो जाते थे। देवी को शान्ति करने के लिये यहां मन्दिर बनाया गया।

१८४२ में यहां कुछ बंगले और किराये के लिये

घर बनाये गये। जहां इस समय ऊपरी बाज़ार है, वहां १८४५ तक जंगल था जिसमें चीते रहते थे। गदर में यहां बरेली और पीली भीत से भागकर आये हुये लोगों को शरण मिली। आगे चलकर संयुक्तप्रान्त की सरकार गवर्नर और दूसरे पदाधिकारी प्रति वर्ष ग्रीष्म काल में आने लगे। दुकानों, घरों और होटलों और स्कूलों की संख्या बढ़ गई। तल्ली ताल बाज़ार के नीचे गुरखा सिपाहियों के लिये बारकें बनीं। इस प्रकार नैनीताल एक शहर बन गया। पहले बरेली से सड़क बनी। १८८२ में काठगोदाम तक रेल खुल गई।

नौकुछिया ताल में ९ कोण हैं। इसी से यह नाम पड़ा। यह भीम ताल से ढाई मील दूर है। यह १००० गज लम्बी और ७५० गज चौड़ी है। वनाच्छादित ऊंची पहाड़ियों से घिरे होने के कारण इसका दृश्य बड़ा सुन्दर है। एक भाग में कमल खिलते हैं। इसके किनारे एक पुराना मन्दिर है।

रामगढ़ गांव नैनीताल से अल्मोड़ा को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। यह गागर श्रेणी के ढाल पर स्थित है। यह नैनीताल से १३ मील दूर है। यहां धर्मशाला और डाकखाना है, यहां का दृश्य बड़ा सुन्दर है।

रामनगर कस्बा कोटा भावर की प्रसिद्ध मंडी है। यह पहाड़ की तलहटी में कोसी नदी के किनारे बसा है। यह अल्मोड़ा से ५६ मील दूर है। यहां थाना डाकखाना और स्कूल है। यहां गढ़वाल से लाल मिर्च और मकई और तिब्बत से भोटिया लोगों के द्वारा सुहागा और ऊन बिकने आता है। यहां कई मार्ग मिलते हैं।

रानीबाग गांव काठगोदाम से ३ मील दूर है। यह बलिया नदी के किनारे बसा है। नदी के ऊपर लोहे का पुल है जहां से भीमताल को मार्ग गया है। यहां एक छोटा बाज़ार है। मकर संक्रान्ति को मेला लगता है।

रुद्रपुर गांव तराई की प्रधान सड़क पर हल्द्वानी से २० मील दूर है। यहां पुलिस की चौकी और डाकखाना है। रविवार और गुरुवार को बाजार लगता है। कमायूं के राजा रुद्र चन्द्र ने इसे १५८८ ईस्वी में बसाया था। उस समय से यह तराई की राजधानी रहा। इसके पड़ोस में एक पुराने कच्चे किले के खंडहर, मन्दिर, कुंए और सती स्मारक हैं।

सात ताल के पड़ोस में कई सुन्दर ताल हैं इसी से यह नाम पड़ा। यह नैनीताल से ९ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है कहते हैं ज़मीन के फिसलने से इन तालों का निर्माण हुआ। एक ताल अधिक गहरा होने के कारण दूर से काला दिखाई देता है। और अभ्यन्तर मार्ग से चौथे ताल से मिला हुआ है। १८६९ में यह २४ फुट चौड़ा बांध बनाया गया था।

सितार गंज तराई का एक व्यापारी गांव है। यहां थाना, डाकखाना और अस्पताल है।

सुल्तानपुर दक्षिणी पश्चिमी सीमा पर कोसी नदी से कुछ दूर पूर्व की ओर किछा से काशीपुर को जाने वाली तराई की सड़क पर स्थित है। यह तराई का सब से बड़ा गांव है। बुधवार को बाजार लगता है।

बिजनौर

बिजनौर का कुछ त्रिभुजाकार जिला रुहेलखंड में उत्तरी-पश्चिमी कोने पर स्थिति है। इसके पश्चिम में गङ्गा नदी इसे देहरादून, सहारनपुर, मुजफ्फर नगर और मेरठ जिलों से अलग करती है। उत्तर और उत्तर पूर्व में पहाड़ की तलहटी में हरद्वार से रामनगर, हलद्वानी और टनकपुर को जाने वाली कंडी सड़क इसे गढ़वाल के पहाड़ी प्रदेश से अलग करती है। पूर्व की ओर राम गङ्गा के संगम तक फीका नदी बिजनौर जिले को नैनीताल और मुरादाबाद से अलग करती है। दक्षिण की ओर कृत्रिम सीमा पर मुरादाबाद जिले की ठाकुरद्वारा, अमरोहा और हसनपुर तहसीलें स्थित हैं। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ६२ मील और चौड़ाई ५६ मील है। इसका क्षेत्रफल १७९० वर्ग मील है।

बिजनौर जिले का अधिकतर भाग खुला हुआ उपजाऊ मैदान है। इसे बड़ी बड़ी नदियों और उनकी सहायक नदियों ने कई भागों में बांट दिया है। उत्तरी पूर्वी भाग में वन की पतली पेटी है। धुर उत्तरी सिरे पर हिमालय की नीची पहाड़ियां हैं। वास्तव में यह पहाड़ियाँ सिवालिक और भावर का मिश्रण हैं। यहां तराई का अभाव है। लेकिन उत्तरी भाग में छोटे पेड़ों के वन और घास के जङ्गल प्रायः आते हैं। बिजनौर ज़िले के प्राकृतिक प्रदेशों में वन प्रदेश सब से छोटा है। इसका क्षेत्रफल

केवल २५ वर्ग मील है। यह सब का सब सरकारी रक्षित वन है। उत्तरी सिरे पर सब से ऊंची चंडी देवी का मन्दिर है। चंडी पहाड़ी की तलहटी में मैदान की उंचाई ६५० फुट है। पूर्व की ओर रामगङ्गा के आगे की भूमि समुद्र-तल से केवल ७७० फुट ऊंची है। घाटियों में गीली और उपजाऊ मिट्टी है।

दक्षिण की ओर खुला हुआ प्रदेश है। यह भाग उत्तर से दक्षिण की ओर नीचा होता गया है। नदियों के एक दम किनारे ऊँचे रेतीले टीले हैं। किनारों से आगे प्रायः समतल भूमि है। नदी के पेंदे के अन्दर पानी की धारा और ऊँचे किनारों के बीच में नीची ज़मीन है।

पश्चिमी ऊंचा मैदान गङ्गा के प्रवाह प्रदेश को दूसरी नदियों के प्रवाह प्रदेश से अलग करता है। यह उत्तर में वन प्रदेश से लेकर धुर दक्षिणी सीमा तक चला गया है। इसके उत्तरी भाग में नागल कपास भूमि की उचाई ८१८ फुट है। दक्षिण की ओर चांदपुर के पास वाली भूमि समुद्र-तल से ७४१ फुट ऊंची है। इधर की भूमि अधिक अच्छी नहीं है। साधारण खेती होती है। जनसंख्या कम है।

मध्यवर्ती प्रदेश एक चौड़ा और कुछ नीचा भाग है। इसका वर्षा जल बान गांगन और करुला नदियां बहा ले जाती हैं। ये सब नदियां उत्तरी भाग से निकल कर दक्षिण की ओर बहती हैं। यह भाग पश्चिमी प्रदेश से कहीं अधिक अच्छा है। यहां की मिट्टी मुलायम (कुछ बालू मिली हुई) और उपजाऊ है। केवल कुछ (मील) भागों में कड़ी चिकनी मिट्टी है। सिंचाई की सब कहीं सुविधा है अच्छी खेती होने से इस भाग की जनसंख्या घनी है। प्रबल वर्षा की साल में बान नदी के पास वाली भूमि बाढ़ से डूब जाती है।

करूला नदी के पूर्व में खोह और राम गङ्गा के पास तक पूर्वी प्रदेश की तंग पेटी है। इधर अच्छा मटियार है। यहां भी अच्छी खेती होती है और जनसंख्या घनी है।

खोह-पार का प्रदेश-खोह के ऊँचे किनारे के पास उच्च प्रदेश का अन्त हो जाता है। इसके आगे पूर्वी सीमा तक नीचा कछारी मैदान है। राम गङ्गा और खोह की घाटियों में उपजाऊ मिट्टी है अधिकतर भाग में खेती होती है। कुछ भाग बाढ़ से डूब जाते हैं। सब नदियों के खादर प्रायः एक समान हैं।

गङ्गा खादर-पश्चिम की ओर पश्चिमी उच्च प्रदेश के किनारे पर गङ्गा के खादर की पतली पेटी है। पहले यहां चीता आदि जङ्गली जानवर बहुत थे। इस समय भी यहां साधारण खेती होती है। ऊपर बांगर है जहां भूड़ और मटियार मिट्टी मिलती है।

गङ्गा नदी नागल के पास बिजनौर जिले को छूती है और इसकी पश्चिमी सीमा बनाती है। वाला वाली के पास गङ्गा के तट पर एक प्रसिद्ध गांव है। दारानगर पल्ली राव, रावासन, कोटा वाली, लहपी गङ्गा की छोटी छोटी सहायक नदियां हैं जो इस ज़िले में गङ्गा से मिलती हैं।

मालिन नदी गढ़वाल में निकलती है और नजीबाबाद के पास इस जिले में प्रवेश करती है। हल्दूखाता के पास इसकी कई धारायें हो जाती हैं। कुछ मील वन में बहने के बाद वे सब एक दूसरे से मिल जाती हैं। लखरहन, कटरा नाला इसकी सहायक नदियां हैं। रावली के पास मालिन गङ्गा में मिल जाती है। कहा जाता है कि मालिनी के किनारे कण्व ऋषि का आश्रम था जहां दुष्यन्त और शकुन्तला की भेंट हुई थी।

मालिन के संगम के आगे छोइया नदी गङ्गा में मिलती है। इसके पड़ोस की ज़मीन बड़ी उपजाऊ है।

बिजनौर जिले की शेष नदियां राम गङ्गा में मिलती हैं। बान नदी अकबराबाद परगने से निकलती है। और पश्चिमी भाग में बहती है। इसके किनारे नीचे हैं। बाढ़ के दिनों में दोनों ओर की भूमि डूब जाती है। कई जगह पर इसमें सिंचाई के बांध बने हैं। जहां बड़ी सड़कें इसे पार करती हैं वहां पुल बने हैं।

गांगन नदी बिजनौर जिले के मध्यवर्ती भाग में बहती है। उत्तर में नजीबाबाद के वन से निकल कर दक्षिण की ओर बहती है। बिजनौर जिले में ४५ मील टेढ़ी चाढ़ से बहने के बाद यह मुरादाबाद जिले में पहुँचती है। इसकी तली गहरी है। इस लिये बाढ़ के दिनों में भी इसका पानी किनारों के ऊपर नहीं पहुँचता है। बिजनौर जिले में गांगन की सहायक नदियां कथेनी और पिलखल हैं।

खोह नदी गढ़वाल की पहाड़ियों से निकलती है। इस ज़िले में ३५ मील बहने के बाद रफतपुर के पास राम गङ्गा में मिल जाती है। इसमें सुखराव, सांच, सोत आदि कई कई छोटी छोटी नदियां मिलती हैं। इससे यह

एक बड़ी नदी हो जाती है। लेकिन इसका बहुत सा पानी सिंचाई में खर्च हो जाता है। इस लिये यह प्रायः पांज रहती है।

राम गङ्गा गढ़वाल की ऊपरी श्रेणी से निकलती है। पहाड़ी प्रदेश में बहुत दूर बहने के बाद कालागढ़ गांव के पास यह बिजनौर जिले में प्रवेश करती है। यहां यह काफी बड़ी नदी दिखाई देती है और वर्षा की बाढ़ से पड़ोस के गांवों को बड़ी हानि पहुँचती है। इसकी धारा गहरी और चौड़ी है। गरमी की ऋतु में भी कुछ ही स्थानों में पांज होती है। फिर भी यह नाव चलाने योग्य नहीं है। लकड़ी के बेड़े अवश्य बहाये जाते हैं। शेखपुर खादर के पास यह मुरादाबाद जिले में पहुंचती है। खोह, डुंगरैया नाला, धारा, बनैली, पीली, और फीका रामगङ्गा की सहायक नदियां हैं। देहरादून, गढ़वाल, नैनीताल और अल्मोड़ा को छोड़ कर बिजनौर जिले की जलवायु और सब जिलों से अच्छी और शीतल है। अधिक उँचाई और कुछ वन प्रदेश होने से इसका तापक्रम मैदान के दूसरे जिलों से कुछ कम रहता है। वार्षिक वर्षा ४३ इंच होती है। फिर भी ४२ फीसदी जमीन ऐसी है जिसमें खेती नहीं होती है। धान, गेहूँ जौ, बाजरा, ईख, कपास और तिलहन यहाँ की प्रधान फसलें हैं।

यहां गुड़ और शक्कर बनाने का काम बहुत होता है। इसमें यहां लगभग ७०,००० जुलाहे रहते हैं जो गाढ़ा, गज़ी, चौथई, लमगजा और दूसरा कपड़ा बुनते हैं। आबनूस (काली लकड़ी) की बढ़िया नक्काशी का काम नगीना में होता है। धामपुर में लोहे का काम होता है। बालावाली नजीबाबाद और नगीना में कुछ शीशे का काम भी होता है।

बिजनौर शहर कुछ ऊंची नीची भूमि पर गङ्गा के बायें किनारे से ३ मील की दूरी पर बसा है। यहाँ से नगीना को पक्की सड़क गई है। गंगा के दूसरे किनारे से पक्की सड़कें मुजफ़्फर नगर और मेरठ को गई हैं। यहाँ का बाज़ार यहां के एक कलक्टर की स्मृति में पामरगंज कहलाता है। बिजनौर एक छोटा शहर है। इसकी जनसंख्या ३०,००० से कुछ कम है। यहाँ एक हाई स्कूल और ज़िले का केन्द्र है। जेबी चाकू और जनेऊ यहां से बाहर भेजे जाते हैं, कहते हैं बिजनौर को राजा वेणु ने बसाया था। यह राजा अपनी प्रजा से किसी प्रकार के कर नहीं लेता था और बिजना (पंखा) बनाकर और बेच कर अपना निर्वाह करता था। इसी से इस नगर का यह नाम पड़ा।

चांदपुर यह बिजनौर से २१ मील दक्षिण-पूर्व की ओर एक पुराना कस्बा है। यहां गाढ़ा गज़ी और मिट्टी के बर्तन अच्छे बनते हैं। बाज़ार सप्ताह में दो बार लगता है। दारानगर गङ्गा के ऊंचे किनारे पर बिजनौर से ६ मील दक्षिण की ओर बसा है। गंज या बाज़ार आध मील दक्षिण की ओर है। यहां कार्तिक में गङ्गा स्नान का एक बड़ा मेला लगता है। धामपुर बिजनौर से २४ मील पूर्व दक्षिण की ओर है। यह खोह नदी के ऊंचे दाहिने पर बसा है। पड़ोस में कई बाग और ताल हैं। रेलवे स्टेशन आध मील दूर है। तहसील उत्तर की ओर है।

कीरतपुर मालिन नदी से दो मील दूर एक ऊंचे किनारे पर बसा है। यह एक पुराना नगर है। पड़ोस में कई पुराने भग्नावशेष हैं। बाज़ार सड़क पर लगता है।

मन्दावर मालिन के ऊंचे किनारे पर बिजनौर से ६ मील की दूरी पर स्थित है। इसके पड़ोस में कई प्राचीन खेरे और भग्नावशेष हैं।

अफजलगढ़ राम गङ्गा से दो मील की दूरी पर बसा है। इसके उत्तर में धारा और बीच में नचना (छोटी नदियां) बहती हैं। १७४८ ईस्वी में अफजल खां नामी रुहेला सरदार ने इसे बसाया था। उत्तर की ओर उसने यहां ईंटों का किला भी बनवाया था जो गदर के बाद तोड़ दिया गया। इस समय इसके खंडहरों में जंगल उग आया है।

मोरध्वज एक पुराना टूटा फूटा किला नजीबाबाद से कोट द्वारा को जाने वाली सड़क पर नजीबाबाद से ६ मील दूर है। पहले इसके पड़ोस में एक बड़ा शहर था। इसके भग्नावशेष मीलों तक फैले हुये हैं। इस किले और शहर के बसाने वाले के झंडे (ध्वजा) पर मोर का चिन्ह इसी से इसका नाम मयूरध्वज या मोरध्वज पड़ा।

नगीना जिले का प्रधान नगर है। मुरादाबाद से हरद्वार और नजीबाबाद को जाने वाली सड़क यहाँ होकर जाती है। रेलवे स्टेशन आध मील दूर है। अकबर और रुहेलों के समय में यह एक विख्यात नगर था। रुहेलों ने यहां एक किला बनवाया था। गदर के समय में यहां कई लड़ाइयां हुईं। इस समय पुराने किले में तहसील है। यहां आबनूस के बढ़िया कामदार कलमदान सन्दूक और छड़ी बनती हैं। शीशे की बोतलें, कपड़ा और मेज़ पोश भी अच्छा बनता है।

नजीबाबाद समुद्रतल से ८७५ फुट की उंचाई पर

बिज़नौर से २१ मील उत्तर-पूर्व की ओर बसा है। रेलवे स्टेशन आध मील दक्षिण की ओर है। यहां से बिजनौर, नगीना, नहटौर और हरद्वार को सड़कें जाती हैं। इसके उत्तर-पूर्व की ओर मालिन नदी बहती है। यह कपड़ा, नमक, शहद, अनाज, बांस, लकड़ी और बन की उपज की एक बड़ी मण्डी है। यहाँ पीतल के बर्तन, सूती कपड़ा, हुक्का, देशी-जूते और कम्बल अच्छे बनते हैं।

नहटौ गांगन नदी के दाहिने किनारे पर बसा है। यह बिजनौर से १६ मील दूर है। पास ही गांगन का पुल बना है। कुछ ही दूरी पर यहां से सिंचाई की एक नहर निकलती है जो पूर्वी भाग को सींचती है। यहाँ कपड़ा अच्छा बुना और रंगा जाता है।

सबलगढ़ नजीबाबाद से ६ मील की दूरी पर हरद्वार को जाने वाली सड़क पर एक पुराना क़स्बा है। इसके पड़ोस में पुराने किले के भग्नावशेष हैं। किले के लिये यह स्थान बड़ा उपयुक्त था, इसके दक्षिण और पूर्व में वन है। उत्तर की ओर गङ्गा का ऊंचा किनारा और पश्चिम की ओर कोतवाली नदी के खड्ड हैं। स्योहरा कस्बा रामगङ्गा के ऊंचे किनारे पर बसा है। यह धामपुर से ६ मील और बिजनौर से ३४ मील दूर है।

शेरकोट खोहनदी के (४५ फ़ुट) ऊंचे बायें किनारे पर धामपुर से ४ मील उत्तर-पूर्व की ओर बसा है। यहां से नगीना धामपुर और काशीपुर को सड़कें गई हैं। यहां गदर के समय और इससे पहले कई लड़ाइयां हुईं।

मुरादाबाद

मुरादाबाद का जिला रूहेल खंड में शामिल है। इसके उत्तर में बिजनौर और नैनीताल, पूर्व में रामपुर का नवाबी राज्य, दक्षिण में बदायूं का जिला है। इसके पश्चिम में गंगा नदी बहती है जो इसे बुलन्दशहर और मेरठ जिलों से अलग करती है। मुरादाबाद का जिला कुछ कुछ आयताकार है। लेकिन इसका थोड़ा सा भाग उत्तर में बिजनौर नैनीताल के बीच में और दक्षिण की ओर बदायूं जिले के भीतर घुसा हुआ है। एक छोटा भाग चारों ओर से रामपुर रियासत से घिरा हुआ है। गंगा के इधर उधर बहने से मुरादाबाद का क्षेत्रफल भी घटता बढ़ता रहा है। इसका साधारण क्षेत्रफल २२६३ वर्ग मील है। जन संख्या १२,६२,००० है। इस जिले की औसत उंचाई समुद्र-तल से ६७० फ़ुट है। भूमि प्रायः समतल है केवल कहीं कहीं रेतीले टीलों, नदी-तटों और उथले आखातों ने इसे विषम बना दिया है। ढाल उत्तर से दक्षिण की ओर है। धुर उत्तर में भूमि की ऊंचाई ७६७ फ़ुट है। दक्षिणी-पूर्वी कोने पर इसकी ऊंचाई ५८१ फ़ुट है। पश्चिम से पूर्व की ओर भी कुछ ढाल है।

मुरादाबाद के पश्चिम में गंगा-खादर की तंग पेटी है। यह नीचा खादर ४० मील लम्बा और २ मील (उत्तर में) से ८ मील तक चौड़ा है। गंगा की धारा के एक दम पास नई कांप की मिट्टी रहती है। इसके आगे बलुई भूमि में झाऊ रहती है। अधिक आगे खुला हुआ भाग है जिसमें गंगा की बरसाती धाराओं का भाग है। प्रबल बाढ़ में यह सब प्रदेश पानी में डूब जाता है। कुछ भाग बाढ़ के बाद भी पानी से भीगे रहते हैं। इनमें अक्सर रेह हो जाता है। जिससे वहां खेती नहीं हो पाती है। साधारणतया खेती कम होती है। सरपत और बबूल बहुत हैं। इससे यहां जंगली सुअर हिरण और दूसरे जंगली जानवर बहुत हैं। जन संख्या कम है। अधिक पूर्व में ज़मीन कुछ अधिक ऊंची और कड़ी है। यहां ढाक होता है। बाढ़ के डर से खादर में खरीफ की फसल का कोई भरोसा नहीं रहता है। जानवरों के चरने के लिये घास अच्छी होती है। रबी की फसल में गेहूँ, जौ और चना भी होता है। खादर के आगे और खादर के धरातल से दस या पन्द्रह फ़ुट ऊंचा भूड़ का प्रदेश है। यह आठ-दस मील चौड़ा है। इसमें अधिकतर बलुई भूमि है। हवा के चलने से जगह जगह पर रेतीले टीले बन गये हैं। निचले भागों में कुछ अच्छी ज़मीन है। यहां कोई नदी भी नहीं बहती है। कुछ गांव आधे भूड़ और आधे खादर में बसे हैं। इन्हें अधेक कहते हैं।

भूड़ के आगे ऊला प्रदेश है। यहां की भूमि कड़ी है। अधिक वर्षा में फसलें अच्छी नहीं होती हैं। वैसे यह भाग भूड़ से कहीं अधिक अच्छा है।

कटहर—भूड़ के आगे कटहर का ऊंचा प्रदेश है। इसमें सम्भल तहसील का पूर्वी भाग और रामपुर के पड़ोस का प्रदेश शामिल है। इसकी ज़मीन बड़ी उपजाऊ है।

कुओं में पानी पास ही मिल जाता है। फसलें अच्छी होती हैं।

उत्तर और मध्य भाग के प्रदेश और भी अधिक उपजाऊ हैं। इसमें अमरोहा हसनपुर और मुरादाबाद तहसीलों के भाग शामिल हैं।

रामगंगा का खादर उपजाऊ है। जहां नदी अपनी वार्षिक बाढ़ में बालू बिछा देती है। वहीं फसलें नहीं होती हैं। यह नैनीताल की तराई का अंग है। यहां कहीं बलुई और कहीं चिकनी मिट्टी है। यहां नमी अधिक है। फसलें मामूली होती हैं। इस प्रदेश को कई छोटी छोटी नदियों ने काट दिया है। मुरादाबाद जिले में केवल ८ फीसदी (१७० वर्ग मील) भूमि वीरान है। इसमें और झाऊ का जंगल शामिल है। इसमें रेहवाले भाग शामिल हैं। कुछ भागों में जंगल है।

मेलस और दूसरी घास होती है। आबादी के पड़ोस में फलों के बगीचे हैं। शेष भागों में ज्वार, बाजरा, अरहर मूंग, मोठ, गन्ना, धान, गेहूँ, जौ, चना और दूसरी फसलें, होती हैं।

कारबार

कलाबत्तू और सलमा की कामदार टोपियां अमरोहा में बनती हैं। सूती, रेशमी या मखमली कपड़े पर सूत या रेशम के धागे से यह काम होता है। सलमा लखनऊ या सूरत से आता है। कलाबत्तू दिल्ली से आता है।

साड़ी की किनारी पर भी इस तरह का काम होता है।

चूना तयार करने के लिये हर साल ४०,००० मन चूने का पत्थर मुरादाबाद से आता है। पिंडोल और कंकड़ पड़ोस में ही मिल जाता है।

गंगा के खादर में लूनिया मिट्टी बहुत है। हसनपुर में इससे शोरा बनता है। साल में दो बार शोरा खरीदने वाले फर्रुखाबाद से आते हैं। बहजोई के शीशे के कारखाने में भी इसकी मांग है।

रेह कई गांवों में अधिकता से मिलता है लगभग एक लाख मन रेह रामपुर रियासत और बिजनौर को भेज दिया जाता है। कुछ रेह चमड़ा कमाने, तम्बाकू में मिलाने और कपड़ा धोने के काम आता है।

इस ज़िले में लगभग सवालाख मन अरहर उर्द और मूँग की पैदावार होती है। घरेलू काम के लिये सब कहीं दाल दली जाती है पर बाहर भेजने के लिये चन्दौसी के आठ कारखानों में दाल तयार की जाती है। यह दाल लाहौर (फौज के लिये) रंगून और गुजरात को भेजी जाती है।

यहां १५ लाख मन धान होता है। धान कूटने का काम औरतें करती हैं। एक औरत एक दिन में धान कूट कर २५ सेर साफ चावल तयार कर लेती है। अधिकतर यह घरेलू धन्धा है पर मुरादाबाद में चावल तयार करने का एक बड़ा कारखाना है। यहां का चावल नैनीताल और आस पास के भागों को भेजा जाता है।

सम्भल में सींगों का रद्दी हिस्सा खाद के लिये बहुत मिल जाता है। इसी से यहां १ लाख मन आलू पैदा होते हैं। बीज का आलू फर्रुखाबाद, देहरादून और पटना से आता है।

मुगलपुर, रहरी और नगली में चूड़ियां बनती हैं। चूड़ी बनाने के लिये कच्चा शीशा छबीला सराय (जि० बुलन्द शहर) और अकराबाद (जि० अलीगढ़) से मंगाया जाता है। झाऊ की सस्ती लकड़ी खादर से भट्टी जलाने के लिये मिलती है।

बहजोई में बहुत बड़ा कारखाना है। इसमें दो बहुत बड़ी भट्ठियां हैं। एक एक भट्टी में ८ क्रूसिबिल हैं। हरएक क्रूसिबिल में ५ मन की जगह है। रोज़ाना ४० मन कच्चे

माल की ज़रूरत पड़ती है और ७००) का पक्का माल तयार होता है। दिल्ली अजमेर, बनारस, इलाहाबाद और मेरठ में इसे बेचने के लिये एजेंसियां हैं। शीशे की चिमनी, और तरह तरह के बर्तन बनते हैं। सम्भल में कंघी बनाने के ८० कारख़ाने हैं। देशी और विलायती दोनों तर्ज़ की कंघियां तयार होती हैं। इनमें पीतल आदि की सजावट भी होती है। कुछ कारखाने सींगों को सिर्फ काटते हैं और सीधा करके चिकना कर देते हैं। दूसरे कारखाने उनमें दांत बनाते हैं और कंघों पर पालिश करते हैं। कंघियां भैंस के सींग से बनती हैं। हर रोज आठ दस मन सींगों की ज़रूरत पड़ती है। ये सींग आगरा और पंजाब से आते हैं आठ दस हज़ार कंघियां रोज़ाना तयार होती हैं और हिन्दुस्तान के सभी भागों को भेजी जाती हैं। सींगों को आरी से काटते हैं फिर उन्हें लकड़ी से दबाकर सीधा करते हैं। आरी से ही दांत किये जाते हैं। कम्बल के चिथड़ों से रगड़ रगड़ कर कंघियां चिकनी की जाती हैं।

मुरादाबाद में पीतल के बरतन अच्छे हैं और उन पर कलई और भी अधिक सुन्दर की जाती है। हरसाल तीन लाख रुपये को चार पांच हज़ार मन पीतल की चादरें बम्बई और कराची से आती हैं। ये चादरें योरुप और जापान से तीन लाख रुपये के टूटे फूटे बर्तन ले लिये जाते हैं। टूटे फूटे बर्तन दिल्ली हाथरस, फर्रुखाबाद और मिर्ज़ापुर से आते हैं।

मुरादाबाद में छोटे छोटे ३०० कारखाने हैं जिनमें सात आठ हज़ार आदमी काम करते हैं। साल भर में लगभग १३ लाख रुपये के बरतन और २ लाख रुपये का कलई और नक्काशी का सामान तयार होता है। शहर में २०० दुकानदार ऐसे हैं जो कच्चा माल कारीगरों को देते हैं और बने हुए बरतन बेचने के लिये रखते हैं। रुपये में एक आने का कारीगर को और एक दो आने का फायदा दुकानदार को रहता है।

अमरोहा में आम की लकड़ी के खिलौने भी बनते हैं।

ज़िले भर में लगभग ७ लाख मन गुड़ तयार होती है। मुरादाबाद, चन्दौसी और सम्भल में शक्कर बनती है। चंदौसी से प्रायः १ लाख मन खांड पंजाब को भेजी जाती है।

गंगा के खादर में शेरपुर के पास खस बहुत होता है।

अमरोहा में मिट्टी के चमकीले बरतन बनते हैं।

यहां ढाई लाख मन कपास होती है। कपास को ओटने और दबाकर रुई के गट्ठे बनाने के बड़े बड़े कारख़ाने चंदौसी में हैं। ११ ओटने के और ८ दबाने के कारखाने हैं। सूत कातने की एक मिल मुरादाबाद में है। खद्दर कई जगह बुना जाता है। मुरादाबाद, सम्भल ठाकुर द्वारा, कांठ, बिलारी, पैखेरा, पिपलसना अमरोहा, दढ़ियाल, मुग़लपुर, रतनपुर और हसनपुर बुनाई के केन्द्र हैं। हसनपुर दुतही और दूसूती के लिये मशहूर है।

मुरादाबाद में कुछ निवाड़ भी बनती है। हर हफ़्ते ५०० दरी भी बुनी जाती है। रज़ाई, फर्द और छींट आदि को छापने का भी काम होता है।

काग़ज़ी सराय (सम्भल) में पुराने ढंग से काग़ज़ बनता है। गंगा के खादर और भूड़ में मूंज बहुत होती है। इसी से यहां बान बहुत बटे जाते हैं। सस्ते कम्बल कई जगह बनते हैं। ऊंची क़ालीनें अमरोहा में बनती हैं।

मुरादाबाद में कालागढ़ (गढ़वाल) और लाल कुआ नैनीताल की अच्छी लकड़ी आसानी से आ जाती है। बांस भी रामगंगा में बहाकर लाये जाते हैं। अमरोहा में बैलगाड़ियां बनती हैं जो गढ़मुक्तेश्वर के मेले में बहुत बिकती हैं। चन्दौसी में खाट-पट्टी बनती हैं।

अमरोहा का पुराना नगर मुरादाबाद से १९ मील उत्तर-पश्चिम की ओर सोत नदी के किनारे पर स्थित है। मुरादाबाद से गाज़ियाबाद को जाने वाली लाइन का एक स्टेशन है। सोत नदी गरमी में सूख जाती है। लेकिन इसके चारों ओर तलाब और बगीचे हैं। अमरोहा व्यापार की एक बड़ी मंडी है। गेहूँ, चना, गुड़ और दूसरा सामान यहां इकट्ठा किया जाता है और फिर यहां से बाहर भेजा जाता है। पहले अमरोहा एक चार दीवारी से घिरा था। इस समय इसका एक दरवाजा और कुछ भाग शेष बचे हैं। कहते हैं कि हस्तिनापुर के एक सरदार अमरजोध ने अमरोहा को बसाया था। आगे नष्ट हो जाने पर पृथिवीराज की बहिन अम्बा ने इसे फिर से बसाया था। नौबतखाना मुहल्ले में बहुत पुराने समय की बड़ी बड़ी ईंटें मिलीं। ये ईंटें किले की नाव में लगी थीं। मुसलमानों के पहले यहां तगा लोगों का प्रभुत्व था। बछरांव कस्बा मुरादाबाद से ४१ मील और हसनपुर से १४ मील दूर है। कहा जाता है कि बच्छराज नामी एक तगा ने इसे बसाया था आगे चलकर यहां मुसलमानी बस्ती हो गई। यहां १२८८ की बनी हुई एक मस्जिद खड़ी है। बहजोई कस्बा सम्भल से १२ मील दक्षिण और मुरादाबाद से ३७ मील

दूर है। चन्दौसी से अलीगढ़ को जाने वाली रेलवे लाइन इसके उत्तर की ओर हो कर जाती है। बहजोई अनाज गुड़ और दूसरी उपज की एक मंडी है। लेकिन बहजोई अपने शीशे के कारखाने के लिये प्रान्त भर में प्रसिद्ध है।

बिलारी इसी नाम की तहसील का केन्द्र है। यह मुरादाबाद से १५ मील दक्षिण की ओर है। बिलारी रेलवे स्टेशन को १½ मील पक्की सड़क जाती है। यहां गाढ़ा बुना जाता है और बाजार में साधारण व्यापार होता है।

चन्दौसी मुरादाबाद से २७ मील दक्षिण की ओर रेल का एक बड़ा स्टेशन और अनाज की प्रसिद्ध मंडी है। व्यापार बढ़ने से ही यहां शिक्षा को प्रोत्साहन मिला और यहां एक इण्टर कालेज होगया।

ढढ़ियल कस्बा मुरादाबाद जिले में शामिल होते हुये भी चारों ओर से रामपुर रियासत से घिरा है। यह मुरादाबाद से नैनीताल को जाने वाली सड़क पर मुरादाबाद से २२ मील दूर है। यहां तराई की लकड़ी, चावल और दूसरा सामान बहुत आता है। नगर के आगे कोसी नदी बहती है और नगर की ओर कटाव करती आ रही है।

धनौरा कस्बा मुरादाबाद से ४४ मील और हसनपुर से १६ मील उत्तर की ओर है। यहां से गजरौला रेलवे स्टेशन के लिये पक्की सड़क जाती है। यह व्यापार की एक बड़ी मन्डी है। हर बृहस्पतिवार को बड़ा बाज़ार लगता है। कहा जाता है कि अवध की नवाबी सरकार के नावे खां नामी एक कर्मचारी ने इसे बसाया था। दिलारी ठाकुर द्वारा तहसील का एक बड़ा गांव है।

गजरौला गांव और रेलवे स्टेशन है। यह मुरादाबाद से २३ मील दूर है। यहां कई सड़कें मिलती हैं। अमरोहा, हसनपुर और धनौरा का कुछ व्यापार यहां आने लगा है।

हसनपुर कस्बा तहसील का केन्द्र स्थान है। यह मुरादाबाद से ४२ मील और गजरौला रेलवे स्टेशन से ६ मील दक्षिण की ओर है। यहां से सम्भल, अमरोहा, रेहरा (गंगा-घाट) आदि कई स्थानों को सड़कें जाती हैं। हसनपुर गंगा की घाटी के ऊपर एक भूड़ के ऊंचे टीले पर बसा है। इससे यहां का पानी खादर की ओर जाने वाले गहरे नालों में तेज़ी से बह जाता है। यहां दशहरा को मेला लगता है। पीर मजीद के मकबरे के पास हर साल मुसलमान एक बार इकट्ठा होते हैं। यहां दुसूती कपड़ा अच्छा बुना जाता है। १६३४ में हसन खां नामी एक पठान ने गुसाइयों को भगाकर यहां अपना अधिकार कर लिया तभी से इसका नाम हसनपुर पड़ गया। कैथल का पुराना गांव चंदौसी से २ मील दक्षिण और मुरादाबाद से २७ मील दूर है। यहां राजपूतों की बड़ी बस्ती थी। दिल्ली के सुल्तान फीरोज़शाह ने इसे नष्ट कर दिया। आगे चल कर राजपूत फिर यहां बस गये। लेकिन उनका ज़ोर न रहा।

कांठ का प्रसिद्ध कस्बा मुरादाबाद से १८ मील की दूरी पर रामगंगा के ऊँचे किनारे पर बसा है। मुरादाबाद से सहारनपुर को जाने वाली रेलवे का स्टेशन पास ही है। यहां होकर एक सड़क हरद्वार को जाती है। गेहूँ, चना चावल और सूती कपड़े का यहां बहुत व्यापार होता है। यहां सूती कपड़ा अच्छा बुना जाता है। बाज़ार सप्ताह में दो बार लगता है। यहां एक हाई स्कूल और एक वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल है। पहले कांठ को मान नगर नाम से पुकारते थे।

कुंदरखी कस्बा मुरादाबाद से ११ मील पश्चिम की ओर चन्दौसी को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। पास ही पूर्व की ओर रेलवे स्टेशन है। इसे कुन्दन गिरि नामी एक गुसाईं ने बसाया था। इसका पुराना नाम कुन्दनगढ़ था। इसी से बिगड़ कर इसका नाम कुन्दरखी पड़ गया।

मंझौला का पुराना गांव बहजोई से ४ मील पूर्व की ओर है। पहले यह बड़गूजरों के एक छोटे राज्य की राजधानी था। इस समय भी यहां बड़गूजर अधिक रहते हैं।

मुरादाबाद रामगंगा के दाहिने किनारे पर बरेली से ४६ मील की दूरी पर स्थित है। अवध रूहेलखंड (वर्तमान ईस्ट इण्डियन रेलवे) रामगंगा के एक पुल के ऊपर से पार करती है और कटघर मुहल्ले का चक्कर लगाकर मुरादाबाद जंकशन पर पहुँचती है। प्रधान लाइन उत्तर पश्चिम की ओर जाती है। इसकी एक शाखा गढ़मुक्तेश्वर और गाजियाबाद को और दूसरी शाखा चन्दौसी को जाती है। यहीं से रूहेलखंड कमायूं रेलवे की मीटर गेज लाइन काशीपुर को जाती है। यहां से एक पक्की सड़क बरेली को जाती है। रामगंगा के ऊपर सड़क और रेल का पुल एक है। पुल से दो मील आगे एक सड़क नैनीताल को जाती है। पश्चिम की ओर एक सड़क मेरठ को जाती है। दक्षिण की ओर एक सड़क सम्भल को जाती है। गांगन को पार करने के बाद इस सड़क से एक शाखा बिलारी

और चन्दौसी को जाती है। एक सड़क उत्तर पश्चिम की ओर बिजनौर को जाती है। इससे एक शाखा रामगंगा को पार करके दिलारी और ठाकुरद्वारा को जाती है।

पहले मुरादाबाद चौपला कहलाता था। यहां रामगंगा के ऊंचे किनारे के ऊपर काढ़टिया राजपूतों ने एक मज़बूत कच्चा किला बनवाया था। शाहजहां के समय में सम्भल के सूबेदार ने इस पर अपना अधिकार कर लिया। इसने रामगंगा के किनारे पर पक्का किला बनवाया। इसके खंडहर इस समय भी दिखाई देते हैं। पहले इसका नाम रुस्तम नगर रक्खा गया. फिर शाहजहां को प्रसन्न करने के लिये उसके लड़के मुरादबख्श के नाम से मुरादाबाद रक्खा गया। इसी समय यहां जामा मस्जिद बनाई गई। इसके बाद सम्भल के स्थान पर मुरादाबाद राजधानी बना। चांदी और तांबे के सिक्के बनाने के लिये यहां एक टकसाल स्थापित की गई। यहां लोकोमोटिव सुपरिंटेण्डेण्ट, ट्राफ़िक सुपरिंटेण्डेण्ट और इग्ज़ेक्यूटिव इंजिनियर का दफ़्तर है। मुरादाबाद बहुत पुराने समय से पीतल और कलई के बर्तनों के लिये प्रसिद्ध है। यहां दो इण्टर कालेज और एक हाई स्कूल है। यहीं पुलिस ट्रेनिंग स्कूल है।

मुगलपुर पहले हिन्दुओं की बस्ती थी। फिर यहां अफ़ग़ानों का अधिकार हुआ। और उन्होंने इसका नाम अफगानपुर रक्खा जो अग्वानपुर कहलाने लगा। फिर यहां मुगलों का राज्य हुआ और इसका नाम मुगलपुर पड़ गया। यह मुरादाबाद से ७ मील की दूरी पर रामगंगा के ऊंचे दाहिने किनारे पर स्थित है। यहां होकर हरद्वार को सड़क जाती है। एक सड़क मुगलपुर स्टेशन और दूसरी दिलारी होकर ठाकुरद्वारा को जाती है। पुराने किले के खंडहर नगर के बाहर मिलते हैं।

सलेमपुर रामगंगा की ऊंची घाटी के ऊपर मुरादाबाद और अमरोहा से समान (२० मील) दूरी पर स्थित है। शेरशाह के उत्तराधिकारी इस्लामशाह की स्मृति में यह नाम पड़ा। इसके पड़ोस में गढ़ी उस स्थान पर है जहां कटहर राजपूतों का किला था। पड़ोस में पुराने खंडहर हैं।

सम्भल का प्राचीन नगर मुरादाबाद से २३ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यहां से ४ मील की दूरी पर मुरादाबाद को जाने वाली सड़क सोत नदी को पार करती है। वहीं पर फीरोज़पुर का पुराना किला है। इसके भीतर का महल गिरा दिया गया है केवल टूटी फूटी दीवारें शेष हैं। सम्भल कस्बा दूर दूर बसा है। सब से पुराना और मध्यवर्ती भाग कोट कहलाता है। कोट के ही पास यहां का प्राचीन हरिमन्दिर था। इस समय मन्दिर के स्थान पर मस्जिद है। बीच बीच में कई पुराने खेड़े हैं। यहां बगीचे बहुत हैं। नारंगिया जिले भर में प्रसिद्ध हैं। कहते हैं पृथिवीराज की लड़की बेला अपने पति महोबा के परमाल के मरने पर यहां सती हुई थी। सम्भल एक पुराने किले के खंडहर हैं। यहां कई सराय, १४ बाज़ार एक हाई स्कूल, एक वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल और तहसील हैं।

सिरसी कस्बा मुरादाबाद से १७ मील और सम्भल से ६ मील दूर है। बाज़ार सप्ताह में एक बार लगता है।

सुरजननगर फीका नदी के बायें किनारे पर मुरादाबाद से ३१ मील और ठाकुरद्वारा से दस मील दूर है। कुछ वर्ष पहले फीका नदी यहीं पर रामगंगा से मिलती थी। इस समय संगम यहां से ५ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। इस गांव को सुरजन सिंह नामी एक कटहरिया राजपूत सरदार ने बसाया था। इसी से इसका नाम सुरजन नगर पड़ा।

ठाकुरद्वारा इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह नैनीताल की सीमा से २ मील और मुरादाबाद से २७ मील दूर है। कहते हैं कि इसे कटहरिया राजा महेन्द्र सिंह ने बसाया था। रूहेलों ने उन्हें भगा दिया। १८०५ में अमीर खां पिंडारी ने इसे लूट लिया। यहां कपड़ा बुनने और छापने का काम होता है।

तिग्री गांव गंगा के किनारे मुरादाबाद से ३८ मील दूर है। दूसरे किनारे पर गढ़मुक्तेश्वर है। कार्तिक में यहां गंगा स्नान का मेला लगता है।

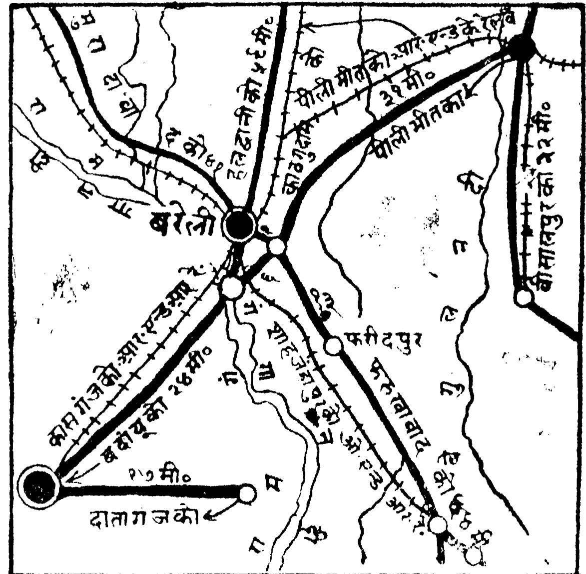


बरेली

बरेली का जिला रुहेलखंड के मध्य में स्थित है। इसके उत्तर में नैनीताल, पूर्व में पीलीभीत, दक्षिणपूर्व में शाहजहांपुर, दक्षिण-पश्चिम में बदायूँ और पश्चिम में रामपुर का नवाबी राज्य है। रामगंगा के इधर उधर हो जाने से इसका क्षेत्रफल घटता बढ़ता है। इस समय इसका क्षेत्रफल ११६४ वर्ग मील है जनसंख्या १०,७२,-३७१ है। १९११ में इसका क्षेत्रफल १५८० मील था। बरेली जिला एक खुला हुआ मैदान है। भूमि का ढाल उत्तर से दक्षिण की ओर है। नदियों ने मैदान को कुछ विषम और लहरदार बना दिया है। नैनीताल की सीमा के पास भूमि की उंचाई ६५६ फुट है। दक्षिण-पूर्व में फतेहगंज के पास उंचाई ५२० फुट रह गई है। उत्तरी आधे भाग में पूर्व से पश्चिम की ओर तक भूमि में कोई विशेष अन्तर नहीं है। नदियों की घाटियां भी उथाली हैं। वे दोनों किनारों पर सिंचाई के काम आती हैं। अधिक दक्षिण में नदियों की घाटियां अधिक गहरी हैं उनके जल विभाजक अधिक ऊंचे हैं। जगह जगह पर ऊंचे रेतीले टीले हैं। फिर बरेली जिला अत्यन्त उपजाऊ है। ऊसर ज़मीन बहुत कम हैं। कुआं खोदने से पास ही पानी मिल जाता है। सब कहीं हरा भरा है। जनसंख्या घनी है।

बरेली ज़िले का उत्तरी भाग तराई का अंग है। यहां की ज़मीन उपजाऊ है। लेकिन जलवायु अस्वास्थ्यकर है। इस भाग को यहां मार कहते हैं। इधर के कुओं का पानी कुछ कुछ तेल की तरह और लाली लिये रहता है। इसका स्वाद अच्छा नहीं होता है।

मार के दक्षिण में खुला मैदान या देश है। ऊंची भूमि बांगर कहलाती है। नदियों में बीच बीच में बांगर की कई पेटियां हैं। इसकी मिट्टी और उर्वरता में बड़ा भेद है। उत्तर की ओर कुछ चिकनी मिट्टी है। चिकनोट मिट्टी अच्छी होती है। लेकिन खपट या चपट (जिसमें लोहे का अंश रहता है) उपजाऊ नहीं होती है। बीच वाले भाग में दुमट है। दक्षिण की ओर कुछ हलकी भूड़ मिट्टी है। भूड़ में ७५ फीसदी बालू होती है। भिन्न भिन्न बांगरों की भूमि में इतना अन्तर नहीं है जितना बांगर और (कछार में है। नदी ऊंचे किनारे और पानी की धार के बीच की भूमि कछार कहलाती है। यह नई होती है। इसमें कहीं बालू और कहीं चिकनी मिट्टी की तहें पड़ जाती हैं। रामगंगा की कांप (कछारी मिट्टी) की तह ऊपर उठते उठते इतनी ऊंची हो जाती है कि इस तक बाढ़ का पानी नहीं पहुंच पाता है। खादर (निचली भूमि) की कछारी मिट्टी प्रायः हर साल बदलती रहती है। जहां इस वर्ष



बालू है वहां दूसरे वर्ष चिकनी मिट्टी की तह बिछ जाती है। इसी तरह चिकनी मिट्टी के स्थान पर बालू बिछ जाती है। कछार के धरातल से बांगर का धरातल कहीं १० फुट और कहीं २५ फुट ऊंचा है।

बरेली जिले की प्रधान नदी रामगंगा है। यह ज़िले के दक्षिणी आधे भाग में पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। यह गढ़वाल की हिमाच्छादित श्रेणी से निकल कर बिजनौर मुरादाबादी और रामपुर (राज्य) को पार करके शाहपुर के पास बरेली ज़िले में आती है। सरौली, शिवपुरी और बरेली इसके किनारे पर बसे हैं। दक्षिणी सिरे पर मनपुर गांव के आगे यह बदायूं और शाहजहांपुर के बीच में सीमा बनाती है। अन्त में शाहजहांपुर जिले को पार करके हरदोई जिले में गंगा से मिल जाती है। बरेली जिले में इसमें कई छोटी छोटी नदियां मिलती हैं। वर्षा

ऋतु में फैल कर अपने मुलायम किनारों को काट कर इधर उधर बहने लगती है। रामगंगा का खादर चौड़ा है। इसकी धारा बांगर की ऊंची भूमि से बहुत नीची है। इसलिये यह सिंचाई के काम की नहीं है। इसके किनारे प्रायः सीधे सपाट हैं। नदी का तेज पानी निचले भाग को काट कर पोला कर देते हैं। इससे किनारा अपने बोझ से ही नीचे पानी में गिर पड़ता है। फिर पानी इसे काट कर बहा ले जाता है। नदी की तली में बालू है। इसी से रामगंगा अपना मार्ग बड़ी तेज़ी से बदलती है। बरेली शहर के पश्चिम में रामगंगा की दो धारायें हैं। इनके बीच में कई मील का अन्तर है। लेकिन रामगंगा अक्सर एक धारा को छोड़ कर दूसरी में पहुंच जाती है। गरमी की ऋतु में रामगंगा सूख कर कई स्थानों में पांज (पैदल पार करने योग्य) हो जाती है। बरेली जिले में राम गंगा में सिद्ध नदी सब से पहले मिलती है। यह छोटी नदी रामपुर राज्य से निकलती है और सिंचाई के लिये बड़ी उपयोगी है। दो जोड़ा नदी में एक जोड़ा किछा और पश्चिमी बहगुल के मिलने से बनती है। दूसरा जोड़ा पश्चिम की ओर से आने वाली ठकरा और भकरा नदियों से बनता है। मीरनपुर के पास यह रामगंगा में मिल जाती है। नदी के किनारे ऊंचे हैं। केवल अत्यन्त खुश्क वर्षों में इससे कुछ सिंचाई होती है। ढोरद नदी तराई से निकलती है। इसकी तली और किनारे चिकनी मिट्टी के बने हैं। इसका पानी हल्दी और तरकारी के लिये बड़ा उपयोगी होता है। इसी से इसके किनारों पर हल्दी और शाक भाजी की खेती होती है। जगह जगह पर इसके पानी से सिंचाई होती है। संखा, घोरियानिया, नकटियां, पूर्वी बहगुल कैलास, धोहा, अरिल आदि कुछ दूसरी नदियां हैं। इनमें बह गुल और दचोई अधिक प्रसिद्ध हैं। बहगुल तराई से निकलती है। दक्षिण-पूर्व की ओर बह कर वह शाहजहांपुर जिले में पहुँचती है और कोलहापुर (तहसील जलालाबाद) के पास रामगंगा में मिल जाती है।

धोहा को पहले नन्धौर कहते हैं चोरगलियां के पास यह नैनीताल की पहाड़ियों को छोड़कर मैदान में प्रवेश करती है। शाहजहांपुर जिले में इसे गर्रा कहते हैं। केवल दस मील तक यह बरेली जिले को छूती है। शाहजहांपुर शहर (रौस) के पास इसमें खन्नौत नदी मिलती है। हरदोई में यह स्वयं रामगंगा में मिल जाती है। इसका चौड़ा कछार कहीं कहीं बड़ा उपजाऊ है। लेकिन पड़ोस की बांगर ज़मीन अधिक उपजाऊ है इसलिये यह नदी सिंचाई के लिये अच्छी नहीं है।

बरेली जिला बड़ा उपजाऊ है। केवल कुछ भाग में रेह है। कुछ भाग में कड़ी खपट मिट्टी खेती के योग्य नहीं है। कुछ भाग में जंगल है जहां ऊंची घास और सेमल आदि जंगली पेड़ उगते हैं। गांवों के पड़ोस में आम जामुन आदि के बगीचे हैं। गेहूँ, धान, गन्ना की फसलें प्रधान हैं। बरेली मेज़, कुरसी, तांगा आदि लकड़ी के सामान के लिये प्रान्त भर में प्रसिद्ध है। यह सामान शीशम और कोरों की लकड़ी से बनता है। बरेली का सुरमा सवा सौ वर्ष से प्रसिद्ध है। यहां दरी और गाढ़ा भी अच्छा बुना जाता है। कपड़ा छापने का भी काम होता है। बरेली से चना, दाल, शक्कर, चमड़ा, तिलहन, लकड़ी का सामान, दरी, सुरमा, बाहर भेजा जाता है। नमक, कपड़ा, धातु, पत्थर, चूना बाहर से आता है।

बरेली शहर इलाहाबाद से २६० मील की दूरी पर रामगंगा के किनारे ऊंची भूमि पर बसा है। शहर से पूर्व की ओर नकटिया और पश्चिम की ओर घोरानियां रामगंगा में मिलती है। यहां कई रेलवे लाइनों का जंकशन है। प्रधान लाइन (पुरानी अवध रुहेल खंड रेलवे लखनऊ से सहारनपुर को जाती है। शाखा लाइन बरेली से अलीगढ़ को जाती है। रूहेल कमायूं रेलवे यहां से कासगंज और पीलीभीत होती हुई लखनऊ को गई है। इसकी एक शाखा लाइन हल्द्वानी को जाती है। कासगंज की ओर जानेवाली रेलवे एक पुल के द्वारा रामगंगा को पार करती है। बरेली से पक्की सड़क दक्षिण-पश्चिम में बदायूं को, दक्षिण-पूर्व में शाहजहांपुर को उत्तर-पूर्व में पीली भीत को उत्तर में नैनीताल को और उत्तर-पश्चिम में मुरादाबाद को गई है। बरेली रुहेलखंड का सब से बड़ा शहर है। इसकी जन संख्या १६२,८८८ है।

कहते हैं १५३७ ईस्वी में बरेली को एक राजपूत ने बसाया था। १६५७ में राजा मकरन्द राय (एक खत्री) यहां का सूबेदार नियुक्त किया गया। उसने नया शहर, नया किला, शाहदाना का मकबरा और सुन्नियों की जामा मस्जिद बनवाई। उसके भाइयों ने मकरन्दपुर, आलमगीरी गंज, मुलुकपुर, कुंअरपुर और बिहारीपुर बसाये। १८१६, १८३७ और १८५७ में यहां पर बलवे हुये। गदर के बाद यहां छावनी बनी। पुराने शहर और छावनी के बीच में सिविल स्टेशन है। इस प्रकार बरेली

शहर पश्चिम में रामगंगा से पूर्व में नकटिया तक फैला हुआ है। पुराना शहर वासुदेव के कोट के चारों ओर बसा है। नया शहर प्रधान सड़क के दोनों ओर बसा है जो गोलगंज से पश्चिम की ओर जाती है। इसी के दोनों ओर सुन्दर पक्की दुकानें हैं। चौक बीच में है। इसके एक ओर कोतवाली और दक्षिण की ओर तहसील है। बरेली रूहेलखंड कमिश्नरी का केन्द्र स्थान है। यहां बरेली कालेज और कई हाई स्कूल हैं। बढ़ई का काम सिखाने के लिए यहां एक विशेष स्कूल है। आइज़त नगर में रूहेलखंड कमायूं रेलवे का कारखाना है। कुतबकरगंज में टर्पेंटाइन और बाविन बनाने का काम होता है। आंवला कस्बा बरेली से १७ मील दक्षिण पश्चिम की ओर स्थित है। रेलवे स्टेशन उत्तर की ओर डेढ़ मील दूर है। चौदहवीं सदी तक यह कटिहरियों का प्रधान अड्डा था। कुछ समय तक यह रूहेलों की राजधानी रहा। बरेली राजधानी हो जाने पर आंवला क्षीण होने लगा। १८१३ में यह तहसील का केन्द्र बना तब से इसकी कुछ वृद्धि हुई। आंवला दूर दूर बसा है। बीच बीच में कब्रिस्तान और पुरानी मस्जिदें हैं। कस्बे का प्रधान भाग किला या गंज कहलाता है। यहां रूहेले सरदार अपना दरबार करते थे। दूसरा भाग पक्का कटरा कहलाता है। पहले आंवला में नील का कारखाना था।

अलरचन्दी अरिल नदी के पश्चिमी या दाहिने किनारे पर आंवला से ४ मील और बरेली से १४ मील की दूरी पर बसा है। यहां कटहरियों का एक पुराना किला था। पास ही मुसलमानी किले के खंडहर हैं। यहां अरिल नदी में बांध बना है इससे पड़ोस के गांवों में सिंचाई होती है।

बहेरी कस्बा इसी नाम की तहसील का केन्द्र है और बरेली से ३१ मील दूर नैनीताल को जानेवाली सड़क पर स्थित है। रूहेलखंड कमायूं रेलवे (जो सड़क की समानान्तर चलती है) का स्टेशन कस्बे से उत्तर की ओर है। एक मील पश्चिम की ओर किछा नदी बहती है। रेलवे से पूर्व की ओर किछा नहर है। यह बहेरी, शे पुर और टांडा के मिलने से बना है। टांडा बंजारों की बस्ती है। यहां के बाज़ार में चावल और तराई की दूसरी उपज बिकती है। बाज़ार सप्ताह में तीन दिन लगता है। यहां तहसील, अस्पताल, थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है।

देवरनियां गांव इसी नाम की नदी के किनारे बरेली से काठ गोदाम जाने वाली पक्की सड़क और रूहेलखंड कमायूँ रेलवे पर बरेली से १८ मील की दूरी पर स्थित है। फरीदपुर इसी नाम की तहसील और परगने का केन्द्र है। यह बरेली से १३ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। स्टेशन पीताम्बरपुर कहलाता है। पहले फरीदपुर को पुरा कहते थे। इसे कटहरिया राजपूतों ने बसाया था। १६५७ और १६७६ के बीच में वे यहां से भगा दिये गये। यहां गाढ़ा, गुड़ और अनाज का व्यापार होता है। बाज़ार सप्ताह में तीन बार लगता है। महीने में एक बार देवी का मेला होता है। वसी मेला मुसलमानों का होता है।

मीर गंज गांव इसी नाम की तहसील का केन्द्र है और बरेली से २१ मील की दूरी पर मुरादाबाद को जाने वाली सड़क पर बसा है। पास की स्टेशन नगरिया सादात कहलाती है। बाजार सप्ताह में दो दिन लगता है। जब से तहसील दुन्का से उठकर यहां आई तब से गांव बढ़ गया है।

नवाबगंज को पहले बिजौरिया कहते थे। नवाब आसफुद्दौला ने यहां एक बाज़ार बनवाया तब से यह नवाबगंज कहलाने लगा। १८१५ में यह तसील का केन्द्र स्थान बन गया। यह बरेली से १८ मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। पक्की सड़क इसके पास ही बनगौली नदी को पुल के ऊपर से पार करती है। बाज़ार सप्ताह में चार बार लगता है।

रामनगर गांव बरेली से २० मील की दूरी पर आंवला से सरौली को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। चैत्र में पारसनाथ का मेला लगता है। रामनगर के उत्तर पूर्व में प्राचीन अहिछत्र के भग्नावशेष हैं। यह उत्तर पांचाल की राजधानी थी। यहां से द्रोणाचार्य ने राजा द्रुपद को भगा दिया था यहां अशोक ने एक स्तूप बनवाया था। यहां अग्निमित्र, भूमि मित्र, विष्णु मित्र नाम के प्राचीन सिक्के मिले हैं। प्राचीन नगर एक चार दीवारी से घिरा था। इसका घेरा ३½ मील था। चीनी यात्री ह्वेन सांग ने इसका वर्णन किया है। यहां दस बौद्ध मठ थे जिनमें १००० भिक्षु रहते थे। ६ शिवाले थे। नगर के बाहर एक नागह्रद (सर्प सरोवर) था। यहीं बुद्ध भगवान ने ७ दिन तक नाग राजा को उपदेश दिया था। वहीं सम्राट अशोक ने एक स्तूप बनवाया। मुसलमानों के समय में यह उजड़ गया। प्राचीन भग्नावशेष पड़ोस की भूमि से ८ या दस गज़ ऊँचे हैं। रिछा इसी नाम के परगने का केन्द्र

है। नैनीताल सड़क से जो शाखा पीली भीत को जाती है वह यहीं होकर जाती है। यही सड़क रिछा रेलवे स्टेशन को मिलाती है जो काठगोदाम के मार्ग में है। इस गांव को एक राजपूत सरदार ने बसाया था।

सरौली कस्बा रामगङ्गा के दक्षिणी किनारे पर बरेली से २८ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। बाज़ार सप्ताह में दो दिन लगता है। कार्तिक-पूर्णिमा और ज्येष्ठ दशहरा को रामगंगा स्नान का मेला लगता है।

सरदार नगर बरेली से ७ मील दक्षिण-पश्चिम को ओर बदायूं को जाने वाली पक्की सड़क पर बसा है। गांव से १ मील की दूरी पर गांवों के पुल के ऊपर सड़क रामगंगा को पार करती है। सरदार नगर स्टेशन उत्तर की ओर है।

सेंथल का छोटा क़स्बा बरेली से १६ मील की दूरी पर नवाब गंज से ४ मील पश्चिम की ओर स्थित है। पश्चिम की ओर पुराना खेड़ा है। यहां कई बंजारे रहते हैं। बाज़ार सप्ताह में तीन बार लगता है।

शाही गांव पश्चिमी बहगुल के बांयें किनारे पर बरेली से १७ मील की दूरी पर स्थित है। शाही कहारिया राजपूतों का एक प्रबल अड्डा था। १८१३ से १८८४ तक तहसील का केन्द्र स्थान रहा। बाज़ार सप्ताह में दो बार लगता है।

शिवपुरी कस्बा रामगंगा के ऊँचे दाहिने किनारे पर बसा है। इसे एक चौहान राजपूत ने बसाया था। शेरगढ़ का पुराना नाम काबर है। यह बरेली से २१ मील उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित है। इसके पास ही किछा नहर की शाखा बहती है। काबर खेड़े का व्यास ३०० गज है। यह २५ फुट ऊँचा है। यह ५० से १०० फुट चौड़ी एक गहरी खाई से घिरा है। १६वीं सदी में शेरशाह ने काबर के पश्चिम में शेरगढ़ (किला) बनवाया था। कहते हैं काबर राजा बेणु की राजधानी था।

सहारनपुर

सहारनपुर गंगा और यमुना के मध्य में द्वाबा का सब से अधिक उत्तरी जिला है। यमुना नदी पश्चिम में सहारनपुर को अम्बाला और करनाल जिलों से अलग करती है। गंगा नदी इसकी पूर्वी सीमा बनाती है और इसे बिजनौर ज़िले से अलग करती है। उत्तर में शिवालिक श्रेणियों का जल विभाजक इसे देहरादून जिले से पृथक करता है। दक्षिण में मुजफ्फर नगर का जिला है। गंगा और यमुना के मार्ग में परिवर्तन के अनुसार सहारनपुर जिले का क्षेत्रफल कुछ घटता बढ़ता रहता है। इसका औसत क्षेत्रफल २१५२ वर्गमील है।

सहारनपुर जिले का अधिकतर भाग ऊंचा बांगर प्रदेश है। इसका ढाल दक्षिण-पूर्व की ओर है। पूर्व की ओर गंगा और पश्चिम की ओर यमुना की निचली और चौड़ी घाटियां दलदल, झील, घास और झाऊ की झाड़ियों से भरी पड़ी हैं। उत्तर की ओर शिवालिक की सपाट पहाड़ियां यमुना की घाटी से गंगा की घाटी तक चली गई हैं। पहाड़ियों के नीचे भावर और तराई के प्रदेश हैं।

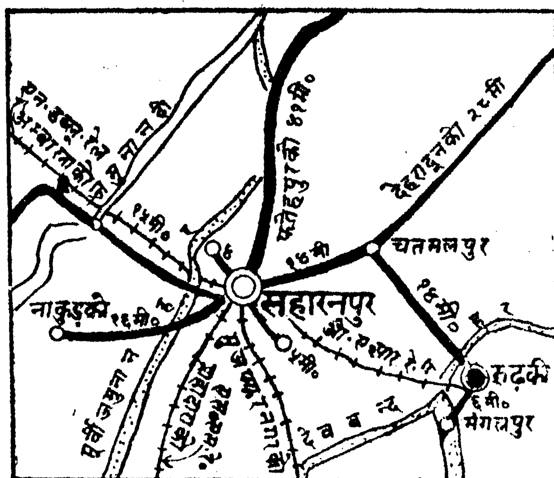
सिवालिक श्रेणी पश्चिम में यमुना की नद कन्दरा से पूर्व में गंगा के किनारे हरिद्वार तक ४६ मील लम्बी है। इसकी चौड़ाई छः मील से १० मील तक है। पहाड़ियां अलग अलग बिखरी हुई हैं। वर्षा और नालों से वे लगातार कटती जाती हैं। उत्तर-पश्चिम में यमुना से ५ मील पूर्व की ओर इसकी सब से अधिक उंचाई (अमसोत चोटी) ३१४० फुट है। कई चोटियां ३००० फुट से अधिक ऊंची हैं। मोहन्द दर्रे के पास पहाड़ की उंचाई २६४६ फुट है। मोहन्द दर्रा सहारनपुर से देहरादून जानेवाली सड़क पर सहारनपुर से २८ मील की दूरी पर पड़ता है। सोलानी नदी की सहायक मोहन्दराव नामकी छोटी नदी ने इस दर्रे को बनाया है। सड़क की चढ़ाई दर्रे और सुरंग तक सपाट है। रेलों का मार्ग अधिक चक्करदार होने पर भी अधिकतर लोग सहारनपुर से देहरादून को रेलमार्ग से ही जाया करते हैं। सिवालिक में और भी कई दर्रे हैं। इन सब का दक्षिणी ढाल अधिक सपाट और हिमालय की ओर वाला उत्तरी ढाल क्रमशः है। सिवालिक और बाहरी हिमालय के बीच में प्रस्तर अंश है। सिवालिक की भू-रचना की दृष्टि से तीन भागों में बांट सकते हैं। ऊपरी सिवालिक में बालू और चिकनी मिट्टी अथवा दोनों का मिश्रण है। मध्यवर्ती सिवालिक में बलुई चट्टानें हैं। इसी में पुराने समय के स्तनधारी पशुओं के ढांचे मिले हैं। सिवालिक के नीचे वाले भाग बलुआ पत्थर के बने हैं। सिवा-

लिक की पहाड़ियां बन से ढकी हैं। ऊंचे भाग में देवदारु और निचले भाग में साल के पेड़ अधिक हैं।

सिवालिक से एकदम नीचे वाला भाग घाट कहलाता है। पूर्वी जिलों में इसे भावर कहते हैं। इसकी चौड़ाई सब कहीं एक सी नहीं है। इधर बहने वाली सभी छोटी नदियां गरमियों में सूख जाती हैं। पश्चिम की ओर वाली नदियां यमुना में मिलती हैं। मध्य और पूर्वी भाग की नदियां गंगा में मिलती हैं। पहले यहां जंगल बहुत था लेकिन अब यमुना से बीस पचीस मील पूर्व की ओर सभी प्रदेश साफ कर लिया गया है और वहां खेती होने लगी है। घाट का प्रदेश एक कटे फटे पठार के समान मालूम होता है। अन्त में यह मैदान से मिल जाता है। पश्चिम और धुर पूर्व की ओर भूमि कुछ समतल है। लेकिन इधर सब कहीं भूमि छोटी छोटी नदियों और नालों से कटी फटी है। कंकड़ पत्थर की प्रधानता है। मिट्टी बहुत कम है। भावर की तरह धार प्रदेश में भी पहाड़ी नदियों का पानी तलों के नीचे गहराई में बह जाता है। इसी से कुओं का खोदना प्रायः असम्भव सा है। सिंचाई का नाम नहीं है। कहीं कहीं पानी एकदम दुर्लभ है। जन संख्या बहुत कम है। घरों को बनाने के लिये अच्छी मिट्टी का अभाव है इसलिये घर घास फूस के बने हैं। गरमी की ऋतु में इनमें प्रायः आग लग जाती है। फिर भी धरती उपजाऊ है। वर्षा प्रबल होती है। इसी से सिंचाई की सुविधा न होने पर भी गेहूँ कपास और दूसरी फसलें हो जाती हैं। तराई का प्रदेश निचला है। यहां नदियां फिर धरातल पर प्रगट होकर एक दूसरे से मिलती हैं। वह प्रदेश बहुत नम है। इसी से यहां मलेरिया बहुत फैलती है।

तराई का प्रदेश मैदानी भाग से मिल गया है। मैदान ही जिले का सब से बड़ा भाग है। मैदान का ऊंचा पुराना भाग बांगर कहलाता है। निचला कछारी भाग खादिर कहलाता है। इसी निचले कछारी भाग में गंगा और यमुना की चौड़ी घाटियां हैं। बांगर की ऊंची भूमि ऊपर से देखने पर चपटी दिखाई देती है। जहां नदियां या नाले हैं वहीं ज़मीन कुछ अधिक नीची हो गई है। ऊंचे भाग की मिट्टी कुछ हलकी और बलुई है। निचले भाग की मिट्टी चिकनी अथवा दुमट है। मैदानी भाग की भूमि प्रायः समतल होने पर भी पश्चिम की ओर अधिक ऊंची है। फैज़ाबाद १०६५ फुट, ज्वालापुर ९४८ फुट, भनौरा ८६१ फुट, सहारनपुर ९०० फुट और देवबन्द ८७३ फुट ऊंचा है। पूर्व की ओर उन्हीं अक्षांशों में स्थित स्थानों की ऊंचाई सब कहीं कम है। रुड़की की ऊंचाई ८७५ फुट है।

यमुना-खादिर-इस निचले भाग की चौड़ाई दो मील तक है। ऊपरी भाग में इसकी कोई स्पष्ट सीमा नहीं मालूम होती है। फैज़ाबाद परगने में यमुना का ऊंचा किनारा खादिर को बांगर से अलग करता है। इसी ऊंचे किनारे पर सुल्तानपुर, सरसवा, नकुड़, गंगोह और लख-



नौटी नगर बसे हैं। कई स्थानों पर ऊंचा किनारा दुहरा है। दोनों किनारों के बीच में अक्सर झीलें बन गई हैं। ऊँचे किनारे के पास सब कहीं चिकनी मिट्टी है। इसमें बढ़िया धान पैदा होता है। यमुना की धारा और दलदलों के बीच में कड़ी मिट्टी है। यहीं पुरानी धाराओं के सूखे मार्ग हैं। खादिर के कुछ भागों में हलका दुमट और बालू है। कहीं कहीं मिट्टी में लगातार पानी रहने से धरती में रेह जमा हो गया है। यमुना-खादिर के उत्तरी भाग में सब कहीं खेती होती है। दक्षिणी भाग में इस समय भी खेती के योग्य कुछ भाग उजाड़ पड़े हैं।

गंगा-खादिर—यमुना के खादिर से गंगा का खादिर अधिक बड़ा है। वास्तव में सोलानी नदी के पूर्व में समस्त प्रदेश खादिर है। लेकिन गंगा का खादिर बहुत कम उपजाऊ है। इसके कुछ भागों में एकदम बालू है। कुछ भागों में जंगल है। बहुत कम भागों में खेती होती है। इसी से इस ओर बसी हुई जन संख्या भी कम है।

सहारनपुर जिले के अधिकतर भाग में उपजाऊ रौसली

मिट्टी है। यह बालू और मुलायम चिकनी मिट्टी के मिश्रण से बनी है। निचले भागों में भारी चिकनी मिट्टी है जिसे डकर या मटियार कहते हैं। इसमें अधिकतर धान की खेती होती है। कुछ ऊंचे भागों की हलकी मिट्टी में ७५ फीसदी बालू होती है। इसे भूड़ कहते हैं। यह बहुत कम उपजाऊ होती है। सिंचाई हो जाने पर भी इसमें मामूली फसल होती है। पहाड़ी भागों की कुछ काली मिट्टी बड़ी उपजाऊ होती है। इसमें कई प्रकार की फसलें होती हैं।

सिवालिक

सोलानी नदी मोहन्द दर्रे के पूर्वी भाग का पानी बहा जाती है। यह चिलावाला, कानिया, सुख और मोहन्द राऊ के मिलने से बनती है। थप्पल इस्माइल पुर के पास इसमें रजवा और खयड्डुर राऊ नाले आकर मिलते हैं। खयजुरराऊ अधिक बड़ा है। इसमें खुजनावर, शाहजहांपुर राऊ, हटनी सोत और दूसरी धारायें मिलती हैं। सोलानी नदी इन सब का पानी लेकर दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। सोलानी नदी बांगर या ऊंचे मैदान की पूर्वी सीमा बनाती है। इसके आगे पूर्व में खादिर है। रुड़की के ऊपर सोलानी में सिपिया नदी मिलती है। सिपिया कई बरसाती नालों का पानी बहालाती है। रुड़की के पास ही सोलानी नदी के ऊपर एक विचित्र पुल बना है। इस पुल के ऊपर गंगा नहर बहती है। नीचे सोलानी बहती है। यहां से सोलानी दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ती है। मंगलपुर परगने की उत्तरी सीमा के पास इस में राटमऊ आकर मिलती है। यहां से आगे यह ऊंचे किनारे के एकदम पास होकर बहती है और इसी रूप में मुज़फ्फर पुर जिले में प्रवेश करती है। अब से १०० वर्ष पहले यह सहारनपुर जिले में ही गंगा में मिल जाती थी। आजकल यह दलदल डेल्टा बनाकर मुजफ्फरपुर जिले में गंगा से मिलती है। सरदी की ऋतु में इसमें बहुत थोड़ा पानी रहता है। अगर गंगा नहर का पानी नीचे नीचे छनकर सोलानी में न आवे तो गरमी में यह एक दम सूख जावे, लेकिन वर्षा ऋतु में इसमें भयानक बाढ़ आती है। बाढ़ के घटने पर भी इसके भाग में अनेक झीलें और दलदल बन आते हैं। मोहन दर्रे से संगम तक सोलानी नदी प्रायः ५५ मील लम्बी है।

हिंडन—सहारनपुर जिले में सोलानी के ऊंचे किनारे के अधिक आगे ज़मीन पश्चिम की ओर कुछ ढालू होती जाती है। इधर का पानी गंगा को न पहुँच कर कई नालों के द्वारा यमुना की सहायक नदियों में पहुँचता है। बांगर की यह नदियां अपना पानी हिंडन में गिराती हैं। हिंडन नदी सिवालिक श्रेणी से एक पहाड़ी धारा के रूप में निकलती है। इसके किनारे बहुत ऊंचे हैं। कई गांवों के पास इसकी ज़मीन बड़ी उपजाऊ है। कई स्थानों पर इसके पास की भूमि बलुई है जहां तरबूज़ को छोड़कर और कुछ नहीं उगाया जा सकता। वर्षा ऋतु में हिंडन में अक्सर बाढ़ आती है। लेकिन बाढ़ से बहुत कम हानि होती है। हिंडन नदी कुछ दूर तक हासैरा और नागल परगनों को सहारनपुर और रामपुर परगनों से अलग करती है। दक्षिण की ओर देवबन्द होकर हिंडन मुज़फ्फपुर जिले में प्रवेश करती है। देवबन्द में हिंडन का पाट काफी चौड़ा है। धारा के दोनों ओर कुछ दूर तक खादिर छूटा हुआ है।

हिंडन की प्रधान सहायक काली नदी है। आरम्भ में इसकी दो धारायें हैं जो हासैरा परगने में निकलती हैं और नागल परगने में एक दूसरे से मिल जाती हैं। संगम के पास ही पुल है जिसके ऊपर से देवबन्द नहर काली नदी को पार करती है। संगम के आगे काली नदी की गहराई और चौड़ाई बढ़ जाती है। खाला, सिला और इमलिया नदियां हैं। नागदेव नदी अधिक बड़ी है। यह सिवालिक से निकलती है और सहारनपुर के दक्षिण-पूर्व में घाग्रेकी के पास हिंडन से मिलती है। धमोला नाला सहारनपुर शहर होता हुआ पन्धोई का पानी लेकर फीरोज़पुर नन्दो के पास हिंडन से मिलता है। कृष्णी या किसनी अधिक बड़ी नदी है। यह सहारनपुर परगने के दक्षिणी भाग से निकलती है और मुज़फ्फपुर जिले में हिंडन से मिल जाती है।

जलवायु

सहारनपुर मैदान का सब से अधिक उत्तरी और सब से अधिक ऊंचा जिला है। यह पर्वतों के निकट भी है। इसलिये यहां सरदी की ऋतु मैदान के दूसरे जिलों की अपेक्षा अधिक लम्बी होती है। मई और जून के महीनों में यहां खूब गरमी पड़ती है। लेकिन यहां का तापक्रम दक्षिणी-पूर्वी जिलों की अपेक्षा कम रहता है। रुड़की का औसत वार्षिक ताप-क्रम ७५ अंश फारेन हाइट रहता है। जनवरी का तापक्रम ५६ अंश और जून का तापक्रम ८६ अंश

रहता है। वर्षा आरम्भ होने पर तापक्रम फिर कम होने लगता है।

सहारनपुर जिले की औसत वार्षिक वर्षा ३७ इंच है। शिवालिक के समीप अधिक ऊंचाई और वनों के कारण और भागों की अपेक्षा अधिक वर्षा होती है। हरिद्वार में ४६ इंच वर्षा होती है। लेकिन जिले के दक्षिणी सिरे पर ३० इंच वर्षा होती है। यमुना की अपेक्षा गंगा के प्रदेश में अधिक वर्षा होती है।

वन

सरकारी वन २६५ वर्ग मील है। यह प्रायः सिवालिक के पहाड़ी प्रदेश में है। इधर की भूमि बड़ी टूटी फूटी है। सभी ओर गहरे खड्ड और सपाट ढाल हैं। कहीं कहीं पहाड़ी धाराओं के पास कुछ समतल भूमि मिलती है। मिट्टी यहां भी बड़ी निकम्मी है। इसमें कंकड़, पत्थर के टुकड़े चट्टानों के ऊपर बिछे हुये हैं। केवल कुछ घाटियों में कुछ अच्छी मिट्टी है। पहाड़ की तलहटी में भूमि अधिक अच्छी है। यहां ढाल क्रमशः है। यहां नदियों के किनारे साल और दूसरे वृक्ष हैं। कुछ भूमि खुले हुये जंगल से ढकी है। घास के मैदान और दलदल हैं। सिवालिक की पूर्वी श्रेणी रानीपुर श्रेणी है। यहां ऊंचे भागों में चीड़ और निचले भागों में खैर, शीशम, ढाक, बेर और सेमल के वन हैं। कहीं कहीं साल और बांस मिलता है। धोरा खंड सिवालिक की मध्यवर्त्ती श्रेणी है। यहां पहाड़ियों पर चीड़ और निचले भागों में बकली, सईं, खैर, साल और दूसरे पेड़ हैं। सिवालिक की उत्तरी पश्चिमी श्रेणी बर्कला कहलाती है। यह यमुना नदी तक चली गई है। इधर ऊंचे भागों में अच्छे वन हैं। निचले भागों में तरह तरह के पेड़ों की खिचड़ी है।

वन-प्रदेश के अतिरिक्त खादिर के कई भागों में ढाक के जंगल हैं। गांवों के पड़ोस में मैदान के प्रायः सभी भागों में गूलर, पाकर, बरगद, आम, नीम और वन, ऊसर, जंगल और दलदल होने पर भी सहारनपुर जिले के बड़े भाग में खेती होती है। पहाड़ी प्रदेश और गंगा के खादिर को छोड़कर जिले के प्रायः और भागों में खेती होती है। जहां सिंचाई की सुविधा है वहां बहुत अच्छी खेती होती है रबी की प्रधान फसल गेहूँ है। प्रायः ६० फीसदी खेतों में गेहूँ होता है। भकुड़ और देवबन्द परगनों में सब से अधिक और रुड़की-ज्वालापुर परगनों में सब से कम गेहूँ होता है। पूर्व की अधिक अच्छी मिट्टी न होने से जौ और चना अधिक होता है। खरीफ की प्रधान फसल धान है। २५ फीसदी भूमि धान उगाने के काम आती है। धान के अतिरिक्त खरीफ की फसलों में ज्वार, बाजरा और अरहर की फसलें भी उगाई जाती हैं।

गङ्गा-नहर के किनारे रुड़की से हरद्वार

रुड़की से नहर के दोनों ओर सड़क है बाएं किनारे की सड़क कच्ची होने पर भी साइकिल और पैदल चलने वालों के लिये बड़ी अच्छी है।

पीरान कलियर गांव बहुत छोटा है कच्चे मकान और फूस के झोपड़े हैं पर यहाँ मेला के दिनों में बड़ी भीड़ लगती है मज़ार पक्की बनी है। और सफेद पुती है। मेला के लिये नहर के दोनों ओर मैदान भी अच्छा और चौड़ा है।

धनौरी बांध—२६ सितम्बर १६२४ ई० की बाढ़ में यह बांध टूट गया। नवम्बर १६२४ से मार्च १६२५ तक इसकी विशेष मरम्मत हुई। धार की ऊपर की ओर का एप्रान (Apron) ५० फुट चौड़ा है। धार के नीचे का एप्रान ३०० फुट चौड़ा है। इसमें ४,'५' और ४' के तीन प्रपात हैं। प्रपातों के नीचे १५३ नींव के कुए हैं।

बलाकों का टेलस ६० फुट चौड़ा है। पुल की सड़क को चौड़ा करने और पुल की मरम्मत करने में ५,२५,००० रु० व्यय हुआ।

नौ लकड़ी के फाटक और एक लोहे का फाटक है। लकड़ी के फाटकों को खोलने और बन्द करने के लिये दो दो लट्ठे लगे हैं इन्हीं में काले मोटे तार की रस्सी लपटी है। लट्ठों को घुमाने के लिये लगभग डेढ़ गज़ के हत्थे लट्ठों में ठुके हुए हैं।

सहारनपुर का बाटेनीकल गार्डन यह बगीचा सहारनपुर रेलवे स्टेशन से १ मील उत्तर की ओर चकराता रोड और जेल के बीच में स्थित है। यहां वृक्षों की पंक्तियां, झाड़ियां, फूलों की क्यारियां और तालाब बहुत सुन्दर ढंग से सजाये गये हैं। इधर भिन्न भिन्न जलवायु के फलों के वृक्ष लगाये गये हैं जिससे यहां के पौधे (विहिन) न केवल भारत वर्ष के भिन्न भिन्न भागों वरन मिस्र, दक्षिणी अफ्रीका और बरमा में भी जाते हैं। १२५ एकड़ में बगीचा है। यहां पौधों के गमले (नर्सरी) हैं। कोमल पौधों को तेज़ धूप और पाले से बचाने के लिये शीशे और परदे लगे हैं।

इनके अतिरिक्त ३८ एकड़ में तरह तरह की तरकारियों की क्यारियां हैं। यहां कुछ ऐसी वनस्पतियां हैं जिनसे अस्पतालों के लिये औषधियां तयार की जाती हैं। कहा जाता है कि फरहबख्श नाम से यह बगीचा रुहेला सरदारों के समय (१७५०) से चला आता है। मरहठों के समय में भी इसे सहायता मिलती रही। अंग्रेज़ी राज्य में यह सहायता और भी अधिक बढ़ा दी गई।

इतिहास

सहारनपुर ज़िले का सर्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान हरिद्वार है। इसको पहले मायापुर और गंगाद्वार भी कहते थे। यह नगर हिमालय प्रदेश के लिये प्रधान दरवाज़ा है इसलिये यह सदा से प्रसिद्ध रहा है। अब से प्रायः ढाई हज़ार वर्ष पहले यह नगर कौशल राज्य में शामिल था। फिर यहां चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्य हुआ। यहां (कलसी) सम्राट अशोक के शिला लेख मिले हैं। एक स्वर्ण स्तम्भ को फीरोज़ शाह यहां से दिल्ली ले गया। कहा जाता है कि यह स्वर्ण स्तम्भ जगाधारी से ७ मील दक्षिण-पश्चिम में तोबरा गांव में मिला था। बेहट के पास १७ फुट गहरा खोदने पर सुन्दर महल और बौद्ध काल के सिक्के मिले। देवबन्द भी पुराना नगर है कहा जाता है कि पांडवों ने अपने बनवास का कुछ समय यहीं बिताया था। नकुड़ की नींव भी पांडवों ने ही डाली थी। सरसवा भी पुराना नगर है। यहीं गोगा पीर पैदा हुआ था। इसके बाद यह प्रदेश मथुरा के साका शासकों के हाथ में आया। फिर यहां कुशन वंश का राज्य हुआ। गुप्तवंश के राज्य में हरिद्वार एक बड़ा नगर हो गया। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वानसांग ने हरिद्वार (मायापुर) नगर का घेरा ३½ मील बतलाया है। इसी समय से दिल्ली के तोमर वंशियों के समय तक यहां कोई प्रसिद्ध घटना नहीं हुई।

अलबरूनी ने सरसवों का ज़िकर शरशरह नाम से किया है। कहा जाता है। महमूद ने भी सरसवों पर हमला किया था। १२२३ ई० में नसीरुद्दीन ने राजघाट में यमुना को पार करके इस जिले पर अधिकार जमाया। १३०८ ई० में ४००० मुग़लों ने यहाँ हमला किया पर अमरोहा के पास अलाउद्दीन की फौज ने उन्हें नष्ट कर दिया।

मुहम्मद तुग़लक ने शाह हरन चिश्ती की यादगार में सहारनपुर शहर बसाया। मुग़लों के हमलों से बचने के लिये यमुना के किनारे जगह जगह पर फौजी चौकियां बनाई गईं। एक दौरे में फीरोज़शाह को खिज़राबाद में अशोक का स्तम्भ मिला। जिसे वह दिल्ली ले गया। इसी समय सिरमौर के राजा ने मुसलमानों को कर देना स्वीकार कर लिया। एक समय शाह ने सिवालिक की पहाड़ियों में गैंडे का शिकार किया।

१३९८ ई० में तैमूर ने यहां हमला किया। उसने एक सेनापति को यमुना के बायें किनारे पर भेजा वह स्वयं गंगा के किनारे किनारे बढ़ा। बाज़ाकाली घाट के पास तुगलकपुर में उसने गंगा को पार किया। इस ज़िले में उसने कई लड़ाइयां लड़ीं। पर उसने देश को बड़ी गड़बड़ी में छोड़ा। कुछ समय तक यह ज़िला सैय्यदों की जागीर बना रहा। फिर यहां लोदी वंश का राज्य हुआ। अन्त में बाबर ने अपने पांचवें हमले में सरहिन्द के मार्ग का अनुसरण किया और यमुना को पार करके सरसवा पहुंचा। अधिक आगे बढ़ने पर गंगोह में इब्राहीम की एक फौज से मुठभेड़ हुई।

मुग़लों ने यमुना को फिर पार किया और पानीपत की लड़ाई में पूरी विजय प्राप्त की। इस प्रकार यह ज़िला मुग़लों के हाथ में चला गया। हुमायूं के भागने पर कुछ समय यहां सूरशाही रही। अकबर के समय में सहारनपुर एक सरकार बन गया। देवबन्द एक दस्तूर या ज़िला था। सहारनपुर में ईंटों का एक क़िला बनाया गया। रुड़की में उस समय जंगल था*। लोग ज्वालापुर को भागपुर कहते थे। ईंटों का एक क़िला देवबन्द में भी था। तांबे के सिक्के सहारनपुर और हरद्वार को टकसालों में बनते थे।

जहांगीर हरिद्वार तक आया पर उसको यहां की जलवायु अनुकूल न पड़ी इसलिये वह यहां से लौट गया। लेकिन दिल्ली के अमीर यहां अक्सर शिकार करने के लिये आया करते थे। बादशाही बाग़ में शिकार करने वालों के ठहरने के लिये एक शाही भवन बनाया गया। यमुना नहर के सिरे पर इस मकान के कुछ भाग अब तक मिलते हैं। औरंगज़ेब के साथ में शेख मुहम्मद बका यहां का हाकिम हुआ। इसी ने "मीराते आलम" की रचना की। उसी के नाम से एक मुहल्ला बकापुरा कहलाता है।

---

* पर सारे जिलों में अब से कहीं अधिक खेती होती थी।

औरंगज़ेब के मरते ही सिक्ख लोग उठ खड़े हुए। उन्होंने सरहिन्द को जीत लिया और द्वाबा पर हमला किया। पर इधर उनको साधारण लूट मार के सिवा कोई विशेष सफलता नहीं हुई। पर यहां दूसरी ओर से भी हमले होने लगे। रोहिल्ला लोगों ने गंगा को पार करना शुरू कर दिया। १७३८ ई० में नादिर शाह का हमला हुआ। इससे सारे ज़िले में गड़बड़ी फैल गई। इसी समय लन्धौरा के गूजर लोगों ने अपनी बहादुरी से बड़ा नाम पैदा किया। इसी समय द्वाबा में शान्ति स्थापित करने के लिये सेंधिया ने एक फौज भेजी। शुक्र ताल इस समय एक बड़ा दुर्ग था। मरहठा सेनापति भानकू ने यहां चढ़ाई की और गोविन्द पंडित के साथ एक टुकड़ी हरिद्वार में गंगा पार करने और बिजनौर से रूहेलों को भगाने के लिये भेजी। पर १७६० ई० में भानकू की अहमदशाह अब्दाली से मुठभेड़ हुई और मरहठों को पानीपत में मोरचा लेना पड़ा। पानीपत में मरहठों की हार हुई लेकिन इस लड़ाई से पंजाब में सिक्खों की तूती बोलने लगी। १७६३ ई० में उन्होंने एक भारी फौज के साथ यमना को पार किया और सहारनपुर को लूटा। दूसरे वर्ष बुढादल या सिक्ख फौज ने सिवालिक से लेकर मेरठ तक सारे प्रदेश पर हमला किया। १७६७ ई० में कांधला और ननौटा में सिक्खों को मुठभेड़ शाही फौज से हुई। पर शाही फौज के लौटते ही वे फिर प्रबल हो गये। शाहआलम ने मरहठों से फिर सहायता मांगी। मरहठे लोग नजब खां के कुटुम्ब से पहले ही से जलते थे क्योंकि नजब ने ही अहमदशाह अब्दाली को मदद दी थी। नजीबुद्दौला नजीबाबाद में मर चुका था। पर इस समय नजब का बेटा ज़ाबिता खां सहारनपुर का हाकिम था। १७७१ ई० मरहठे लोग द्वाबा पर टूट पड़े। रूहेलों में ऐसा डर घुसा कि गौसगढ़ को छोड़कर वे सहारनपुर ज़िले को खाली कर गये, कुछ पहाड़ियों में जा छिपे। मरहठों ने हरिद्वार के पास गंगा को पार करके उनका पीछा किया। १७७२ ई० में सन्धि हो गई। मरहठे लोग भी अपने देश को लौटने के लिये आतुर हो रहे थे। इसलिये ज़ाबिता खां को फिर सहारनपुर का इलाक़ा लौटा दिया गया। १७७४ ई० में उसने ५००००) रुपये देकर सिक्खों को भी ख़ुश कर लिया। पर बीच में उसके विश्वासघात के लिये ज़ाबिता खां को दंड देने के लिये १७८३ ई० में सिक्ख लोग फिर लौटे। इस बार उन्होंने केवल गंगा के किनारे के प्रदेश पर वरन् देहरादून पर भी हमला किया। ज़ाबता खां ने अपने को गौसगढ़ में बन्द कर लिया। वहीं वह १७८५ ई० में मर गया। उसका लड़का गुलाम क़ादिर बड़ा बेरहम था। जब सेन्धिया जैपुर के राजा से लड़ रहा था। गुलाम क़ादिर ने चालाकी और रिश्वत से दिल्ली में प्रवेश किया। उसने शाह आलम की आंखें निकलवा लीं और महल की औरतों को तंग किया। मरहठों के लौटने पर वह सहारनपुर के लिये भागा। लेकिन वह रास्ते में ही पकड़ लिया गया और बुरी तरह से मार डाला गया। इस प्रकार रूहेलों के अन्त होने पर सहारनपुर में मरहठों का अधिकार हो गया।

बांदा का गनीबहादुर यहां का पहला हाकिम हुआ। उसने सिक्खों से भी समझौता कर लिया। इस प्रकार १७९० ई० में जगाधारी के रायसिंह और बुड़िया के शेर सिंह को मंगलौर, जौरासी और ज्वालापुर के कुछ भाग मिले। पर दूसरे वर्ष भैरों पन्त तांतिया ने ये भाग छीन लिये। नकुड़ पर सिक्खों का ही अधिकार रहा।

पर जब १७९७ ई० में महादाजी शिन्दे (सेन्धिया) का स्वर्ग वास हो गया तब फिर सिक्खों के हमले होने लगे। १७९६ ई० में बापू सेंधिया सहारनपुर का हाकिम हुआ। पर गड़बड़ी होने के कारण शामली और लखनौटी पर उसे फौजी शासन करना पड़ा। अन्त में करनाल के सिक्खों को हरा कर १७९७ में वह हरियाना की ओर बढ़ गया। सहारनपुर में शिम्भूनाथ (वैश्य) और इमाम बख्श मरहठों के कारिन्दे प्रबन्ध करते थे।

१८०३ ई० में मरहठों और अंग्रेज़ों से जो नई सन्धि हुई उसके अनुसार सारा द्वाब ईस्ट इंडिया कम्पिनी को मिल गया इस प्रकार सहारनपुर का ज़िला भी अंग्रेज़ों के हाथ में आगया। हरनाथ होलकर और सिक्खों के हमले कुछ वर्ष तक अवश्य होते रहे अन्त में यहां शान्ति स्थापित हो गई। १८१७ ई० में गुरखों से सन्धि होने पर देहरादून का ज़िला भी सहारनपुर में शामिल होगया। पर १८२५ ई० में देहरादून का ज़िला कमायूं कमिश्नरी में मिला दिया गया।

गदर के समय में यहां के अधिकांश निवासी शान्त रहे। पर मुसलमान और गूजर लोगों ने कई जगह मोरचा लिया। लेकिन सिक्खों और गुरखों की तुरन्त मदद मिलती रही इसलिये यहां पर गदर में कोई भयानक बात न हुई। गदर के बाद फिर यहां कोई उल्लेखनीय घटना न हुई।

बादशाही बाग एक प्रसिद्ध गांव है और सहारनपुर से चकराता जाने वाली सड़क पर स्थित है। बादशाही बाग इसी नाम की पहाड़ी धारा के किनारे तिमली दर्रे के नीचे बसा है। यहीं से सिवालिक की चढ़ाई आरम्भ होती हैं। कहा जाता है कि शाहजहां बादशाह ने शिकार के अवसर पर ठहरने के लिये यहां से तीन मील की दूरी पर पश्चिम की ओर फैज़ाबाद के पास एक आखेट महल बनवाया था। इस गांव के ऊपर कुछ ऊंचाई पर पुराने खंडहर हैं।

बेहट सहारनपुर से चकराता जानेवाली सड़क पर स्थित है। यह स्थान सहारनपुर से १६ मील दूर है। इसके पश्चिम में नौगांव राव नाम का पहाड़ी नाला है। इसके पूर्व में पूर्वी यमुना नहर है। बाँध बनाकर नाले को नहर के उस पार निकाल दिया गया है।

यह स्थान बहुत पुराना है। नहर खोदते समय वर्तमान तल से १७ फुट की गहराई पर एक पुराने बौद्ध उपनिवेश का पता लगा। कुछ पुराने सिक्के भी निकले। इस गांव में लगभग २००० हिन्दू और ३००० मुसलमान हैं। कहा जाता है कि मुसलमानों की बस्ती बहलोल लोदी के समय में बसाई गई थी। भगवन्तपुर इसी नाम के परगने का प्रधान नगर है। १०६१ ई० में इसे ब्राह्मणों और राजपूतों ने बसाया था। यह सोलानी नदी के ऊंचे और दाहिने किनारे पर बसा है। यहां होकर रुड़की से मोहन्द को पक्की सड़क जाती है। रुड़की यहां से ७ मील दूर है।

देवबन्द यह सहारनपुर से २२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित है। सहारनपुर से मुज़फ़्फ़र नगर को जानेवाली पक्की सड़क यहीं होकर जाती है। यहां से एक सड़क रुड़की को और दूसरी बिजनौर जिले को जाती है।

देवबन्द (२२,०००) बड़ा पुराना नगर है। कहा जाता है कि पांडव लोग अपने प्रथम बनवास के समय यहां रहने लगे थे। यह नाम देवी बन से बिगड़ कर बना है। यहीं एक स्थान पर देवी का पुराना मन्दिर है चैत मास में यहां मेला लगता है। दक्षिण-पूर्व की ओर देवी कुण्ड है। इसका पानी काली नदी में जाता है जो यहां से तीन मील दूर है। १५०७ ई० में सिकन्दर लोदी ने यहां एक मस्जिद बनवाई थी। औरंगजेब ने जो ४१ मस्जिदें बनवाई थी उनमें एक यहां बनवाई गई थी।

देवबन्द में गाढ़ा और कम्बल अच्छे बुने जाते हैं। यहां अनाज, शक्कर और तिलहन की भी मंडी है। देवबन्द के अरबी स्कूल में दूर दूर के विद्यार्थी पढ़ने के लिये आते हैं। इसे निज़ाम हैदराबाद और भूपाल के नवाब से सहायता मिलती है। यहां एक हाई स्कूल भी है। देवबन्द के पड़ोस में ज़मीन नीची है। वर्षाऋतु में यहां दलदल हो जाते हैं। नहर और रेलवे के खुलने से दलदली भूमि और भी अधिक बढ़ गई है। वर्षाऋतु में कुओं में पानी बहुत पास मिलता है। लेकिन पानी कुछ खारा रहता है।

फैज़ाबाद एक छोटा गांव है और बूढ़ी यमुना के बायें किनारे पर सहारनपुर से २८ मील दूर है। इसके पास ही बादशाही महल हैं इसे शाह ने बनवाया था और अलीमर्दान ने इसकी मरम्मत करवाई थी। गंगोह सहारनपुर से करनाल जानेवाली पक्की सड़क पर स्थित है। यह बहुत पुराना नगर है। इसका पुराना भाग अधिक पुराना है। कहते हैं इसे राजा गंग ने बसाया था। पश्चिमी भाग सराय कहलाता है। इस मुहल्ले में तीन बड़े और कई छोटे मकबरे हैं। अब्दुल क़ुदूस का मकबरा १५२७ में बना था। जामा मस्जिद अकबर के समय में बनी थी। गदर के दिनों में यहां पर गूजरों ने कई बार आक्रमण किया।

लखनौती यमुना की सहायक सैन्दली के ऊंचे किनारे पर बसा है। यहां होकर एक पक्की सड़क सहारनपुर से कर्नाल को जाती है। कहा जाता है कि बाबर के साथ आये हुये तुर्कमान लोगों ने इस नगर को बसाया था। पूर्व की ओर पुराना तुर्कमानी किला है। ७६४ में सहारनपुर के मराहठा सूबेदार ने इस पर हमला करके अपना अधिकार किया था। बाहरी दीवार पर मराहठा तोपों के छोड़े हुये गोलों के निशान हैं। मंगलौर नगर को राजा विक्रमादित्य के राजपूत सरदार मंगलसेन ने बसाया था। नगर गंगा नहर के बायें किनारे पर स्थित है। एक पक्की सड़क यहां होकर रुड़की से मुज़फ़्फ़र नगर को जाती है रुड़की यहां से ६ मील दूर है। १२२२ ई० में बलबन ने यहां एक मस्जिद बनवाई थी। यहां के मुसलमान अधिकतर जुलाहे हैं और गाढ़ा बुनते हैं। बढ़ई का काम भी अच्छा होता है। बाज़ार में प्रायः पड़ोस के गांवों की चीज़ें बिकती हैं। नकुड़ यमुना खादिर के ऊंचे किनारे पर बसा है। यमुना की धारा यहां से ४ मील दूर है। ऊंचे किनारे के नीचे एक झील है। यहाँ पहले यमुना की धारा रही होगी

लेकिन इस समय इसमें धान उगाया जाता है। इसका पुराना नाम नकुल है। इसे पांडवों के भाई नकुल ने बसाया था। अठारहवीं सदी में यह सिक्ख सरदारों का एक केन्द्र बना। गदर में नकुड़ बुरी तरह से लूटा गया।

हरिद्वार (४०,०००) का प्राचीन नगर गंगा के दाहिने किनारे पर उस सुन्दर स्थान पर स्थित है जहां गंगा ने सिवालिक पर्वत को काटकर मैदान में प्रवेश करने के लिये द्वार बनाया है। ईस्ट इण्डियन (भूतपूर्व अवध रूहेलखंड) रेलवे की एक शाखा लक्सर से हरद्वार को आती है। १६०० ई० में वह यहां से देहरादून को पहुँचा दी गई। देहरादून से आने वाली पक्की सड़क रेल की समानान्तर चलती है। यहां से यह सड़क ज्वालापुर होती हुई बहादुराबाद को गई है। वहां से एक सड़क रुड़की को (जो हरद्वार से १७ मील है) और दूसरी सहारनपुर (३६ मील) को चली गई है। हरिद्वार के कई प्राचीन नाम हैं। कपिल मुनि की स्मृति में इसे आरम्भ में कपिल कहते थे। मुसलमान इतिहासकार इसे गंगाद्वार नाम से पुकारते रहे हैं। इसे मायापुर भी कहते हैं। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वानसांग ने मायापुर को बिगाड़ कर मोयूलो कहा है। शैव लोग इसे हरद्वार और वैष्णव हरिद्वार नाम से पुकारते हैं। अकबर के समय में तांबे के सिक्के बनाने के लिये यहां एक टकसाल थी।

गंगा की कन्दरा १ मील चौड़ी है। यहां इसकी कई धारायें हो गई हैं। सब से अधिक पश्चिमी धारा हरिद्वार से २ मील फटती है और कनखल के पास फिर गंगा में मिल जाती है। हरिद्वार इसी धारा के किनारे बसा है। इसके किनारे बने हुये घाट और मन्दिरों का दृश्य बड़ा सुहावना लगता है। नीम गोड़ा उत्तर की ओर स्थित है। कहा जाता है कि भीमसेन के घोड़े के लात-मारने से आरम्भ में यह गड्ढा बन गया था। हरिद्वार में ब्रह्मकुण्ड प्रधान है। इससे मिला हुआ दक्षिण की ओर स्नान करने का घाट है। एक दीवार पर विष्णु-पाद का चिन्ह है। इसी से इसे हरि की पैढ़ी कहते हैं। यही हरिद्वार का परम पवित्र स्थान है। नीचे उतरने के लिये १०० फुट चौड़ी ६० सीढ़ियां बनी हैं। नीचे पक्का फर्श बना दिया गया है। गंगा की धारा को इस प्रकार मोड़ दिया गया है कि यहां धारा सदा किनारे के पास रहती है। स्नान करने वालों की सुविधा के लिये यहां किनारे पर लोहे की पटरी लगा दी गई है जिसे पकड़ कर वे स्नान कर सकते हैं। कुम्भ और अर्द्ध कुम्भ के अवसर पर यहां बड़ी भीड़ रहती है। साधारण भीड़ यहां प्रायः सदा रहती है।

गंगा द्वार के दक्षिण में कई मन्दिर और मठ हैं। सर्वनाश का मठ उस स्थान पर बना है जहां ललताराव और गंगा का संगम है। इसके दक्षिण में मायापुर है जहां अस्पताल और थाना है। गणेश घाट के नीचे गंगा-नहर का उद्गम और पुल है। ह्वानसांग ने मायापुर का घेरा ३½ मील बतलाया है। नहर के पुल के सामने भैरों और माया देवी के मन्दिर हैं। नहर के पश्चिमी किनारे पर नारायणबलि का प्राचीन मन्दिर है। इसके पास ही राजा वेणु के दुर्ग के खंडहर हैं। मायापुर से एक मील दक्षिण की ओर नहर के पूर्वी किनारे और गंगा के बीच में कनखल है। यहां सड़क पर बड़े बड़े पत्थर जड़े हैं। यहां के बड़े ज़मींदार उदासी महन्त हैं। निर्मल, निर्वाण, और निरंजनी दूसरे बड़े अखाड़े हैं।

कनखल के दक्षिणी सिरे पर दक्षेश्वर का मन्दिर है। यहीं उमा जी के पिता राजादक्ष ने यज्ञ किया था। पहले गंगा जी मन्दिर के पास होकर बहती थीं। लेकिन कई बार बाढ़ आने से धारा दूर हट गई और कनखल के कई बगीचे भी नष्ट हो गये। कनखल से पश्चिम की ओर एक सड़क नहर के दूसरे पुल के ऊपर होकर ज्वालापुर को जाती है। ज्वालापुर रेलवे स्टेशन नगर के दक्षिण ओर है। यहां नहर पर तीसरा पुल है।

हरिद्वार शिक्षा का एक बड़ा केन्द्र है। यहीं गुरुकुल ऋषिकुल, ज्वालापुर महाविद्यालय और अनेक संस्कृत-पाठशालायें हैं। इनके अतिरिक्त यहां म्युनिसिपल स्कूल हैं। एक हाई स्कूल भी है।

रामपुर शहदरा—सहारनपुर छोटी लाइन का एक स्टेशन है। सहारनपुर से शामली को पक्की सड़क भी यहीं होकर जाती है। पूर्वी यमुना नहर रामपुर से डेढ़ मील पश्चिम की ओर बहती है। रामपुर के मनिहार अच्छी चूड़ियां बनाते हैं। यहां जीन भी बनाये जाते हैं। गांव में बाज़ार लगता है और शेख इब्राहीम पीर की दरगाह का मेला हर साल होता है।

रुड़की नगर (२०,०००) और छावनी सोलानी नदी के दक्षिणी या दाहिने किनारे और गंगा-नहर के भी दाहिने किनारे पर बसा है। नहर के ऊपर पुल बना है। यहां से मेरठ, मुजफ्फर नगर, मोहन्द और देहरा को पक्की

सड़क जाती है। नहर के पूर्व की ओर सिविल लाइन है और इसके दक्षिण में छावनी है। कच्ची सड़क ज्वालापुर और हरद्वार को गई है। रुड़की के पास ही सोलानी नदी पर एक विचित्र पुल बना है जिस पर होकर गंगानहर बहती है।

रुड़की नगर कुछ पुराना है। कहा जाता है कि एक राजपूत सरदार की धर्म पत्नी रूरी की स्मृति में इस नगर का नाम पड़ा। ब्रिटिश अधिकार होने के समय यह एक बहुत छोटा गांव था। नहर बनाने के सम्बन्ध में यहां एक लोहे की ढलाई और दूसरे कारबार का एक कार्यालय खुला। नहर बन जाने पर इसी बचे हुये सामान से रुड़की इंजीनियरिंग कालेज की स्थापना हुई। छावनी का आरम्भ १८५२ में हुआ। १८६० से अंग्रेज़ी फौज रहने लगी। छावनी के बीच में तोपखाने की बारकें हैं। रुड़की नगर के बीच में चौक है। इधर उधर सुन्दर पक्की सड़कें हैं। यहीं तहसीली कचहरी, अस्पताल, आर्य समाज और हाई स्कूल है।

सहारनपुर शहर मेरठ से ७० मील उत्तर की ओर स्थित है। यहां दिल्ली से अम्बाला जाने वाली प्रधान नार्थ वेस्टर्न रेलवे और अवध रूहेलखंड (वर्तमान ईस्ट इण्डियन) रेलवे का मेल होता है। यहीं शाहदरों से आने वाली छोटी रेलवे लाइन का मेल होता है। सहारनपुर से पक्की सड़कें उत्तर की ओर चकराता, उत्तर-पूर्व की ओर देहरादून, दक्षिण पूर्व की ओर देवबन्द और मुजफ्फरपुर नगर को और दक्षिण-पश्चिम में कर्नाल और उत्तर-पश्चिम में अम्बाला को गई हैं।

कहा जाता है कि मुहम्मद तुग़लक के समय में शाह ईरान चिश्ती नामी एक फकीर ने सहारनपुर की नींव डाली। इस फकीर का मक़बरा देखने के लिये इस समय भी बहुत से यात्री आया करते हैं। अकबर के समय में यह एक बड़ा नगर था। रूहेला नवाबों ने भी इसे अपना केन्द्र बनाया। अंग्रेज़ी शासन में यह एक ज़िले का प्रधान नगर बना। मार्गों का केन्द्र बन जाने से यह पंजाब और द्वाबा के बीच में एक बड़ी व्यापारी मंडी बन गया है।

शहर अम्बाला जाने वाली रेलवे के उत्तर में बसा है। यह धमोला (नदी) के पश्चिम की ओर ऐसे स्थान पर बसा है जहां इसमें पन्धोई धारा मिलती है। पन्धोई में शहर के पूर्व भाग का पानी बह आता है। क्रेगी नाला दक्षिणी-पश्चिमी भाग का पानी बहाता है। धमोला के पुल के पास प्रधान सड़क में दूसरी सड़कें मिलती हैं। धमोला और सड़क के बीच में बोटेनीकल गार्डन है। कुछ दूरी पर नवाबगंज में रूहेला किला है। इसे राजा इन्द्र गिर गुसाईं ने बनवाया था। यहीं कुछ समय तक मरहठों की सेना रही थी। चकराता रोड और पन्धोई के बीच में खालापार, नवाबगंज, अगियान, चारजल आदि कई मुहल्ले हैं। शहर का प्रधान भाग पन्धोई के पश्चिम में है। जहां नवाबगंज सड़क पन्धोई को पार करती है वहीं अमरीकन मिशन की इमारतें हैं। धुर उत्तर की ओर भूतेश्वर महादेव का मन्दिर है। जामामस्जिद सब्ज़ी-मंडी के सामने शहर के बीच में हैं। इसके मीनार दूर से दिखाई देते हैं। पुरानी जामा मस्जिद १५३० में हुमायूं के समय में बनी थी।

रेलवे स्टेशन के पूर्व में सिविल लाइन और दक्षिण में कचहरी है। सहारनपुर में कपड़ा बुनने, चमड़े का सामान बनाने और लकड़ी पर नक्काशी करने का काम अच्छा होता है। यहां पड़ोस के खैर के बेड़ोल कत्था बनाने और बोसन और घास से काग़ज़ और बोर्ड बनाने का काम होता है। यहाँ एक गवर्नमेण्ट हाई स्कूल और कई छोटे स्कूल हैं।

सहारनपुर ज़िले का कारबार

खेड़ा, बहलोलपुर, सलेमपुर और दतौली में कंकड़ बहुत हैं।

आटा पीसने की चार मिलें सहारनपुर में हैं। गंगा और यमुना की नहरों में ६ पनचक्कियां हैं। यमुना नहर में (बेरका, नगला, रन्दौल, बघोहल, गलुमना और सलेमपुर में) और गंगा नहर में बहादुराबाद, रुड़की और आसफनगर में पनचक्कियां हैं। ६ धान कूटने की मिलें हैं।

सहारनपुर, रामपुर और बेहट में मनिहार चूड़ियां बनाते हैं। काला शीशा फीरोज़ाबाद से आता है।

ज्वालापुर में कच्ची शीशियां बनती हैं।

कालाशीशा अलीगढ़ और नगीना से आता है। रूड़की में टोप बनाये जाते हैं। उनके भीतर करबी का भुआ भरा जाता है।

सहारनपुर और रूड़की में पम्प, गार्डर, लोहे के फाटक, तौलने की मशीनें और तौलने के बाट बनते हैं।

चमड़ा—बबूल की छाल से चमड़ा कमाया जाता है। जूते के सिवा सहारनपुर में बन्दूक रखने का ढकना और गोली रखने की पेटी बनाई जाती हैं।

तेल—सरसों, तिल और अलसी का तेल पेरा जाता है।

यहां लगभग ८० मन कपास पैदा होती है। उसको घोटने के लिये सहारनपुर में ९ कारखाने हैं। बहुत सी रुई लिहाफ और रज़ाई में भर ली जाती है। शेष बुनने और कातने के काम आती है।

सहारनपुर शीशम, तून, तूधी आदि की लकड़ी से मेज़ कुरसी बनाने का काम अच्छा होता है। लकड़ी पर तार जड़ने का काम और भी अधिक प्रसिद्ध है।

हल्दू की लकड़ी से कंघे बनाये जाते हैं।

सहारनपुर में ज्वालापुर कागज़ बनाने के लिये अनुकूल है।

खैर के पेड़ों से कत्था तयार हो सकता है।

★ ★ ★

पीलीभीत

पीलीभीत रुहेलखंड के छः जिलों में सबसे छोटा है इसका आकार विषम है। यह बरेली की सीमा से लेकर पूर्व में खीरी और उत्तर-पूर्व में नेपाल तक फैला हुआ है। इसके उत्तर में नैनीताल की तराई और दक्षिण में शाहजहांपुर का जिला है। इसका क्षेत्रफल १३७८ वर्ग मील और जनसंख्या ४,५०,००० है।

पीलीभीत जिले के उत्तरी-पश्चिमी तहसील अपने पड़ोस के शाहजहांपुर और बरेली जिलों की तरह मैदान का अंग है। पूर्व की ओर पूरनपुर तहसील में अधिकतर जङ्गल है। इधर खेती धीरे धीरे बढ़ रही है। यह जिला एक लहरदार प्रायः समतल मैदान है। उत्तर से दक्षिण की ओर बहने वाली नदियों ने इसे काट दिया है। नदियों की धारा के दोनों ओर खादर की नई और नीची भूमि है। ऊंचे किनारों से आगे बांगर की पुरानी और ऊंची भूमि है। औसत से बांगर कछार से २५ फुट अधिक ऊँचा है। लेकिन खनौत के पश्चिम में किनारे इतने ऊंचे हैं कि पहाड़ी टीले से मालूम पड़ते हैं। सारदा घाटी का पश्चिमी किनारा भी ऊंचा है। पीलीभीत जिले के धुर उत्तरी सिरे पर जहानाबाद परगने की उंचाई समुद्र-तल से ६६१ फुट, बीसलपुर की उंचाई ५५० फुट है। शाहजहांपुर की सीमा के पास पीलीभीत जिले की भूमि समुद्र तल से केवल ५३० फुट ऊंची है।

पीलीभीत जिले के उत्तरी-पूर्वी सिरे की भूमि गीली और कछारी है। यहां ऊंची घास और झाऊ बहुत होती है। यह भाग बड़ा रोगग्रस्त है। जो लोग इधर खेती करते हैं। वे यहां स्थायी रूप से रहना पसन्द नहीं करते हैं। वे खेती के काम से छुट्टी पाते ही अपने निवास स्थानों को चले जाते हैं। धान बहुत होता है। इस भाग को बन ने दूसरे भागों से अलग कर दिया है। यह बन चौका नदी के पड़ोस और पूरन पुर के उत्तरी-पश्चिमी भागों में फैला हुआ है। इधर का पानी ठीक ठीक नहीं बहने पाता है। जङ्गल के भीतरी किनारे से कई छोटी छोटी नदियां निकलती हैं। दक्षिणी भाग की भूमि अधिक अच्छी है। फसलें खूब होती हैं। जन संख्या भी घनी है। बीच के भाग और उत्तरी भाग में बलुई ज़मीन बहुत है। बड़े पेड़ कम हैं। गांव दूर हैं। बन की पश्चिमी पेटी बीसलपुर और पीलीभीत की तहसीलों में मालानदी चली गई हैं। माला नदी को पार करने पर बन के गांव मिलते हैं। यहां की जलवायु अच्छी नहीं हैं। हिरण जङ्गली सुअर और दूसरे जङ्गली जानवर फसल को लगातार हानि पहुंचाते रहते हैं। इसके आगे खुला हुआ प्रदेश है। प्रायः मटियार या चिकनी मिट्टी मिलती है। यहां खेती बहुत होती है। उत्तरी भाग में धान और घास बहुत है। बीसल पुर परगना शाहजहांपुर और बदायूं की तरह मैदान का अंग है।

इस जिले में ६८ फीसदी दुमट, २१ फीसदी चिकनी और ७ फीसदी भूड़ (बलुई) मिट्टी है। यहां की जलवायु अस्वास्थ्य कर है। औसत से वर्ष में ४० इंच वर्षा होती है। धान गेहूँ, चना, जौ, बाजरा, तिलहन और गन्ना यहां की प्रधान फसल है। गेहूं, चावल, सन, शक्कर बाहर भेजी जाती है। यहां उला घास कागज बनाने के लिये बड़ी अनुकूल है। शक्कर बनाने की कई मिलें हैं। लकड़ी का सामान भी तयार किया जाता है।

इस जिले के उत्तरी सिरे का पानी बहकर सारदा नदी में पहुँचता है। पहाड़ी भाग में यह काली कहलाती है। इसी में सरजू, गोरी, पूर्वी राम गंगा और धौली नदिया मिलती हैं। पीलीभीत के आगे इसे चौका कहते हैं, कौरियाला के मिलने पर यह घाघरा कहलाती है।

पूरनपुर के मध्यवर्ती भाग का पानी गोमती में बह आता है। गोमती नदी का निकास तराई प्रदेश में है जहां भावर का लुप्त जल फिर धरातल पर प्रगट हो जाता है। जहां आखात में इस प्रकार के जल ने काले दलदल

और झीलें बना दी हैं वहीं मैनाकोट के पास गोमती एक दलदल ;से निकलती है। कुछ दूर तक इसके मार्ग में केवल छोटी छोटी झीलों की लड़ी है। दक्षिण की ओर गचई या गोंचई, और दूसरी सहायक नदियों का पानी मिल जाने से यह बड़ी होकर शाहजहांपुर जिले में प्रवेश करती है।

खन्नौत नदी जमनिया के जंगल से निकलती है। हल्लिया का पानी लेकर यह शेरगढ़ पहुँचती है। इसके आगे बीसलपुर परगने को पार करके यह शाहजहांपुर जिले में पहुँचती है और रौसा के पास गर्रा में मिल जाती है। इसके किनारे ऊंचे हैं इसमें डबल बाढ़ भी आती है। इस लिये खन्नौता सिंचाई के काम नहीं आती है।

माला नदी उत्तरी सिरे के दलदलों से निकलती है। यह बन प्रदेश में दक्षिण की ओर बहती है। इसकी मन्द-धारा घास और पौधों से और भी कम हो जाती है। इस पर स्थान स्थान पर सिंचाई के बांध बने हैं। बीसलपुर परगने में इसे कटना कहते हैं। यहां इसकी तली रेतीली और किनारे ऊंचे हो जाते हैं। कुछ दूर तक यह पीली-भीत और शाहजहाँपुर जिले के बीच में सीमा बनाती है और अन्त में यह शाहजहांपुर जिले में गर्रा से मिल जाती है। माला में कई छोटी छोटी नदियां मिलती हैं।

दिउहा नैनीताल जिले की निचली पहाड़ियों से निक-लती है। पहले इसे नन्धौर कहते हैं। चोरगलियां के पास यह पहाड़ी प्रदेश को छोड़ कर मैदान में प्रवेश करती है। तभी यह देउहा कहलाने लगती है। भावर, तराई और पीलीभीत में इसे देउहा कहते हैं। शाहजहां पुर जिले में इसे गर्रा कहते हैं। हरदोई जिले में यह रामगङ्गा से मिल जाती है। इसकी तली चौड़ी है। ऊंचे किनारों के बीच में इसकी चौड़ाई १ मील है। लेकिन पानी की धारा की चौड़ाई तीन चार सौ फुट से अधिक नहीं है। वर्षा ऋतु में इसमें भयानक बाढ़ आती है। ग्रीष्म में यह पांज हो जाती है। रेतीली तली वाली लोहिया नदी टेढ़ीचाल से चलकर देउहा के बायें किनारे पर मिलती है। खकरा अधिक बड़ी नदी है। इसकी तली में चिकनी मिट्टी है। दक्षिणी पश्चिमी सिरे पर यह देउहा में मिलती है। कैलास नदी देउनी के पास देउहा में मिलती है।

न्यूरिरिया हुसेनपुर के पास जंगल में बहुत पुराने भग्नावशेष हैं। मुड़ियाघाट के मार्ग में महोफ के पास ईंटों का एक बहुत पुराना किला है। खज के पास एक पक्का ताल और कई ८ भुजा वाले कुएँ हैं। सिमरिया घासू के पास एक कच्चा किला है। जहानाबाद के पास एक बहुत पुराना खेड़ा है। सुआ पारा को (पूरनपुर) के पास पुरानी ईंटों का खेड़ा है। इलाहाबाद देवल के पत्थर में पुरानी संस्कृत का लेख है।

अमरिया एक बड़ा गांव अखमारा नदी से एक मील पूर्व में स्थित है। पीलीभीत से सितार गज (तराई) को सड़क यहां होकर जाती है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

बड़खेड़ा एक पुराना गाँव है और एक ऊंचे खेड़े पर पीलीभीत से ११ मील दूर बसा है। प्रधान सड़क पर होने से यहाँ कुछ व्यापार होता है। बाज़ार सप्ताह में दो बार लगता है।

बीसलपुर पीलीभीत से २३ मील दक्षिण की ओर स्थित है। यहां से बरेली, देउरिया पूरनपुर शाहजहां पुर आदि कई स्थानों को सड़कें जाती हैं। यहां रुहेलों ने एक पुराना किला बनाया था। बीसलपुर ऊंची भूमि पर बसा है। यह देउहा और कटना नदियों के बीच में जल विभाजक बनाता है। १८७० में यहां एक बड़ा बाज़ार ऐसे स्थान पर बसाया गया जहां चार सड़कें मिलती थीं। यहां अनाज, गुड़, शक्कर और जानवरों की बिक्री होती है। यह रुहेलखंड कमायूं रेलवे का एक स्टेशन और नैपाल के व्यापार की एक मंडी है। बाहर भेजने के लिये यहां सवाई घास भी बहुत आती है। यहां गाड़ियां और चारपाई बहुत बनती हैं और बाहर भेजी जाती हैं।

देउरिया गांव बीसलपुर से पूरनपुर को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। गांव के पूर्व में खावा नदी बहती है जो खन्नौत नदी को माला से मिलाती है। इसके पास कई प्राचीन (देवल शिला आदि) भग्नावशेष हैं जहानाबाद कस्बा पीलीभीत से ६ मील पश्चिम की ओर है जहाना-बाद अखवारा नदी से १ मील पश्चिम की ओर ऊंची भूमि पर बसा है। कहते हैं कि यह कस्बा शाहजहां के समय में बसाया गया था। बलई पुराना स्थान है। बलई में पुराने समय की बड़ी बड़ी कलापूर्ण ईंटें मिलती हैं। कहते हैं कि बलई नाम राजा बलि से बिगड़ कर बना है। पूर्व की ओर एक पुराने मन्दिर का खेड़ा है। पीलीभीत के बसने से जहानाबाद के व्यापारी वहां चले गये। १८६३ में यहाँ की तहसील भी तोड़ दी गई। यहां एक मिडिल स्कूल और थाना है।

कबीरपुर (कस गंजा) पीली भीत से ३५ मील और पूरनपुर से १० मील दूर है। शाहजहां पुर की सीमा पर कहते हैं कि पूरनपुर के विजेता शेख कबीर नामी रुहेला सरदार ने इसे बसाया था।

खमरिया (दलेल गंज) पीलीभीत से पांच मील उत्तर पश्चिम की ओर स्थित है। गांव के पूर्व में देउहा नदी बहती है। पहले यहां का व्यापार बहुत उन्नत था। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

माधा टांडा एक बड़ा गांव है। यह पीलीभीत से २४ मील पूर्व की ओर है। यहां से उत्तर की ओर मुंडिया-घाट को और दक्षिण-पश्चिम में शाहगढ़ रेलवे स्टेशन को सड़क जाती है। उत्तर और पूर्व की ओर वन पास होने से यहां की जलवायु अच्छी नहीं है। यहां डाकखाना थाना और स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।
न्यूरिया हुसेनपुर पीलीभीत से ६ मील उत्तर-पूर्व में कटना और खकरा नदियों के बीच में जल-विभाजक बनाने वाले ऊंची भूमि पर स्थित है। यहां कुछ बंजारे रहते हैं। यह तराई का एक छोटा कस्बा है।

पीलीभीत—बरेली से ३० मील उत्तर-पूर्व की ओर ६०० फुट की उंचाई पर स्थित है। यह लखनउ-सीतापुर बरेला लाइन (रुहेलखंड कमायूं रेलवे) का एक बड़ा स्टेशन है। बरेली में कई सड़कें मिलती हैं। शहर नया है। पीलीभीत नाम का पुराना गांव खकरा नदी के बायें किनारे पर बसा है। पीलीभीत शहर देउहा के ऊंचे बायें किनारे पर बसा है। नदी और शहर के बीच में उजाड़ नीची भूमि है। खकरा नदी इसके उत्तरी किनारे पर बहती है। पहले इन दोनों नदियों को जोड़ने वाली एक गहरी खाई शहर के एक द्वीप बना देती थी। पीलीभीत इमारती लकड़ी के व्यापार का एक बड़ा केन्द्र है। यहां शक्कर बनाने के कारखाने हैं। लकड़ी की नक्काशी भी अच्छी होती है गुड़यावल, शक्कर और लकड़ी तथा लकड़ी का सामान बाहर जाती है।

पूरनपुर पीलीभीत से दक्षिण-पूर्व में २४ मील दूर है। यहां से पीलीभीत को सड़क और रेल गई है। यहां का पानी बरूआ नामी छोटी नदी में बह जाता है। पूरन पुर कस्बा पुराना नहीं है। लेकिन इसके पड़ोस में धनारा घाट, शाहगढ़ आदि स्थानों में पुराने भग्नावशेष हैं। सुआपाराकोट ४०० फुट लम्बा और ४०० फुट चौड़ा है। इसके चारों ओर ४० फुट चौड़ी खाई है। इस किले के भीतर एक मन्दिर था। यहां बहुत ही सुन्दर कामदार पुरानी ईंटें मिलती हैं। रेल के खुल जाने से पूरन पुर का व्यापार बढ़ गया है। पूरनपुर के बैल (जो पड़ोस के काली नगर, माधो टांडा आदि गावों से आते हैं प्रान्त भर में अपनी शक्ति और सुन्दरता के लिये प्रसिद्ध हैं।

शाहगढ़ एक छोटा गाव माला वन के पूर्व किनारे पर है पीलीभीत से १५ मील दूर है। गांव से उत्तर की ओर रेलवे जाती है। इसके पड़ोस में एक पुराना किला था। इसका घेरा ३ मील था। दीवारें २५ फुट ऊंची थीं। यहाँ इससे १०० पूर्व के सिक्के मिले हैं। सिक्के नैपाल के वर्मा वंश के हैं। पड़ोस में एक और पुराना उजड़ा हुआ किला है।

शेरपुर कलां पीलीभीत से २६ मील की दूरी पर एक बड़ा गांव है। यहां सप्ताह में ३ दिन बाजार लगता है।

मुजफ़्फर नगर

गंगा यमुना के द्वाबा में मुजफ्फर नगर का जिला उत्तर में सहारनपुर और दक्षिण में मेरठ जिलों से घिरा हुआ है। पश्चिम की ओर यमुना नदी इस जिले को कर्नाल की पानीपत और थानेश्वर तहसीलों से अलग करती है। पूर्व की ओर गंगा नदी मुजफ्फर नगर और बिजनौर के बीच में सीमा बनाती है। पूर्व से पश्चिम तक ज़िले की अधिक से अधिक लम्बाई ६१ मील और उत्तर से दक्षिण तक चौड़ाई ३६ मील है। इसका क्षेत्रफल २६६६ वर्गमील और जनसंख्या ८,६५,००० है। नक्शे में देखने से यह आयताकार मालूम होता है।

मुजफ्फर नगर ज़िले में चार प्राकृतिक प्रदेश हैं। (१) पूर्व की ओर गंगा का कछार है। (२) इसके पश्चिम में गंगा और काली नदी का द्वाबा है जिसके बीच में होकर गंगा नहर बहती है। (३) इसके पश्चिम में काली और हिंडन का द्वाबा है। (४) इसके आगे हिंडन और यमुना का द्वाबा है। इसमें होकर पूर्वी यमुना नहर आती है।

गंगा के खादिर में होकर पहले गंगा नदी विस्तृत धारा थी। इस समय यह गंगा का कछार है। इसकी पश्चिमी सीमा गंगा के पुराने और ऊँचे किनारों से बनती है। छोटे छोटे नालों ने इन नालों को काट दिया है। टीले कछार के ऊपर प्रायः १०० फुट ऊंचे खड़े हैं। उत्तर की ओर गंगा खादर की चौड़ाई १२ मील है। दक्षिण की ओर १ मील रह जाती है। इसी खादर में ऊंचे किनारे के पास सोलानी नदी बहती है। इस ओर गंगा ने कई बार अपना मार्ग बदला है। नूर नगर के आगे इस समय भद्दे दलदल फैले हुये हैं। लेकिन नूरजहाँ के समय में जब गंगा जी इसके पास होकर बहती थी इसका दृश्य बड़ा मनोरम रहा होगा। इसीलिये जहाँगीर की महारानी नूरजहां ने इसे यहां बसाया था। सोलानी नदी को बाढ़ और गंगा-नहर ने इस खादिर को और भी अधिक दलदली बना दिया। नहर का ऊपरी तल अधिक ऊंचा है। लेकिन भीतर भीतर नहर का पानी निचली भूमि तक पहुंचता है और उसको सदा नम रखती है। इससे इसके ऊपर कहीं सफेद रेह बन जाता है और कहीं दलदल तयार हो जाता है। ये दलदली भाग ऊँचे टीलों के पड़ोस वाली निचली भूमि में अधिक है। गंगा की धारा की ओर बढ़ने पर सूखी ज़मीन मिलती है। इस खादिर में कहीं कहीं खेती होती है। शेष भागों में दलदल है अथवा सरपत घास और झाऊ है। यहां जंगली सुअर बहुत हैं घास वाले भाग में गाय-बैल और भैंस चरा करती हैं। ऊँचे किनारे को बरसाती नालों ने ऐसा काट दिया है कि यहां चरने योग्य घास भी नहीं उग पाती है। इसके आगे ऊँची भूमि का ढाल पूर्व से पश्चिम की ओर है। लेकिन उत्तर से दक्षिण की ओर भूमि और भी अधिक ढालू है। गंगा नहर का प्रवाह ठीक रखने के लिये इस ओर कई नहर में कई झाल बनाने पड़े। नहर के पश्चिम में काली नदी की ओर भूमि क्रमशः ढालू होती जाती है।

मुजफ्फरनगर परगने के दक्षिण-पूर्व की ओर रेतीली पेटी आरम्भ होती है। यह मेरठ जिले तक चली गई है। गंगा नहर की अनूप शहर शाखा जो जौली से आरम्भ होती है। प्रायः इसी रेतीली पेटी में होकर जाती है। रेतीली पेटी के आगे काली नदी के पड़ोस में उपजाऊ मटियार है। काली नदी के पश्चिम में काली और हिंडन नदियों के बीच में मुजफ्फर नगर जिले का मध्यवर्ती भाग है। यह प्रदेश सब कहीं उपजाऊ और ऊँचा है। इसमें पानी अधिक गहराई पर मिलता है। इसमें गंगा-नहर की देवबन्द शाखा से सिंचाई होती है। यह शाखा चरथावल के पास मुजफ्फर नगर जिले में प्रवेश करती है और बुढ़ाना के पास हिंडन के एक नाले में समाप्त हो जाती है। इस प्रदेश के पूर्वी और पश्चिमी ओर की भूमि का ढाल पड़ोस की नदियों की ओर है। इधर भी भूमि कटी फटी है। काली नदी का खादिर कहीं कहीं खेती के योग्य नहीं है। लेकिन हिंडन का खादिर अधिक अच्छा है।

हिंडन के पश्चिम की ओर वाले प्रदेश में कृष्णी और काठा नदियां बहती हैं। इधर ढालू न होने से भूमि अच्छी है। नदियों के एकदम पास की भूमि इतनी अच्छी नहीं है। नीची भूमि में बाढ़ का पानी आ जाने से धान की खेती होती है। ऊंची भूमि में गेहूँ उगाया जाता है। ऊंची भूमि में यमुना-नहर की एक शाखा से सिंचाई होती है।

कृष्णी के आगे भूमि अधिक अच्छी है। इधर पूर्वी यमुना नहर से सिंचाई होती है। शामली के दक्षिण में गांव अधिक अच्छे हैं। उत्तर की ओर खेती कम होती है। ढाक के बन बहुत हैं। नहर के पास पास सफेद रेह बिछ गया है। उत्तर की ओर राजपूत किसान बसते हैं। दक्षिण की ओर अधिक मेहनती जाट हैं। दक्षिण-पश्चिम की ओर गूजर रहते हैं।

काठा नदी की ओर भूमि और अधिक निकम्मी है और ढाक के जंगलों से घिरी हुई है। कई भागों में रेह के कारण खेती नहीं हो सकती। कई स्थानों पर काठा में नहर का बचा हुआ पानी गिरा दिया जाता है।

यमुना नदी उत्तर की ओर अपना मार्ग नहीं बदलती है। दक्षिण की ओर भी यमुना ऊँचे करारों को छूती हुई बहती है। यहीं एक ऊंचे टीले पर मरहठों (सदाशिव भाऊ) के समय का एक किला बना हुआ है। इस (दक्षिण) ओर यमुना नदी कहीं कहीं इधर उधर मुड़ गई है।

मुजफ्फर नगर

बुढ़ाना नगर हिंडन नदी के दाहिने किनारे पर बसा है। मुजफ्फर नगर से यह १६ मील दूर है। यहां तहसील थाना और मिडिल स्कूल है।

चरथावल एक बड़ा गांव और थाना है। इससे तीन मील की दूरी पर हिंडन नदी बहती है। गंगा-नहर का देवबन्द-रजवहा इसके पास होकर बहता है। पास में

कई ताल और बगीचे हैं। यहां का पानी बहकर काली नदी में पहुँचता है।

जलालाबाद एक पुराना गांव है। यह मुजफ्फरनगर से २७ मील दूर है। यह कृष्णी नदी के दाहिने किनारे पर बसा है और चारदीवारी से घिरा है। इसके उत्तर की ओर एक झील है जिसमें गांव का पानी इकट्ठा होता है। यहां डाकखाना और मिडिल स्कूल है। बाज़ार सप्ताह में दो बार लगता है।

जानसठ एक बड़ा तहसीली नगर है। यह नगर मुजफ्फरनगर से १४ मील दूर एक पक्की सड़क पर बसा है। नगर की स्थिति कुछ नीची है। पड़ोस में प्रायः बलुई ज़मीन है लेकिन सब कहीं गंगा-नहर की अनूपशहर शाखा के रजवाहे इसे सींचते हैं। इससे वर्षा में पड़ोस का पानी ठीक नहीं बहने पाता है और बाढ़ आ जाती है। जानसठ का दक्षिणी भाग एक ऊंची पक्की दीवार से घिरा है और गढ़ी कहलाता है। यहां तहसीली, कचहरी मिडिल स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता है। साल में कई मेले लगते हैं। यहां जस्तई और हरे रंग का बढ़िया कपड़ा रंगा जाता है।

झिंझाना काठा नदी के बायें किनारे पर एक पुराने किले पर बसा है। मेरठ से शामली जानेवाले कैरान इसी नाम की तहसील का केन्द्र है। मुजफ्फर नगर से शामली और पानीपत जाने वाली पक्की सड़क यहां होकर जाती है। तीन मील पश्चिम की ओर यमुना नदी बहती है। शाहजहां ने यह गांव अपने हकीम मुकरावखां को दान में दिया था। यहां कई मस्जिदें और मकबरें हैं। यहां कचहरी, अस्पताल और मिडिल स्कूल है। यहां चाकू और कैंची अच्छी बनती हैं। कुछ लोग शीशे के दानों के परदे बनाते हैं।

कांधला—पूर्वी यमुना नहर से कुछ दूर पश्चिम की ओर स्थित है। यहां थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। बाज़ार शनिवार को लगता है। यहां अनाज, रुई और स्थानीय जुलाहों का बना हुआ कपड़ा बिकता है।

मुजफ्फर नगर काली नदी के बायें किनारे के पास मेरठ से ३३ मील की दूरी पर स्थित है। नार्थ वेस्टर्न रेलवे शहर के पूर्व की ओर से आती है। रेलवे स्टेशन बिजनौर जाने वाली पक्की सड़क के दक्षिण में है। एक पक्की सड़क दक्षिण की ओर मेरठ, को उत्तर की ओर सहारनपुर को उत्तर-पूर्व में रुड़की को और पश्चिम की ओर शामली को गई है। कच्ची सड़कें जानसठ, भोकी (गंगा नहर पर) को गई हैं। शहर ऊंची भूमि पर बसा है। शहर का पानी बह कर काली नदी में पहुँचता है। बाज़ार नया है। यहां से गेहूँ, गुड़, तिलहन बाहर बहुत जाता है। यहां के कम्बल बहुत प्रसिद्ध हैं और दूर तक जाते हैं। यहां कई हाई स्कूल और एक इन्टर कालेज है। यहां जिले की कचहरी और अस्पताल है।

इस नगर को १६३३ में शाहजहां के समय में मुज़फ़्फर खां के लड़के ने बसाया था। इसके पहले यहां सरवत नगर था। शहर के उत्तर पूर्व में सरवत के खंडहर इस समय भी दिखाई देते हैं। यहां कई मेले लगते हैं। मार्च के मेले में यहां अच्छे घोड़े बिकने के लिये आते हैं।

शामली एक बड़ा क़स्बा है। यह मुजफ्फर नगर से २४ मील दूर है। यहां से मेरठ, बागपत, दिल्ली और कर्नाल को पक्की सड़कें गई हैं। यह सहारनपुर शाहदरा रेलवे (छोटी लाइन) का एक स्टेशन है। पूर्वी यमुना नहर यहां से एक मील पूर्व की ओर है। यहां का बाज़ार अच्छा है और कुछ व्यापार पंजाब से होता है। थान भवन का पुराना नाम थान भीम है। यहां भवानी देवी का एक पुराना मन्दिर है। यहां भादों के महीने में मेला लगता है। यह स्थान कृष्णी नदी के दाहिने किनारे पर शामली से ११ मील की दूरी पर स्थित है। गदर के समय में यहां के लोगों ने घोर विद्रोह मचाया और शामली की तहसील पर अपना अधिकार कर लिया था।

मुज़फ्फर नगर का कारबार

मुज़फ्फर नगर का ज़िला द्वाबा का एक बड़ा उपजाऊ भाग है। यह ज़िला उत्तर में सहारनपुर से और दक्षिण में मेरठ से घिरा हुआ है। पर पूर्व में गंगा और पश्चिम में यमुना नदी इस ज़िले की स्वाभाविक सीमा बनाती हैं। गंगा नहर और पूर्वी यमुना नहर इसके मध्यभाग को सींचती हैं। सिंचाई की सुविधा होने से यहां ईख और गेहूँ आदि की फसलें बहुत अच्छी होती हैं। आटा पीसने और तेल पेरने की मिलों को छोड़कर यहां और मिलें नहीं हैं। पर इस ज़िले में कम्बल बहुत अच्छे बुने जाते हैं। कम्बलों के लिये हरसाल ३००० मन ऊन की ज़रूरत पड़ती है। पर इस ज़िले में केवल ५०० मन ऊन पैदा होती है। शेष ऊन पंजाब से आती है। बाहर से आने वाली अधिकतर ऊन अलीगढ़ ज़िले में धुनी और काती जाती है।

गंगा नहर में नीरगंज और चितौरा में और यमुना नहर में यारपुर में आटा पीसने की पनचक्कियां हैं। तेल पेरने की छोटी छोटी छः मिलें मुज़फ्फरपुर और शामली में हैं। शामली और मीरनपुर में पीतल के बरतन और हुक्के अच्छे बनते हैं। कैराना में चाकू, सरौते और उस्तुरे बनते हैं। ईख पेरने के कोल्हू और कड़ाहे नाहन रियासत से आते हैं। पर इनकी मरम्मत मुज़फ्फर नगर और खतौली में होती है। कुछ वहां बनाये भी जाते हैं।

मेरठ

मेरठ ज़िले का क्षेत्रफल २३७१ वर्गमील और जन-संख्या १६,०२,००० है। मेरठ के उत्तर में मुजफ्फर नगर और दक्षिण में बुलन्दशहर का ज़िला है। पूर्व की ओर गंगा नदी मेरठ को मुरादाबाद और बिजनौर ज़िलों से अलग करती है। पश्चिमी की ओर यमुना नदी इसे करनाल (पंजाब) और दिल्ली से अलग करती है। मेरठ ज़िला कुछ कुछ आयताकार है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ५८ मील और चौड़ाई ४८ मील है। उत्तर और दक्षिण की ओर प्राकृतिक सीमा नहीं है। उत्तर की ओर केवल ११ मील तक हिंडन नदी प्राकृतिक सीमा बनाती है और मेरठ की सरधना तहसील को मुजफ्फर नगर की बुढ़ाना तहसील से अलग करती है।

मेरठ ज़िला द्वाबा का अंग है। भूमि उत्तर से दक्षिण की ओर क्रमशः ढालू होती गई है। उत्तरी सीमा के पास समुद्र तल से भूमि की ऊंचाई ७७२ फुट है। दक्षिण की ओर हापुड़ के पास भूमि ६६३ फुट ऊंची है। मेरठ शहर समुद्र तल से ७४० फुट ऊंचा है। नदियों के पड़ोस के ऊंचे नीचे टीलों और कुछ पुराने खेड़ों को छोड़ कर मेरठ में प्रायः सब कहीं समतल भूमि मिलती है। यमुना नदी मुजफ्फर नगर से मेरठ ज़िले में प्रवेश करके दक्षिण और-पश्चिम की ओर बहती है। मेरठ ज़िले के दक्षिणी-पश्चिमी कोने के पास पूर्वी यमुना नहर का बचा हुआ पानी इसमें छोड़ दिया जाता है। उत्तर की ओर यमुना के किनारे बहुत ऊँचे हैं। दक्षिण की ओर वे कम ऊंचे रह गये हैं। बड़े बड़े कस्बे इसी के ऊँचे किनारे पर बसे हैं। बाढ़ के दिनों में भी इन ऊंचे किनारों की चोटी तक यमुना का पानी कभी पहुँचने नहीं पाता है। सरदी की ऋतु के समाप्त होने पर यमुना का पानी सिंचाई की नहरों में इतना अधिक चला जाता है कि यह नदी सब कहीं पांज हो जाती है। इसमें दो तीन फुट से अधिक गहरा पानी कहीं नहीं रहता है। मई मास में जब पहाड़ों पर बरफ पिघलती है तभी यमुना की धारा भी गहरी और तेज हो जाती है। यमुना-खादिर दक्षिण की ओर अधिक चौड़ा है। दक्षिण की ओर बागपत के दक्षिण में यमुना का ऊंचा किनारा लुप्त हो जाता है और हिंडन की ओर मुड़ जाता है। यहां ऊंची नीची बलुई ज़मीन है जिसमें अभय घास (सरपत) के अतिरिक्त और कुछ नहीं उग सकता है। हिंडन कट से हिंडन नदी का पानी यमुना नदी में डाल दिया जाता है। वहां से यह पानी आगरा—नहर में पहुंचता है। यहीं यमुना के रेल पुल के पास से ओखला बांध बना दिया गया है।

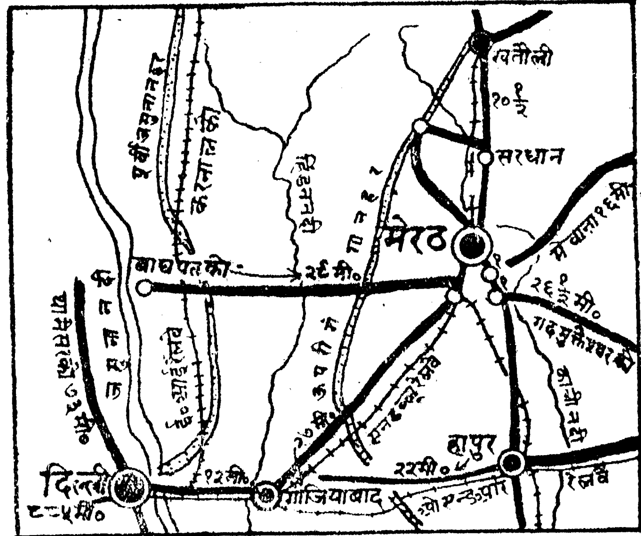
यमुना और हिंडन के बीच वाले भाग का पानी कृष्णी और बान गंगा नदियों में आता है। कृष्णी नदी टीकरी के पास मेरठ ज़िले में प्रवेश करती है। और मेरठ ज़िले में १२ मील बहने के बाद बरनावा के नीचे हिंडन में मिल जाती है। कृष्णी के किनारे टूटे फूटे और रेतीले हैं। इसीसे इसके किनारे कोई बड़ा नगर नहीं है। न इसका पानी सिंचाई के काम आता है।

बानगंगा बहुत छोटी नदी है। धनौरा गांव के पास यह मुजफ्फर नगर से मेरठ ज़िले में प्रवेश करती है। मेरठ ज़िले में ८ मील बहने के बाद बानगंगा शाहपुर गांव के पास हिंडन में मिल जाती है। गरमी में यह सूख जाती है। वर्षा ऋतु में इसमें चार-पांच फुट पानी

रहता है। इसका फॉट (पेटा) ४० फुट चौड़ा है। इसके किनारे छोटे छोटे नालों से बहुत कट गये हैं। इसीसे यह अपने समीप का पानी बहा ले जाने के अतिरिक्त और किसी काम नहीं आती है।

हिंडन नदी मेरठ जिले के उत्तरी-पश्चिमी भाग के पूर्व में बहती है। पितलोखा गांव के पास यह मुजफ्फरनगर से मेरठ में प्रवेश करती है। यहीं पश्चिमी काली नदी इसमें मिलती है। बरनावा के पास इसमें बानगंगा और कृष्णी नदियां मिलती हैं। इसका खादिर कहीं दो मील और कहीं आध मील चौड़ा है। जो खादिर इसकी बाढ़ से डूब जाता है उसमें रबी (गेहूँ की फसल अच्छी होती है। कहीं कहीं इसके पड़ोस में रेह पड़ गया है। वहां बहुत वर्षों से खेती नहीं हो सकी है। गाजियाबाद के नीचे रेलवे-पुल के पास हिंडन का पानी एक कृत्रिम धारा के द्वारा यमुना में छोड़ दिया गया है। इस प्रकार हिंडन नदी (देवबन्द नहर का बचा हुआ पानी लेकर) गंगा के पानी को यमुना में पहुंचा देती है। ओखला के पास यमुना में बांध बना है। इसके द्वारा हिंडन का पानी आगरा नहर में पहुँचता है। अधिक आगे हिंडन नदी अपना टेढ़ा मार्ग बनाती हुई डनकौर (बुलन्दशहर) में पहुँचती है। हिंडन के पड़ोस में कुछ जमीन रेतीली है। लेकिन अधिक आगे गंगा-नहर की ओर भूमि बड़ी उपजाऊ है। हिंडन के पूर्व में मेरठ ज़िले के मध्यवर्ती भाग में कुछ नीची जमीन है। यह नीचा प्रदेश सरधना के पास आरम्भ होता है और बुलन्दशहर तक चला गया है। गंगा नहर का प्रदेश उत्तर में भोला से आरम्भ होकर दक्षिण में नाइल तक चला गया है। यहां गंगा-नहर के रजवाहों की अधिकता है। इस प्रदेश के कई भागों में नीची ज़मीन है। वहां धान की खेती होती है। अधिक दक्षिण में डासना परगना भी बड़ा उपजाऊ है। इसके निचले भाग में मसूरी झील है।

अधिक आगे पूर्व में काली नदी बहती है। इधर भूड़ (कुछ बलुई भूमि) कहीं कहीं रेतीले टीले मिलते हैं। इस ओर गंगा-नहर की अनूप शहर शाखा से सिंचाई होती है। काली नदी मुजफ्फर नगर जिले से निकलती है और मेरठ होती हुई दक्षिण की ओर बुलन्दशहर में पहुँचती है। अन्त में वह फतेहपुर जिले में गंगा में मिल जाती है। इसे कालिन्दी या नागिन भी कहते हैं। नदी को पार करने वाली सड़कों के लिये काली नदी पर पुल बने हुये हैं।



लेकिन काली नदी के किनारे कोई बड़े नगर नहीं बसे हैं। मेरठ से मवाना, परीक्षतगढ़ और गढ़मुक्तेश्वर जाने के लिये काली नदी के पुल पार करने पड़ते हैं। काली नदी में बहुत कम पानी रहता है। इसकी प्रधान सहायक चोइया है। चोइया नदी हस्तिनापुर परगने में निहोला के पास निकलती है और हापुड़ के पास (नौ मील की दूरी पर) काली नदी में मिल जाती है। आबूनाला मेरठ परगने को सींचकर काली नदी में मिल जाता है।

काली नदी और गंगा के बीच में मेरठ जिले का पूर्वी भाग स्थित है। इसमें मवाना तहसील के हस्तिनापुर और किठौर परगने और हापुड़ के गढ़ मुक्तेश्वर और पूठ परगने शामिल हैं।

इस प्रदेश में कहीं अच्छे खेत हैं कहीं रेतीले टीले हैं। अत्यन्त पूर्वी भाग में गंगा का खादिर है। इसमें कहीं कहीं खेती होती है। बहुत से भाग जंगली घास से ढके हैं जिसमें जंगली सुअर और दूसरे जंगली जानवर रहते हैं। इसी खादिर में बूढ़ी गंगा मन्द गति से बहती है।

गंगा नदी के किनारे प्रायः ऊँचे और स्थिर हैं। केवल कहीं कहीं के कट गये हैं। अधिकतर पानी नहरों में पहुँच

जाने से गंगा में इतना थोड़ा पानी बचता है कि इसमें साल भर नावें नहीं चल सकतीं। गंगा की धारा का पानी किनारे के खेतों से इतनी दूर है कि वह पानी खेतों के सींचने के काम नहीं आ सकता। बाढ़ के दिनों में गंगा की धार बहुत तेज हो जाती है। इस जिले में केवल गढ़-मुक्तेश्वर एक बड़ा नगर है जो गंगा के किनारे बसा है। यहीं गाजियाबाद से मुरादाबाद जानेवाली रेलवे गंगा को एक पुल के ऊपर से पार करती है।

बाबूगढ़—यह बड़ा गांव हापुड़ से गढ़मुक्तेश्वर जाने-वाली सड़क पर पड़ता है। यहां होकर ईस्टइण्डियन रेलवे (भूतपूर्व अवध रुहेलखंड रेलवे) की एक शाखा गाज़िया-बाद से मुरादाबाद को गई है। वहां सरकारी घोड़े पाले जाते हैं।

बागपत—यह नगर यमुना के बायें किनारे पर मेरठ से ३० मील दूर है। यहां से शाहदरा, मेरठ और बड़ौत को सड़कें गई हैं। यमुना को पार करने के लिये नावों का पुल बना है। बागपत—कस्बा में अधिकतर किसान रहते हैं। मंडी में बनिये व्यापारी रहते हैं। इसका प्राचीन नाम व्याघ्र प्रस्थ (चीतों का स्थान) है। इसका उल्लेख महाभारत में आया है। पहले यहां तहसीली कचहरी और मिडिल स्कूल थे। बड़ौत नगर पूर्वी यमुना नहर के किनारे मेरठ से २७ मील दूर है। यहां दो इण्टर कालेज है। (एक जाट और दूसरा जैन) खेतिहर प्रदेश के बीच में स्थित होने से यह एक व्यापारी मण्डी बन गया है। शाहदर सहारनपुर रेलवे छोटी लाइन का यह एक बड़ा स्टेशन है। गदर के समय जिन जाटों ने विद्रोह में भाग लिया था उनकी भूमि छीन ली गई। इस समय यहां खद्दर बनाने का काम होता है। बरनावा गांव हिंडन के दाहिने किनारे पर बसा है। इसके पास ही कृष्णी नदी हिंडन में मिलती है। यहां होकर बड़ौत को सड़क जाती है। यह सरधना से ११ मील और मेरठ से १६ मील दूर है। यहां कई पक्के कुयें हैं। लेकिन उनका पानी खारा है। कहा जाता है कि महाभारत के समय का यह वरणावत था। एक खेड़े पर लाक्षा मण्डप है जहां कौरवों ने पांडवों को जलाने का प्रयत्न किया था। इस समय खेड़े पर एक मुसलमानी दरगाह है। इसका पुराना संस्कृत लेख मिटा दिया गया है। यहां बेगम समरू ने भी अपना एक किला बनवाया था।

बेगमाबाद—मेरठ से दिल्ली जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। जाटों की जमींदारी शाही घराने की एक बेगम के पास चली गई। इसके बाद इसका नाम बेगमा-बाद पड़ गया। यहां ग्वालियर की रानी बाला बाई का बनवाया हुआ एक मन्दिर है। इस समय मोदी के शक्कर का कारखाना बड़ी उन्नति पर है।

डासाना—यह कस्बा गाजियाबाद से हापुड़ और गढ़मुक्तेश्वर को जाने वाली पक्की सड़क पर गाजियाबाद से ६ मील की दूरी पर बसा है। पूर्व की ओर दो मील की दूरी पर गंगा नहर बहती है। इसी के डासनट राजवाहे से पड़ोस की भूमि सींची जाती है। कहा जाता है कि महमूद गजनवी के समय में राजपूत राजा सलारसी ने इसे बसाया था। १७६० में अहमदशाह अब्दाली ने यहां के किले को गिरा दिया। साल में दो बार देवी का मेला होता है। एक मेला मुहर्रम का होता है। इसके पड़ोस में नील का कारखाना खुला था।

हापुड़

हापुड़ ऐसे स्थान पर बसा है जहां मेरठ से बुलन्द शहर जाने वाली पक्की सड़क गाज़ियाबाद से गढ़मुक्तेश्वर जाने वाली पक्की सड़क को पार करती है। यह मेरठ से १६ मील दूर है। यहीं मेरठ और गाज़ियाबाद से आनेवाली रेलवे लाइनें भी मिलती हैं। ६८३ में हापुड़ को हरदत्त नामी एक सरदार ने बसाया था। इसका पहला नाम हर-पुर था। इसी से बिगड़ कर हापुड़ बना। पहले हापुड़ में प्रवेश करने के लिये पांच द्वार या दरवाज़े थे जो दिल्ली मेरठ, गढ़मुक्तेश्वर, कोठी और सिकन्दरा दरवाजे कहलाते थे। यहाँ की जामा मस्जिद औरंगज़ेब के समय में बनी थी।

हापुड़ मेरठ जिले का प्रसिद्ध व्यापारी नगर है। यहां अनाज, तिलहन और कपास का व्यापार होता है। यहां कई बाज़ार हैं। सब से अधिक प्रसिद्ध पुराना बाजार कह-लाता है और मेरठ दरवाजे से दिल्ली दरवाज़े तक चला गया है। तहसीली कचहरी और हाई स्कूल नगर के बाहर स्थित हैं।

हस्तिनापुर बूढ़ी गंगा के ऊंचे किनारे पर मवाना से ६ मील और मेरठ से २२ मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। इसका उत्तरी भाग पट्टी कौरवां और दक्षिणी भाग पट्टी पांडवा कहलाता है। दोनों भाग प्रायः निर्जन हैं। यहां हाल में सराउगियों के बनवाये हुये कुछ मन्दिर हैं।

पड़ोस में पुराने किले और कुछ मन्दिरों के भग्नावशेष हैं। लेकिन प्राचीन हस्तिनापुर को गंगा ने काट कर बहा दिया। इसे राजा भरत के वंशज और पांडवों के पूर्वज राजा हस्तिन ने बसाया था। पांडवों ने पहले यमुना-तट पर इन्द्रप्रस्थ बसाया था। हस्तिनापुर के कौरवों को हराकर उन्होंने युधिष्ठिर को हस्तिनापुर का राजा बनाया। महाभारत के समाप्त होने पर जब पांडव उत्तराखंड (हिमालय) में गलने चले गये तो अर्जुन के पौत्र राजा परीक्षित यहां की गद्दी पर बैठे। चार पीढ़ी राज्य करने के बाद हस्तिनापुर नष्ट हो गया और कौसाम्बी राजधानी बनी। कार्तिकी पूर्णिमा को यहां एक बड़ा मेला लगता है।

खेकड़ा यमुना के ऊंचे बायें किनारे पर बागपत से ८ मील और मेरठ से २६ मील दूर बसा है। यहां एक सुन्दर जैन मन्दिर है। अधिकतर लोग जाट हैं जिन्होंने अब से १००० वर्ष पहले अहीरों को भगा कर अपना राज्य कर लिया। इस समय खेकड़ा गुड़ और अनाज की प्रधान मंडी है।

किठोर गढ़मुक्तेश्वर से मेरठ जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यह मेरठ से १६ मील दूर है। किठोर के पूर्व में गंगा-नहर की अनूपशहर-शाखा बहती है। इसके पास ही गूजरराजा नैनसिंह के किले के खण्डहर हैं।

कुटाना यमुना के ऊंचे किनारे पर बागपत से ११ मील और मेरठ से ३४ मील की दूरी पर स्थित है। कहा जाता है कि यह पांडवों के समय में बसाया गया था। इस समय यहां लकड़ी, बांस और अनाज का व्यापार होता है।

लोनी गांव शाहदरा से ६ मील उत्तर की ओर स्थित है। लोनी नाम लवण (लोण) से बिगड़ कर बना है क्योंकि इसके पड़ोस में नमकीन प्रदेश है। कहा जाता है कि शहाबुद्दीन गोरी ने यहां के राजपूतों को भगाकर उनके स्थान पर मुगलों, पठानों और शेखों को बसा दिया। जो ज़मीन पहले पृथिवीराज के राज्य में शामिल थी वह अब इन लोगों की ज़मींदारी में आगई। यहा राजा सबकरन का एक किला था। १७८९ में मुहम्मद शाह ने तोड़ दिया और इसकी ईंटों से एक तालाब बनाया गया।

मवाना कस्बा गंगा-नहर की फतेहगढ़ शाखा के किनारे पर बसा है। यह मेरठ से १७ मील दूर है। यहां मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है। नगर के बाहर तहसीली की इमारतें हैं। इसी ताल के किनारे लगभग ३०० वर्ष का पुराना मन्दिर है। कहा जाता है कि कौरवों के एक नौकर माना ने इसे बसाया था। इसी से इसका यह नाम पड़ा।

मेरठ शहर (१,३६,०००) नार्थवेस्टर्नरेलवे स्टेशन के पूर्व और छावनी के दक्षिण में स्थित है। पहले शहर एक चारदीवारी और खाईं से घिरा था। भीतर जाने के लिये ९ दरवाज़े थे। इनके नाम दिल्ली,चमार,लिसारी,शोराब,शाहपीर, बुढ़ान, खैरनगर, कम्बोह और बागपत दरवाज़ा हैं। चमार दरवाज़ा चमारों की बस्ती के पास है। लिसारी दरवाज़ा लिसारी गांव के सामने दक्षिण की ओर है। शाहपीर दरवाज़ा शाहपीर मकबरे के पास है। इस मकबरे को जहांगीर की रानी नूरजहां ने लाल बलुवा पत्थरों से १६२८ ईस्वी में शाहपीर नामी फकीर की स्मृति में बनवाया था। खैरनगर दरवाजे को नवाब खैरन्देश खां ने और कम्बोह दरवाज़े को अबूमुहम्मद खां कम्बोह ने बनवाया था। प्रायः अलग अलग ज्ञातियों के नाम से शहर में ३८ मुहल्ले हैं। यहां कई बाज़ार और सराय हैं। जहां पहले प्रसिद्ध बौद्ध मन्दिर था वहां पर मेरठ की जामा मस्जिद बनाई गई। इसे महमूद गज़नवी के वज़ीर ने बनवाया था। हुमायूं ने इसकी मरम्मत करवाई। मखदूमशाह विलायत की दरगाह कलक्टरी के सामने है इसे शहाबुद्दीन गोरी ने बनवाया था। सालार मसूद आलम का मकबरा कुतुबुद्दीन ऐबक ने ११९४ में बनवाया था। इसी कुतुबुद्दीन ने नौचन्दी देवी का मन्दिर तुड़वा कर एक दरगाह बनवायी। यह मन्दिर शहर से १ मील पूर्व की ओर था जहां इस समय हापुड़ और गढ़मुक्तेश्वर जानेवाली सड़कों के बीच में हरसाल ७ दिन तक एक बड़ा मेला लगता है। इस मेले में दूर दूर से घोड़े बिकने के लिये आते हैं।

सूरजकुंड के पास तिलेंडी का मेला लगता है। सूरजकुंड १७१४ ईस्वी में बनवाया गया था। इसके पड़ोस में कई छोटे छोटे छोटे मन्दिर हैं। पहले यहां आबू नाला का पानी आता था। इसके सूख जाने पर सूरजकुंड में गंगा नहर से पानी आने लगा। मेला चैत में लगता है। मेरठ में साबुन कैंची और खद्दर बनाने का काम बहुत अच्छा होता है। खद्दर की कताई बुनाई के साथ साथ रंगाई का काम भी होता है। यह अखिल भारतवर्षीय चर्खा संघ का एक प्रधान उत्पत्ति केन्द्र है। मेरठ में कई कालेज और हाई स्कूल हैं। घंटाघर के आगे टाउन हाल और लायल लाइब्रेरी है। शहर के उत्तर की ओर बड़ी

छावनी है। मेरठ शहर में पीने का पानी ६ मील की दूरी (गंगा-नहर के भोलाभाल) से आता है।

वहां कई कुएँ भी हैं जिनमें अधिकतर मरहठों के शासन काल में बने थे। कुओं का पानी अच्छा है और दस-पन्द्रह फुट की गहराई पर मिलता है।

मेरठ शहर से पक्की सड़कें दिल्ली, सहारनपुर, गढ़मुक्तेश्वर और हापुड़ को गई हैं। नार्थ वेस्टर्न रेलवे की दो स्टेशनें हैं। एक मेरठ छावनी और दूसरी मेरठसिटी स्टेशन है। सिटी स्टेशन से एक शाखा लाइन हापुड़ को जाती है। मेरठ शहर बहुत पुराना है। इसका पुराना नाम महिराष्ट्र है। कहा जाता है कि महाराज युधिष्ठिर के जिस (महि) कारीगर ने इन्द्रप्रस्थ बनाया था उसी ने मेरठ को भी बसाया। अन्दर कोट के पुराने भाग में प्राचीन समय के कुछ भग्नावशेष हैं। यहीं ईसा से ३०० वर्ष पूर्व महाराज अशोक ने एक स्तम्भ खड़ा किया था। १२०६ ईस्वी में फीरोज़शाह इसे मेरठ से दिल्ली ले गया। शहर के भीतर बौद्ध भग्नावशेषों के मिलने से सिद्ध होता है कि अशोक के समय में मेरठ बौद्ध धर्म का केन्द्र था। मेरठ का किला भारतवर्ष के प्रसिद्ध किलों में गिना जाता था। ११९१ में कुतुबुद्दीन ने मेरठ के किले पर अपना अधिकार कर लिया और हिन्दू मन्दिरों को तोड़कर मस्जिदें बनवा लीं। १३८९ में तैमूर ने इसे पूरी तरह से लूटा

अकबर के समय में यहां तांबे के सिक्के बनाने को टकसाल थी।

गुलाम कादिर की फौज को हराकर १७८८ में मरहठों ने इस पर अपना अधिकार कर लिया।

मुराद नगर दिल्ली से मेरठ जाने वाली सड़क पर मेरठ से १८ मील की दूरी पर स्थित है। यह नार्थ वेस्टर्न रेलवे का एक स्टेशन है। इसे अब से प्रायः ३२० वर्ष पहले मिरजा मुहम्मद मुराद ने बसाया था। यहां स्कूल, थाना और बाजार है। परीक्षित गढ़ गंगा-नहर को फतेहपुर शाखा के पास कच्ची सड़क पर बसा है। इसके बीच में एक पुराना किला है। कहा जाता है कि इसे राजा परीक्षित ने बनवाया था। गूजर राजा नैनसिंह ने इसकी मरम्मत करवाई। ग़दर में किला तोड़ दिया गया। इस समय किले में थाना और राजमहल में स्कूल है। बनिये लोग पश्चिम की ओर और चमार पूर्व की ओर रहते हैं। गांव में नवलदेव नाम का प्रसिद्ध कुआं है। कहा जाता है कि इसे पांडवों ने बनवाया था कहते हैं कि इसका पानी पीने से कोढ़ अच्छा हो जाता है।

फलौदा मेरठ से १७ मील की दूरी पर बसा है। यहीं मेरठ और मवाना से आने वाली कच्ची सड़कें मिलती हैं। इसे फग्गू नामी एक तोमर सरदार ने बसाया था। कहा जाता है कि कार्तिकी पूर्णिमा को जब तोमर लोग गंगा स्नान कर रहे थे उसी समय पालकियों में छिपकर आये हुये मुसलमान सिपाहियों ने अचानक हमला किया और तोमरों को मार डाला। फलौदा में कुतुबशाह की दरगाह है जहां हर साल मेला लगता है।

पिलखुआ मेरठ से १९ मील की दूरी पर गाजियाबाद से हापुड़ जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। इसके पास कई ताल हैं। पड़ोस में बँधा हुआ पानी रहने से यहां मलेरिया बुखार फैला करता है। यहां खद्दर बनाया जाता है और चुनरी रंगी जाती है। चुनरी रंगने के लिये सादे सफेद कपड़े में गांठ बांधकर रंग में डुबोते हैं। गांठ खोलने पर कपड़े के बीच बीच में गोले घेरे सफेद रहते हैं। शेष भाग लाल रंग जाते हैं। यह चुनी स्त्रियां बड़े चाव से पहनती हैं। यहां थाना, डाकखाना, स्कूल और सराय है। बाज़ार हर शुक्रवार को लगता है।

पूठ गंगा के ऊंचे किनारे पर गढ़मुक्तेश्वर से ८ मील दक्षिण-पूर्व की ओर मेरठ से ३४ मील की दूरी पर स्थित है। यहां हस्तिनापुर के राजाओं के बगीचे लगे थे। इसीसे इसका (पुराना) नाम पुष्पवती था। इसी को बिगाड़ कर मुसलमानों ने इसका नाम पूठ रख दिया। गंगा पार करने के लिये यहां नाव का घाट है।

सरसवा मेरठ से १४ मील की दूरी पर काली नदी की एक सहायक नदी के किनारे बसा है। यह मेरठ से १४ मील दूर है। हापुड़ से बेगमाबाद जाने वाली सड़क के पास पड़ता है। इसका पहला नाम फतेहगढ़ था। यह दिल्ली के ग़ोरी बादशाहों के समय में बसाया गया था। तगा लोगों ने इसका नाम बदलकर सरसवा रख दिया।

सरधना मेरठ से १२ मील की दूरी पर गंगा-नहर के पास स्थित है। नहर के ऊपर पुल बना है। यहां होकर सरधना स्टेशन (नार्थ वेस्टर्न रेलवे) को पक्की सड़क जाती है। नगर के उत्तर ओर लश्कर गंज और बेगम समरू के पुराने किले के खंडहर हैं। जहां इस समय कालेज है वहीं यह बेगम समरू का महल था। एक ओर ईसाई बस्ती है। सरधना में ४ जैन मन्दिर हैं।

शाहदरा दिल्ली से गाजियाबाद जानेवाली पक्की सड़क पर यमुना के बायें किनारे के पास स्थित है। यह ईस्ट इंडियन और नार्थ वेस्टर्न रेलवे का स्टेशन है। यहीं से बड़ौत-शामली होकर छोटी लाइन सहारनपुर को जाती है। यह दिल्ली से ५ मील और मेरठ से ३१ मील दूर है। शाहदरा से तीन मील की दूरी पर पूर्वी यमुना-नहर यमुना में मिल जाती है। शहदरा का अर्थ है शाही द्वार या शाही दरवाजा। इसे शाहजहां ने बसाया था। पानीपत की अन्तिम लड़ाई के अवसर पर अहमदशाह दुर्रानी ने इसे लूटा और भरतपुर के सूरजमल जाट ने यहां के डलहाई मुहल्ले को नष्ट कर दिया। शाहदरा में अनाज और दाल का व्यापार होता है और जूते बनाये जाते हैं। यहां का पानी मीठा नहीं है। मीठा पानी गांव के बाहर से आता है।

सुराना-हिंडन के बायें किनारे पर मेरठ से १७ मील की दूरी पर स्थित है। यह अहीरों का गांव है। यहां कई मन्दिर हैं और हर साल देवी का मेला लगता है।

फरीदनगर गाज़ियाबाद तहसील में पिलखुआ से पांच मील और मेरठ से १६ मील की दूरी पर स्थित है। कहा जाता है कि अकबर के समय में फरीदुद्दीन खां ने जंगल के बीच में बसाया था। यहां डाकखाना, स्कूल और बाज़ार है। गढ़मुक्तेश्वर गंगा के दाहिने किनारे पर मेरठ से २८ मील की दूरी पर स्थित है। दिल्ली से मुरादाबाद जाने वाली रेलवे का एक बड़ा स्टेशन है। यहां हस्तिनापुर का एक किला था। मरहठा सरदार मीर भावन ने इसकी मरम्मत करवाई थी। यहां मुक्तेश्वर महादेव और गंगादेवी का मन्दिर है। कार्तिक में यहां गंगा स्नान का मेला लगता है और ८ दिन तक रहता है।

मेरठ जिले का कारबार

यहां पर कसीदा काढ़ने के काम में कई लाख परदानशीन औरतें लगी हुई हैं।

यहां कई हज़ार सुनार सोने चांदी का ज़ेवर बनाते हैं। मकान बनाने के लिये मेरठ शहर में ३५ चूने के कारखाने और ३० ईंटों के भट्टे हैं। हापुड़ के पास थाली कटोरा और हुक्का की कली पीतल से बनाई जाती हैं।

हापुड़ और मेरठ में अच्छे ताले बनते हैं।

तवा, कढ़ाई, कोल्हू और डोल लोहे से बनाये जाते हैं कैंची बड़ी अच्छी बनती हैं। शहर में ट्रंक बनते हैं। लोहा दिल्ली से आता है।

जूते के अलावा यहां चमड़े से हाकी और क्रिकेट की गेंदें बनती हैं। हाल में यहां ब्रुश बनाने का कारखाना खुला है। तेल पेरने और साबुन बनाने का काम अच्छा होता है।

खादी, दुसूती, निवाड़ और मोज़े बुनने का काम बहुत होता है।

निरपुड़ा, लवार, ज्वालागढ़, रोहसा, कोटा और सलावा में अच्छे कम्बल बुने जाते हैं। सरधना तहसील में लगभग २०,००० भेड़ें हैं जिनकी ऊन आश्विन (सितम्बर) और चैत में काटी जाती है। कुछ ऊन पंजाब और राजपूताना से आती है।

गढ़मुक्तेश्वर में मोढ़ा बनते हैं और मुरादाबाद, मेरठ, सहारनपुर और दिल्ली में बिकने जाते हैं।

हापुड़ और मेरठ में बहुत अच्छी और सस्ती खादी तयार होती है।

बुलन्द शहर

बुलन्द शहर का जिला गंगा-यमुना द्वाबा के ऊपरी भाग में स्थित है। पश्चिम की ओर यमुना नदी इसे पञ्जाब के गुरगांव जिले और दिल्ली से अलग करती है। पूर्व की ओर गंगा नदी बुलन्द शहर जिले को मुरादाबाद और बदायूं जिलों से अलग करती है। बुलन्दशहर के उत्तर में मेरठ और दक्षिण में अलीगढ़ का जिला है। इसकी औसत लम्बाई ५५ मील और चौड़ाई ३५ मील है। इसका क्षेत्रफल १९१४ वर्ग मील और जन संख्या ११,३७,००० है। बुलन्द शहर का जिला सब कहीं प्रायः समतल दिखाई देता है। इसका ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। इसी ओर गंगा, काली और यमुना नदियों का बहाव है। उत्तर में गुलाउठी के पास की उंचाई समुद्र तल से ६८० फुट है। मध्य में बुलन्द शहर क़स्बा समुद्र-तल से ७२७ फुट ऊंचा है। अलीगढ़ की सीमा के पास दक्षिण में भूमि की उंचाई ६३६ फुट है।

यमुना नदी पहले पहल बुलन्द शहर ज़िले को दिल्ली के सामने छूती है और पचास मील तक पश्चिमी सीमा पर बहती है। सरदी की ऋतु में पानी बहुत साफ और उथला रहता है। वर्षा ऋतु में यह बहुत मटीला हो जाता है। यमुना से इस जिले में सिंचाई नहीं होती है। छोटी नावों में अनाज और कपास ढोने और लकड़ी के बेड़े बहाने का काम होता है। बुलन्द शहर के नयाबास गांव और दिल्ली के ओखला के बीच में यमुना में जो बांध बना है वहां से आगरा-नहर आरम्भ होती है। १८७१ में यमुना में ऐसी बाढ़ आई कि ५ गांव एकदम नष्ट हो गये, २५ गांव आधे बह गये और २५ गांवों के कुछ भाग कट गये। खरीफ की फसल भी नष्ट हो गई। इसके बाद और भी कई बार यमुना में भयानक बाढ़ आई लेकिन इतनी हानि नहीं हुई।

यमुना का खादिर उत्तर में नौ मील और दक्षिण में पांच मील चौड़ा है। यमुना के एक ऊंचे किनारे से दूसरे ऊंचे किनारे तक एक स्थान पर खादिर १० मील चौड़ा है। आज कल यमुना का अधिकतर पानी नहरों में चला जाता है इसलिये यमुना अपना मार्ग अधिक नहीं बदलती है। लेकिन पुराने समय में खादिर के बीच में यह अपना मार्ग अक्सर बदलती रही है। लोकमीर और डनकौर में बदले हुये मार्ग के चिन्ह स्पष्ट दिखाई देते हैं। इस समय खादिर में लोग बसे हुये हैं। केवल यमुना की धारा के एकदम पास खेती करने में कभी कभी बाधा पड़ती है। यमुना का रुख आरम्भ में पूर्व की ओर है। लेकिन बल्लभनगर के पास चिकनी मिट्टी और कंकड़ के कड़े कगारों ने इसे फिर पश्चिम की ओर मोड़ दिया है। इससे खादिर में तीन चार मील चौड़ा उपजाऊ प्रदेश बन गया है। जो दलदल और रेह डनकौर में है उसका यहां नाम नहीं है।

यमुना खादिर के मध्यवर्ती भाग का पानी हिंडन नदी बहा जाती है। हिंडन नदी मेरठ से बुलन्द शहर जिले के दादरी परगने में प्रवेश करती है और १३ मील बहने के बाद यमुना में मिल जाती है। यहां हिंडन की घाटी अलग नहीं है। यमुना-खादिर में बहने के कारण यह अक्सर अपनी धारा इधर उधर बदल कर बहती है। वर्षाऋतु में हिंडन में काफी बाढ़ आती है। बाढ़ के पानी में उपजाऊ मिट्टी के कण मिले रहते हैं। बाढ़ के बाद जो नई उपजाऊ मिट्टी बैठ जाती है उसे यहां बुक कहते हैं। इसमें रबी की फसल बहुत अच्छी होती है।

हिंडन से दो तीन मील पूर्व की ओर भुरिया नदी बहती है। कभी कभी दोनों मुड़कर एक दूसरे के पास पास आ जाती हैं। बुलन्द शहर जिले में आने के समय यह बहुत छोटी मालूम पड़ती है। लेकिन २८ मील बहने के बाद जब यह यमुना में मिलती है तब यह काफी बड़ी हो जाती है। इसमें बहुत सा पानी नीचे नीचे छनकर आता है। इसकी बाढ़ में भी उपजाऊ मिट्टी मिली रहती है। भुरिया और ऊंचे किनारे के बीच में ज़मीन अच्छी नहीं है। साधारणतया खादिर के बीच बीच में निचले गड्ढे तो अच्छे हैं। अधिकतर भाग में प्रायः बलुई भूमि है जहां झाऊ और कांस उगता है। ऊंचे ढाल के पास रेह होगया है।

यमुना खादिर के आगे ज़िले का मध्यवर्ती ऊंचा भाग है। यह पूर्व में गंगा तट तक चला गया है। यह चौड़ा और प्रायः समतल है। कहीं कहीं इधर बहने वाली धाराओं ने इसे काट दिया है। बहुत थोड़े स्थानों पर कुछ ऊंचे टीले हैं। जिनके ऊपर बालू बिछी है। अधिकतर भाग में उपजाऊ भूमि है। कुओं और नहरों से सिंचाई हो जाने से यहां अच्छी फसलें होती हैं। बीच में रेतीली पतली पेटी के आगे मध्यवर्ती मैदान में दुमट या चिकनी मिट्टी है। इस प्रदेश को काली नदी दो प्रायः समान भागों में बांट देती है। पूर्व में काली नदी और पश्चिम में माट नहर के बीच में कर्वन या खारान नदी बहती है। यह मेरठ जिले की सीमा के पास से निकलती है और खुर्जा और सिकन्दराबाद परगनों में बहती है। वर्षा ऋतु में भी इसमें अधिक गहरा पानी नहीं रहता है। उसकी अधिक से अधिक गहराई ५ फुट चौड़ाई २५० फुट जाती है। सरदी में यह सूख जाती है। ८० मील बहने के बाद आगरा जिले के शाहदरा गांव के पास यह यमुना में मिल जाती है।

कर्वन से पूर्व की ओर गंगा-नहर तक भूमि समतल और उपजाऊ है। अधिक आगे भूमि नीची होने लगती है और काली नदी का खादिर आरम्भ हो जाता है। काली नदी गुलाउठी के पास मेरठ जिले से बुलन्दशहर में आती है। दक्षिण और दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हुई यह अलीगढ़ जिले में पहुंचती है। इसकी घाटी प्रायः आध मील चौड़ी है। कभी यह एक किनारे कभी दूसरे किनारे के पास बहती है। घाटी के ठीक बीच में यह

बहुत कम बहती है। काली का खादिर पड़ोस की भूमि से बहुत नीचा है और वर्षा ऋतु में प्रबल बाढ़ से डूब जाता है। १८८५ में काली नदी में ऐसी बाढ़ आई कि इसने पुल तोड़ दिये और एटा जिले के नदरई बांध को नष्ट कर दिया। नहर खुलने से पहले गरमी में इसमें केवल कहीं कहीं पानी रहता था। आजकल इसमें भीतर ही भीतर छन छन कर पानी आता है। इससे काली नदी में साल भर पानी बना रहता है। नहर का बचा हुआ पानी भी इसमें छोड़ दिया जाता है। लगातार नमी रहने से उपजाऊ भागों में रेह पड़ गया। वास्तव में काली नदी बहुत धीमी चाल से बहती है और सिवार और घास में इसका पानी फँस जाता है। काली नदी और गंगा-नहर के बीच में चोइया बहती है। यह सियाना परगने में चितसौना के पास झीलों से निकलती है। और अलीगढ़ ज़िले की अतरौली तहसील में पहुंचने पर नदी बन जाती है। डिबई के पास इसमें नीम नदी मिलती है। चोइया के पास अच्छी कड़ी दुमट मिट्टी है। अधिक आगे मिट्टी अच्छी नहीं है। इसी तरह की मिट्टी गंगा के ऊंचे किनारे तक चली गई है।

गंगा नदी बुलन्दशहर में सियाना, अहार, अनूपशहर और डिबाई परगनों की पूर्वी सीमा के पास बहती है। गंगा नदी की तली में बालू है। यह बालू पानी के नीचे ३० फुट तक चली गई है। इसके नीचे १२ फुट मोटी कंकड़ और चिकनी मिट्टी की तह है। अन्त में पीली बालू की तह मिलती है। गंगा का दक्षिणी पश्चिमी किनारा चिकनी मिट्टी और कंकड़ का बना है। यह इतना ऊंचा है कि प्रबल बाढ़ में भी पानी ऊपर तक नहीं पहुँचता है। अहार, अनूप शहर, राजघाट और रामघाट में इसी तरह के ऊंचे किनारे हैं। इन ऊंचे किनारों के पास गहरा पानी रहता है। वर्षा ऋतु में गंगा में कहीं पांज नहीं रहती है। नाव से पार करने में भी कभी कभी भय रहता है। मुरादाबाद की ओर वाला किनारा नीचा है। इसलिये बाढ़ का पानी दूर तक पहुंचता है। गंगा का पानी इतना अच्छा है कि बाढ़ के दिनों में मिट्टी मिले रहने पर भी गंगा के पानी को पीते हैं। शीत काल में गंगा जल अत्यन्त शुद्ध रहता है। गङ्गा में साल भर नावें चला करती हैं। नारोरा के पास गङ्गा में बांध बन जाने से यहां नावों के चलने में बाधा पड़ती है।

ऊंचे किनारे के पास गंगा का खादिर कुछ तंग है। अधिकतर भूमि बलुई है। स्थायी खेती नहीं हो सकती। कहीं कहीं तरबूज खरबूजा उगाये जाते हैं। जहां (जैसे मुबारकपुर और राम घाट के पास) गंगा ने उपजाऊ मिट्टी बिछा दी है वहां अच्छी फसलें होती हैं। उजाड़ भागों में कांस और झाऊ उगती है। यहां जंगली सुअर विचरते हैं और फसलों को हानि पहुंचाते हैं।

बुलन्दशहर ज़िले में अधिक झीलें नहीं हैं। औरंगाबाद और कुचेसर की झीलें कुछ बड़ी हैं। इनमें सिंचाई नहीं होती। गरमी के दिनों में वे सूख जाती हैं। सरदी में उनमें सिंघाड़े उगाये जाते हैं। जन संख्या के बढ़ने से ज़िले के बन साफ कर लिये गये और उनमें खेती होने लगी है। परगना जेवार, शिकारपुर के कुछ भागों में इस समय भी ढाक के जंगल हैं। इस का गोंद कई कामों में आता है और टेसू फूल से लाल रंग बनाया जाता है। कई भागों में ऊसर भूमि है जहां जानवर भी नहीं चराये जा सकते। जहां रेह है वहां उसे इकट्ठा करके सज्जी, सोडा या खारी और शोरा बनाते हैं। खारी मिट्टी अधिकतर (३०,००० एकड़) यमुना-तट के पास कुछ काली नदी के पास है।

कंकड़ कई भागों में मिलता है। यह अक्सर चिकनी मिट्टी या कभी कभी बालू में मिले हुये पाये जाते हैं। ये सड़क बनाने और चूना तयार करने के काम में आते हैं।

अहार इस समय एक छोटा गांव है। यह गंगा के किनारे अनूप शहर से ७ मील और बुलन्दशहर से २१ मील उत्तर की ओर स्थित है। यहां कई पुराने मन्दिर हैं। सबसे अधिक प्रसिद्ध महादेव का मन्दिर है। यहां शिवरात्रि और जेष्ठ दशमी को मेला लगता है। अहार नाम अहिहर से बिगड़ कर बना है। अहिहर का अर्थ है सर्पों का नाश। कहा जाता है कि यहीं जन्मेजय ने सर्प यज्ञ किया था और नागर ब्राह्मणों को पड़ोस की भूमि दान में दी थी। कहते हैं यहीं रुक्मिणी का निवास था और अम्बिका देवी के मन्दिर (जो इस समय पास के मुहम्मदपुर गांव में स्थित है।) से श्री कृष्ण ने रुक्मिणी का हरण किया था। मुसलमानों के पहले यहां हिन्दू राजाओं की राजधानी थी। पड़ोस के खेड़ों में कई पुरानी चीज़ें मिली हैं। एक गड़े हुये स्तम्भ में गढ़कर एक सर्प बनाया गया था। अकबर के समय तक यहां ब्राह्मणों की अधिकता थी। औरंगजेब के समय में ये मुसलमान होगये और इन्हीं के हाथ में भूमि बनी रही। गदर में इनसे

जमीन छीन ली गई। इस समय यहाँ साधारण व्यापार होता है। बाज़ार हर मंगलवार को लगता है। गंगापार करने के लिये नावों का घाट है। लेकिन नारोरा के पास गंगा में बांध बन जाने से उधर की नावों का यहां आना बन्द हो गया इससे यहां के व्यापार को बड़ा धक्का पहुंचा।

अनूप शहर गंगा के ऊंचे दाहिने किनारे पर बुलन्द-शहर से २५ मील की दूरी पर पूर्व की ओर स्थित है। यहां से बुलन्दशहर और अलीगढ़ को पक्की सड़क गई है। गंगा के ऊपर नावों का पुल है जो बाढ़ के दिनों में तोड़ दिया जाता है। इस पुल के ऊपर से मुरादाबाद, चन्दौसी और बदायूं को सड़कें जाती हैं। यहां से डिबाई और राजघाट को भी सड़क गई है सरदी की ऋतु में गंगा की धारा बदायूं की ओर हो जाती है। यहां तह-सील, थाना बाज़ार, अस्पताल और हाई स्कूल है। मानिक चौक और मदार दरवाज़ा दो प्रधान भाग हैं। नालों के गंगा में गिरने से पानी शीघ्र ही बह जाता है। यहां कार्तिकी को बड़ा मेला लगता है। पहले अनूप शहर एक बड़ा व्यापारी नगर था। यहां से नावें लदकर मिर्जापुर तक जाती थीं। यहां कम्बल जूता और शक्कर बनाने का काम होता है।

अनूप शहर को बरगूजर राजा अनूपराय ने जहांगीर के समय में एक पुराने खेड़े में बसाया था। आपस के झगड़ों में यहां की एक रानी ने किले को उड़ा दिया अपने आप को भी उसने नष्ट कर लिया। १७५७ में अहमदशाह दुर्रानी ने अपना पड़ाव डाला। १७५६ में उसने मरहठों और जाटों के विरुद्ध लड़ने के लिये उत्तरी हिन्दुस्तान के मुसलमानों को अपनी ओर मिला लिया और दूसरी बार यहां पड़ाव डाला। १७७३ में मरहठों का रूहेल खंड पर आक्रमण रोकने के लिये अवध के नवाब और ईस्टइंडिया कम्पिनी की फौजें यहां आ गईं। इसके बाद काफी समय तक अंग्रेज़ी फौजें अनूप शहर में रहीं। वहीं इनका एक कब्रिस्तान है। गदर में खुशीराम और उसके जाट साथियों ने गोरों को बचाने में बड़ी सहायता की।

औरंगाबाद चन्दोख बुलन्द शहर से १५ मील पूर्व की ओर स्थित है। अनूप शहर से बुलन्द शहर जाने वाली पक्की सड़क इसके उत्तर में २ मील दूर है। पूर्व की ओर कुछ दूर पर नीम नदी बहती है। १ मील लम्बी झील गांव से मिली हुई है। पहले यहां हिन्दू राजा चन्द की राजधानी थी। उस समय इसका नाम आभा नगरी या चन्दोख था। पुराने किले के चिन्ह इस समय भी दिखाई देते हैं। यहीं चन्द्राणी का पुराना मन्दिर है। औरंगज़ेब के समय में उसकी आज्ञा से यहां बड़गूजरों का अधिकार हो गया। इसी से सम्राट् के सम्मानार्थ इसका नाम औरंगा-बाद रख दिया गया।

औरंगाबाद सैय्यद धुर उत्तरी सिरे पर बुलन्द शहर से ६ मील दूर है। बुखार के सैय्यद जलालुद्दीन के एक वंशज ने पड़ोस के जारोलिया लोगों को दबाकर १७०४ में इसे बसाया और अपने संरक्षक औरंगज़ेब की स्मृति में इसका नाम औरंगाबाद रक्खा। यह नीची जगह पर है और तीन ओर तालाबों से घिरा है। हर शुक्रवार को बाजार लगता है।

बगरासी बुलन्द शहर से २२ मील दूर है। इसे बाजूराय (एक तगा ब्राह्मण) ने बसाया था। लोदी बाद-शाहों के समय में अफगानों ने इस पर अपना अधिकार कर लिया। कुछ लोग अपने आप को बादशाह शेरशाह सूरी के सम्बन्धी बतलाते हैं।

बराल गांव बुलन्द शहर से ७ मील उत्तर की ओर है। मेरठ से गुलाउठी जाने वाली पक्की सड़क इससे १ मील पश्चिम की ओर है। सड़क से कुछ आगे काली नदी बहती है। यहां होकर गंगा-नहर की सनौठा और डासना शाखायें बहती हैं। पहले यह तोमर राजपूतों का गांव था। गदर के बाद यह उनसे छीनकर, हाथरस के राजा गोबिन्दसिंह को राजभक्ति के पुरस्कार में दे दिया गया।

बेलन गांव डिबाई से ६ मील दक्षिण पूर्व की ओर है। इससे पूर्व की ओर १ मील गंगा-नहर की अनूप शहर शाखा बहती है। दो मील और आगे लोअर गंगा-नहर नारोरा गांव के पास गंगा से निकलती है। अब से प्रायः २०० वर्ष पहले बड़गूजर राजा भूपसिंह ने इस गांव को बसाया बेल के वृक्षों के बीच में बेला-देवी का मन्दिर बनवाया। यहीं सनाढ्य ब्राह्मणों की बस्ती बस गई। इन्हें प्रतिवर्ष मन्दिर के चढ़ावे से १०,०००) रु० मिलता है। चैत और कुआर में देवी का मेला लगता है। प्रति मंगलवार को बाजार लगता है।

बिलासपुर कस्बा बुलन्दशहर से १७ मील की दूरी पर सिकन्दराबाद से दनकौर जानेवाली पक्की सड़क पर बसा है। १ मील पूर्व की ओर गंगा नहर की माट शाखा बहती है। इस पर पुल बना है। पुल से १ मील और आगे सिकन्दराबाद रेलवे स्टेशन है। पक्की सड़क बाज़ार

में होकर जाती है। १ फर्लांग की दूरी पर कच्चा किला बना है। इसमें कर्नल स्किनर के वंशज रहते हैं पहले जो २७ गांव दिल्ली के राजा के निजी खर्च के लिये नियत थे वे १८३९ ईस्वी में कर्नल स्किनर को १९,०००) रु० वार्षिक लगान पर दे दिये गये। गदर के बाद बागी ज़मींदारी की ज़मीन भी इसी ताल्लुकेदारी में मिला दी गई। १८६४ से सरकार की ओर से १० फीसदी ताल्लुकेदारी भी दी जाने लगी। १८८८ में स्किनर का अन्तिम लड़का मर गया। इसके बाद यह जायदाद कई टुकड़ों में बट गई। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है।

बुलन्दशहर—काली नदी के दाहिने किनारे पर समुद्र-तल से ७४० फुट की उंचाई पर बसा है। पुराना बारन कस्बा काली नदी के खादिर में बसा था नया शहर कुछ ऊँची भूमि पर और कुछ नदी के पास समतल भूमि पर बसा है। उत्तर की ओर काली नदी पर पुल बना है। पुल के पास स्नान करने के घाट बने हैं। पुल से एक सड़क सीधी शहर को आती है। दूसरी सड़क बलई (बाला-ए) कोट (ऊँचे भाग) को जाती है।

अनूप शहर से सिकन्दराबाद जानेवाली सड़क ग्राउसगंज और डिप्टीगंज मुहल्लों में होकर जाती है। एक सड़क निचले भाग (ज़ेर कोट) को जाती है। चौक में दोनों सड़कें मिल जाती हैं। चौक के पास सुन्दर घर बने हैं।

बुलन्दशहर या वरण बहुत पुराना नगर है। यहां गुप्त राजाओं और दूसरे राजाओं के सिक्के मिलते हैं। पहले अहार के परमल नामी तोमर राजा ने बनछटी (बन को कांट छांट कर बसाया गया) नाम का नगर बसाया था। इसके बाद इसका नाम अहिवरण (सर्प-कोट) पड़ा। ४०० से, ६०० ईस्वी तक यहां बौद्धों का प्रधान केन्द्र था। आगे चलकर लोग इसे हिन्दी में ऊँचा नगर और फारसी में बुलन्द शहर कहने लगे। महमूद गज़नी के समय में यहां राजा हरदत्त राज्य करते थे। उन्होंने यहां एक सुन्दर सरोवर बनवाया। एक मस्जिद की सीढ़ियों के नीचे बहुत पुराने खुदे स्तम्भ गड़े मिले। यहां का अन्तिम हिन्दू राजा चन्द्रसेन था जो अपने किले की रक्षा के लिये आक्रमणकारी कुतुबुद्दीन फौज से लड़ता हुआ मारा गया। पास ही ईदगाह है जो अधिक पुराने भवनों के सामान से बनाई गई। जामा मस्जिद बाला-कोट में है। यह १७३० में बननी आरम्भ हुई और १८३० में बनकर तयार हुई। बुलन्द शहर में कपड़ा बुनने और लकड़ी पर नक्काशी करने का काम अच्छा होता है। यहां के कुम्हार मिट्टी के बढ़िया बर्तन बनाते हैं। छतारी कस्बा अलीगढ़ से अनूप शहर जाने वाली पक्की सड़क से १ मील की दूरी पर स्थित है। खुरजा से छतारी २१ मील दूर है। पहले छत्रधारी मैवाती वंश का यहां अधिकार था। छत्रधारी से ही बिगड़कर छतारी नाम पड़ा। पूर्व की ओर कच्चा किला है। काली नदी २ मील पूर्व को ओर बहती है। छतारी कस्बे में एक स्कूल और डाकखाना है। बाजार मंगल और शुक्रवार को लगता है। ब्राह्मण, ठाकुर और चमार काश्तकार हैं। गंगा नहर की पहसू-शाखा से सिंचाई होती है।

ददरी कस्बा ग्रांड ट्रंक रोड पर सिकन्दराबाद से ११ मील और बुलन्द शहर से २२ मील दूर है। एक पक्की सड़क डेढ़ मील की दूरी पर ददरी रेलवेस्टेशन को जाती है। अब से डेढ़ सौ वर्ष पहले यह भट्टी गूजरों का गांव था। मुगल साम्राज्य के अन्तिम दिनों में कटेहरा के गूजर-सरदार दरगाही सिंह ने यहां गढ़ी बनवाई और बाजार लगवाया। उसने लूट मार करके १३३ गांवों पर अपना अधिकार कर लिया। लेकिन वज़ीर नजीबुद्दौला बुद्धिमान था। उसे चोरमार (चोरों को मारनेवाले) की उपाधि दी और २१०००) रु० के वार्षिक लगान पर ये सब गांव दे दिये। जब मरहठों का यहां अधिकार हुआ तब यह जागीर बनी रही। गदर में भाग लेने के कारण यह जायदाद जब्त कर ली गई। दो भाइयों को फांसी दी गई और गांव जला दिया।

दनकौर यमुना के किनारे पर सिकन्दराबाद से ११ मील और बुलन्दशहर से २० मील की दूरी पर स्थित है। अलीगढ़ से दिल्ली को पुरानी सड़क यहीं होकर जाती है। यहां और भी कई सड़कें मिलती हैं। यमुना को पार करने के लिये नावों का घाट है। दनकौर का एक भाग ऊँचे किनारे के ऊपर और दूसरा भाग नीचे बसा है। लोगों का विश्वास है कि ऊँचा भाग अशुभ है। इसलिये अधिकतर लोग ऊंचे भाग को खाली करके निचले भाग में बसते जा रहे हैं। यहां घी, शक्कर और अन्न का व्यापार होता है। बाज़ार रविवार को द्रोणाचार्य ताल के किनारे लगता है। बाज़ार, मन्दिर और थाने को आनेवाली सड़क पक्की है। दनकौर का पुराना नाम द्रोणकार है। कहते हैं कि आचार्य द्रोण ने इसे बसाया था। उन्हीं की स्मृति में यहां द्रोणाचार्य-मन्दिर बना है। यहीं भील-राजकुमार ने द्रोण की मूर्ति बनाकर धनुर्विद्या में कुशलता प्राप्त

की थी। डिबाई कस्बा चोइया के किनारे अनूप शहर से ११ मील दक्षिण की ओर बुलन्दशहर से २६ मील की दूरी पर बसा है। यहां से डिबाई स्टेशन को पक्की सड़क गई है। यहां रुई (गाढ़ा, घी और तेल का बड़ा व्यापार होता है। डिबाई पुराना नगर है और उस स्थान पर बसा है जहां पहले धुन्ध गढ़ था। इसीसे कुछ समय तक इसका नाम धुंधरा था। फिर बिगड़ कर दिबाई पड़ गया। मुसलमानों के समय में यहां से ढकरा राजपूत भगा दिये गये। जब मरहठों का अधिकार हुआ तो उनका आमिल एक पुराने किले में रहता था। अंग्रेज़ी-राज्य होने पर १८४२ में किले में नील का कारखाना बना लिया गया।

गुलाउठी पुराना नगर है और बुलन्दशहर से १२ मील उत्तर की ओर हापुड़-मेरठ की पक्की सड़क पर स्थित है। दक्षिण-पश्चिम की ओर सिकन्दराबाद को और पूर्व की ओर सयाना को सड़क गई है। काली नदी डेढ़ मील-पूर्व की ओर बहती है। नदी के ऊपर पुल बना है। सड़क के पास फौजी पड़ाव है। गंगा नहर की गुलाउठी शाखा से पड़ोस की ज़मीन सींची जाती है। जाट, बनिये और सैयद यहां के प्रधान निवासी हैं। कहा जाता है कि मुहम्मद तुगलक के समय में तुर्किस्तान के सबज़वार से सैयद लोग यहां आकर बस गये थे।

जहांगीराबाद अनूपशहर के बुलन्द शहर जाने वाली पक्की सड़क से २ मील उत्तर की ओर है। यह पक्की सड़क से अनूपशहर से ११ मील और बुलन्दशहर से १५ मील दूर है। जहांगीराबाद कुछ नीची भूमि पर बसा है। ईंट पाथने वालों ने इसे और भी नीचा बना दिया है। पहले यह एक कच्ची चारदीवारी से घिरा था। इसके पास खाई में पानी बंधा हुआ पानी भरा रहता था। मलेरिया ज्वर बहुत फैलता था। आगे चल कर यह नाली में बदल दी गई और इसका पानी नीम नदी में गिरा दिया गया। निचली भूमि में बाग लगा दिये गये। यहां कपड़े की बुनाई और परदों की छपाई का काम अच्छा होता है। यह अनाज की भी एक मंडी है। जहांगीराबाद और अनूपशहर साथ साथ बसाये गये थे। आगे चलकर बरगूजर राजा के सम्बन्धियों ने अपनी यह जमींदारी एक बंगश अफगान के हाथ बेच डाली।

जेवार कस्बा खड्डों और कटी फटी भूमि के ऊपर यमुना के ऊंचे किनारे पर बसा हुआ है। यह खुरजा से २० मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यमुना पार करने के लिये पहलादपुर में (नावों का) घाट है। मंडी में पक्की सड़क और पक्की दुकानें हैं। बोहन सराय नाम मरहठों के फ्रांसीसी सेनापति की स्मृति में रक्खा गया है। बाज़ार हर शुक्रवार को लगता है। बलदेवजी के मन्दिर में भादों के महीने और में शीतलादेवी के मन्दिर में चैत के महीने में मेला लगता है। सावन के महीने में शकरबरास की दरगाह पर मुसलमानों का मेला लगता है। जवार का पुराना नाम जावाली है। इसे एक ब्राह्मण ने बसाया था। सम्वत १२०० में यहां के ब्राह्मणों ने मेवाती आक्रमणकारियों को भगाने के लिये भरतपुर जाटों से सहायता मांगी। सहायता तो मिली लेकिन यहां उनका अधिकार होगया। बदले में उन्होंने ब्राह्मणों को ५ मेवाती गांव दे दिये।

झाझर कस्बा बुलन्दशहर से मकनपुर घाट (यमुना-तट) को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। झाझर से चोला रेलवे स्टेशन तक सड़क पक्की है। हर मंगलवार को बाजार है। कहते हैं कि इस कस्बे को एक बलूची ने बसाया था जिसने हुमायूं का साथ दिया था। अकबर ने उसे गालिब जंग की उपाधि दी थी।

करनबास गांव गंगा के किनारे अनूपशहर से ८ मील दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित है। कहते हैं इसे पांडवों के भाई राजा कर्ण ने बसाया था। जेष्ट दशहरा को यहां १ लाख यात्री स्नान करने आते हैं। यहां शीतलादेवी का पुराना मन्दिर है। यहां हर सोमवार को मेला लगता है। पड़ोस के खेत गंगा-नहर की करनबास शाखा से सींचे जाते हैं। कासना कस्बा यमुना खादिर में एक धारा के किनारे बसा है। इसके पड़ोस में एक पुराने किले के खंडहर हैं। यहां इकराम खां का मकबरा है जिसे शाहजहां ने दिल्ली का किला बनाने का काम सौंपा था। इस गांव को जैसलमेर के एक भट्टी राजपूत राव कंम्पल ने बसाया था। तैमूर के आक्रमण के समय चुनार के एक शेख ने राजपूतों से यह गांव छीन लिया।

खालौर अनूपशहर से ७ मील पश्चिम की ओर स्थित है। पूर्व की ओर गंगा-नहर की अनूपशहर शाखा बहती है। कहा जाता है कि अब से ३५० वर्ष पहले राजा जैसिंह ने इसे बसाया था। इसका पुराना नाम जैसिंहपुर था। इस समय यहां खालें रंगी जाती हैं। इसलिये इसका नाम खालौर पड़ गया।

खानपुर अनूपशहर तहसील में स्थित है। जहांगीर के समय में इसका नाम घाटी नसीराबाद से बदलकर खानपुर रख दिया गया और इसकी जागीर खुरजा के अफगान अल्लूखां को सौंप दी गई। गदर में यह जागीर जब्त कर ली गई और सरकार के खैरख्वाहों में बांट दी गई। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। बुधवार और रविवार को बाज़ार लगता है।

खुर्जा नगर (३१,०००) बुलन्दशहर में सबसे बड़ा नगर है। यह ग्रांड ट्रंक रोड पर बुलन्दशहर से १० मील दक्षिण की ओर अलीगढ़ से ३० मील उत्तर की ओर स्थित है। जंकशन स्टेशन शहर से लगभग ५ मील दूर है। पश्चिम में कर्वन नदी और पूर्व की ओर नहर से घिरा होने से पहले शहर का पानी ठीक ठीक नहीं बहने पाता था। इसमें सुधार कर लिया गया। खुर्जा घी, तेल और अनाज की बड़ी मण्डी है। यहां का घी कलकत्ते में बहुत बिकता है। खुर्जा के बने हुये मिट्टी के बर्तन दूर दूर तक बिकते हैं। हाल में कनाडा के लोग भी यहां के बने हुये मिट्टी के बर्तन पसन्द करने लगे हैं। खुर्जा की अजवाइन पटना, मुंगेर और भागलपुर में बहुत बिकती है। खुर्जा शिक्षा का भी केन्द्र बन रहा है। यहां एक इण्टर कालेज, एक हाई स्कूल और मिडिल स्कूल है। यहां प्राचीन स्मारक कम है। ग्रांड ट्रंक रोड के पास ४०० वर्ष का पुराना मखदूमशाह का मकबरा है।

कुचेसर गांव उत्तर में मेरठ की सीमा के पास बुलन्दशहर से २१ मील दूर है। यहां पुराना कच्चा किला है जो खाईं से घिरा है। यह दलाल जाटों की एक जागीर है। इसमें ५५ गांव शामिल हैं। इस राज के वंशज प्रायः २५० वर्ष पहले हरियाना से आये थे। गदर के समय सरकार को सहायता देने के उपलक्ष में यहां के राजा को कई गांव दे दिये गये।

मलगढ़ बुलन्दशहर के धुर दक्षिण में काली नदी के पास स्थित है। यह अनाज की मंडी है। रविवार को बाज़ार लगता है। पहले इसे राठौरा कहते थे। यह गौरवा राजपूतों का गांव था। मरहठों के आने के पहले इसे एक खटिक पठान ने लिया और यहां नदी के पास एक कच्चा किला बनवा लिया। उसने इसका नाम मलगढ़ रख दिया। १७९२ में मरहठों ने इसे छीन लिया। १८०३ में यहां के मरहठा आमिल माधोराव फाल्किया ने अंग्रेज़ी कर्नल विरुद्ध लड़ने में बड़ी वीरता दिखलाई। स्किनर के २०० सिपाही मारे गये। पर अन्त में यहां अंग्रेज़ों का अधिकार हो गया।

नारोरा गांव गंगा के किनारे डिबाई से ७ मील पूर्व की ओर बुलन्दशहर से ३३ मील की दूरी पर स्थित है। यहां से लोअर (निचली) गंगा नहर निकाली गई है। इसीसे नारोरा प्रसिद्ध हो गया है। यह नहर गंगा की समानान्तर बहती है और रामघाट होती हुई अलीगढ़ ज़िले में प्रवेश करती है। नहर निकालने के लिये गंगा में एक बांध बनाया गया। उसकी रक्षा के लिये दोनों किनारे कुछ दूर तक पक्के बना दिये गये। एक ट्रम्बे की सड़क नारोरा गांव को राजघाट स्टेशन से मिलाती है। यहां ट्राम्बे नहर के काम के लिये बनी थी। यहां नहर विभाग की कुछ इमारतें और एक छोटा बाजार है।

पहसू गांव खुर्जा से छतारी जाने वाली सड़क पर बुलन्दशहर से २४ मील की दूरी पर बसा है। इसके उत्तर में काली नदी और दक्षिण में गंगा-नहर की पहसू शाखा बहती है। इसका पुराना नाम पहि आसरन है जिसका अर्थ है दूसरे गांवों में खेती करने वाले शाह आलम ने यह परगना बेगम समरू को दे दिया था। १८३६ में उसके मरने पर कुछ समय तक अंग्रेज़ी राज्य में रहा। फिर यह वर्तमान नवाब (जमींदार) के पूर्वजों को सौंप दिया गया। यहां थाना, डाकखाना, स्कूल और बाज़ार है।

पिंडावल काली नदी और डिबाई के बीच में बुलन्दशहर से १३ मील की दूरी पर बसा है। अनूप शहर से अलीगढ़ जाने वाली पक्की सड़क यहां से केवल डेढ़ मील दूर है। इसको मेवाती वंश के एक रावल ने १२वीं सदी में बसाया था। यहां के राजा शिया मुसलमान हैं। रतूपुरा यमुना के मकनपुरघाट से कुछ ही मील दूर है। गंगा नहर की माट-शाखा यहां होकर जाती है। यहां डाकखाना, स्कूल बाज़ार और अमरीकन मिशन का एक छोटा ईसाई गिरजा है। 'रतूपुरा की पेंट में मैं किसका फूफा हूं' यहां की प्रसिद्ध कहावत अनजान लोगों को उधार देने वालों की हंसी उड़ाने के लिये कही जाती है। कहा जाता है कि एक स्त्री ने फूफा पुकार कर एक बिसाती से कुछ सामान उधार लिया और दूसरी पेंठ के दिन दाम चुकाने का वचन दिया। दूसरी पेंठ को वह स्त्री न आई और बिसाती बाज़ार की प्रत्येक स्त्री से पूंछता फिरा कि मैं किसका फूफा हूं?

राजघाट गंगा के किनारे पर अनूप शहर से ८ मील

दक्षिण की ओर स्थित है। अलीगढ़ से चन्दौसी जाने वाली रेलवे रामघाट के पास एक पुल के ऊपर गंगा को पार करती है। यहां कार्तिकी स्नान का मेला लगता है। रेल के दक्षिण में नावों का पुल है जहां से बदायूं जिले को मार्ग जाता है। रामघाट गंगा के १२० फुट ऊंचे किनारे पर एक तीर्थ है। यहां कार्तिकी और वैशाखी पूर्णिमा और ज्येष्ठ दशहरा को दूर दूर से यात्री गंगा स्नान करने आते हैं। पहले रामघाट और मिर्जापुर बनारस के बीच में ऊन और गेहूँ का व्यापार बहुत होता था। नारोरा में बांध बन जाने से वह नावों का व्यापार बन्द हो गया। कहते हैं श्रीकृष्ण के ज्येष्ठ भ्राता बलराम ने कोइल में कोलासुर को हराने के बाद रामघाट को बसाया। यहां के मन्दिर भारतवर्ष भर में प्रसिद्ध हैं।

शिकारपुर कस्बा बुलन्द शहर से रामघाट जानेवाली पक्की सड़क पर स्थित है। इसके दक्षिणी भाग में २५० वर्ष की पुरानी सराय है। मुसलमानी समय में यहां के सैय्यदों का बड़ा प्रभाव था। ग़दर में इनकी जागीरें छिन गईं। कहते हैं इन सैयदों के पूर्वज सिकन्दर लोदी के गुरू थे। इनके पास इस समय भी बाबर, हुमायूं अकबर और जहांगीर की दी हुई सनदें हैं। इनके एक पूर्वज ने दाराशिकोह का पक्ष लिया। इसलिये औरंगज़ेब ने उसकी जागीर छीन ली। यहां कपड़ा बुनने और जूता बनाने का काम अच्छा होता है। इस नगर को अब से प्रायः १४५० वर्ष पहले सिकन्दर लोदी ने बसाया था। इससे पहले एक अन्यायी खेड़े पर तलपत नगरी नाम का दूसरा नगर था। कुछ दूरी पर विचित्र बारह खम्भा और पुराने किले के खंडहर हैं।

सिकन्द्राबाद इसी नाम की तहसील का प्रधान नगर है। यह ग्रांड्ट्रंक रोड पर बुलन्द शहर से ११ मील पश्चिम की ओर स्थित है। स्टेशन क़स्बे से ४ मील दूर है। यहीं कई सड़कें निकलती हैं। सिकन्दराबाद कुछ नीची भूमि पर बसा है। कायस्थवाड़ा और कूँचा राजाजी इसके दो प्रधान भाग हैं। १४९८ में सिकन्दर लोदी ने सिकन्द्राबाद बसाया था १७४७ में यहाँ मरहठों का अधिकार हो गया। जब यहां ब्रिटिश अधिकार हुआ तो पहले अलीगढ़ जिले में फिर १८८४ में बुलन्दशहर जिले में शामिल कर लिया गया। इसके पड़ोस में कई लड़ाइयां हुईं। १७८६ में नवाब वजीर और मरहठों से मुठभेड़ हुई १७६४ में सूरजमल की मृत्यु के पहले यहाँ पड़ाव डाला था। अन्त में अंग्रेज़ों और मरहठों की यहां पर लड़ाई हुई। १८२७ में पड़ोस के गूजरों राजपूतों और मुसलमानों ने खूब लूटे। उन पर ४ लाख से जुर्माना किया गया। २ लाख वसूल भी किया गया। लेकिन लूटे गये लोगों को इसमें से कुछ भी सहायता न मिली। यहां तहसील, थाना, स्कूल और बाज़ार है। यहां के जुलाहे बढ़िया साफा और दूसरा कपड़ा बुनते हैं जिसकी दिल्ली में बड़ी मांग होती है। सियाना बुलन्द शहर से १९ की मील की दूरी पर उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। यहां से गुलाउठी, बसी और गढ़मुक्तेश्वर को सड़कें गई हैं। सियाना से १ मील पूर्व की ओर गंगा-नहर की अनूपशहर शाखा बहती है। बसी और गढ़मुक्तेश्वर जाने के लिये इस पर पुल बने हैं। यहां थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। पहले यहां कुसुम (फूलों) और नील का व्यापार बहुत होता था। इसका पुराना नाम शयबा बन या शयन-बन है। कहा जाता है कि हस्तिनापुर से मथुरा जाते समय बलराम ने यहां एक रात्रि शयन किया था। उस समय इधर बन में बहुत से ऋषि मुनि रहते थे। दोर राजपूतों ने इसका नाम बदल कर सियाना रख दिया। दिल्ली के राजा पृथिवीराज के आदेश से यहां के तगा ब्राह्मणों ने राजपूतों को भगा दिया। अलाउद्दीन खिलजी के समय में शेखों ने तगा लोगों से इस परगने की ज़मीन छीन ली। अकबर के समय में इधर के बहुत से तगा मुसलमान हो गये। ब्रिटिश अधिकार हो जाने पर १८४४ तक यहां मुंसफी और तहसील रही। सूरजपुर ददरी स्टेशन से ५ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यह सिकन्द्राबाद से १२ मील दूर है। पहले दिल्ली की शाही सड़क यहां होकर जाती थी। इसे सूरज मल (कायस्थ) ने बसाया था। फिर यह गांव भटियारों और गूजरों के हाथ में चला गया। यहां थाना, डाकखाना, स्कूल, सराय है। बाज़ार मंगलवार को लगता है। इसके पड़ोस की ज़मीन अधिकतर ऊसर है।

तिल बेगमपुर सिकन्द्राबाद से साढ़े तीन मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। पृथिवीराज के समय में भट्टी राजपूत यमुना पार से आकर यहां बस गये। औरंगज़ेब के समय में वे मुसलमान हो गये। ग़दर में उनकी ज़मीन छीन ली गई और कर्नल स्किनर को दे दी गई। गांव के पास एक पुराना कुआं है। इसमें संस्कृत और फारसी का लेख है। इसे हुमायूँ के समय में महतादत्त नामी एक खत्री ने बनवाया था।

'भूगोल' का स्थायी साहित्य

१—भारतवर्ष का भूगोल	२)
२—भूतत्व	१।)
३—भूगोल एटलस	१।)
४—भारतवर्ष की खनिजात्मक सम्पत्ति ...	१)
५—मिडिल भूगोल (भाग १ व ४) भाग	॥=)
मिडिल भूगोल (भाग २, ३ प्रत्येक भाग) ...	॥)
६—हमारा देश ...	।=)
७—संक्षिप्त बाल-संसार (नया संस्करण) ...	१)
८—हमारी दुनिया	।-)
९—देश निर्माता	।-)
१०—सीधी पढ़ाई पहला भाग	-)॥
११—सीधी पढ़ाई, दूसरा भाग	-)॥
१२—जातियों का का॰	।)
१३—अनोखी दुनिया	॥=)
१४—आधुनिक इतिहास-एटलस	॥)
१५—संसार-शासन ...	२)
१६—इतिहास-चित्रावली (नया संस्करण) ...	१)
१७—स्पेन-अंक	॥-)
१८—ईरान अंक	१)
१९—चीन-अंक	॥)
२०—चीन-एटलस	॥)
२१—टर्की	१)
२२—अफ़ग़ानिस्तान	१)
२३—भुवनकोष	१)
२४—एबीसीनिया	॥)
२५—गंगा-अंक	१)
२६—गंगा एटलस	॥)
२७—देशी राज्य अंक	२)
२८—पशु-पक्षी अंक	१)
२९—महासमर-अंक	१।)
३०—महासमर एटलस	॥)
३१—सचित्र भौगोलिक कहानियाँ	।)
३२—प्राचीन जीवन	॥)
३३—भूपरिचय (संसार का विस्तृत वर्णन) ...	२॥)
३४—वर्नाक्युलर फाइनल परीक्षा के भूगोल-प्रश्नपत्र और उनके आदर्श उत्तर (१९२१-३८) तक ...	१)
३५—आसाम अंक	१)
३६—द्वितीयमहासमरपरिचय	१॥)
३७—संयुक्त प्रांत-अंक	२)

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय' कक्करहाघाट इलाहाबाद।

देश दर्शन

पुस्तकाकार सचित्र मासिक

देश-दर्शन में प्रति मास किसी एक देश का सर्वाङ्गपूर्ण वर्णन रहता है। लेख प्रायः यात्रा के आधार पर लिखे जाते हैं। आवश्यक नकशों और चित्रों के होने से देश-दर्शन का प्रत्येक अङ्क पढ़ने और संग्रह करने योग्य होता है।

'देश-दर्शन'—इस सीरीज़ के प्रकाशन का चौथा वर्ष मई १९४३ में समाप्त होता है। अँग्रेज़ी में भौगोलिक विषय की पुस्तकों की अधिकता है पर हिन्दी में निरा भाव। इसी क्षति को पूरा करने के लिये 'भूगोल कार्यालय' ने इस लड़ाई के कठिन समय में हज़ारों रुपये व्यय कर अपने ऊपर दुःख सह इस कार्य को अपने हाथ में लिया और आप से आशा की थी कि इस साहित्य को अपना कर अपने तो लाभ उठावेंगे ही साथ ही अपने बच्चों को भी इससे वञ्चित न रखने देंगे आप के सहयोग की इसमें नितान्त आवश्यकता है। बिना आप की सहायता के इसका भार स्वयं चलाना अत्यन्त कठिन है। अभी तक आप चुप रहे पर आगे आप यों ही समय को न बीतने दें। इस साहित्य को जीवित रक्खें। आप जानते हैं कि सभी पत्र पत्रिकाओं के मूल्य में वृद्धि की गई है पर हमने आप के भरोसे पर अभी तक इसका मूल्य भी नहीं बढ़ाया है। जिस समय इस सीरीज़ की पुस्तकें (२०० भाग) आप के पुस्तकालय में एकत्रित होंगी तो इस विषय की पुस्तकों के लिये आप को अन्यत्र कहीं भटकना न पड़ेगा। आप के सुविधा के लिये ये पुस्तकें मासिक रूप में प्रकाशित की जा रही हैं। प्रत्येक महीने एक पुस्तक आप को ।=) मूल्य में प्राप्त हो सकती है। यदि मासिक पत्र का रूप न दिया गया होता तो इतनी बड़ी पुस्तक में एक देश का हाल जानने के लिये इतनी सामग्री बारह आने, खर्च करने पर भी आपको कहीं उपलब्ध नहीं हो सकती थी। यही उद्देश्य रख कर हमने इसका लागत मात्र वार्षिक मूल्य केवल ४) रक्खा है। अब तक नीचे लिखी पुस्तकें इस सीरीज़ में निकल चुकी हैं। यदि आप आरम्भ से इसे मँगाना पसंद करें तो आज ही पत्र लिखें महँगी के कारण ये पुस्तकें परिमित संख्या में प्रकाशित होती हैं। अतः आर्डर देने में विलम्ब न करें। संस्करण समाप्त हो जाने पर दूसरे संस्करण में अधिक विलम्ब की सम्भावना है। आशा है हमारी उपर्युक्त बातों से आप सहमत होंगे। आप स्वयं ग्राहक बन कर और अपने मित्रों को बना कर हमारे इस महान् कार्य में सहायता पहुँचावेंगे। तभी सफलता मिल सकती है।

देश-दर्शन के प्रत्येक अंक संग्रहणीय हैं

अब तक इस सीरीज़ में नीचे लिखी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं:—

प्रथम वर्ष—लङ्का, इराक, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिस्र भाग १, मिस्र भाग २, फिनलैंड, बेल्जियम, रूमानिया।

द्वितीय वर्ष—प्राचीन जीवन, यूगोस्लेविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेन्मार्क, हालैंड, रूस, थाई (श्याम) देश, बल्गेरिया, अलसेस लारेन।

तृतीय वर्ष—काश्मीर, जापान, ग्वालियर, स्वीडन, मलयप्रदेश, फिलीपाइन, तीर्थ दर्शन, हवाई द्वीपसमूह, न्यूज़ीलैंड, न्यूगिनी, आस्ट्रेलिया।

चतुर्थ वर्ष—मेडागास्कर, न्यूयार्क, सिरिया, फ्रान्स, अलजीरिया, मरक्को, इटली, ट्यूनिस, आयरलैंड, अन्वेषक भाग—१, अन्वेषक भाग—२।

पञ्चम वर्ष—अन्वेषक भाग—३, नैपाल ......

नमूने की प्रति के लिये ।=) का टिकट भेजिये—

पताः—मैनेजर, भूगोल कार्यालय, ककरहाघाट, इलाहाबाद।

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by Ram Sundar Dwivedi, at the Bhugol Press, Kakrahaghat, Allahabad.